

GULDASTA E DUROODO SALAAM (HINDI)

दुस्खदो सलाम मझ दीगर मौजूदात पर मुश्तमिल
63 बयानात का मजमूझा



गुलदस्ता दुस्खदो सलाम



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ إِنَّمَا بَعُدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़: शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है:

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा: ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले।

(المُسْتَطَرَف ج ١ ص ٣٠ دار الفكر بيروت)

नोट: अव्वल आखिर एक एक बार दुरुद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना

बक़ीअ

व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त्बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रूजूअ फ़रमाइये।

गुलदस्तु दुख्खो सलाम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی

दा 'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिया" ने येह किताब "उर्दू" ज़बान में पेश की है और मजलिसे तराजिम ने इस किताब को हिन्दी की राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी" में रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो उर्दू ही है जब कि लीपि हिन्दी रखी है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअे SMS या E-MAIL) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त क़ लीपियांतर चाट

त = ت	फ = ف	प = پ	भ = ب	ब = ب	अ = ا
झ = ج	ज = ج	स = ث	ठ = ث	ट = ث	थ = ث
ढ = ڈ	ध = د	ड = ڈ	द = د	ख = خ	ह = ح
ज़ = ز	ज़ = ز	ढ = ڈ	ड़ = ڈ	र = ر	ज़ = ز
अ = ع	ज़ = ظ	त = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش
ग = گ	ख = ک	क = ک	क = ق	फ = ف	ग = غ
य = ی	ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
= ُ	= ُ	= ُ	= ُ	= ُ	= ُ

याद द्वाशत

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्दर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी।

[illegible]

याद द्वाशत

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्दर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी।

[illegible]

याद द्वाशत

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्दर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी।

[illegible]

दुरूदो सलाम मअ दीगर मौजूआत पर मुश्तमिल
63 बयानात का मजमूआ



गुलदस्तए दुरूदो सलाम

—: पेशकश :—

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो 'बए बयानाते दा 'वते इस्लामी)

(दा 'वते इस्लामी)

—: नाशिर :—

421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद, देहली-110006

फोन : 011-23284560

E-mail : maktabadelhi@gmail.com

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा 'वते इस्लामी)

نام किताब : غولدستو دُروڊو سَلام
 पेशकश : अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो 'बए बयानाते दा' वते इस्लामी)
 सिने तबाअत : जुल का 'दतिल हुराम, सि. 1435 हि.
 नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

तस्दीक नामा

तारीख़ : 16 सफ़रुल मुजफ़्फ़र 1434 हि.

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله واصحابه اجمعين

तस्दीक की जाती है कि किताब

“غولदस्तو दُروڊو سَلام” (उर्दू)

(मतबूआ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अकाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक्ही मसाइल और अरबी इबारात वगैरा के हवाले से मक़दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।



मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
 (दा' वते इस्लामी)

27-05-2013

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

www.dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा' वते इस्लामी)

इजमाली फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
याद दाश्त	1	बयान नम्बर : 9	99
किताब पढ़ने की नियतें	8	एक क़ीरात अज़्र	99
अल मदीनतुल इल्मिया	10	बयान नम्बर : 10	109
पहले इसे पढ़ लीजिये	12	सरकार अहले महब्बत का दुरूद खुद सुनते हैं	109
बयान नम्बर : 1	14	बयान नम्बर : 11	119
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	14	सूज़ने गुमशूदा मिलती है तबस्सुम से तेरे	119
बयान नम्बर : 2	30	बयान नम्बर : 12	130
शफ़्फ़ात वाजिब हो गई	30	जुमुआ के दिन दुरूदे पाक की कसरत	130
बयान नम्बर : 3	43	बयान नम्बर : 13	143
सारी मख़्लूक की आवाज़ सुनने वाला फ़िरिश्ता	43	रिज़्क में कुशादगी का राज़	143
बयान नम्बर : 4	54	बयान नम्बर : 14	154
जन्नत का अनोखा फल	54	100 हाज़तें पूरी होने का वज़ीफ़ा	154
बयान नम्बर : 5	62	बयान नम्बर : 15	163
दुरूदे पाक न पढ़ने का वबाल	62	दुरूदे पाक की रसाई	163
बयान नम्बर : 6	72	बयान नम्बर : 16	172
कुर्बते सरकार के हक़दार	72	बद नसीब कौन...?	172
बयान नम्बर : 7	82	बयान नम्बर : 17	181
मौत से पहले जन्नत में मक़ाम देखेगा	82	दुआओं का मुहाफ़िज़	181
बयान नम्बर : 8	91	बयान नम्बर : 18	190
70 मरतबा रहमतों का नुज़ूल	91	दस गुना सवाब	190

बयान नम्बर : 19	199 गुलाम आजाद करने से अफ़ज़ल अमल	299
पुल सिरात पर आसानी	199 बयान नम्बर : 31	308
बयान नम्बर : 20	208 भलाई के तलबगार	308
सब से अफ़ज़ल दिन	208 बयान नम्बर : 32	317
बयान नम्बर : 21	217 मुबारक पर्चा	317
एक अज़ीम नूर	217 बयान नम्बर : 33	326
बयान नम्बर : 22	226 होंटों पर मुतअय्यन फिरिश्ते	326
सदके की इस्तिताअत न हो तो	226 बयान नम्बर : 34	336
बयान नम्बर : 23	235 दिलों की तहारत	336
रिज़ाए इलाही वाला काम	235 बयान नम्बर : 35	345
बयान नम्बर : 24	244 जन्नत कुशादा हो जाती है	345
जुदा होने से पहले पहले बख़्शिश	244 बयान नम्बर : 36	355
बयान नम्बर : 25	253 तमाम मख़्लूक को किफ़ायत करने वाला नूर	355
घरों को क़ब्रिस्तान मत बनाओ	253 बयान नम्बर : 37	364
बयान नम्बर : 26	262 तीन किस्म के बद बख़्त	364
खुदा चाहता है रिज़ाए मुहम्मद	262 बयान नम्बर : 38	373
बयान नम्बर : 27	271 ज़ियारते सरकार का वज़ीफ़ा	373
गीबत से हिफ़ाज़त का नुस्खा	271 बयान नम्बर : 39	382
बयान नम्बर : 28	281 अहले महबूबत का दुरूद मैं खुद सुनता हूँ	382
हज़रते अली की करामत	281 बयान नम्बर : 40	391
बयान नम्बर : 29	290 इस्तिक़्ामत के साथ थोड़ा अमल भी बेहतर है	391
रोज़ी में बरकत	290 बयान नम्बर : 41	401
बयान नम्बर : 30	299 दुखूले मस्जिद के वक़्त मुझ पर सलाम भेजो	401

बयान नम्बर : 42	411	सहाबा पर ता'न, हुजूर को ना पसन्द है	520
मसाइब व आलाम का खातिमा	411	बयान नम्बर : 54	529
बयान नम्बर : 43	421	तीन बातों की वसियत	529
गुनाहों की मुआफी का ज़रीआ	421	बयान नम्बर : 55	539
बयान नम्बर : 44	431	सायए अर्श पाने वाले तीन खुश नसीब	539
चेहरए अन्वर पर खुशी के आसार	431	बयान नम्बर : 56	549
बयान नम्बर : 45	439	भूली हुई चीज़ याद आ जाएगी	549
बरकत से ख़ाली कलाम	439	बयान नम्बर : 57	559
बयान नम्बर : 46	448	अल्लाह ﷻ की नज़रे रहमत	559
ना मुकम्मल दुरूद	448	बयान नम्बर : 58	569
बयान नम्बर : 47	458	हुजूर हमारे नाम जानते हैं	569
दस दरजात की बुलन्दी	458	बयान नम्बर : 59	578
बयान नम्बर : 48	467	हज़रते ख़िज़्र ﷺ की पसन्दीदा मजलिस	578
एक गुनहागर की बख़्शिश का सबब	467	बयान नम्बर : 60	587
बयान नम्बर : 49	476	शहीदों की रफ़ाक़त	587
वोही अक्वल वोही आख़िर	476	बयान नम्बर : 61	599
बयान नम्बर : 50	485	रब ﷻ के दुरूद भेजने से क्या मुराद है	599
क़ियामत की वद्दशतों से नजात पाने वाला	485	बयान नम्बर : 62	612
बयान नम्बर : 51	494	रहमतों का ख़ज़ाना	612
रहमत के सत्तर दरवाज़े	494	बयान नम्बर : 63	623
बयान नम्बर : 52	508	जुमुआ के दिन दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	623
सत्तर हज़ार फ़िरिश्तों का नुज़ूल	508	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	638
बयान नम्बर : 53	520	माख़ज़ो मराजेअ	648

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की नियतें

“खैरुल अनाम पर लाखों सलाम” (उर्दू) के 21 हुरफ़ की निश्बत से इस किताब को पढ़ने की 21 नियतें

يٰۤاَيُّهَا الْمُؤْمِنُ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهِ : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **फ़रमाने मुस्तफ़ा**

“मुसलमान की नियत उस के अमल से बेहतर है।”

(معجم كبير ١٨٥/٦٠، حديث: ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

(1) बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अमले खैर का सवाब नहीं मिलता ।

(2) जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

(1) हर बार हम्द व (2) सलात और (3) तअव्वुज़ व (4) तस्मिया से आगाज़ करूंगा । (इसी सफ़हा पर ऊपर दी हुई दो अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अमल हो जाएगा) (5) महफ़िल में बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ कर दूसरों को इस की तरगीब दिलाऊंगा । (6) रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुतालआ करूंगा । (7) हत्तल वस्अ इस का बा वुज़ू और (8) क़िब्ला रू मुतालआ करूंगा । (9) कुरआनी आयात और अहदीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ।

(10) जहां जहां **“अब्बाह”** का नामे पाक आएगा वहां **“عَزَّوَجَلَّ”**

और (11) जहां जहां “सरकार” का इस्मे मुबारक आएगा वहां **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पढ़ूंगा । (12) शरई मसाइल सीखूंगा । (13) जो नहीं जानते उन्हें सिखाऊंगा । (14) अपने ज़ाती नुस्खे पर इन्दज़ूरत खास खास मक़ामात पर अन्दर लाइन करूंगा । (15) अगर कोई बात समझ न आई तो उ-लमाए किराम से पूछ लूंगा । (16) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरगीब दिलाऊंगा । (17) खुद भी दुरूदे पाक की आदत बनाऊंगा । (18) और दूसरों को भी इस के फ़ज़ाइल बयान कर के तरगीब दिलाऊंगा । (19) इस किताब के मुतालए का सवाब आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सारी उम्मत को ईसाल करूंगा । (20) किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इल्मे दीन रोज़ाना चन्द सफ़हात पढ़ कर इल्मे दीन हासिल करने के सवाब का हक़दार बनूंगा । (21) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा । (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना खास मुफ़ीद नहीं होता)

दर्द सर से नजात

पूरे सर का दर्द हो या शकीका (या’नी आधे सर का दर्द) बा’द नमाजे अ़स्स सूरतुत्तकासुर एक बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये

إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ दर्द में इफ़ाका होगा । (घरेलू इलाज, स. 46)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल मदीनतुल इल्मिया

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى إِحْسَانِهِ وَبِفَضْلِ رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक
“दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, एहयाए सुन्नत और इशाअते
इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आम करने का अज़मे मुसम्मम
रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के
लिये मुतअद्दिद मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है
जिन में से एक मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिया”
भी है जो दा'वते इस्लामी के उ-लमा व मुफ़्तयाने किराम
كَثَرَهُمُ اللَّهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहक़ीकी
और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए
जैल छे शो'बे हैं :

- «1» शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत
- «2» शो'बए दर्सी कुतुब
- «3» शो'बए इस्लाही कुतुब
- «4» शो'बए तराजिमे कुतुब
- «5» शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
- «6» शो'बए तख़रीज

“अल मदीनतुल इल्मिया” की अव्वलीन तरजीह

सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, अलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल कारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वसअ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “दा'वते इस्लामी” की तमाम मजालिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इल्मिया” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अमले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदफ़न और जन्नतुल फिरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

امین بجاه النبی الامین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم



रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये

तमाम खूबियां उस जात के लिये जिस ने अपनी इबादत के वासिते जिन्न व इन्स की तख्लीक़ फ़रमाई और उन्हें मुख़लिफ़ आसाइशें मुहय्या करने के इलावा उन पर ला ता'दाद इन्आमात फ़रमाए। यकीनन उस की हर ने'मत बजाए खुद निहायत अहम्मियत की हामिल है मगर ब नज़रे गाइर देखा जाए तो इस बात में शको शुबहे की गुन्जाइश न होगी कि हमारे दरमियान रहमतुल्लिल आलमीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बिअसत **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की हर ने'मत पर फौक़ियत रखती है क्यूंकि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने अपनी किसी ने'मत का खुसूसियत के साथ तज़क़िरा कर के उस पर एहसान न जतलाया मगर हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बिअसत को ब सराहत एहसान से ता'बीर करते हुवे फ़रमाया : “बेशक **अल्लाह** का बड़ा एहसान हुवा मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा।”

एहसानाते इलाहिय्या का तकाज़ा है कि हर हाल में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के अहकाम की ता'मील की जाए। यूं तो उस ने हमें कसीर अहकामात का मुकल्लफ़ किया है मगर इन में से सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदो सलाम** पढ़ने वाला हुक्म निहायत ही अज़ीम है क्यूंकि इस का हुक्म देने से पहले **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने अपने और अपने मा'सूम फ़िरिशतों के दुरूद भेजने का तज़क़िरा करते हुवे इरशाद फ़रमाया : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : “बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिशते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर।” (५१: २२, २३) इस के बा'द इस अज़ीम काम का हमें भी हुक्म दिया, बहुत सी अहादीसे करीमा भी **दुरूदे पाक** की तरगीब व फ़जीलत से माला माल हैं।

मा'लूम हुवा कि **दुरूदो सलाम** पढ़ना **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** की रिज़ा का बाइस है। ग़ौर करें कि एक तरफ़ तो जिस मदनी आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** के

हम पर बे शुमार एहसानात हैं और दूसरी तरफ़ हर खास मौक़अ पर उम्मतए आसी को याद फ़रमा कर जिन की चश्माने करम तर हो गई क्यूं न ऐसे मुशफ़िक व मेहरबान आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से महबबत व अक़ीदत के इज़हार के लिये इन की ज़ात पर **दुरूदो सलाम** की कसरत की जाए !

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में **दुरूदो सलाम** की ख़ूब ख़ूब तरगीब दिलाई जाती है। ज़ेरे नज़र किताब भी दर हकीक़त मदनी चैनल के सिलसिले “**फ़ैज़ाने दुरूदो सलाम**” में शहज़ादए अत्तार हाजी अबू हिलाल मुहम्मद बिलाल रज़ा अत्तारी سَلَمَةُ الْبَارِي के किये गए बयानात ही का मजमूआ है। **दुरूदे पाक** की अहम्मियत व इफ़ादियत के पेशे नज़र दा'वते इस्लामी की मजलिस अल मदीनतुल इल्मिय्या इन बयानात को “**गुलदस्तए दुरूदो सलाम**” के नाम से तहरीरी सूरत में पेश करने की सड़ये जमील कर रही है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस किताब पर शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी (अल मदीनतुल इल्मिय्या) के 5 इस्लामी भाइयों ने काम करने की सआदत हासिल की बिल खुसूस सय्यद इमरान अख़्तर अत्तारी मदनी और फ़रमान अली अत्तारी मदनी ने ख़ूब कोशिश की।

अल्लाह तआला हमें “अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश” करने के लिये मदनी इन्आमात पर अमल और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक्की अता फ़रमाए। اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

25 सफ़रुल मुजफ़्फ़र सि.1435 हि. ब मुताबिक़ 29 दिसम्बर सि. 2013 ई.

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बयान नम्बर : 1

दुरूद शरीफ की फज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, दो आलम के मालिको मुख्तार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का इरशादे नूर बार है।

زَيِّنُوْا مَجَالِسَكُمْ بِالصَّلَاةِ عَلَى فَاَنْصَلَا تَكُمُ عَلٰى نُوْرٍ لَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

या'नी तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्योंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूद पढ़ना बरोजे कियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।”

(جامع صغير، حرف الزاى، ص ۲۸۰، حديث: ۲۵۸۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी किसी महफ़िले ज़िक्र में शिर्कत की सआदत नसीब हो और हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का इस्मे गिरामी लिया जाए तो तज़ईने मजलिस और हुसूले बरकत के लिये दुरूदे पाक पढ़ लेना चाहिये ताकि हमारा पढ़ा हुआ दुरूदे पाक रोजे कियामत हमारे लिये नूर हो और हमारी बख़्शिश व मग़फ़िरत का ज़रीआ भी बन जाए जैसा कि

सरकार पर पढ़ा हुआ दुस्खे पाक काम आ गया

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है : “क़ियामत के दिन हज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अर्श के करीब वसीअ मैदान में ठहरे हुवे होंगे, आप पर दो सब्ज़ कपड़े होंगे, अपनी अवलाद में से हर उस शख्स को देख रहे होंगे जो जन्नत में जा रहा होगा और अपनी अवलाद में से उसे भी देख रहे होंगे जो दोज़ख़ में जा रहा होगा। इसी असना में आदम عَلَيْهِ السَّلَام सरकारे दो आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के एक उम्मती को दोज़ख़ में जाता हुआ देखेंगे। सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पुकारेंगे, “या अहमद ! या अहमद !” तो हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कहेंगे : **بَيِّنَا لَكَ الْبُشَيْر** हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام कहेंगे : “आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का येह उम्मती दोज़ख़ में जा रहा है।” येह सुन कर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ बड़ी चुस्ती के साथ तेज़ तेज़ (क़दमों से) फ़िरिश्तों के पीछे चलेंगे और कहेंगे : “ऐ मेरे रब के फ़िरिश्तो ! ठहरो।” वोह अर्ज करेंगे : “हम मुक़र्रर कर्दा फ़िरिशते हैं, जिस काम का हमें **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है उस की नाफ़रमानी नहीं करते, हम वोही करते हैं जिस का हमें हुक्म मिला है।” जब हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अफ़सुर्दा होंगे तो अपनी दाढ़ी मुबारक को बाएं हाथ से पकड़ेंगे और अर्श की तरफ़ हाथ से इशारा करते हुवे कहेंगे : “ऐ मेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** ! क्या तू ने मुझ से वा’दा नहीं फ़रमाया है कि तू मुझे मेरी उम्मत के बारे में रुस्वा न फ़रमाएगा।” अर्श से निदा आएगी : “ऐ फ़िरिश्तो !

मुहम्मद ﷺ की इताअत करो और इसे लौटा दो ।”

फिर आप ﷺ अपनी झोली से सफ़ेद कागज़ निकालेंगे और उसे मीज़ान के दाएं पलड़े में डाल कर कहेंगे : “बिस्मिल्लाह” । पस वोह नेकियों वाला पलड़ा बुराइयों वाले पलड़े से भारी हो जाएगा । आवाज़ आएगी : खुश बख़्त है, सआदत याफ़ता हो गया है और इस का मीज़ान भारी हो गया है । इसे जन्नत में ले जाओ । वोह बन्दा कहेगा : “ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के फ़िरिश्तो ! ठहरो, मैं इस बन्दे से बात तो कर लूं जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर बड़ी करामत रखता है ।” फिर वोह अज़्र करेगा : “मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों, आप का चेहरा अन्वर कितना हसीन है और आप की शक़ल कितनी ख़ूब सूरत है, आप ने मेरी लगज़िशों को मुआफ़ फ़रमाया और मेरे आंसूओं पर रहम फ़रमाया (आप कौन हैं ?) ।” तो हुज़ूर ﷺ इरशाद फ़रमाएंगे اَنَا نَبِيَّكَ مُحَمَّدٌ وَهَذِهِ صَلَاتُكَ الَّتِي كُنْتَ تُصَلِّي عَلَى وَقَدْ وُقِّيتْكَ اَخَوْجَ مَا تَكُونُ اِلَيْهَا या'नी मैं तेरा नबी मुहम्मद ﷺ हूं और येह तेरा वोह दुरूद है जो तू मुझ पर भेजता था और मैं ने तेरी वोह तमाम हाजात पूरी कर दीं जिन का तू मोहताज था ।”

(موسوعة ابن ابي الدنيا في حسن الظن بالله، ٩/١، حديث: ٤٩)

रब्बि सल्लिम ! के कहने वाले पर

जान के साथ हों निसार सलाम

वोह सलामत रहा क्रियामत में

पढ़ लिये दिल से जिस ने चार सलाम (जौके ना'त, स.119)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले बरकत, तरक्किये

मा'रिफ़त और हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की कुर्बत पाने के लिये कसरते **दुरूदो सलाम** से बढ़ कर कोई ज़रीआ नहीं है । यकीनन सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदो सलाम** भेजने के बे शुमार फ़ज़ाइल व बरकात हैं, जिन्हें इहातए तहरीर में लाना मुमकिन नहीं है ।

सलातो सलाम के मौजूअ पर बे शुमार कुतुब तस्नीफ़ की जा चुकी हैं । इस के फ़ज़ाइल व समरात उ-लमाए किराम बयान फ़रमाते रहते हैं । क़लम की रोशनाई तो ख़त्म हो सकती है, बयान के अल्फ़ाज़ भी ख़त्म हो सकते हैं, मगर हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदो सलाम** का इहाता नहीं हो सकता । याद रखिये ! **दुरूदे पाक** ऐसा अमल है कि खुद रब्बुल इज़्ज़त **عَزَّوَجَلَّ** भी करता है । चुनान्चे, कुरआने मजीद फुरक़ाने हमीद में इरशादे बारी तअ़ाला है ।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى

النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ⑤

(प २२, अहज़ाब: ५६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक

अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते

दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले

(नबी) पर ऐ ईमान वालों उन पर

दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो ।

इस आयते मुबारका के नाज़िल होने के बा'द महबूबे रब्बे जुल जलाल, शहनशाहे खुश ख़िसाल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का चेहरा अनवर खुशी से नूर की किरनें लुटाने लगा और फ़रमाया : “मुझे मुबारक बाद पेश करो क्यूंकि मुझे वोह आयते मुबारका अता की गई है जो मुझे “दुन्या व माफीहा” (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है इस) से ज़ियादा महबूब है।” (رُوحُ الْبَيَانِ، प २२، الاحزاب، تحت الآية ५१، २२३/५)

पोशीदा इल्म

एक मरतबा सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** ने अर्ज़ की :
या रसूलल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की क्या राए है इस फ़रमाने बारी **عَزَّوَجَلَّ** के बारे में **إِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتُهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ** ने फ़रमाया :

إِنَّ هَذَا لَمِنَ الْمَكْتُومِ لَوْلَا أَنْكُم سَأَلْتُمُونِي عَنْهُ مَا أَخْبَرْتُكُمْ بِهِ
या'नी बेशक येह पोशीदा इल्म से मुतअल्लिक़ बात है अगर तुम लोग मुझ से इस बारे में सुवाल न करते तो मैं तुम्हें कुछ न बताता ।

إِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ وَكُلُّ بِيْ مَلَكَيْنِ لَا أُذْكَرُ عَنْهُ عَبْدٌ مُّسْلِمٌ فَيُصَلِّيَ عَلَيَّ إِلَّا
बेशक **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** ने मेरे लिये दो फ़िरिश्ते मुक़रर फ़रमा दिये हैं, जिस मुसलमान के सामने मेरा ज़िक्र किया जाए और वोह मुझ पर दुरूद भेजे,

قَالَ ذَاكَ الْمَلَكَانِ: غَفَرَ اللّٰهُ لَكَ وَقَالَ اللّٰهُ وَمَلَائِكَتُهُ جَوَابًا لِّذَيْنِكَ الْمَلَكَيْنِ: آمِينَ
तो वोह दोनों फ़िरिश्ते कहते हैं : **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** तेरी मग़फ़िरत

फ़रमाएँ” और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के फ़िरिश्ते इन के जवाब में आमीन कहते हैं ।

(کنز العمال، کتاب الذکّار، الباب السابع فی القرآن وفضائله، ۱/ ۱۷، الجزء الثانی، حدیث: ۳۰۲۴)

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा जलालुद्दीन शुयूती शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ** “तफ़्सीरे दुर्रे मन्सूर” में इब्ने नज्जार और इब्ने मरदवय के हवाले से बयान कर्दा रिवायत में मज़ीद इज़ाफ़ा नक्ल फ़रमाते हैं और जिस मुसलमान के सामने मेरा ज़िक्र किया जाए और वोह मुझ पर दुरूद न भेजे قَالَ ذَلِكَ الْمَلَكَانِ: لَا غَفَرَ اللَّهُ لَكَ، وَقَالَ اللَّهُ وَمَلَائِكَتُهُ لَدَيْكَ الْمَلَائِكِينَ: آمِينَ तो वोह दोनों फ़िरिश्ते कहते हैं : **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** तेरी मग़फ़िरत न फ़रमाएँ और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के फ़िरिश्ते इन के जवाब में “आमीन” फ़रमाते हैं । (درمنثور، ۲/ ۲۲، الاحزاب، تحت الآیه ۵۶، ۶/ ۱۵۲)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ** फ़रमाते हैं : “मज़कूरा आयते करीमा (या’नी आयते दुरूद) सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सरीह ना’त है । इस में ईमान वालों को प्यारे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदो सलाम भेजने का हुक्म दिया गया है । लुत्फ़ की बात येह है कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने कुरआने करीम में काफ़ी अहकामात सादिर फ़रमाएँ । मसलन, नमाज़, रोज़ा, हज़ वगैरा वगैरा मगर किसी जगह येह इरशाद नहीं फ़रमाया कि येह काम हम भी करते हैं, हमारे फ़िरिश्ते भी करते हैं और ईमान वालो !

तुम भी किया करो, सिर्फ़ दुरूद शरीफ़ के लिये ही ऐसा फ़रमाया

गया है। इस की वजह बिल्कुल ज़ाहिर है, क्योंकि कोई काम भी ऐसा नहीं जो खुदा **عَزَّوَجَلَّ** का भी हो और बन्दे का भी। यकीनन **अल्लाह** तबारक व तआला के काम हम नहीं कर सकते और हमारे कामों से **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** बुलन्दो बाला है।”

अगर कोई काम ऐसा है जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का भी हो, मलाइका भी करते हों और मुसलमानों को भी उस का हुक्म दिया गया हो तो वोह सिर्फ़ और सिर्फ़ आकाए दो जहान **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर दुरूद भेजना है। जिस तरह हिलाले ईद पर सब की नज़रें जम्अ हो जाती हैं इसी तरह मदीने के चांद पर सारी मख़्लूक की और खुद ख़ालिक की भी नज़र है।

(शाने हबीबुर्रहमान, स. 183 मुलख़ब़सन)

बरादरे आ'ला हज़रत, शहनशाहे सुख़न, उस्तादे ज़मन हज़रते मौलाना हसन रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** अपने ना'तिय्या दीवान “जौके ना'त” में क्या ख़ूब इरशाद फ़रमाते हैं :

जिन के हाथों के बनाए हुवे हैं हुस्नो जमाल
ऐ हसीं ! तेरी अदा उस को पसन्द आई है

(जौके ना'त, स.175)

ऐसा तुझे ख़ालिक ने तरह दार बनाया
यूसुफ़ को तेरा त़ालिबे दीदार बनाया

(जौके ना'त, स.32)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰی مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा 'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मजकूरा आयते करीमा में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और फिरिश्तों के दुरूद भेजने का जिक्र करने के साथ साथ हमें भी **दुरूदो सलाम** भेजने का हुक्म दिया गया। ये बात जेहन नशीन रहे कि अगर्चे एक ही लफ़्ज़ की निस्बत **अल्लाह** तआला, फिरिश्तों और मोअमिनीन की तरफ़ की गई है लेकिन मन्सूबे इलय्या के ए'तिबार से इस का मा'ना मुख़लिफ़ है। चुनान्चे, इमाम बग़वी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفِي** फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** (**عَزَّوَجَلَّ**) का दुरूद है रहमत नाज़िल फ़रमाना, जब कि फिरिश्तों का और हमारा दुरूद दुआए रहमत करना है।”

(شرح السنة للإمام بغوي، كتاب الصلاة، باب الصلاة على النبي، ٢/ ٢٨٠)

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने मजकूरा आयते मुबारका में ये ख़बर दी है कि हम हर आन और हर घड़ी अपने प्यारे महबूब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर रहमतों की बारिश बरसाते हैं। यहां एक सुवाल ये पैदा होता है कि जब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** खुद ही रहमतें नाज़िल फ़रमा रहा है तो हमें **दुरूद शरीफ़** पढ़ने या'नी रहमत के लिये दुआ मांगने का क्यूं हुक्म दिया जा रहा है, क्यूंकि मांगी वोह चीज़ जाती है जो पहले से हासिल न हो, तो जब पहले ही से रहमतें उतर रही हैं, फिर मांगने का हुक्म क्यूं दिया ?

इस का जवाब येह है कि कोई सुवाली किसी दरवाजे पर मांगने जाता है तो घर वाले के माल व अवलाद के हक़ में दुआएं मांगता हुवा जाता है, या'नी सखी के बच्चे ज़िन्दा रहें, माल सलामत रहे, घर आबाद रहे वगैरा वगैरा। जब येह दुआएं मालिके मकान सुनता है तो समझ जाता है कि येह बड़ा मुहज़्ज़ब सुवाली है, भीक मांगना चाहता है मगर हमारे बच्चों की ख़ैर मांग रहा है, खुश हो कर

कुछ न कुछ झोली में डाल देता है। यहां हुक्म दिया गया : ऐ ईमान वालो ! जब तुम हमारे यहां कुछ मांगने आओ तो हम तो अवलाद से पाक हैं, मगर हमारा एक प्यारा हबीब है, मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की, उस के अहले बैत (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की और उस के अस्हाब की खैर मांगते हुवे, उन को दुआएं देते हुवे आओ तो जिन रहमतों की उन पर बारिश हो रही है उस का तुम पर भी छींटा डाल दिया जाएगा।

(शाने हबीबुर्रहमान, स. 184 मुलख़ब्रसन)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन छींटों में से एक छींटा यह है कि रिवायत में आता है :

مَنْ صَلَّى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاحِدَةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَمَلَائِكَتُهُ سَبْعِينَ صَلَاةً

या'नी जिस ने नबिय्ये करीम रऊफ़ुरहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **عَزَّوَجَلَّ** और उस के फ़िरिश्ते उस पर सत्तर रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं।”

(مسند احمد، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، ٢/ ١١٢، حديث: ٦٤٦٦)

दुरूद शरीफ़ पढ़ना दर अस्ल अपने परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह से मांगने की एक आ'ला तरकीब है।

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने मशहूरे ज़माना ना'तिया दीवान “हदाइके बख़्शिश शरीफ़”

में बारगाहे रिसालत में अर्ज़ करते हैं :

वोही रब है जिस ने तुझ को हम तन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया

(हदाइके बख्शाश, स. 363)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद
यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَانِ मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं : “इस
आयते मुक़द्दसा में मुसलमानों को ख़बरदार फ़रमा दिया गया
कि ऐ **दुरूदो सलाम** पढ़ने वालो ! हरगिज़ हरगिज़ येह
गुमान भी न करना कि हमारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर
हमारी रहमतें तुम्हारे मांगने पर मौकूफ़ हैं और हमारे महबूब
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तुम्हारे **दुरूदो सलाम** के मोहताज हैं। तुम
दुरूद पढ़ो या न पढ़ो, इन पर हमारी रहमतें बराबर बरसती
ही रहती हैं। तुम्हारी पैदाइश और तुम्हारा **दुरूदो सलाम**
पढ़ना तो अब हुवा। प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर रहमतों
की बरसात तो जब से है जब कि “जब” और “कब” भी न
बना था। “जहां”, “वहां”, “कहां” से भी पहले इन पर
रहमतें ही रहमतें हैं। तुम से **दुरूदो सलाम** पढ़वाना या’नी प्यारे
महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के लिये दुआए रहमत मंगवाना तुम्हारे
अपने ही फ़ाइदे के लिये है तुम **दुरूदो सलाम** पढ़ोगे तो इस में
तुम्हें कसीर अज़्रो सवाब मिलेगा।”

(शाने हबीबुर्रहमान, स. 184 मुलख़ब़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैखे तरीक़त, अमीरे

अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** इरशाद फ़रमाते हैं : “किसी गुनाह से जान छुड़ानी हो तो उस का तरीका येह है कि उस गुनाह के बारे में कुरआन व हदीस में जो मज़म्मत वारिद हुई नीज़ उस के करने पर जो अज़ाबात बयान हुवे, उन का मुतालाआ करें। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**। ग़ैर महसूस तरीके पर उस गुनाह का इलाज शुरूअ हो जाएगा। नीज़ किसी नेक अमल की आदत बनानी हो तो उस के फ़ज़ाइल और सवाब पर तवज्जोह करें, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दिल उस नेक अमल की तरफ़ माइल होगा।” आइये ! **दुरुदो सलाम** की आदत बनाने की निय्यत से इस के कुछ फ़ज़ाइल सुनते हैं।

इन्शामात की बरशात

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहदिसे देहल्वी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفِي** “जज़्बुल कुलूब” में इरशाद फ़रमाते हैं : “जब बन्दए मोमिन एक बार **दुरुद शरीफ़** पढ़ता है तो **अल्लाह** (**عَزَّوَجَلَّ**), उस पर दस बार रहमत भेजता है, (दस गुनाह मिटाता है) दस दरजात बुलन्द करता है, दस नेकियां अता फ़रमाता है, दस गुलाम आज़ाद करने का सवाब

(الترغيب والترهيب، كتاب الذكر والدعاء، الترغيب في كثرة الصلاة على النبي، ٢/ ٣٢٢، حديث: ٢٥٧٤)

और बीस ग़ज़वात में शुमूलिय्यत का सवाब अता फ़रमाता है।

(فردوس الاخبار، باب الحاء، ١/ ٣٤٠، حديث: ٢٤٨٤)

दुरुदे पाक सबबे क़बूलिय्यते दुआ है, (فردوس الاخبار، باب الصاد، ٢/ ٢٢، حديث: ٣٥٥٤)

इस के पढ़ने से शफ़ाअते मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** वाजिब हो जाती है।

(معجم الاوسط، من اسمه بكر، ٢/ ٢٧٩، حديث: ٣٢٨٥)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा वते इस्लामी)

मुस्तफ़ा ﷺ का बाबे जन्नत पर कुर्ब नसीब होगा, दुरूदे

पाक तमाम परेशानियों को दूर करने के लिये और तमाम हाजात की तक्मील के लिये काफ़ी है, (दर्मन्थोर, प २२, الاحزاب, تحت الآية ५६, १/६, ६०६, ملخصاً)
दुरूदे पाक गुनाहों का कफ़ारा है, (جلاء الافهام, ص २३२) सदके का काइम मक़ाम बल्कि सदके से भी अफ़ज़ल है।” (جذب القلوب, ص २२९)

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहल्वी मज़ीद फ़रमाते हैं : “दुरूद शरीफ़ से मुसीबतें टलती हैं, बीमारियों से शिफ़ा हासिल होती है, ख़ौफ़ दूर होता है, जुल्म से नजात हासिल होती है, दुश्मनों पर फ़तह हासिल होती है, **اَللّٰهُ** (عَزَّوَجَلَّ) की रिज़ा हासिल होती है और दिल में उस की महबूबत पैदा होती है, फ़िरिश्ते उस का ज़िक्र करते हैं, आ'माल की तक्मील होती है, दिलो जान, अस्बाब व माल की पाकीज़गी हासिल होती है, पढ़ने वाला खुश हाल हो जाता है, बरकतें हासिल होती हैं, अवलाद दर अवलाद चार नस्लों तक बरकत रहती है।” (जम्बुल कुलूब, स. 229)

दुरूद शरीफ़ पढ़ने से क़ियामत की हौलनाकियों से नजात हासिल होती है, सकराते मौत में आसानी होती है, दुन्या की तबाह कारियों से ख़लासी (नजात) मिलती है, तंगदस्ती दूर होती है, भूली हुई चीज़ें याद आ जाती हैं, मलाइका दुरूदे पाक पढ़ने वाले को घेर लेते हैं, दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला जब पुल

सिरात से गुज़रेगा तो नूर फैल जाएगा और वोह उस में साबित क़दम हो कर पलक झपकने में नजात पा जाएगा । अज़ीम तर सआदत येह है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का नाम हुज़ूर सरापा नूर, ताजदार मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में पेश किया जाता है, ताजदार मदीना, हबीबे क़िब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महबूबत बढ़ती है, महासिने नबविय्या صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दिल में घर कर जाती हैं और कसरते दुरूद शरीफ़ से साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का तसव्वुर ज़ेहन में क़ाइम हो जाता है और खुश नसीबों को दरजए कुर्बते मुस्तफ़वी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हासिल हो जाता है और ख़्वाब में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का दीदार फैज़ आसार नसीब होता है । रोज़े क़ियामत मदनी ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से मुसाफ़हा की सआदत नसीब होगी, फ़िरिश्ते मरहूबा कहते हैं और महबूबत रखते हैं, फ़िरिश्ते उस के दुरूद को सोने के क़लमों से चांदी की तख़्तियों पर लिखते हैं । और उस के लिये दुआए मग़फ़िरत करते हैं । और फ़िरिश्तगाने सय्याहीन (ज़मीन पर सैर करने वाले फ़िरिश्ते) उस के दुरूद शरीफ़ को मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बेकस पनाह में पढ़ने वाले और उस के बाप के नाम के साथ पेश करते हैं ।

(जज़्बुल कुलूब, स. 229)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَیْ مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

सआदते उज़मा

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहल्वी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي** “जब्बुल कुलूब” में मज़ीद फ़रमाते हैं : “दुरूदो सलाम पेश करने वाले के लिये सआदत दर सआदत येह है कि उसे सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ब नफ़से नफ़ीस जवाबे सलाम से मुशरफ़ फ़रमाते हैं। एक अदना गुलाम के लिये इस से बाला तर सआदत और कौन सी हो सकती है कि रहमते आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** खुद जवाबे सलाम की सूरत में दुआए ख़ैर व सलामती फ़रमाएं। अगर तमाम उम्र में सिर्फ़ एक बार भी येह शरफ़ हासिल हो जाए तो हज़ारहा शराफ़त व करामत और ख़ैर व सलामती का मूजिब है।” (जब्बुल कुलूब, स. 230)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में बकसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ सुन्न व मुस्तहब्बात की पाबन्दी का भी ज़ेहन दिया जाता है, नीज़ ज़िक्रो दुरूद की कसरत का भी आदी बनाया जाता है। इस के इलावा हम्दे खुदा **عَزَّوَجَلَّ** और ना'ते पाके मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बहारें भी हासिल होती हैं। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में रहते हुवे हम्दो ना'त की बरकात हासिल करने वालों पर बा'ज अवकात ऐसी करम नवाजी होती है कि सुनने वाले अश अश कर उठते हैं। चुनान्चे,

मुस्तफ़ा जाने रहमत का दीदार

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के मुकीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब कुछ इस तरह है कि खुश किस्मती से एक बार मुझे आशिकाने रसूल के हमराह सुन्नतों की तर्बियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआदत नसीब हुई। सफ़र के दौरान एक रोज़ शुरकाए क़ाफ़िला ने महफ़िले ना'त का इनड़काद किया जिस में आशिकाने रसूल ने नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महबबत में डूब कर पुर सोज़ अन्दाज़ में ना'ते रसूल पढ़ीं जिन्हें सुन कर मेरा दिल चोट खा गया और इसी सोज़ो गुदाज़ के आलम में मेरी आंख लग गई। ज़ाहिरी आंखें तो क्या बन्द हुई दिल की आंखें रोशन हो गई। क्या देखता हूं कि मेरे सामने सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, फैज़ गन्जीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** जल्वा फ़रमा हैं और मैं बिलक बिलक के रो रहा हूं। इतने में सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** को मुझ अदना उम्मती पर रहूम आ गया और आप ने अपने दामने रहमत को वसीअ़ फ़रमाया और मुझ इस्यां शिआर को आगोशे रहमत में जगह अता फ़रमाई। मुझे यूं लगा जैसे मुझे जहां भर का खज़ाना मिल गया हो। **الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** येह सब बहारें मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की वजह से मिलीं वरना कहां हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** और कहां मुझ सा आसी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें नबिय्ये करीम,
रऊफुरहीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सच्ची महब्वत अता फरमा,
जिन्दगी भर आप की सुन्नतों पर चलने और आप
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की जाते तय्यिबा पर कसरत से झूम झूम कर
दुरूदो सलाम के नजराने पेश करने की तौफीक अता फरमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फरमाने मुस्तफ़ा

हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने बारगाहे
रिसालत में ज़बान की तेज़ी की शिकायत की तो
फरमाया : तुम इस्तिग़फ़ार को लाज़िम क्यूं नहीं कर
लेते ? बेशक मैं दिन में सो बार इस्तिग़फ़ार करता हूं ।

(مسند احمد، ٩٠/٩٠، حديث: ٢٣٤٠٠)



बयान नम्बर : 2

शफ़ाअत वाजिब हो गई

हज़रते सय्यिदुना रुवैफ़अ़ बिन साबित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशад फ़रमाया : “जिस शख्स ने येह दुरूद शरीफ़ पढ़ा : “اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآزَلِهِ الْمُقْعَدِ الْمُقَرَّبِ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ” तो उस के लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई ।”

(मेजम क़िबिर, रूयिफ़ बिन थाबित الانصारी, २१/५, हदीथ : २२८०)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّيْ اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस दुरूद को याद कर लीजिये और उठते बैठते, चलते फिरते कसरत के साथ पढ़ते रहिये إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से रोज़े क़ियामत हम गुनाहगारों को रहूमतुल्लिल आलमीन, शफ़ीउल मुज़िबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत नसीब होगी । इस के इलावा दुरूदे पाक के बे शुमार फ़वाइद में से एक फ़ाइदा येह भी है कि दुरूदे पाक की बरकत से दुआएं क़बूल होती हैं जैसा कि

क़बूलिय्यते दुआ का परवाना

हज़रते सय्यिदुना फ़ुजाला बिन उबैद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहूमतुल्लिल आलमीन

ﷺ (मस्जिद में) तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक आदमी

आया, उस ने नमाज़ पढ़ी और फिर इन कलिमात से दुआ मांगी :

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي “या’नी ऐ **अल्लाह** मुझे बख़्श दे और

मुझ पर रहम फ़रमा ।” रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद

फ़रमाया : عَجَلْتُ أَيُّهَا الْمُصَلِّيُّ ऐ नमाज़ी तू ने जल्दी की ।

إِذَا صَلَّيْتَ فَقَعْدْتَ فَاحْمِدِ اللَّهَ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ وَصَلِّ عَلَى نَبِيِّكَ إِذْ دُعِيَ

बैठे तो (पहले) **अल्लाह** तआला की ऐसी हम्द कर जो उस के लाइक

है और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़, फिर इस के बा’द दुआ मांग ।

रावी का बयान है कि इस के बा’द एक और शख्स ने

नमाज़ पढ़ी, फिर (फ़ारिग़ हो कर) **अल्लाह** तआला की हम्द

बयान की और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ा तो

सरकारे मदीना ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

“أَيُّهَا الْمُصَلِّيُّ اذْعُ تُجِبْ ऐ नमाज़ी ! तू दुआ मांग, क़बूल की जाएगी ।”

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء في جامع الدعوات..... الخ، ۱۰ / ۲۹۰، حدیث: ۳۴۸۷)

बयान कर्दा रिवायत से मा’लूम हुवा कि अगर दुआ

मांगने वाला क़बूलियत का तालिब है तो उस पर लाज़िम व

ज़रूरी है कि दुआ के अव्वल व आख़िर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम

عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ा करे जैसा कि

दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल

मदीना की मतबूआ 318 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब

“फ़ज़ाइले दुआ” सफ़हा 68 पर वालिदे आ’ला हज़रत, रईसुल

मुतकल्लिमीन हज़रते अल्लामा मौलाना नकी अली ख़ान

عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ दुआ के आदाब बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

“अव्वलो आख़िर नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और इन के आलो अस्हाब पर दुरूद भेजे कि दुरूद **अल्लाह** तआला की बारगाह में मक्बूल है और परवर दगारे करीम इस से बरतर कि अव्वलो आख़िर को क़बूल फ़रमाए और वस्तु (दरमियान) को रद्द कर दे।”

ज़मीनो आस्मान के दरमियान मुअल्लक़ दुआ

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :

إِنَّ الدُّعَاءَ مَوْقُوفٌ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا يَصْعَدُ مِنْهُ شَيْءٌ حَتَّى تُصَلِّيَ عَلَى نَبِيِّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
या'नी दुआ ज़मीनो आस्मान के दरमियान रोकी जाती है जब तक तू अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद न भेजे बुलन्द नहीं हो पाती।”

(ترمذی، کتاب الوتر، باب ما جاء فی فضل الصلاة علی النبی..... الخ، ۲/ ۲۸، حدیث: ۴۸۶)

इस के हाशिये में मेरे आका आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इरशाद फ़रमाते हैं : “बल्कि बैहकी व अबुशशैख़ सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم से रावी, हुज़ुर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं :
الدُّعَاءُ مُحْجُوبٌ عَنِ اللَّهِ حَتَّى يُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآهْلِ بَيْتِهِ
तआला से हिजाब में है जब तक मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और उन के अहले बैत पर दुरूद न भेजा जाए।”

(کنز العمال، کتاب الأذکار، الباب الثامن فی الدعاء، ۳۵/ ۱، الجزء الثانی، حدیث: ۳۲۱۲)

ऐ अजीज ! दुआ ताइर है और दुरूद शहपर, ताइर बे पर क्या उड़ सकता है !

परन्दे के बाजू का सब से बड़ा पर कि जिस के बिगैर कोई परन्दा परवाज नहीं कर सकता उसे शहपर कहा जाता है । या'नी दुआ एक परन्दा और दुरूदे पाक उस के शहपर की मानिन्द है लिहाजा ऐसा परन्दा जिस का शहपर ही न हो वोह क्या उड़ेगा ऐसे ही वोह दुआ जो दुरूदे पाक से ख़ाली हो क्यूंकर मक्बूल हो सकती है ! (फ़ज़ाइले दुआ, स. 69)

लिहाजा हमें भी अपनी दुआ की इब्तिदा व इन्तिहा में नबिय्ये करीम ﷺ की ज़ाते तय्यिबा पर दुरूदे पाक पढ़ने की आदत बना लेनी चाहिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से हमारी दुआएं बारगाहे इलाही में मक्बूल होंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** तअला के मा'सूम फ़िरिश्ते ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत ﷺ के रौज़ए अन्वर पर हाज़िरी दे कर दुरूदो सलाम का तोहफ़ा पेश करने की सआदत हासिल करते हैं । चुनान्चे,

दरबारे नबी में फ़िरिश्तों की हाज़िरी

हज़रते सय्यिदुना इब्ने वहब **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ** से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना का'ब **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** उम्मुल मोअमिनीन

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की खिदमत में हाज़िर हुवे। लोगों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का तज़क़िरा किया तो हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “हर दिन सत्तर हज़ार फ़िरिशते उतरते हैं, जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्र शरीफ़ को घेर लेते हैं, अपने पर बिछा देते हैं और रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहते हैं, हत्ता कि जब शाम पाते हैं तो वोह चढ़ जाते हैं और इन की मिस्ल (दूसरे फ़िरिशते) उतरते हैं वोह भी इसी तरह करते हैं حَتَّى إِذَا انْشَقَّتْ عَنْهُ الْأَرْضُ خَرَجَ فِي سَبْعِينَ أَلْفًا مِّنَ الْمَلَائِكَةِ يَرْفُؤُهُ हत्ता कि जब ज़मीन खुलेगी तो हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सत्तर हज़ार फ़िरिशतों में निकलेंगे जो हुज़ूर को पहुंचाएंगे।”

(مشكاة، کتاب احوال القيامة و بدء الخلق، باب الكرامات، ۴۰۱/۲، حدیث: ۵۹۵۵)

इस रिवायत के तहत मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَان इरशाद फ़रमाते हैं : “ख़याल रहे कि हमेशा सारे ही फ़िरिशते हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेजते हैं मगर येह सत्तर हज़ार फ़िरिशते वोह हैं जिन को उम्र में एक बार हाज़िरिये दरबार की इजाज़त होती है। येह हज़रात हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बरकत हासिल करने को हाज़िरी देते हैं। जो फ़िरिशता एक बार हाज़िरी दे जाता है उसे दोबारा हाज़िरी का शरफ़ नहीं मिलता। सारी उम्र में सिर्फ़ चन्द घन्टे या'नी आधे

दिन की हाज़िरी नसीब होती है। **زَفَّ** से, **زَفَّ** के मा'ना हैं : महबूब को महबूब तक पहुंचाना, इसी से है ज़फ़ाफ़ (या'नी रुख़सती) कि इस में दुल्हा को दुल्हन के घर तक पहुंचाया जाता है, या'नी क़ियामत के दिन उस दिन की ड्यूटी वाले फ़िरिश्ते हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को दुल्हा की तरह अपने झुरमट में ले कर रब तअ़ला तक पहुंचाएंगे।” (मिरआत, 8/282 ता 283)

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** “हदाइके बख़्शिश शरीफ़” में इसी बात की तरफ़ इशारा करते हुवे क्या ख़ूब इरशाद फ़रमाते हैं :

सत्तर हज़ार सुब्ह हैं सत्तर हज़ार शाम
यू बन्दगिये जुल्फ़ो रुख़ आठों पहर की है
जो एक बार आए दोबारा न आएंगे
रुख़सत ही बारगाह से बस इस क़दर की है
तड़पा करें बदल के फिर आना कहां नसीब
बे हुक्म कब मजाल परन्दे को पर की है
ऐ वाए बे कसी तमन्ना कि अब उम्मीद
दिन को न शाम की है न शब को सहर की है

येह बदलियां न हों तो करोड़ों की आस जाए
और बारगाह मरहमते आम तर की है
मा 'सूमों को तो उम्र में सिर्फ एक बार, बार
आसी पड़े रहें तो सला उम्र भर की है

(हदाइके बख्शाश, स. 220)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिन हो या रात हमें अपने
मोहसिन व ग़मगुसार आका صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरुदो सलाम
के फूल निछावर करते ही रहना चाहिये । इस में हरगिज़ कोताही
नहीं करनी चाहिये । यूं भी सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के
हम पर बे शुमार एहसानात हैं । बतने सय्यिदा आमिना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا
से दुन्याए आबो गिल में जल्वा अफ़रोज़ होते ही आप
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सजदा फ़रमाया और होटों पर येह दुआ
जारी थी : رَبِّ هَبْ لِي أُمِّي يَا'नी परवर दगार ! मेरी उम्मत मेरे
हवाले फ़रमा । (फ़तावा रज़विyya, 30/712)

इमाम जुरक़ानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي नक़ल फ़रमाते हैं : “उस
वक़्त आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उंगलियों को इस तरह उठाए हुवे
थे जैसे कोई गिर्या व ज़ारी करने वाला उठाता है ।”

(ज़रक़ानि علی المواهب، ذکر تزویج عبدالله آمنه، 1/ 211)

हदीस शरीफ में है : आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया :

يَا مَّ هَانِي اِنَّ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ اخْبَرَنِي فِي مَنَامِي اَنَّ رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ قَدْ وَهَبَ لِي اُمَّتِي كُلَّهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
ऐ उम्मे हानी ! जिब्रील (عليه الصَّلوة والسلام) ने मुझे सोते में ख़बर दी
कि मेरा रब क़ियामत के दिन मेरी सारी उम्मत (का मुआमला)
मेरे सिपुर्द कर देगा ।” (तفسير مقاتل، ३२९/२)

رَبِّ هَبْ لِي اُمَّتِي कहते हुवे पैदा हुवे

हक़ ने फ़रमाया कि बख़्शा الصَّلوة والسلام

(क़बाइले बख़्शिश, स. 94)

इसी तरह रहमते आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** सफ़रे मे'राज
पर रवानगी के वक़्त उम्मत के आसियों को याद फ़रमा कर
आबदीदा हो गए, दीदारे जमाले खुदावन्दी **عَزَّوَجَلَّ** और खुसूसी
नवाज़िशत के वक़्त भी गुनहगाराने उम्मत को याद फ़रमाया ।
(بخاری، کتاب التوحید، باب قوله تعالی وکلم الله موسى تكليماً، ٤/٥٨١، حديث: ٧٥١٧ مفهوماً)
उम्र भर (वक़तन फ़ वक़तन) गुनाहगाराने उम्मत के लिये ग़मगीन रहे ।

(مسلم، باب دعاء النبي ﷺ لامته وبُكائه شفقة عليهم، ص ١٣٠، حديث: ٣٤٦ مفهوماً)

जब क़ब्र शरीफ़ में उतारा तो लबे जां बख़्श को जुम्बिश
थी, बा'ज़ सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** ने कान लगा कर सुना,
आहिस्ता आहिस्ता उम्मती (मेरी उम्मत) फ़रमाते थे ।

क़ियामत में भी इन्हीं के दामन में पनाह मिलेगी, तमाम
अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلوة والسلام** से (يا'नी
आज मुझे अपनी फ़िक्र है किसी और के पास चले जाओ) सुनोगे

और इस ग़मख़्वारे उम्मत के लब पर يَارَبِّ اُمِّي اُمِّي (ऐ रब ! मेरी उम्मत को बख़्श दे) का शोर होगा ।

(مسلم، باب ادنى اهل الجنة منزلة فيها، ص ۲۶، حديث: ۳۲۶)

लिहाज़ा महब्बत और अकीदत बल्कि मुरव्वत का भी येही तकाज़ा है कि ग़मख़्वारे उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद और दुरूदो सलाम से कभी ग़फ़लत न की जाए ।

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आदत कीजिये

(हदाइके बख़्शाश, स. 198)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे प्यारे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम से किस क़दर महब्बत फ़रमाते हैं कि हर वक़्त अपनी गुनाहगार उम्मत की बख़्शाश के लिये अपने रब के हुज़ूर इल्तिजाएं और दुआएं करते, यकीनन आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हम पर बे शुमार एहसानात हैं । मगर येह कब मुमकिन है कि हम उन का शुक्रिया अदा कर सकें । बस इतना ही करें कि उन पर दुरूदो सलाम के तोहफ़े भेजा करें या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हक़ में दुआएं रहमत किया करें, जैसे फुकरा सख़ी दाता को दुआएं देते हैं ।

शुक्र एक करम का भी अदा हो नहीं सकता
दिल तुम पे फ़िदा जाने हसन तुम पे फ़िदा हो

(जौके ना'त, स. 144)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

जो खुश नसीब लोग सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **दुरूदो सलाम** भेजने को वजीफा बना लेते हैं और लोगों को भी **दुरूदे पाक** पढ़ने की तरगीब दिलाते हैं, ज़िन्दगी भर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़मत व महब्बत का दर्स देते हैं और लोगों को इश्के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रंग में रंग देते हैं, जब वोह अहले दुरूद और अहले महब्बत इस दुन्याए फ़ानी से आलमे जावेदानी की तरफ़ सफ़र करते हैं तो उन पर कैसा करम होता है, आइये इस की एक झलक मुलाहज़ा फ़रमाइये ।

क़ब्र से मुश्क की खुशबू !

हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन सुलैमान अल जज़ूली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ ने **दुरूद शरीफ़** की बहुत ही जामेअ किताब बनाम “**दलाइलुल ख़ैरात**” लिखी है जो बहुत ही मशहूर और अहले महब्बत में काफ़ी मक़बूल है । चुनान्वे, साहिबे “**मतालेज़ल मसर्रात**” लिखते हैं : “येही वोह हज़रते शैख़ जज़ूली हैं जिन के मुतअल्लिक़ येह बात पायए सुबूत तक पहुंच चुकी है कि आप की क़ब्रे अन्वर से कस्तूरी (या’नी मुश्क) की खुशबू महकती थी क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ अपनी ज़िन्दगी में **दुरूदे पाक** बहुत ज़ियादा पढ़ा करते थे ।” (مطالع المسرات مترجم، ص ५२)

77 साल बा’द भी जिश्म सलामत

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के विसाल के सत्तर (77) साल के बा’द आप के जसदे मुबारक को मक़ामे “**सौस**” से “**मराकिश**”

में मुन्तकिल करने के लिये क़ब्र से निकाला गया तो आप का कफ़ने मुबारक भी बोसीदा न हुवा था। आप का जिस्मे मुबारक बिल्कुल सहीह व सालिम था। विसाल से क़ब्र आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने दाढ़ी मुबारक का ख़त बनवाया था, ऐसा लगता था जैसे आज ही ख़त बनवा कर लैटे हैं। बल्कि किसी ने इम्तिहानन आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के रुख़्सारे मुबारक को उंगली रख कर दबाया, जब उंगली उठाई तो उस जगह से ख़ून हट गया और वोह जगह सफ़ेद हो गई, जैसे ज़िन्दों का होता है। फिर थोड़ी देर के बा'द वोह जगह सुर्ख हो गई (या'नी जिस तरह ज़िन्दों के जिस्म में ख़ून रवां होता है और दबाने से यूं ही होता है) और येह सारी बहारें दुरूदे पाक की कसरत की बरकत से हैं।” (مطالع المسرات مترجم، ص ५२ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! फुज़ूल व बेकार बातों की आदत छुड़ा कर अपनी ज़बान को ज़िक्रो दुरूद, तिलावत व ना'त और दीगर अच्छी बातों का आदी बनाने के लिये हर दम तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये। अपने अपने शहरों में होने वाले हफ़्तावार इजतिमाआत में अव्वल ता आख़िर शिर्कत को अपना मा'मूल बना लीजिये। हर इस्लामी भाई अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि “मुझे अपनी और सारी दुन्या

के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।” اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **मदनी इन्आमात** पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **मदनी काफ़िलों** में सफ़र करना है। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** आशिकाने रसूल के साथ **मदनी काफ़िले** में सफ़र की बड़ी बरकतें हैं, बे शुमार अफ़राद जो गुनाहों भरी ज़िन्दगी बसर कर रहे थे **मदनी काफ़िले** की बरकत से ताइब हो कर पाबन्दे सलातो सुन्नत बन गए। चुनान्वे,

मार्शल आर्ट का माहिः मुबल्लिग़ कैसे बना ?

सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : **दा 'वते इस्लामी** के मदनी माहोल में आने से क़ब्ल मैं बिगड़े हुवे किरदार का मालिक था। झूट, ग़ीबत, चुगुली जैसे गुनाह मेरी नोके ज़बान पर रहते और बद निगाही करना मेरे रोज़ के मा'मूलात में शामिल था। मैं **मार्शल आर्ट** सीखा हुवा था जिस के बल बूते पर लोगों से ख़्वाह मख़्वाह झगड़ा मौल लेता। हर नए फ़ेशन को अपनाना मेरा वतीरा था। आह ! नमाज़ों से इस क़दर दूरी थी कि मुझे येह भी मा'लूम न था कि किस नमाज़ की कितनी रकअतें होती हैं। आख़िरे कार इस्यां के दिन ख़त्म हुवे, रहमत का दर खुला और मेरी किस्मत यूं चमकी कि मेरी मुलाकात अपने एक दोस्त से हुई जो तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा 'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गए थे। उन्होंने ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझे **मदनी काफ़िले** में सफ़र करने

की दा'वत दी, दोस्त की बात न टाल सका और हाथों हाथ तीन दिन के मदनी काफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। मदनी काफ़िले में आशिक़ाने रसूल की सोहबत की बरकत से मुझे मक्सदे हयात मा'लूम हुवा तो अपने गुनाहों पर नदामत होने लगी कि ज़िन्दगी का तवील हिस्सा मैं ने **اَللّٰهُ** की नाफ़रमानी में गुज़ार दिया ! मेरी आंखों से ग़फ़लत का पर्दा हट चुका था, मेरी क़ल्बी कैफ़ियत ही बदल गई, मैं जब भी बयान सुनता मेरी आंखों से सैले अशक़ रवां हो जाता हत्ता के मदनी काफ़िले की वापसी के वक़्त भी मुझ पर रिक्कत तारी थी। चन्द दिनों बा'द मुझे अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** की ज़ियारत नसीब हुई, देखते ही उन की महबूबत मेरे दिल में घर कर गई, मैं हाथों हाथ आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** से मुरीद हो कर अत्तारी हो गया। तमाम गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में ज़िन्दगी गुज़ारने लगा। येह बयान देते वक़्त मैं डिवीज़न मुशावरत में मदनी काफ़िला ज़िम्मेदार की हैसियत से मदनी कामों की धूमें मचाने में मसरूफ़ हूँ।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **اَللّٰهُ** हमें नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और तादमे हयात दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहने की सआदत नसीब फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



बयान नम्बर : 3

सारी मख्लूक की आवाज सुनने वाला फिरिश्ता

सरकारे मदीना, राहते कल्बो सीना, फैज गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने शफ़ाअत निशान है : **بِإِذْنِ اللَّهِ وَكُلُّ بِقَرْنِي مَلَكًا** : मेरी कब्र पर मुक़रर फ़रमाया है । **أَعْطَاهُ اسْمَاعَ الْخَلَائِقِ** जिसे तमाम मख्लूक की आवाजें सुनने की ताक़त अता फ़रमाई है, **فَلَا يُصَلِّي عَلَى أَحَدٍ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِلَّا أَبْلَغْنِي بِاسْمِهِ وَاسْمِ أَبِيهِ هَذَا فَلَانُ بْنُ فَلَانٍ قَدْ صَلَّى عَلَيْكَ** पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है । कहता है, **فुलां बिन फुलां** ने आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे पाक** पढ़ा है ।

(مجمع الزوائد، كتاب الادعية، باب فى الصلاة على النبى الخ، ٢٥١/١٠، حديث: ١٧٢٩١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फिरिश्ते की कुव्वते समाअत

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ **दुरूद शरीफ** पढ़ने वाला किस क़दर बख़्तवर है कि उस का नाम बमअ वलदिय्यत बारगाहे रिसालत में पेश किया जाता है । यहां येह **नुक्ता** भी इन्तिहाई ईमान अफ़रोज़ है कि क़ब्रे मुनव्वर **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** पर हाज़िर फिरिश्ते

को इस क़दर ज़ियादा **कुव्वते समाअत** दी गई है कि वोह दुन्या

के कोने कोने में एक ही वक्त के अन्दर **दुरूद शरीफ** पढ़ने वाले लाखों मुसलमानों की इन्तिहाई धीमी आवाज़ भी सुन लेता है और उसे **इल्मे ग़ैब** भी अता किया गया है कि वोह दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम बल्कि उन के वालिद साहिबान तक के नाम जान लेता है जब खादिमे दरबारे रिसालत की **कुव्वते समाअत और इल्मे ग़ैब** का येह हाल है तो मक्के मदीने के ताजदार, महबूबे परवर दगार **ﷺ** के इख्तियारात **व इल्मे ग़ैब** की क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने गुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फरयाद सुन कर बिइजिल्लाहि तअ़ाला इमदाद फ़रमाएंगे !

**फ़रयाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो**

(हदाइके बख़िश, स. 130)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन **अल्लाह** तअ़ाला ने अपने प्यारे हबीब **ﷺ** को ग़ैब का इल्म अता फ़रमाया है जभी तो आप अपने हर उम्मती के हालात से बा ख़बर हैं और वक्तन फ़ वक्तन उन की दादरसी भी फ़रमाते रहते हैं। इस के इलावा भी **अल्लाह** तबारक व तअ़ाला ने अपने प्यारे नबी **ﷺ** को बे शुमार मो'जिज़ात से नवाज़ा है अगर हम उम्र भर भी आप **ﷺ** के अवसाफ़ व कमालात नीज़ आप **ﷺ** पर **दुरूदो सलाम** पढ़ने के फ़ज़ाइल बयान करते और सुनते रहें तो येह ख़त्म न हों। मेरे आका

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत,
मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ बारगाहे रिसालत
में अर्ज करते हैं :

तेरे तो वस्फ़ ऐबे तनाही से हैं बरी
हैरां हूं मेरे शाह मैं क्या क्या कहूं तुझे
लेकिन रज़ा ने ख़त्मे सुख़न इस पे कर दिया
ख़ालिफ़ का बन्दा ख़ल्फ़ का आक्रा कहूं तुझे ।

(हदाइके बख़्शिश, स. 175)

लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि ख़ूब ख़ूब हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام
के फ़ज़ाइल व कमालात बयान करते रहें और इन से हासिल होने
वाली बरकात से मुस्तफ़ीज़ होते रहें । इन बरकतों को हासिल
करने का एक ज़रीआ आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जाते तय्यिबा
पर **दुरूदे पाक** पढ़ना भी है । आइये ! हम भी **दुरूदे पाक** के
कुछ फ़ज़ाइल सुनते हैं और इसे अपने रोज़ो शब का वज़ीफ़ा बनाने
की निय्यत भी करते हैं ।

आश्मान की मरिजद का इमाम

हज़रते सय्यिदुना हफ़्स बिन अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ का
बयान है कि मैं ने इमामुल मुहद्दीसीन हज़रते सय्यिदुना अबू
जुरआ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को उन की वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा कि
वोह पहले आस्मान पर फ़िरिश्तों को नमाज़ पढ़ा रहे हैं । मैं ने
दरयाफ़्त किया : ऐ अबू जुरआ ! कौन सी इबादत के सिले में

आप को येह ए'जाज़ व इकराम मिला है। उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने अपने हाथ से दस लाख हदीसों लिखी हैं और हर हदीस में **عَنِ النَّبِيِّ** के बा'द **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** लिखा है और तुम जानते हो कि नबिय्ये रहमत **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने आलीशान है कि जो मुसलमान एक मरतबा मुझ पर **दुरूद शरीफ़** भेजता है तो **अल्लाह** तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। येह **दुरूद शरीफ़** की बरकत है कि खुदावन्दे आलम ने मुझे फ़िरिश्तों का इमाम बना दिया है।”

(شرح الصدور، باب فى نبذ من اخبار من رأى الموتى فى منامه..... الخ، ص : ٢٩٤ ملخصاً)

एक शाइर ने **दुरूदो सलाम** के हवाले से क्या खूब कहा है :

नज़र का नूर, दिलों के लिये करार **दुरूद**
अक़ीदतों का चमन, रूह का निखार **दुरूद**
चरागे यासे मुसलसल के घुप अन्धेरो में
ग़मों की धूप में है अब्बे सायादार **दुरूद**
दुरूद रूह की बालीदगी का सामां है
जबीने शौक़ को देता है इक निखार **दुरूद**
दुरूद नग़मए ना'ते नबी का जीना है
सदा बहार दुआओं का है वकार **दुरूद**
गुलाब ज़ेहन के पर्दों पे खिलने लगते हैं
ज़बां पे जब भी मेरी आता है मुश्कबार **दुरूद**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से जहां
हज़रते सय्यिदुना अबू जुरआ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की अज़मत व बुजुर्गी

ज़ाहिर होती है वहीं येह दर्स भी मिलता है कि जिस तरह ज़बान से दुरूदो सलाम पढ़ने का बे शुमार अज़्रो सवाब है इसी तरह नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के नामे नामी इस्मे गिरामी के साथ दुरूदो सलाम का लिखना भी मूजिबे बरकात है। चुनान्चे, इस ज़िम्न में चन्द रिवायात सुनिये और दुरूदे पाक लिखने की आदत बनाइये।

फ़िरिश्ते सुब्हो शाम दुरूद भेजते रहेंगे

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुहम्मद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के कलाम से मौकूफ़न मरवी है : “जिस ने किताब में रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद लिखा, जब तक आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का नाम किताब में रहेगा फ़िरिश्ते उस शख़्स पर सुब्हो शाम दुरूद भेजते रहेंगे।”

(القول البديع، الباب الخامس فى الصلاة عليه فى اوقات مخصوصة، ص २१)

दो उंगलियों के सबब मग़फ़िरत हो गई

हज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़ल अलकिन्दी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي** को इन्तिक़ाल के बा'द ईसा बिन अब्बाद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد** ने ख़्वाब में देख कर दरयाफ़्त किया कि हक़ तआला ने क्या सुलूक किया ? उन्होंने ने जवाब दिया, मेरे हाथ की सिर्फ़ दो उंगलियों ने मुझे नजात दिलाई है। हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन अब्बाद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد** ने तअज़्जुब व हैरानी से पूछा कि इस का क्या मतलब है ? उन्होंने ने फ़रमाया : “बात येह है कि जब मैं किताब में नबिय्ये

अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का नामे मुबारक लिखता था तो आप

“صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्मे गिरामी के बा’द

लिखा करता था।”

(القول البديع، الباب الخامس فى الصلاة عليه فى اوقات مخصوصة، ص ६८)

हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन अली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوٰى** ने अपने वालिद से रिवायत किया कि ख़्बाब में एक मुहद्दिस को देख कर दरयाफ़्त किया कि हक़ त़अ़ाला ने क्या सुलूक किया ?

उन्हों ने ज़वाब दिया कि मुझे बख़्श दिया गया। पूछा किस सबब से ? फ़रमाया : “जब मैं नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का नामे मुबारक लिखता था तो आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के इस्मे गिरामी के बा’द दो उंगलियों से **“صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** लिखा करता था।” (القول البديع، الباب الخامس فى الصلاة عليه فى اوقات مخصوصة، ص ६८)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा’लूम हुवा कि दुरूदे पाक पढ़ने और लिखने वाले का बहुत बड़ा मक़ाम है। अदब का तकाज़ा येही है कि सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के नामे अक़दस के साथ **“صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ज़रूर लिखे और सिर्फ़ लिखने ही पर इक्तिफ़ा न करे बल्कि ज़बान से भी दुरूद शरीफ़ पढ़े।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّد

दुरूद शरीफ़ लिखना वाजिब है

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द 1 सफ़हा 534 पर है : “जब सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का नामे अक्दस लिखे तो दुरूदे पाक ज़रूर लिखे कि बा'ज उ-लमा के नज़दीक इस वक्त दुरूद शरीफ़ लिखना वाजिब है।” (बहारे शरीअत, 1/534)

(در المختار و رد المحتار، کتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، مطلب: نصّ العلماء على استحباب الصلاة... إلخ، 2/281)

“ص” या صَلَّعُمْ लिखना सख़्त हराम है

अकसर लोग आज कल दुरूद शरीफ़ के बदले **صَلَّعُمْ** और **ص** लिखते हैं। येह नाजाइज़ व सख़्त हराम है। यूंही **رَضِيَ** की जगह **رَضَّ** और **رَضَّ** की जगह **رَضَّ** लिखते हैं येह भी न चाहिये। जिन लोगों के नाम मुहम्मद, अहमद, अली, हसन, हुसैन वगैरा होते हैं। उन नामों पर **ص**, **ص**, **ص** बनाते हैं येह भी ममनूअ है कि इस जगह येह शख्स मुराद है। इस पर दुरूद का इशारा क्या मा'ना ? (फ़तावा रज़विyyा, जि.23/387 व बहारे शरीअत, 1/534)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى के नामे मुबारक के साथ भी **عَزَّوَجَلَّ** या **عَزَّوَجَلَّ** पूरा लिखें। आधे जीम (ج) पर इक्तिफ़ा न करें।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल कैसा नाजुक दौर है। फुजूल मजामीन में तो हज़ारहा सफ़हात सियाह कर दिये जाते

हैं लेकिन जब मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का प्यारा इस्मे गिरामी आता है। लिखने वाले भाई “صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” की मुख़्तसर इबारत लिखने में सुस्ती कर जाते हैं। इमामे अहले सुन्नत अशिके माहे रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की ख़िदमत में इस्तिफ़ता पेश हुवा। मुस्तफ़ती ने सुवाल में صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जगह “صَلَّم” लिख दिया था। आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस पर तम्बीह फ़रमाई। चुनान्वे, “फ़तावा अफ़्रीका” में तहरीर है :

सुवाल में صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जगह “صَلَّم” लिखा है और येह सख़्त नाजाइज़ है। येह बला अ़वाम तो अ़वाम 14 वीं सदी के बड़े बड़े अकाबिर व फुहूल कहलाने वालों में भी फैली हुई है, कोई “صَلَّم” लिखता है। कोई “صلّم” कोई फ़क़त “” कोई “” कोई “” के बदले “عم” या “ع” एक ज़रा सियाही या एक उंगल काग़ज़ या एक सेंकड वक़्त बचाने के लिये कैसी कैसी अज़ीम बरकात से दूर पड़ते और महरूमि व बे नसीबी का डांडा पकड़ते हैं।

(फ़तावा अफ़्रीका, स. 50)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

“صَلَّم” के मूजिद का हाथ काटा गया

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई

फ़रमाते हैं : “पहला शख्स जिस ने दुरूद शरीफ़

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

का इख़्तिसार ईजाद किया उस का हाथ काट दिया गया ।”

(تدريب الراوى للسيوطى، ص ۲۸۴) **अब्बाह अवब** (عَزَّوَجَلَّ) कितना

महब्बत भरा दौर था कि “صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” का मुखफफ़फ़

(short cut) ईजाद करने वाले का हाथ ही काट दिया गया । क्यूं

न हो कि जो सिर्फ़ माल की चोरी करता है उस का हाथ काटा जाता

है तो उस बदनसीब ने तो माल नहीं बल्कि अज़मते मुस्तफ़ा

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की चोरी करने की कोशिश की थी । और जिस

के दिल में अज़मते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रासिख़ है वोह ब

ख़ूबी समझता है कि माल की चोरी से शाने मुस्तफ़ा

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में चोरी करना ज़ियादा संगीन जुर्म है । और

मज़कूरा बाला सज़ा फिर भी कम है लेकिन अफ़सोस कि आज

कल तो येह चोरी अ़ाम हो चुकी है । हर किताब, हर रिसाले, हर

अख़बार, “وَصَلِّ” और “” से भरा पड़ा है । अब नौबत लिखने ही

की हद तक नहीं रही बल्कि अब तो लोगों की ज़बान पर भी

“صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” की बजाए “وَصَلِّ” ही सुनाई देने लगा है !

याद रखिये ! “وَصَلِّ” एक मुहमल कलिमा है । इस के

कोई मा’ना नहीं बनते । (फ़तावा अफ़्रीका, स. 50 मुलख़सन) लिहाज़ा

मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सच्ची महब्बत रखने

वाले इस्लामी भाइयो ! जल्द बाज़ी से काम न लिया करें । पूरा

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लिखने और पढ़ने की आदत डालें ।

صَلِّم लिखना महरूमों का काम है

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अहमद बिन शहाबुद्दीन बिन हज़र हैतमी मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَیْ “फ़तावा हदीसिया” में लिखते हैं :
 رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَكَذَا اسْمُ رَسُولِهِ بِأَنْ يُكْتَبَ عَنْهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَدْ جَرَتْ عَادَةُ الْخَلْفِ كَالسَّلَفِ
 “صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” के इस्मे गिरामी के बा’द
 लिखा जाए कि यूं ही तमाम सलफ़े सालिहीन का तरीका चला आ रहा है ।”
 وَلَا يُخْتَصَرُ بِكِتَابَتِهَا بِنَحْوِ “صَلِّم” فَإِنَّهُ عَادَةُ الْمَحْرُومِينَ
 लिखते वक़्त इस को इख़्तिसार कर के “وَصَلِّم” न लिखा जाए कि येह
 महरूम लोगों का काम है ।” (الفتاوى الحديثية، مطلب في بيان كيفية وضع الكتب، ص ۳۰۶)

और जो खुश नसीब लोग नामे मुबारक के साथ दुरूदे पाक लिखना पढ़ना अपनी आदत बना लेते हैं वोह इस की बरकात भी हासिल करते हैं ।

“وَصَلِّم” पर चालीस नेकियां

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ अपने मुतअल्लिक़ वाकिआ बयान फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं ने ख़्बाब में मदनी सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदार किया ।
 सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “ऐ अबू सुलैमान ! तू मेरा नाम लेता है और इस पर दुरूद शरीफ़ भी पढ़ता है
 “وَصَلِّم” क्यूं नहीं कहता ? येह चार हर्फ़ हैं और हर हर्फ़ पर दस नेकियां मिलती हैं ।”

(القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص ۳۲۳)

हो) दुरूद शरीफ है मगर इस में सलाम शामिल नहीं है जब कि
 (या'नी उन पर **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى** " (या'नी उन पर **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى** के दुरूदो
 सलाम हों) में दुरूदो सलाम दोनों शामिल हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गौर फ़रमाइये ! सिर्फ़
 लफ़्जे "وَسَلِّمْ" तर्क करने पर हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ख़्वाब में
 तशरीफ़ ला कर इज़हारे नाराज़ी फ़रमाएं तो जो ग़ाफ़िल और सुस्त
 लोग पूरा ही "وَسَلِّمْ" ग़ाइब कर के सिर्फ़ "وَسَلِّمْ" या "وَسَلِّمْ"
 पर गुज़ारा करते हैं उन से सरकार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** कितना
 नाराज़ होंगे ? **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى** हमें दुनिया, क़ब्र और महशर, हर
 जगह अपने प्यारे हबीब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की नाराज़ी से बचाए।

नज़्ज़ में, गोर में, मीज़ां पे, सरे पुल पे कहीं
 न छुटे हाथ से दामाने मुअल्ला तेरा

(हदाइके बख़्शिश, स. 13)

ख़्वाब व बीमार व ख़तावार गुनहगार हूं मैं
 राफ़ेअ व नाफ़ेअ व शाफ़ेअ लक़ब आका तेरा
 किस का मुंह तकिये, कहां जाइये, किस से कहिये !
 तेरे ही क़दमों पे मिट जाए येह पाला तेरा

(हदाइके बख़्शिश, स. 17)

ऐ हमारे प्यारे **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى** हमें नबिय्ये पाक
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे मुबारक के साथ दुरूदे पाक पढ़ने की
 तौफ़ीक़ अता फ़रमा। **اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**



बयान नम्बर : 4

जन्नत का अनोखा फल

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शरे खुदा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم** से रिवायत है कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने जन्नत में एक दरख़्त पैदा फ़रमाया है जिस का फल सेब से बड़ा, अनार से छोटा, मख़खन से नर्म, शहद से भी मीठा और मुश्क से ज़ियादा खुशबूदार है। उस दरख़्त की शाखें तर मोतियों की, तने सोने के और पत्ते ज़बरजद के हैं। उस दरख़्त का फल सिर्फ़ वोही खा सकेगा जो सरकारे वाला तबार, हबीबे परवर दगार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ेगा।

(الحاوی للفتاوی للسیوطی، ۳۸/۲)

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का हम मुफ़्लिस क्या मौल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है

(हदाइके बख़्शिश, स. 186)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दुरूदो सलाम पढ़ने वाला मुसलमान किस क़दर खुश नसीब है कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने जन्नत में उस के लिये किस क़दर इन्आमो इकराम तय्यार कर रखे हैं। और हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते

गिरामी पर पड़ा जाने वाला दुरूदे पाक **अल्लाह** तआला के मा'सूम फ़िरिश्ते बारगाहे रिसालत में पेश करते हैं। चुनान्वे,

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **إِنَّ لِلَّهِ مَلَائِكَةً سَيَّاحِينَ فِي الْأَرْضِ يُبَلِّغُونِي مِنْ أُمَّتِي السَّلَامَ** या'नी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के कुछ फ़िरिश्ते ज़मीन में सैर व सियाहत करते हैं जो मेरी उम्मत का सलाम मुझ तक पहुंचाते हैं।”

(مشکوٰۃ، کتاب الصلوة، باب الصَّلَاةِ عَلَى النَّبِيِّ وَفَضْلُهَا، ١/٨٩، حديث: ٩٢٤)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْفَى** इस हदीसे पाक के तहत इरशाद फ़रमाते हैं : “या'नी उन फ़िरिश्तों की येही ड्यूटी है कि वोह आस्तानए अलिय्या तक उम्मत का सलाम पहुंचाया करें। यहां चन्द बातें काबिले ख़याल हैं।”

(1) एक येह कि फ़िरिश्ते के दुरूद पहुंचाने से येह लाज़िम नहीं आता कि हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ब नफ़से नफ़ीस हर एक का दुरूद न सुनते हों, हक़ येह है कि सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** हर दूर व करीब के दुरूद ख़्वाह का दुरूद सुनते भी हैं और दुरूद ख़्वाह की इज़्ज़त अफ़ज़ाई के लिये फ़िरिश्ते भी बारगाहे अली में दुरूद पहुंचाते हैं ताकि दुरूद की बरकत से हम गुनहगारों का नाम आस्तानए अलिय्या में फ़िरिश्ते की ज़बान से अदा हो। हज़रते सय्यिदुना सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने तीन मील से च्यूटी की आवाज़ सुनी तो हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** हम गुनहगारों की फ़रयाद

क्यूं न सुनेंगे। देखो रब तअ़ाला हमारे आ'माल देखता है फिर भी उस की बारगाह में फिरिश्ते आ'माल पेश करते हैं।

(2) दूसरे येह कि येह फिरिश्ते ऐसे तेज़ रफ़्तार हैं कि इधर उम्मती के मुंह से दुरूद निकला उधर उन्होंने ने सब्ज़ गुम्बद में पेश किया। अगर कोई एक मजलिस में हजार बार दुरूद शरीफ़ पढ़े तो येह फिरिश्ता उस मजलिस और मदीनए तय्यिबा के हजार चक्कर लगाएगा, येह न होगा कि दिन भर के दुरूद थैले में जम्अ कर के डाक की तरह शाम को वहां पहुंचाए।

(3) तीसरे येह कि **अब्बाह** तअ़ाला ने फिरिश्तों को हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का खुदामे आस्ताना बनाया है। हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के खिदमतगार इन फिरिश्तों का सा रुत्बा रखते हैं।

ख़याल रहे कि हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** एक आन में बे शुमार दुरूद ख़वानों की तरफ़ यक्सां तवज्जोह रखते हैं, सब के सलाम का जवाब देते हैं। जैसे सूरज बयक वक़्त सारे आलम पर तवज्जोह कर लेता है ऐसे ही आस्माने नबुव्वत के सूरज **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** एक वक़्त में सब का दुरूदो सलाम सुन भी लेते हैं और उस का जवाब भी देते हैं लेकिन इस में आप को कोई तकलीफ़ भी महसूस नहीं होती। क्यूं न हो कि मज़हरे ज़ाते किब्रिया हैं, रब तअ़ाला बयक वक़्त सब की दुआएं सुनता है।

(मिरआत, 2/100)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

वाइज पर दुखदो सलाम के सबब करम बालाउ करम

हजरते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار) को इन्तिकाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देखा और पूछा :
 “**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?”
 जवाब दिया कि मेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** ने मुझ से सुवाल किया :
 “तू मन्सूर बिन अम्मार है ?” मैं ने अर्ज की : हां या रब्बल आलमीन (جَلَّ جَلَالُهُ) फिर फ़रमाया : “तू ही है जो लोगों को दुन्या से नफ़रत दिलाता था और खुद दुन्या की तरफ़ राग़िब था ।”
 मैं ने अर्ज की : “या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** वाकेई बात तो येही है, लेकिन जब भी मैं ने किसी इजतिमाअ में बयान शुरूअ किया तो पहले तेरी हम्दो सना की, इस के बा'द तेरे हबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे पाक** पढ़ा फिर इस के बा'द लोगों को वा'ज व नसीहत की ।” मेरी इस अर्ज के बा'द **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत जोश में आई और इरशाद हुवा :
 يَا نَبِيَّ اللَّهِ كَرِّبْنَا فِي سَمَوَاتِي يُمَجِّدُنِي بَيْنَ مَلَائِكَتِي كَمَا يُمَجِّدُنِي بَيْنَ عِبَادِي
 या'नी ऐ फ़िरिश्तो ! इस के लिये आस्मानों में मिम्बर रखो ताकि जैसे येह दुन्या में बन्दों के सामने मेरी बुजुर्गी बयान करता था आस्मानों में येह फ़िरिश्तों के सामने मेरी अज़मत बयान करे ।”

(القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص ۲۵۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन वोह इस्लामी

भाई बहुत खुश नसीब हैं जो दर्सो बयान करने में मसरूफ़ रहते हैं। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर तहरीक दा 'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल में येह मा'मूल है कि जब भी कोई मुबल्लिग़ सुन्नतों भरे दर्स या बयान का आगाज़ करता है तो अव्वलन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
اَمَّا بَعْدُ اَفَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता है जिस में पहले हम्दे बारी तअाला और फिर **दुरूदो सलाम** है, इस के बा'द हाज़िरीन को **दुरूदो सलाम** के चार सीगे पढ़ाए जाते हैं नीज़ **दुरूदो सलाम** की फ़ज़ीलत बता कर हाज़िरीन से दुरूद पढ़वाया जाता है बल्कि बयान के दौरान भी वक़्तन फ़ वक़्तन **“صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب”** की सदाएं लगा कर **दुरूदे पाक** पढ़ने की तरगीब भी दी जाती और पढ़वाया भी जाता है।

जो खुश नसीब इस्लामी भाई **सुन्नतों भरा बयान** करने या दर्स देने की सआदत हासिल करते हैं उन की ख़िदमत में अर्ज़ है कि बा'ज़ अवकात तेज़ी से अदाएगी की बिना पर **दुरूदे पाक** के अल्फ़ाज़ चब कर अदा होते हैं, इस तरह अदाएगी से **दुरूदे पाक** की बरकात से महरूमी तो होती ही है, साथ साथ लोगों को शदीद बदज़न होते भी देखा गया है। लिहाज़ा सुन्नतों भरा बयान

करते या दर्स देते हुवे जब भी **दुरूदे पाक** पर पहुंचने लगें तो फ़ौरन

जेहन बना लें कि अब रफ़्तार आहिस्ता कर के दुरुस्त तरीके से दुरूद शरीफ़ अदा करना है। इस तरह पहले ही जेहनी तौर पर तय्यार रहने की बरकत से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बहुत जल्द सहीह अदाएगी पर कुदरत हासिल हो जाएगी। इस मक़सद के लिये किसी इस्लामी भाई को खुद पर मुहसिब मुक़र्र करना भी मुफ़ीद रहेगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हमें भी चाहिये कि जब भी हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** का नामे पाक सुनें तो आहिस्ता आहिस्ता दुरुस्त तलफ़फ़ुज़ के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ें। इस के इलावा जब भी मौक़अ मिले तो उठते बैठते चलते फिरते **दुरूदे पाक** पढ़ते रहा करें कि इस की बरकत से रोज़े क़ियामत जब कि अर्शे इलाही के साए के इलावा कोई साया न होगा, सूरज सवा मील के फ़ासिले से आग बरसा रहा होगा, नफ़सी नफ़सी का अ़ालम होगा तो उस वक़्त कसरत से **दुरूदो सलाम** पढ़ने वाले खुश नसीब मुसलमान को सायए अर्श नसीब होगा। चुनान्वे,

अर्श का साया किस को मिलेगा ?

सरकारे मदीना **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** इरशाद फ़रमाते हैं : **ثَلَاثَةٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَحْتَ عَرْشِ اللَّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ** क़ियामत के रोज़ जब कि **اَبُوْاَحْمَد** **عَزَّوَجَلَّ** के अर्श के सिवा कोई साया नहीं होगा तीन शख्स **اَبُوْاَحْمَد** **عَزَّوَجَلَّ** के अर्श के साए में होंगे। अर्ज किया गया : “या रसूलल्लाह **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** वोह कौन लोग होंगे ?”

इरशाद फ़रमाया :

(1) या'नी वोह शख्स जो मेरे किसी उम्मीती की परेशानी दूर कर दे ।

(2) وَمَنْ أَحْيَا سُنَّتِي मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला ।

(3) وَمَنْ أَكْثَرَ الصَّلَاةِ عَلَيَّ मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला ।
(بستان الواعظین لابن الجوزی، ص ۲۶۰، ۲۶۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूदो सलाम के फैज़ान को अ़म करना तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी का तुर्रए इम्तियाज़ है, इस मदनी माहोल से मुन्सलिक हर मुबल्लिग़ अपने दर्सों बयान की इब्तिदा दुरूदो सलाम से करता है, बा'ज़ अवकात मदनी माहोल से वाबस्ता इस्लामी भाइयों पर रब्बे काइनात **عَزَّوَجَلَّ** के ऐसे ऐसे इन्आमात होते हैं कि अक्लें हैरान रह जाती हैं । चुनान्वे,

मोतिया जाता रहा

हैदराबाद के अ़लाके उ़समानाबाद (गौशाला) के रिहाइश पज़ीर दा'वते इस्लामी से वाबस्ता इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब पेशे ख़िदमत है : मेरे वालिद साहिब जो पाकिस्तान आर्मी (फ़ौज) में मुलाज़िम थे उन्हें आंख में **मोतिया** उतर आया जिस की वजह से वोह आर्मी मेडीकल बोर्ड (सिहहत की ख़राबी की वजह से रिटायर) हो चुके थे यकीनन आंखें **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की अ़ता कर्दा बहुत बड़ी ने'मत हैं इस की क़द्र तो वोही बता सकता है जो बीनाई से महरूम है । मैं ने सि. 1425 हि. ब मुताबिक़ सि. 2004 ई. में अपने वालिदे मोहतरम को बलूचिस्तान

में होने वाले दा'वते इस्लामी के सूबाई सत्ह के सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत की दा'वत पेश की, उन्होंने ने दा'वत क़बूल की और इजतिमाअ में शिर्कत की सआदत हासिल की, इजतिमाअ के आखिरी दिन इख़ितामी दुआ हो रही थी, दीगर आशिकाने मुस्तफ़ा की तरह मेरे वालिदे मोहतरम भी दुआओं की क़बूलिय्यत के लिये मोहताजों की मोहताजी दूर करने वाले रब्बे करीम **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में दस्ते सुवाल दराज किये हुवे थे। रिक्कत अंगेज दुआ की बदौलत शुरकाए इजतिमाअ की आहें बुलन्द हो रही थीं मेरे वालिदे गिरामी पर भी रिक्कत तारी थी खौफ़े खुदा के बाइस वोह ज़ारो क़ितार रो रहे थे। उन्होंने ने दुआ के इख़िताम पर चेहरे पर हाथ फेरे और जूही आंखें मलना शुरूअ कीं उन पर करम हो गया। तवील अर्से से मोतिया की बीमारी में मुब्तला वालिदे मोहतरम को हैरत अंगेज तौर पर शिफ़ा नसीब हो गई और मोतिया का मरज ख़त्म हो गया। बेशक येह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ की बरकत थी कि वालिदे मोहतरम की बीनाई बहाल हो गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **اَبْلَاح** **عَزَّوَجَلَّ** हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहते हुवे दीने इस्लाम की ख़ूब ख़ूब ख़िदमत करने और अपने प्यारे हबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सुन्नतों के मुताबिक़ ज़िन्दगी बसर करने की तौफीक़ अता फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बयान नम्बर : 5

दुखदे पाक न पढ़ने का वबाल

दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 39 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “बुरे ख़ातिमे के अस्बाब” के सफ़हा 1 पर मन्कूल है, एक शख्स को इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में सर पर मजूसियों (या'नी आतश परस्तों) की टोपी पहने हुवे देखा तो इस का सबब पूछा, उस ने जवाब दिया : जब कभी मुहम्मदे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का नामे मुबारक आता तो मैं **दुरूद शरीफ़** न पढ़ता था इस गुनाह की नुहूसत से मुझ से मा'रिफ़्त और ईमान सल्ब कर लिये गए ।

(सبع سنابل، ص ३५)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? गुनाहों की नुहूसत किस क़दर भयानक है कि इस के सबब मौत के वक्त ईमान बरबाद हो जाने का ख़तरा रहता है । यहां येह ज़रूरी मस्अला ज़ेहन नशीन फ़रमा लीजिये कि किसी के बारे में बुरा ख़्वाब देखना बेशक बाइसे तश्वीश है ताहम ग़ैरे नबी का ख़्वाब शरीअत में हुज्जत या'नी दलील नहीं और फ़क़त ख़्वाब की बुन्याद पर किसी मुसलमान को काफ़िर नहीं कहा जा सकता नीज़ मुसलमान मय्यित पर ख़्वाब में कोई अ़लामते कुफ़्र देखने या खुद मरने वाले मुसलमान का ख़्वाब में अपने ईमान के बरबाद होने की ख़बर देने से भी उस को **काफ़िर** नहीं कह सकते ।

हमें भी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की बे नियाजी और उस की **खुफ़्या तदबीर** से डरते रहना चाहिये और नबिय्ये पाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ने में ग़फ़लत नहीं करनी चाहिये। आज से पहले हो सकता है बारहा ऐसा हुवा हो कि हम ने नामे अक़दस सुन कर या बोल कर **दुरूद शरीफ़** न पढ़ा हो। चूँकि येह रिआयत मौजूद है कि अगर उस वक़्त न पढ़े तो बा'द में भी पढ़ सकता है लिहाज़ा अब पढ़ ले और आइन्दा कोशिश कर के उसी वक़्त पढ़ लिया करे वरना बा'द में पढ़ ले।

दुरूदे पाक पढ़ने का शरई हुक़म

सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوَي** फ़रमाते हैं : उम्म में एक मरतबा **दुरूद शरीफ़** पढ़ना फ़र्ज़ है और हर जल्सए ज़िक्र में **दुरूद शरीफ़** पढ़ना वाजिब ख़्वाह खुद नामे अक़दस ले या दूसरे से सुने। अगर एक मजलिस में सो बार ज़िक्र आए तो हर बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ना चाहिये। अगर नामे अक़दस लिया या सुना और **दुरूद शरीफ़** उस वक़्त न पढ़ा तो किसी दूसरे वक़्त में इस के बदले का पढ़ ले।” (बहारे शरीअत, 1/533)

हर दम मेरी ज़बां पे दुरूदो सलाम हो

मेरी फ़ज़ूल गोई की आदत निकाल दो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

पर **दुरूदो सलाम** पढ़ने के जहां बे शुमार फ़ज़ाइलो बरकात हैं, वहीं नामे अक़दस सुन कर सुस्ती व ग़फ़लत के बाइस

दुरूद शरीफ़ न पढ़ना न सिर्फ़ अज़ीम सआदत से महरूमी का बाइस है बल्कि हलाकत व बरबादी और **अल्लाह** तआला की नाराज़ी का सबब भी बन सकता है। चुनान्चे,

रहमते इलाही से दूर

हज़रते सय्यिदुना का'ब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि एक मरतबा ख़ातमुल मुर्सलीन, रहूमतुल्लिल आलमीन **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “मिम्बर के क़रीब आ जाओ।” हम मिम्बर शरीफ़ के क़रीब हाज़िर हो गए, जब आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने पहले ज़ीने पर क़दमे मुबारक रखा तो इरशाद फ़रमाया : “आमीन।” जब दूसरे ज़ीने पर क़दमे मुबारक रखा तो इरशाद फ़रमाया : “आमीन।” और जब तीसरे ज़ीने पर क़दमे मुबारक रखा तो भी इरशाद फ़रमाया : “आमीन।” फिर जब आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मिम्बर शरीफ़ से नीचे तशरीफ़ लाए तो हम ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** आज हम ने आप से ऐसी बात सुनी है जो पहले कभी न सुनी थी।” आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : जिब्रीले अमीन **عَلَيْهِ السَّلَام** मेरे पास हाज़िर हुवे और अर्ज़ की : “जिस ने रमज़ान का महीना पाया और उस की मग़फ़िरत न हुई वोह (**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से) दूर हो।” तो मैं ने कहा : “आमीन।”

जब मैं ने दूसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो जिब्रीले अमीन **عَلَيْهِ السَّلَام** ने अर्ज़ की :

“जिस के सामने आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का जिक्र हुवा और उस ने आप पर दुरूद न पढ़ा वोह भी (**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से) दूर हो।” तो मैं ने कहा : “आमीन।” फिर जब मैं ने तीसरे जीने पर क़दम रखा तो ज़िब्रीले अमीन **عَلَيْهِ السَّلَام** ने अर्ज़ की : “जिस ने अपने वालिदैन या उन में से किसी एक को बुढ़ापे में पाया फिर उन्होंने ने उसे जन्नत में दाख़िल न किया तो वोह भी (**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से) दूर हो।” तो मैं ने कहा : “आमीन।”

(मस्तदक, کتاب البر والصلة، باب لعن الله العاق لوالديه الخ، ۲/۱۲/۵، حدیث: ۷۳۳۸)

मुफ़सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي** इस हदीसे पाक के तहत इरशाद फ़रमाते हैं : “या’नी ऐसा मुसलमान ज़लीलो ख़्बार हो जाए जो मेरा नाम सुन कर दुरूद न पढ़े। अरबी में इस बद दुआ से मुराद इज़हारे नाराज़ी होता है हकीकतन बद दुआ मुराद नहीं होती, मतलब येह है कि जो बिला मेहनत दस रहमतें, दस दरजे, दस मुआफ़ियां हासिल न करे बड़ा बे वुकूफ़ है।” (मिरआत, 2/102)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ख़ौफ़नाक काला सांप

एक शख़्स का इन्तिकाल हो गया। उस के लिये क़ब्र खोदी गई तो क़ब्र में एक ख़ौफ़नाक काला सांप नज़र आया। लोगों ने घबराकर वोह क़ब्र बन्द कर दी और दूसरी जगह क़ब्र खोदी। वहां भी वोही सांप मौजूद था। तीसरी जगह क़ब्र खोदी

वोही खौफनाक काला सांप वहां भी मौजूद था। आखिरे कार सांप ने ज़बान से पुकार कर कहा कि तुम जहां भी क़ब्र खोदोगे मैं वहां पहुंचूंगा। लोगों ने उस से पूछा कि येह क़हरो ग़ज़ब क्यूं है ? सांप बोला : “येह शख़्स जब सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नामे नामी सुनता था तो दुरूद पढ़ने में बुख़ल करता था, अब मैं इस बख़ील को सज़ा देता रहूंगा।” (شفاء القلوب، ص ३०९)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

हज़रते सय्यिदुना इमाम हुसैन बिन अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से मरवी है कि महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत, आफ़ताबे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है : **مَنْ ذُكِرْتُ عَنْدهُ فَحَطِيءَ الصَّلَاةِ عَلَیَّ حَطِيءَ طَرِيقِ الْجَنَّةِ** जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद पढ़ने में कोताही की तो वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

(معجم كبير، ماسند الحسين بن علی..... الخ، ۱/۲۸/۳، حدیث: ۲۸۸۷)

हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है : **اَلْبَخِيْلُ الَّذِي مَن ذُكِرْتُ عَنْدهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَیَّ** या'नी बख़ील है वोह शख़्स जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा फिर उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा।”

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب رغم انف رجل..... الخ، ۵/۳۲۰، حدیث: ۳۵۵۴)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** इस हदीसे पाक के तहत इरशाद फ़रमाते हैं : “क्यूंकि दुरूद में कुछ खर्च तो होता नहीं और सवाब बहुत मिल जाता है, इस सवाब से महरूमि बड़ी ही बद नसीबी है। इस हदीस से मा'लूम हुवा कि जब भी हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का नाम सुने या पढ़े तो **दुरूद शरीफ़** ज़रूर पढ़े कि येह मुस्तहब है।” (मिरआत, 2/106)

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अलीशान है : **يَا'नी क्या मैं तुम्हें लोगों में सब से बड़े बखील के बारे में न बताऊं ?** सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ज़रूर बताइये।” इरशाद फ़रमाया : **مَنْ ذَكَرْتُ عَنْهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَى فَذَاكَ أَبْخَلَ النَّاس** जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो फिर भी वोह मुझ पर **दुरूदे पाक** न पढ़े तो वोह सब से बड़ा बखील है।”

(الترغيب والترهيب، كتاب النكرو الدعا، باب الترغيب في اكثار الصلاة على النبي ﷺ، ٢/٣٣٢، حديث: ٢٦١٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

अल्लाह की ला'नत

हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के पास से एक आदमी गुज़रा जिस के पास एक हिरनी थी जिसे उस ने शिकार किया था। **अल्लाह** ने उस हिरनी को कुव्वते गोयाई अता फ़रमाई, हिरनी ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं

जिन्हें मैं दूध पिलाती हूं। अब वोह भूके होंगे। इस शिकारी को हुक्म फ़रमाइये कि येह मुझे छोड़ दे ताकि मैं अपने बच्चों को जा कर दूध पिलाऊं, फिर मैं वापस आ जाऊंगी।” हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : “अगर तू वापस न आई तो फिर ?” हिरनी ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अगर मैं वापस न आऊं तो मुझ पर उस शख्स की तरह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ला'नत हो जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ज़िक्र सुने और आप पर दुरूद न पड़े या उस आदमी की तरह मुझ पर ला'नत हो जो नमाज़ पढ़े और दुआ न मांगे।” हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने शिकारी को उसे आज़ाद करने का हुक्म दिया और फ़रमाया : “मैं इस का ज़ामिन हूं।” चुनान्वे, हिरनी दूध पिला कर वापस आ गई, फिर हज़रते ज़िब्रील عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और अर्ज किया : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** सलाम इरशाद फ़रमाता है और फ़रमाता है मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं आप की उम्मत पर इस से भी ज़ियादा मेहरबान हूं जैसे इस हिरनी को अपनी अवलाद पर शफ़क़त है और मैं आप की उम्मत को आप की तरफ़ लौटाऊंगा जैसे कि येह हिरनी आप की तरफ़ लौट कर आई।”

(القول البديع، الباب الثالث في التحذير من ترك الصلاة عليه عندما يذكر، ص ३०३)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! जो शख्स नामे पाक सुन कर दुरूदे पाक न पढ़े वोह बखील है और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की ला'नत का मुस्तहिक है, हमें भी चाहिये कि जब भी मौक़अ मिले अपने प्यारे नबी **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदे पाक पढ़ लिया करें और बिलखुसूस अगर किसी मजलिसे ज़िक्र में शिर्कत की सआदत नसीब हो तो कुछ न कुछ दुरूद का एहतिमाम ज़रूर फ़रमाइये वरना रोजे क़ियामत हसरत हमारा मुक़द्दर होगी । जैसा कि

बाइसे हसरत मजलिस

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि नबिय्ये रहमत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “जब लोग किसी मजलिस में बैठते हैं और उस में न अपने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक्र करते हैं और न अपने नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद पढ़ते हैं । क़ियातम के दिन वोह मजलिस उन के लिये बाइसे हसरत होगी और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** चाहे तो उन को अज़ाब दे और चाहे तो बख़्शा दे ।” (مسند احمد، مسند ابی هريرة، ۵۳۳/۳، حديث: ۱۰۲۸۱)

जन्नत में दाखिले के बा वुजूद हसरत

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने इब्रत निशान है : “किसी क़ौम ने कोई मजलिस काइम की और उस में मुझ पर दुरूद न पढ़ा तो वोह उन के लिये हसरत का बाइस

होगी अगरचे दूसरी नेकियों के सवाब की वजह से वोह लोग जन्नत में दाखिल भी हो जाएं।

(شعب الايمان، باب في تعظيم النبي ﷺ وأجلاله..... الخ، ٢/ ١٥٢، حديث: ١٥٤١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन रिवायात पर गौर फरमाइये कि **दुरूदे पाक** के मुआमले में बुख़ल करने वालों के लिये कैसी कैसी वईदें बयान की गई हैं। ख़ूब गौर करें, सोचें और इस आदत से तौबा करें।

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, अलहाज, अल हाफ़िज़ अल कारी, शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** नामे अक्दस सुन कर **दुरूद शरीफ़** पढ़ने के बारे में हुक्मे शरीअत बयान करते हुवे अपनी मशहूर और मक्बूले ज़माना किताब **“फ़तावा रज़विख्या शरीफ़”** जिल्द 6, सफ़हा 221 पर इरशाद फ़रमाते हैं :

नामे पाक हुजुरे पुर नूर सय्यिदे दो आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मुख़्तलिफ़ जल्सों (या'नी मजलिसों) में जितनी बार ले या सुने हर बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ना वाजिब है, अगर न पढ़ेगा गुनहगार होगा और सख़्त वईदों में गिरिफ़्तार होगा, हां इस में इख़्तिलाफ़ हैं कि अगर एक ही जल्से (या'नी मजलिस) में चन्द बार नामे पाक लिया या सुना तो हर बार वाजिब है या एक बार काफ़ी और हर बार मुस्तहब है, बहुत (से) उ-लमा कौले अक्वल की तरफ़ गए हैं। उन के नज़दीक एक जल्से में हज़ार बार कलिमा शरीफ़ पढ़े तो हर बार **दुरूद शरीफ़** भी पढ़ता जाए अगर एक बार भी छोड़ा गुनहगार

हुवा । दीगर उ-लमा ने उम्मत की आसानी की खातिर कौले दुवुम (को) इख्तियार किया, उन के नज़दीक एक जल्से में एक बार दुरूद (शरीफ़ पढ़ लेना) अदाए वाजिब के लिये क़िफ़ायत करेगा, ज़ियादा के तर्क से गुनहगार न होगा मगर सवाबे अज़ीम व फ़ज़ले जसीम से बेशक महरूम रहा । बहर हाल मुनासिब येही है कि हर बार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** कहता जाए कि ऐसी चीज़ जिस के करने में बिल इत्तिफ़ाक़ बड़ी बड़ी रहमतें, बरकतें और न करने में बिला शुबा बड़े फ़ज़ल से महरूमी और एक मज़हबे क़वी पर गुनाह व मा'सियत, अक़िल का काम नहीं कि इसे तर्क करे ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें हर मजलिस में अपना और अपने प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का ज़िक़रे ख़ैर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की जाते पाक पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा

जिस ने मेरी सुन्नत से महब्वत की उस ने मुझ से महब्वत की और जिस ने मुझ से महब्वत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(ابن عساکر ۳/۹)

बयान नम्बर : 6

कुर्बते सरकार के हकदार

सरकारे मदीना, राहते क़ब्लो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
का फ़रमाने आलीशान है : **أَوَّلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَكْثَرُهُمْ عَلَى صَلَاةٍ** :
या'नी क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे करीब वोह
शख्स होगा जो सब से ज़ियादा मुझ पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ता होगा ।”

(ترمذی، أبواب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاة علی النبی ﷺ، ۲۷/۲، حدیث: ۴۸۴)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद
यार ख़ान नईमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْنِ** इस हदीसे पाक के तहूत इरशाद
फ़रमाते हैं : “क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा जो हुज़ूर
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ रहे और हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** की
हमराही नसीब होने का ज़रीआ **दुरूद शरीफ़** की कसरत है, इस
हदीसे पाक से मा'लूम हुवा कि **दुरूद शरीफ़** बेहतरीन नेकी है
कि तमाम नेकियों से जन्नत मिलती है और इस से बज़्मे जन्नत
के दुल्हा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मिलते हैं ।” (मिरआत, 2/100)

हृश में क्या क्या मज़े वारफ़्तगी के लूँ रज़ा
लौट जाऊं पाके वोह दामाने आली हाथ में

(हदाइके बख़्शिश, स.104)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा 'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

पर **दुरूदो सलाम** भेजना किसी वक्त, किसी जगह और किसी हालत व कैफियत के साथ मुख्तस नहीं है। हर हालत में हमदाम बहर जगह येह अमल बाइसे सआदत व फज़ीलत और ज़रीअए सलाहो फ़लाह है लेकिन मो'तबर रिवायात के मुताबिक़ इन चोबीस अवकात व मक़ामात पर **दुरूदो सलाम** पढ़ना बाइसे फ़ज़ीलत व मूरिसे ख़ैरो बरकत है बल्कि इस की ताकीद भी आई है।

बुजुर्गानि दीन का दस्तूर

(1) जब सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नामे नामी ज़बान पर लाए या सुने। चुनान्वे, अस्हाब व ताबेईन व ज़मीअ अइम्मए मुहद्दिसीन व उ-लमाए सालिहीन (رَحْمَهُمُ اللهُ أَجْمَعِينَ) का हमेशा येही दस्तूर रहा है कि वोह कभी इस्मे मुबारक बिग़ैर सलातो सलाम के ज़िक्र नहीं करते।

(القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصه، ص ٥٥، مفهوماً) इसी तरह (मुह्रिर (writer) को भी चाहिये कि) जब इस्मे मुबारक लिखे तो **दुरूदो सलाम** ज़रूर लिखे, जब तक तहरीर में इस्मे मुबारक बाक़ी रहेगा फ़रिश्ते लिखने वाले पर दुरूद भेजते रहेंगे। (القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصه، ص ٤٦٠، مفهوماً)

हुसूले शफ़ाअत का आशान वजीफ़ा

(2,3) हर सुब्हो शाम **दुरूद शरीफ़** ज़रूर पढ़ना चाहिये,

कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ صَلَّى عَلَى حِينِ يُصْبِحُ عَشْرًا وَحِينِ يُمَسِّي عَشْرًا أَذْرَكَهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ

या'नी जो रोज़ाना सुब्हो शाम दस दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़े तो क़ियामत के दिन उस को मेरी शफ़ाअत नसीब होगी ।”

(مجمع الروايع، كتاب الأذكار، १/१३०، حديث: १५०२२)

(4) जब किसी मजलिस में बैठें या उठ कर जाने लगे तो दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ लेना चाहिये । कि हज़रते अल्लामा मजदुद्दीन फ़ीरोज़ाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي से मन्कूल है :

“जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो :

تुम पर एक **عَزَّوَجَلَّ** अल्लाह तो بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा ।

और जब मजलिस से उठो तो कहो : بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज़ रखेगा ।”

(القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة والسلام علی رسول الله، ص २८८)

क़बूलिय्यते दुआ की चाबी

(5) दुआ से पहले, दरमियान और आख़िर में दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दुआ दरजए क़बूलिय्यत तक पहुंचेगी । (القول البدیع، الباب الخامس فی الصلاة علیه فی اوقات مخصوصة، ص २१५)

(6) मस्जिद में दाख़िल होते और मस्जिद से निकलते

वक़्त । (القول البدیع، الباب الخامس فی الصلاة علیه فی اوقات مخصوصة، ص २१३)

मेरी शफ़ाअत लाज़िम है

(7) अज़ान के बा'द दुरूदो सलाम और दुआए वसीला पढ़ने का भी मा'मूल बना लीजिये कि ऐसा करना शफ़ाअते मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के हुसूल का बाइस है, चुनान्चे, सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने शफ़ाअत निशान है :
 إِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ فَقُولُوا مِثْلَ مَا يَقُولُ जब तुम मुअज़्ज़िन को (अज़ान देते) सुनो तो तुम भी उसी तरह कहो जो वोह कह रहा है ।”
 ثُمَّ صَلُّوا عَلَيَّ فَإِنَّهُ مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا फिर मुझ पर दुरूद भेजो क्योंकि जो मुझ पर एक दुरूद भेजता है **अल्लाह** तअ़ाला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है ।
 ثُمَّ سَلُّوا اللَّهَ لِيَ الْوَسِيلَةَ فَإِنَّهَا مَنْرِلَةٌ ۖ فِي الْجَنَّةِ لَا تَبْغَى إِلَّا لِعَبْدٍ مِّنْ عِبَادِ اللَّهِ وَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَنَا هُوَ फिर **अल्लाह** तअ़ाला से मेरे लिये वसीला मांगो, वोह जन्नत में एक जगह है जो **अल्लाह** के बन्दों में से एक ही के लाइक है और मुझे उम्मीद है कि वोह मैं ही हूँ ।
 فَمَنْ سَلَ لِيَ الْوَسِيلَةَ حَلَّتْ لَهُ الشَّفَاعَةُ तो जो मेरे लिये वसीला मांगे उस पर मेरी शफ़ाअत लाज़िम है ।”

(مشكاة، کتاب الصلاة، باب فضل الاذان واجابة المؤذن، ۱/۱۴۰، حديث: ۱۵۷)

एक मश्अला और इस की वज़ाहत

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي) इस हदीसे पाक के तहूत इरशाद फ़रमाते हैं : “इस से मा'लूम हुवा कि अज़ान के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है । बा'ज़ मुअज़्ज़िन अज़ान से पहले ही दुरूद शरीफ़ पढ़ लेते हैं इस में भी हरज नहीं, उन का माख़ज़

येही हदीस है। शामी ने फ़रमाया कि इक़ामत के वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है, ख़याल रहे कि अज़ान से पहले या बा'द बुलन्द आवाज़ से दुरूद पढ़ना भी जाइज़ बल्कि सवाब है बिना वजह इसे मन्ज़ नहीं कह सकते। ख़याल रहे कि वसीला सबब और तवस्सुल को कहते हैं, चूँकि इस जगह पहुंचना रब से कुर्बे खुसूसी का सबब है इस लिये वसीला फ़रमाया गया। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का येह फ़रमाना कि “मैं उम्मीद करता हूं” तवाज़ोअ और इन्किसारी के लिये है वरना वोह जगह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये नामज़द हो चुकी है। हमारा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के लिये वसीले की दुआ करना ऐसा ही है जैसे फ़कीर अमीर के दरवाज़े पर सदा लगाते वक़्त उस की जानो माल की दुआएं देता है ताकि भीक मिले। हम भिकारी हैं और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ दाता, इन्हें दुआएं देना मांगने खाने का ढंग है।” (मिरआत, 1/411)

हम भिकारी वोह करीम उन का खुदा उन से फुज़ूं
और “ना” कहना नहीं आदत रसूलुल्लाह की

(हदाइके बख़्शाश, स. 153)

हदीसे पाक के इस हिस्से “जो मेरे लिये वसीला मांगे उस के लिये मेरी शफ़ाअत लाज़िम है” के तहत मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : “या'नी मैं वा'दा करता हूं कि उस की शफ़ाअत ज़रूर करूंगा। यहां शफ़ाअत से ख़ास शफ़ाअत मुराद है वरना हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हर मोमिन के शफ़ीअ हैं।”

(मिरआत, 1/411)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अज़ानो इक़ामत के जवाब का मुफ़स्सल तरीक़ा और दुआए वसीला सीखने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे “मक्तबतुल मदीना” का मतबूअ 32 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाला “फ़ैज़ाने अज़ान” मुलाहज़ा फ़रमाइये बल्कि 499 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “नमाज़ के अहक़ाम” हासिल फ़रमा लीजिये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** अज़ान के साथ साथ वुज़ू, गुस्ल और नमाज़ वगैरा से मुतअल्लिक़ इन्तिहाई अहम अहक़ाम सीखने का भी मौक़अ मिलेगा ।

(8) वुज़ू करते वक़्त । (9) किसी चीज़ को भूल जाए तो **दुरूदो सलाम** पढ़े, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** वोह चीज़ याद आ जाएगी । (10) हज़ में लब्बैक पढ़ने के बा'द । (11) सफ़ा व मरवा की सई के दौरान । (12) सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत के वक़्त, बल्कि जब मदीनए मुनव्वरा का सफ़र करे तो पूरे रास्ते में ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े ।

(در مختار و رد المحتار، کتاب الصلوة، باب صفة الصلوة، مطلب نص العلماء علی استحباب الصلوة..... الخ 1/12/281)

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** ने तर्जमए मिश्कात में ज़िक़र किया है कि जब मैं क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत के क़स्द से सफ़रे मदीनए मुनव्वरा के लिये रवाना हुवा तो हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल वहहाब मुत्तकी

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي ने ब वक़्ते रुख़्सत इरशाद फ़रमाया : “तुम यकीन

रखो कि इस राह में फ़राइज़ के बा'द कोई भी इबादत दुरूद शरीफ़ की मिस्ल नहीं है।" मैं ने अर्ज़ की, कि कितनी मिक्दार में दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहूं। इरशाद फ़रमाया : "कोई अदद मुअय्यन नहीं है। इस क़दर ज़ियादा पढ़ो कि इसी में मुस्तग्रक हो जाओ और दुरूद शरीफ़ के रंग में रंगे हुवे बन जाओ।"

(सरुर القلوب، ص ३२१)

जब कान बजने लगें तो दुरूद पढ़ो

(13) जब कान बजे या'नी कान में सन्सनाहट या भिनभिनाहट पैदा हो तो दुरूद शरीफ़ पढ़े। सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम्हारे कान बजने लगें तो मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **اَللّٰهُ** तअ़ाला तुम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाएगा।"

(القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص २२२)

(14) जुमुआ के दिन ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े। हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ صَلَّى عَلَى يَوْمِ الْجُمُعَةِ مِائَةَ مَرَّةٍ حَاءَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمَعَهُ نُورٌ لَوْ قُسِمَ ذَلِكَ النُّورُ بَيْنَ الْخَلْقِ كُلِّهِمْ لَوْ سَعَهُمْ
जो शख्स जुमुआ के दिन सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा वोह क़ियामत के दिन ऐसा नूर ले कर आएगा जो अगर सारी मख़्लूक़ात में तक्सीम किया जाए तो सब को क़िफ़ायत करे।

(جمع الجوامع، حرف اليم، १/१११، حديث: २२३२९)

पेशकश : मजलसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

जो गदा देखो लिये जाता है तोड़ा नूर का
नूर की सरकार है क्या इस में तोड़ा नूर का

(हदाइके बख़्शिश, स.245)

(15) शबे जुमुआ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ की दरमियानी रात) दुरूद शरीफ़ पढ़ना बहुत अफ़ज़ल है ।

(القول البديع، الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص 344)

(16) किताबों और रिसालों की इब्तिदा में बिस्मिल्लाह शरीफ़ और हम्द के बा'द दुरूद शरीफ़ लिखना मुस्तहब है और कुतुबो रसाइल के आख़िर में दुरूद शरीफ़ लिखना सलफ़े सालिहीन का तरीका है । (القول البديع، الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص 343)

(17) हर नमाज़ में तशह्हुद (या'नी अत्तहिyyात) के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है ।

(18) नमाज़े जनाज़ा में दूसरी तक्बीर के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है ।

(19) ख़ुतबए जुमुआ व ईदैन में दुरूद शरीफ़ पढ़ना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي के नज़दीक फ़र्ज़ जब कि अहनाफ़ के नज़दीक मुस्तहब है । बहर हाल लाज़िम है कि कोई ख़ुतबए जुमुआ दुरूद शरीफ़ से ख़ाली न हो ।

(القول البديع، الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص 342)

(20) ख़ुतबए निकाह, दर्से इल्म और बयान की इब्तिदा में भी दुरूद शरीफ़ पढ़ लेना मुस्तहब और बाइसे ख़ैरो बरकत है ।

(21) जब कोई कुरआने पाक का ख़त्म करे तो दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ ले कि येह नुज़ूले रहमत और दुआ की मक़बूलियत का वक़्त है।

(22) रात को नमाज़े तहज्जुद के लिये बेदार होने के वक़्त।

(23) आफ़ात व बलिय्यात को दफ़अ करने के लिये बकसरत दुरूद शरीफ़ पढ़ना निहायत मुफ़ीद है।

(القول البديع، الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص 114)

(24) इत्र, गुलाब या किसी खुशबू को सूंघते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये। हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहम्मद देहलवी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** ने लिखा है कि खुशबू सूंघते वक़्त खुशबूए मुहम्मदी को याद कर के दुरूदो सलाम का तोहफ़ा पेश करे तो येह मुस्तहसन है।

उन्हीं की बू मायए समन है, उन्हीं का जल्वा चमन चमन है
उन्हीं से गुलशन महक रहे हैं, उन्हीं की रंगत गुलाब में है

(हदाइके बख़्शिश, स.180)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कब कब दुखद शरीफ़ पढ़ना ममनूअ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! ज़बान से ज़िक्रो दुरूद बाइसे अज़्रो सवाब भी है और बा'ज़ सूरतों में ममनूअ भी, जैसा कि मक़तबतुल मदीना की मतबूआ बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 533 पर रहूल मुहतार के हवाले से

मजकूर है : “गाहक को सोदा दिखाते वक्त ताजिर का इस गरज से दुरूद शरीफ पढ़ना या سُبْحَنَ اللّٰه कहना कि उस चीज़ की उम्दगी खरीदार पर ज़ाहिर करे नाजाइज़ है। यूँही किसी बड़े को देख कर इस नियत से दुरूद शरीफ पढ़ना कि लोगों को उस के आने की ख़बर हो जाए ताकि उस की ता'जीम को उठें और जगह छोड़ दें ना जाइज़ है। इस के इलावा भी मज़ीद ऐसी जगहें हैं जहां दुरूद शरीफ पढ़ना मन्अ है जैसे जिमाअ के वक्त, इस्तिन्जा करते वक्त, जानवर ज़ब्ह करते वक्त।”

(درمختار و ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، مطلب فی المواضع التي تکره فیها الصلاة..... الخ، ۲/ ۲۸۲)

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विदे ज़बां रहे

मेरी फ़ज़ूल गोई की आदत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 290)

ऐ हमारे प्यारे **اَبُو** हमें इख़्लासे नियत के साथ दुरुस्त मवाफ़ेअ पर कसरत से दुरूद शरीफ पढ़ कर तेरी रिज़ा पाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा

मिस्वाक कर के दो रकअत पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की 70 रकअतों से अफ़ज़ल है।

(الترغیب والترہیب، ۱/ ۱۲۷، حدیث: ۳۳۷)

बयान नम्बर : 7

मौत से पहले जन्नत में मक़ाम देखेगा

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
का फ़रमाने जन्नत निशान है :

مَنْ صَلَّى عَلَىَّ فِي يَوْمِ أَلْفِ مَرَّةٍ لَمْ يَمُتْ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ

या'नी जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार मरतबा **दुरूद**
शरीफ़ पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में
अपना मक़ाम न देख ले ।”

(التّرجيب والتّرهيب، كتاب الذّكر والدّعاء، التّرجيب في اكثار الصّلاة على النّبي، ٣٢٦/٢، حديث: ٢٥٩٠)

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस क्या मौल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है

(हदाइके बख़्शाश, स. 186)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें न सिर्फ़ खुद फ़राइज़
व वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ अपने आप को कसरत से
दुरूदे पाक पढ़ने का आदी बनाना चाहिये बल्कि अपने अहलो
इयाल को भी **दुरूदे पाक** और ताजदारे काइनात **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
की महब्बत और आप के अहले बैत की महब्बत की ता'लीम देनी
चाहिये जैसा कि

तर्बिय्यते अवलाद के लिये तीन अहम बातें

नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने तर्बिय्यत निशान है : “**يَا نَبِيَّيْكُمْ** अपने अपनी अवलाद को तीन बातें सिखाओ” (1) “**وَحَبِّ أَهْلَ بَيْتِهِ** अहले नबी **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महब्बत” (2) “**وَقِرَاءَةَ الْقُرْآنِ** और तिलावते बैत **(عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ)** की महब्बत” (3) **فَإِنَّ حَمَلَةَ الْقُرْآنِ فِي ظِلِّ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ مَعَ أَنْبِيَائِهِ وَأَصْفِيَائِهِ** कु.रआन, क्योंकि कुरआने पाक पढ़ने वाले लोग अम्बिया व अस्फ़िया **عَزَّوَجَلَّ** के साथ **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى سَائِرِ الْمُرْسَلِينَ** के साथ **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى سَائِرِ الْمُرْسَلِينَ** के साथ रहमत में होंगे जिस दिन उस के इलावा कोई साया न होगा।”

(جامع صغير، الجزء الاول، حرف الهمزة، ص ۲۵، حديث: ۳۱۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़े किराम **رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** अपनी अवलाद की ऐसी मदनी तर्बिय्यत किया करते थे कि बचपन ही से वोह इश्के रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की चलती फिरती तस्वीर और कसरते **दुरूदो सलाम** के आदी हुवा करते थे। इस की एक मिसाल मुलाहज़ा फ़रमाइये :

दुरूदे पाक का आशिक

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अब्दुल वह्हाब शा'रानी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنَى** ने फ़रमाते हैं : “शैख़ नूरुद्दीन शौनी (नामी शहर) में जानवर मुझे बताया कि मैं बचपन में “शौनी” (नामी शहर) में जानवर चराया करता था, मुझे रसूले पाक, साहिबे लौलाक

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ने से इस क़दर महब्बत

थी कि मैं अपना खाना बच्चों को दे कर उन से कहता कि येह खालो फिर मैं और तुम सब मिल कर हुजूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरुद शरीफ़** पढ़ेंगे। चुनान्चे, हम दिन का अकसर हिस्सा रसूले पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरुदे पाक** पढ़ते हुवे गुज़ार देते।”

(الطبقات الكبرى للشعراني، الجزء الثاني، ۲/۲۳۳)

खाक हो कर इश्क़ में आराम से सोना मिला

जान की अकसीर है उल्फ़त रसूलुल्लाह की

(हदाइके बख्शिश, स. 135)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अहलो इयाल की इस्लाह की जिम्मेदारी

बयान कर्दा हिकायत उन लोगों के जज़्बे को बेदार करने के लिये काफ़ी है जो खुद तो नेक सीरत और नमाज़ी होते हैं लेकिन अपनी अवलाद की दुरुस्त तर्बियत नहीं करते जिस के बाइस उन की अवलाद **बे नमाज़ी** और **मोर्डन** बन जाती है। ऐसों की तवज्जोह के लिये अर्ज़ है कि आप पर अपनी भी और अपने अहलो इयाल की इस्लाह की भी जिम्मेदारी है। चुनान्चे, पारह **28** सूरतुतहरीम की आयत नम्बर **6** में इरशादे बारी तआला है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا

أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا

وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान

वालो ! अपनी जानों और अपने

घर वालों को उस आग से बचाओ

जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर

عَلَيْهَا مَلَكَةٌ غَلَاظُ شِدَادٍ
لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ
وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ①

(प, २८०: التحريم: १)

हैं, उस पर सख्त करें (या'नी ताक़तवर) फिरिश्ते मुक़रर हैं जो **अल्लाह** का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं।

अहलो इयाल को अज़ाब से किस तरह बचाया जाए ?

हज़रते सय्यिदुना सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी में इस हिस्से आयत (ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ) के तहत फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** तआला और उस के रसूल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के, इबादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानअत कर के उन्हें इल्मो अदब सिखा कर।”

रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : **كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ** या'नी तुम सब अपने मुतअल्लिकीन के सरदार व हाकिम हो और तुम सब से रोज़े क़ियामत उस की रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा।”

(بخاری، کتاب الجمعة، باب الجمعة فی القرى والمدن، ۳۰۹/۱، حدیث: ۸۹۳)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

इस हृदीसे पाक के तहत शारेहे बुखारी हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي फ़रमाते हैं : “रइय्यत से मुराद वोह है जो किसी की निगहबानी में हो । इस तरह अ़वाम सुल्तान और हाकिम के, अवलाद मां-बाप के, तलामिज़ा असातिज़ा के, मुरीदीन पीर के रिआया हुवे । यूं ही जो माल जौजा या अवलाद या नोकर की सिपुर्दगी में हो उस की निगहदाश्त उन पर वाजिब है । जिस के मातहत कोई न हो वोह अपने आ'जा व जवारिह, अफ़़ाल व अक्वाल, अपने अवकात अपने उमूर का राई है । इन सब के बारे में वोह जवाबदेह होगा ।”

(नुज़हतुल क़ारी, 2/530)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि अपनी अवलाद की बेहतर तर्बिय्यत करें और उन्हें “टाटा पापा” सिखाने के बजाए इब्तिदा ही से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेना सिखाएं । अपने मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नी से खेलते हुवे सिखाने की निय्यत से उन के सामने बार बार **अल्लाह अल्लाह** करते रहें तो वोह भी إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ ज़बान खोलते ही सब से पहला लफ़्ज़ **अल्लाह** कहेंगे ।

हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى किस तरह बच्चों की तर्बिय्यत फ़रमाते थे इस की एक झलक इस हिकायत में मुलाहज़ा फ़रमाइये । चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ **1539** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “फ़ैज़ाने सुन्नत” सफ़हा **56** पर है :

इब्तिदाई उम्र में बच्चों की तर्बियत का तरीका

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي फ़रमाते हैं : मैं तीन साल की उम्र का था कि रात के वक़्त उठ कर अपने मामूं हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सव्वार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي को नमाज़ पढ़ते देखता, एक दिन उन्होंने ने मुझ से फ़रमाया : “क्या तू उस **अब्लाह** तअ़ाला को याद नहीं करता जिस ने तुझे पैदा फ़रमाया ?” मैं ने पूछा : मैं उसे किस तरह याद करूं ? फ़रमाया : “जब रात सोने लगो तो ज़बान को हरकत दिये बिग़ैर महज़ दिल में **तीन मरतबा येह कलिमात** कहो : **اَللّٰهُ مَعِيَ، اَللّٰهُ نَاطِرٌ اِلَيَّ، اَللّٰهُ شَهِيدِي** या’नी **अब्लाह** तअ़ाला मेरे साथ है, **अब्लाह** तअ़ाला मुझे देखता है **अब्लाह** तअ़ाला मेरा गवाह है ।”

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं ने चन्द रातें येह कलिमात पढ़े और फिर उन को बताया ।” उन्होंने ने फ़रमाया : “अब हर रात **सात मरतबा** पढ़ो, मैं ने ऐसा ही किया और फिर उन को मुत्तलअ़ किया । फ़रमाया : “हर रात **ग्यारह मरतबा** येही कलिमात पढ़ो ।” (फ़रमाते हैं) मैं ने इसी तरह पढ़ा तो मेरे दिल में इस की लज़्ज़त मा’लूम हुई । जब एक साल गुज़र गया तो मेरे मामूं जान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي ने फ़रमाया : “मैं ने जो कुछ तुम्हें सिखाया है उसे क़ब्र में जाने तक हमेशा पढ़ते रहना **اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** येह तुम्हें दुनिया व आख़िरत में

नफ़अ देगा ।” सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيزِ** फ़रमाते हैं : मैं ने कई साल तक ऐसा ही किया तो मैं ने अपने अन्दर इस का बे इन्तिहाई मज़ा पाया । मैं तन्हाई में येह ज़िक्र करता रहा । फिर एक दिन मेरे मामूँ जान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** ने फ़रमाया । “ऐ सहल ! **अब्बाह** तअ़ला जिस शख़्स के साथ हो, उसे देखता हो और उस का गवाह हो, क्या वोह उस की नाफ़रमानी करता है ? हरगिज़ नहीं । लिहाज़ा तुम अपने आप को गुनाह से बचाओ ।” फिर मामूँ जान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** ने मुझे मक्तब में भेज दिया । मैं ने सोचा कहीं मेरे ज़िक्र में ख़लल न आ जाए लिहाज़ा उस्ताज़ साहिब से येह शर्त मुक़र्रर कर ली कि मैं उन के पास जा कर सिर्फ़ एक घन्टा पढ़ूंगा और वापस आ जाऊंगा । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने मक्तब में छे या सात बरस की उम्र में कुरआने पाक हिफ़ज़ कर लिया । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं रोज़ाना रोज़ा रखता था । बारह साल की उम्र तक मैं जव की रोटी खाता रहा । तेरह साल की उम्र में मुझे एक मस्अला पेश आया । जिस के हल के लिये घर वालों से इजाज़त ले कर मैं बसरा आया और वहां के उ-लमा से वोह मस्अला पूछा, लेकिन उन में से किसी ने भी मुझे शाफ़ी जवाब न दिया । फिर मैं अब्बादान की तरफ़ चला गया । वहां के मशहूर आलिमे दीन हज़रते सय्यिदुना अबू हबीब हम्ज़ा बिन अबी अब्दुल्लाह अब्बादानी **قُدْسُ سِرِّهِ الرَّبَّانِي** से मैं ने मस्अला पूछा तो उन्होंने

ने मुझे तसल्ली बख़्श जवाब दिया । मैं एक अर्से तक उन की

सोहबत में रहा, उन के कलाम से फैज़ हासिल करता और उन से आदाब सीखता फिर मैं तुस्तर की तरफ़ आ गया। मैं ने गुज़र बसर का इन्तिज़ाम यूँ किया कि मेरे लिये एक दिरहम के **जव** शरीफ़ ख़रीद लिये जाते और उन्हें पीस कर रोटी पका ली जाती। मैं हर रात सहरी के वक़्त एक ऊक़िया (या'नी तक़्रीबन **70** ग्राम) **जव** की रोटी खाता, जिस में न **नमक** होता और न ही **सालन**। येह एक दिरहम मुझे साल भर के लिये काफ़ी होता। फिर मैं ने इरादा किया कि तीन दिन मुसलसल फ़ाका करूंगा और इस के बा'द खाऊंगा। फिर पांच दिन, फिर सात दिन और फिर पच्चीस दिनों का मुसलसल फ़ाका रखा। (या'नी **25** दिन के बा'द एक बार खाना खाता।) बीस साल तक येही तरीक़ा रहा फिर मैं ने कई साल तक सैर व सियाहत की, वापस तुस्तर आया तो जब तक **अब्बाह** तआला ने चाहा शब बेदारी इख़्तियार की। हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَخْد फ़रमाते हैं : “मैं ने मरते दम तक सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي को कभी नमक, इस्ति'माल करते हुवे नहीं देखा।”

(احياء علوم الدّين، كتاب رياضة النفس وتهذيب الاخلاق، ३/ १)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस पुर फ़ितन दौर में दा'वते इस्लामी के तहत मद्रसतुल मदीना काइम हैं जिन में दुरुस्त तलफ़ुज़ से कुरआने पाक की ता'लीम के साथ साथ बेहतर **अख़्लाकी तर्बियत** भी की जाती है, इस के इलावा अवलाद की तर्बियत करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअती

इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 188 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “तर्बिय्यते अवलाद” का ज़रूर मुतालआ फ़रमाएं ।

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से अपनी और अपने अहलो इयाल की इस्लाह का जज़्बा भी पैदा होगा और अवलाद की दुरुस्त तर्बिय्यत करने के तरीके भी सीखने को मिलेंगे ।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें अपनी, अपने अहले ख़ाना और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह का अज़ीम जज़्बा नसीब फ़रमा । न सिर्फ़ खुद कसरत से **दुरूदो सलाम** पढ़ने बल्कि अपने बच्चों को भी इस का आदी बनाने की तौफ़ीके रफ़ीक़ मरहमत फ़रमा ।

मेरी आने वाली नस्लें तेरे इश्क़ ही में मचलें
उन्हें नेक तुम बनाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 288)

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुश्तफ़ा

रहमते आलमिय्यान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने बुध, जुमा'रात व जुमुआ को रोज़े रखे **अब्बाह** तआला उस के लिये जन्नत में एक मकान बनाएगा जिस का बाहर का हिस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का बाहर से (مجمع الزوائد، ٣/٥٢٢، حديث: ٥٢٠٣)



बयान नम्बर : 8

70 मरतबा रहमतों का नुजूल

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अम्र बिन आस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का फ़रमाने आलीशान है : **مَنْ صَلَّى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاحِدَةً** : जो शख्स नबिय्ये पाक **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ेगा **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَمَلَائِكَتُهُ سَبْعِينَ صَلَاةً** उस पर **अल्लाह** तआला और उस के फ़िरिश्ते सत्तर मरतबा रहमत भेजेंगे ।”

(مسند احمد، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، ١/٢، حديث: ١٤٦٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फैज़ाने दुरूदो सलाम के भी क्या कहने, इस से न सिर्फ़ दुरूदो सलाम पढ़ने वाला फैज़याब होता है बल्कि जिस मुसलमान को इस का ईसाले सवाब किया जाए उस का भी बेड़ा पार हो जाता है । चुनान्वे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ रिसाले “क़ब्र वालों की 25 हिकायात” के सफ़हा 1 पर है :

560 क़ब्रों से अज़ाब उठा लिया गया

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद मालिकी कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ नक़ल करते हैं :
हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ की ख़िदमते बा

बरकत में हाज़िर हो कर एक औरत ने अर्ज़ की : “मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, कोई तरीक़ा इरशाद हो कि मैं उसे ख़्वाब में देख लूं।” आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने उसे अमल बता दिया। उस ने अपनी मर्हूमा बेटी को ख़्वाब में तो देखा, मगर इस हाल में देखा कि उस के बदन पर तारकोल (या’नी डामर) का लिबास, गर्दन में ज़न्जीर और पाउं में बेड़ियां हैं ! येह हैबतनाक मन्ज़र देख कर वोह औरत कांप उठी ! उस ने दूसरे दिन येह ख़्वाब हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** को सुनाया, सुन कर आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** बहुत मग़मूम हुवे। कुछ अर्से बा’द हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** ने ख़्वाब में एक लड़की को देखा, जो जन्नत में एक तख़्त पर अपने सर पर ताज सजाए बैठी है। आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को देख कर वोह कहने लगी : “मैं उसी खातून की बेटी हूं, जिस ने आप को मेरी हालत बताई थी।” आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया : “उस के ब क़ौल तो तू अज़ाब में थी, आख़िर येह इन्क़िलाब किस तरह आया ?” मर्हूमा बोली : “क़ब्रिस्तान के क़रीब से एक शख़्स गुज़रा और उस ने मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज्मे हिदायत **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद भेजा, उस के दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** ने हम पांच सो साठ क़ब्र वालों से अज़ाब उठा लिया।”

(माखुद از التذكرة في احوال الموتى وأمور الآخرة، ८/१)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा दुरूद शरीफ

की बड़ी बरकते हैं। लिहाजा हमें भी अपने मर्हूम की कब्र पर हाजिर हो कर फ़ातिहा व दुरूद पढ़ कर ईसाले सवाब करना चाहिये नीज दुरूद शरीफ पढ़ने वाले को एक फ़ाइदा येह भी हासिल होता है कि उस की परेशानियां दूर होती हैं, फ़क्र मिटता है और ग़ना की दौलत नसीब होती है। चुनान्चे,

मोहताजी दूर करने का नुस्खा

साहिबे तोहफ़तुल अख़्यार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار ने येह हदीसे पाक नक्ल की है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : या'नी जो मुझ पर रोज़ाना पांच सो बार दुरूद शरीफ पढ़ लिया करेगा वोह कभी मोहताज न होगा ।”

(المستطرف، الباب الرابع والثمانون فيما جاء في فضل الصلاة على رسول الله، ٥٠٨/٢)

(روح البيان، प २२، الاحزاب، تحت الآية ५६، २३१/७)

फिर इस हदीस शरीफ को नक्ल करने के बा'द येह वाकिअ बयान फ़रमाया : “एक नेक आदमी था, उस ने येह हदीस सुनी तो ग़लबए शौक के साथ पांच सो बार दुरूद शरीफ का रोज़ाना विर्द शुरू कर दिया। इस की बरकत से **عَزَّوَجَلَّ** ने उस को ग़नी कर दिया और ऐसी जगह से उसे रिज़क अता फ़रमाया कि उसे पता भी न चल सका, हालांकि इस से पहले वोह मुफ़्लिस

और हाजत मन्द था ।”

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيما ورد من لطائف المراثي والحكايات..... الخ، اللطيفة الثامنة عشر بعد المائة، ص १६०)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैखे तरीक़त, अमीरे

अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** फ़रमाते हैं : “अगर कोई शख्स मज़कूरा ता’दाद में दुरूदे पाक का विर्द करे फिर भी उस का फ़क्र (मोहताजी) दूर न हो तो येह उस की निय्यत का फ़ुतूर है और उस के बातिन में ख़राबी की वजह से काम नहीं बन सका । दर अस्ल दुरूदे पाक पढ़ने में निय्यत **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के प्यारे हबीब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का कुर्ब हासिल करने की हो । फिर **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** मोहताजी ज़रूर दूर होगी और याद रखिये ! मोहताजी सिर्फ़ माल की कमी का नाम नहीं है बल्कि बसा अवकात माल की कसरत के बा वुजूद भी इन्सान मोहताजी का शिकवा करता है जो कि माल की हिर्स और लालच की निशानी है । हरीस इन्सान को चाहे कितनी ही दौलत मिल जाए वोह **هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ** (या’नी मज़ीद मिल जाए) के ना’रे लगाता रहता है । चुनान्चे,

आदमी का पेट क़ब्र की मिट्टी ही भरेगी

اَللّٰهُ **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**

का फ़रमाने इब्रत निशान है :

لَوْ كَانَ لِاٰنِ اٰدَمَ وَاٰدِيَانٍ مِنْ مَّالٍ لَا يَبْغِيْ تَالِفًا وَلَا يَمْلَأُ جُوفَ ابْنِ اٰدَمَ اِلَّا التُّرَابُ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ تَابَ
या’नी अगर इन्सान के पास माल के दो जंगल हों तो वोह तीसरा तलाश करेगा और इन्सान के पेट को मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती और **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** तौबा करने वाले की तौबा क़बूल फ़रमाता है ।”

(بخاری، کتاب الرقاق، باب مَا يَتَّقٰی مِنْ فِتْنَةِ الْمَالِ، ۲۲۸/۴، حدیث: ۶۴۳۶)

मुफ़स्सरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** इस हदीसे पाक के तहत इरशाद फ़रमाते हैं : “यहां दो और तीन हद बन्दी के लिये नहीं। मतलब येह है कि अगर **दो जंगल** भर माल हो तो तीसरे जंगल की ख़्वाहिश करे और अगर **तीन जंगल** माल हो तो चौथे की, इसी तरह सिलसिला काइम रखे। इन्सान की हवस ज़ियादा माल से नहीं **बुझती**, येह तो फ़ज़ले जुल जलाल से **बुझती** है।”

“इन्सान के पेट को मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती” के तहत फ़रमाते हैं : “मिट्टी से मुराद क़ब्र की मिट्टी है या’नी इन्सान की **हवस** क़ब्र तक रहती है, मर कर **हवस** ख़त्म होती है। येह हुक्म उम्मी है, **عَزَّوَجَلَّ** के नेक बन्दे और साबिरो शाकिर बन्दे इस हुक्म से अ़लाहिदा हैं जैसे हज़रते अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** और ख़ालिस औलिया उल्लाह **رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى** मगर ऐसे क़नाअत वाले बहुत कम हैं। सूफ़िया फ़रमाते हैं : “इन्सान की पैदाइश मिट्टी से है और मिट्टी की फ़ितरत खुशकी है, इस की खुशकी सिर्फ़ **बारिश** से ही दूर होती है। **बारिश** होने पर इस में सब्ज़ा फल सब कुछ होते हैं। यूं ही अगर इन्सान पर तौफ़ीक़ की **बारिश** न हो तो इन्सान महज़ खुशका है, अगर नबुव्वत के बादल से तौफ़ीके हिदायत की **बारिश** हो तो उस में विलायत और तक्वा वग़ैरा के फल फूल लगते हैं।”

(मिरआत, 7/89)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई आप ने कभी किसी मालदार को येह कहते नहीं सुना होगा कि “बहुत माल कमा लिया, अब बस” बल्कि वोह मज़ीद दौलत कमाने की कोशिश करता रहता है। इसी तरह कोई अ़लिम ऐसा नहीं मिलेगा कि जो येह कहे “बहुत पढ़ लिया, अब मुझे मज़ीद पढ़ने की हाज़त नहीं” बल्कि हर अ़लिम मज़ीद इल्म की त़लब में रहता है। चुनान्चे,

दो हरीस

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अ़लीशान है : “**مَنْهُوْمَانِ لَا يَشْبَعَانِ** दो हरीस कभी सैर नहीं हो सकते।”

“**مَنْهُوْمٌ فِي الْعِلْمِ لَا يَشْبَعُ مِنْهُ**” या’नी एक इल्म का हरीस कि कभी हुसूले इल्म से सैर नहीं होता, **وَمَنْهُوْمٌ فِي الدُّنْيَا لَا يَشْبَعُ مِنْهَا** और दूसरा माल का हरीस कि कभी हुसूले माल से सैर नहीं होता।”

(مشكاة، كتاب العلم، الفصل الثالث، ٦٨/١، حديث: ٢٦٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **दुरूद शरीफ़** की बरकत से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** क़नाअ़त की दौलत नसीब होगी और क़नाअ़त (या’नी जो मिल जाए उस पर राज़ी रहना) ही अस्ल में ग़ना (या’नी दौलत मन्दी) है। दुन्यवी माल का हरीस ही हकीक़त में मोहताज है ख़्वाह कितना ही मालदार हो। क़नाअ़त वोह ख़ज़ाना है जो कि ख़त्म होने वाला नहीं है और दुन्यवी माल से यकीनन अफ़ज़ल है क्यूंकि दुन्यवी माल फ़ानी भी है और वबाल भी कि क़ियामत में इस का हिसाब देना पड़ेगा।

आमिना के लाल मुझ को दीजिये सोजे बिलाल
माले दुन्या से मुझे हो जाए नफ़रत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 142)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुखद ख़वान मख़्ख़ियां

हज़रते सय्यिदुना मौलाना जलालुद्दीन रूमी
मषनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं : “एक बार ताजदारे
मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शहद की मख़्ख़ी से दरयाफ़्त
फ़रमाया कि तू शहद कैसे बनाती है ?” उस ने अर्ज़ किया :
“या हबीबल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम चमन में जा कर हर
किस्म के फूलों का रस चुसती हैं फिर वोह रस अपने मुंह में
लिये हुवे अपने छत्तो में आ जाती हैं और वहां उगल देती हैं
वोही शहद है। इरशाद फ़रमाया : “कि फूलों के रस तो फीके
होते हैं और शहद मीठा, येह तो बताओ कि शहद में मिठास
कहां से आती है ?” मख़्ख़ी ने अर्ज़ किया :

گفت چُون خَوَانِیْمِ بَرَا حَمْدِ دُرُود

مِی شَوَد شِیْرِیْسُ وَ تَلْخِی رَا رُبُود

“या'नी हमें कुदरत ने सिखा दिया है कि चमन से छत्ते
तक रास्ते भर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुखद शरीफ़ पढ़ती
हुई आती हैं। शहद की येह लज़्ज़त और मिठास दुखदे पाक ही
की बरकत से है।”

(शाने हबीबुर्हमान, स. 187)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूद शरीफ की बरकत से फूलों के फीके और तलख़ रस मिल कर एक हो गए और सब का नाम शहद हो गया । ऐसे ही सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की गुलामी की बरकत से सारे अरबी, अजमी इन्सान एक हो गए और इन का नाम मुसलमान हो गया । जिस तरह दुरूद शरीफ की बरकत से फीका रस मिठा हो गया । إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ हम दुरूद शरीफ पढ़ते रहेंगे तो हमारी फीकी इबादतों में भी दुरूदे पाक की बरकत से क़बूलियत की मिठास पैदा हो जाएगी । जिस तरह दुरूद शरीफ की बरकत से शहद शिफ़ा बन गया उसी तरह हर दुआ दुरूद शरीफ की बरकत से मरजे गुनाह की दवा है ।

हो दूरुदो सलाम, मेरे लब पर मुदाम
हर घड़ी दम ब दम, ताजदारे हरम

(वसाइले बख़्शिश, स. 271)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ हमें उम्र भर फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ अपने प्यारे और मोहसिन आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से दुरूदो सलाम भेजते रहने की तौफीक़ अता फ़रमा ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



बयान नम्बर : 9

एक कीरात अज्र

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने बा करीना है : **مَنْ صَلَّى عَلَى صَلَاةٍ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ قِيرَاطًا وَقِيرَاطٌ مِثْلُ أُخْدٍ** : “या’नी जो मुझ पर एक मरतबा **दुरूद शरीफ़** पढ़ता है **अल्लाह** तआला उस के लिये एक कीरात अज्र लिखता और एक कीरात उहुद पहाड़ जितना है ।”

(کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السادس فی الصلاة علیه وعلى آله، ۱/ ۲۴۹، الجزء الاول، حدیث: ۲۱۶۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हदीसे पाक में जबले उहुद का तजक़िरा है । येह वोह खुश नसीब पहाड़ है जिसे कई मरतबा सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की क़दम बोसी का शरफ़ हासिल हुवा है और येह पहाड़ अशिके रसूल है । चुनान्वे, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने महब्बत निशान है : **“أُخْدٌ جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ”** : “या’नी उहुद वोह पहाड़ है जो हम से महब्बत करता है और हम उस से महब्बत करते हैं ।”

(بخاری، کتاب الزکاة، باب خمس التمر، ۵۰۰/۱، حدیث: ۱۴۸۲)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی** इस हदीसे पाक के तहत मिशकातुल

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मसाबीह की शर्ह मिरआतुल मनाजीह में इरशाद फ़रमाते हैं :

“उहुद शरीफ़ मदीनए पाक से जानिबे मशरिक़ तक़रीबन तीन मिल दूर एक पहाड़ है, मदीनए मुनव्वरा ख़ुसूसन जन्नतुल बक़ीअ़ से साफ़ नज़र आता है, वहां शुहदाए उहुद ख़ुसूसन सय्यिदुशुहदा हज़रते सय्यिदुना अमीरे हम्ज़ा (رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ) के मज़ारात हैं, ज़ाइरीन जूक़ दर जूक़ इस पहाड़ की ज़ियारत करते हैं, मैं ने हुज्जाज को इस पहाड़ से लिपट कर रोते और वहां के पथ्थरों को चूमते देखा है। हर मोमिन के दिल में कुदरती तौर पर इस की महब्बत है। हक़ येह है कि खुद येह पहाड़ ही हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत करता है। लकड़ियों पथ्थरों में एहसास भी है और महब्बत व अदावत का माद्दा भी, हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के फ़िराक़ में ऊंट भी रोए और लकड़ियों ने भी गिर्या व ज़ारी व फ़रयाद की है।

(لمعات ، مرقّات، محی السنه)

लिहाज़ा हक़ येह है कि खुद हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم उहुद पहाड़ से, उस अलाके से, वहां के पथ्थरों से महब्बत फ़रमाते हैं और येह तमाम चीज़ें बिऐनिही हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم से महब्बत करती हैं, अहादीस से साबित है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم उहुद पर चढ़े तो उहुद को वज्द आ गया और

वोह झूमने लगा।”

हदीसे पाक से हाशिल होने वाले सात मदनी फूल

मजीद फरमाते हैं : “इस हदीस से चन्द ईमान अफ़रोज़ मसाइल साबित हुवे :

एक येह कि तमाम हसीन सिर्फ़ इन्सानों के महबूब हुवे, हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इन्सान, जिन्न, लकड़ी, पथ्थर और जानवरों के भी महबूब हैं, या'नी खुदाई के महबूब हैं क्यूंकि खुदा के महबूब हैं।

दूसरे येह कि दूसरे महबूबों को हज़ारों ने देखा मगर आशिक़ एक दो हुवे, हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महबूबियत का येह आलम है कि आज इन का देखने वाला कोई नहीं और आशिक़ करोड़ों हैं।

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुशते ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मदाने अरब

(हदाइके बख़्शिश, स. 58)

तीसरे येह कि हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को पथ्थर के दिल का हाल मा'लूम है कि किस पथ्थर के दिल में हम से कितनी महबूबत है तो हमारे दिलों का ईमान, इरफ़ान, महबूबत व अदावत वगैरा भी यकीनन मा'लूम है, येह है इल्मे ग़ैबे रसूल।

चौथे येह कि हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** को अपना इश्को महबूबत जताने, जाहिर करने की ज़रूरत नहीं, उन्हें हमारे

हालात खुद ही मा'लूम हैं, उहुद ने मुंह से न कहा था कि मैं आप से महब्बत करता हूं या आप का चाहने वाला हूं।

पांचवीं यह कि जिस इन्सान के दिल में हुजूर **ﷺ** की महब्बत न हो वोह पथ्थर से भी सख्त है, **अल्लाह** तअला हुजूर **ﷺ** की महब्बत नसीब करे।

छटे यह कि हुजूर **ﷺ** की महब्बत इन की महबूबियत का जरीआ है, जो चाहता है कि हुजूर **ﷺ** उस से महब्बत करें तो उसे चाहिये कि हुजूरे अन्वर **ﷺ** से महब्बत करे, देखो यहां फरमाया कि हम भी उहुद से महब्बत करते हैं।

सातवें यह कि जो (हजरात) हुजूरे अन्वर **ﷺ** के महबूब हो गए उन के आस्ताने मरजए ख़लाइक़ हो गए, देखो हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा अजमेरी, हुजूर ग़ौसे पाक, हज़रते दाता गंज बख़्श **رحمة الله تعالى عليهم أجمعين** के आस्तानों की रौनकें यह इसी महबूबियत की जल्वा गरी है,

(मिरआत, 4/219 ता 220)

आ'ला हज़रत फ़रमाते हैं :

वोह कि इस दर का हुवा ख़ल्के खुदा उस की हुई
वोह कि इस दर से फिरा **अल्लाह** उस से फिर गया

(हदाइके बख़्शिश, स. 53)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

अल्लाह तअला जबले उहूद शरीफ़ के सद्के हमें भी इश्के रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का लाज्वाल जज़्बा नसीब फ़रमाए और हमें मुख़्लिस आशिके रसूल बनाए ।

दौलते इश्क़ से आका मेरी झोली भर दो
बस येही हो मेरा सामान मदीने वाले

आप के इश्क़ में ऐ काश के रोते रोते
येह निकल जाए मेरी जान मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 305)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अज़ाबे क़ब्र का एक सबब

“अल क़ौलुल बदीअ” में नक़ल है, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली बग़दादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي** फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्हुम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा **“مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ؟”** या’नी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?” वोह बोला : “मैं सख़्त हौलनाकियों से दो चार हुवा, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ।” इतने में आवाज़ आई : **هَذِهِ عُقُوبَةُ إِهْمَالِكَ لِلْسَّانِكِ فِي الدُّنْيَا** या’नी दुन्या में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति’माल की वजह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है ।” अब अज़ाब के फ़िरिश्ते मेरी तरफ़ बढे । इतने में एक साहिब जो हुस्नो जमाल के पैकर और मुअत्तर मुअत्तर थे, वोह मेरे और अज़ाब के दरमियान हाइल हो

गए। और उन्होंने ने मुझे मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी तरह जवाबात दे दिये, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ**

अज़ाब मुझ से दूर हुवा। मैं ने उन बुजुर्ग से अर्ज की : **“अल्लाह**
عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए ! आप कौन हैं ?” फ़रमाया :

اَنَا شَخْصٌ خُلِقْتُ مِنْ كَثْرَةِ صَلَاتِكَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ وَأَمِرْتُ أَنْ أَنْصُرَكَ فِي كُلِّ كَرْبٍ
या'नी मैं वोह शख्स हूं जिस को तेरे नबिय्ये पाक **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
पर कसरत के साथ **दुरूद शरीफ़** पढ़ने की बरकत से पैदा किया
गया है और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी इमदाद पर मामूर किया
गया है।” (القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة والسلام علی رسول اللہ ﷺ، ص ۲۶۰)

तुम्हारा नाम मुसीबत में जब लिया होगा

हमारा बिगड़ा हुवा काम बन गया होगा

(जौके ना'त, स. 35)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ कसरते **दुरूद शरीफ़** की बरकत से मदद
करने के लिये क़ब्र में जब फ़िरिश्ता आ सकता है तो तमाम
फ़िरिश्तों के भी आका मक्की मदनी मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
करम क्यूं नहीं फ़रमा सकते ! किसी ने बिल्कुल बजा तो फ़रयाद
की है।

मैं गोर अन्धेरी में घबराऊंगा जब तन्हा

इमदाद मेरी करने आ जाना मेरे आका

रोशन मेरी तुर्बत को लिल्लाह शहा करना

जब वक़्त नज़्म आए दीदार अता करना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़क़ूरा हिकायत में जहाँ

कसरते दुरूद शरीफ़ की तरगीब मौजूद है वहीं इस से येह दर्स भी मिलता है कि ज़बान जिस्मे इन्सानी का अहम तरीन उज़्व भी है ।

ज़बान मुफ़ीद भी है मुज़िर भी

याद रखिये ! ज़बान का सहीह इस्ति'माल करने के बे
शुमार फ़वाइद हैं और अगर येही ज़बान **अल्लाह** रहमान **عَزَّوَجَلَّ**
की नाफ़रमान बन कर चली तो बहुत बड़ी आफ़त का सामान है ।
मशहूर सहाबी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
है : **إِنَّ أَكْثَرَ خَطَايَا ابْنِ آدَمَ فِي لِسَانِهِ** :
ज़बान में होती हैं ।”

(شعب الإيمان، باب في حفظ اللسان، فصل في فضل السكوت عما لا يعنيه، ٤/ ٢٤٠ : حديث ٤٩٣٣)

रोज़ाना सुब्ह आ'जा ज़बान की खुशामद करते हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है :

إِذَا أَصْبَحَ ابْنُ آدَمَ فَإِنَّ الْأَعْضَاءَ كُلَّهَا تَكْفِرُ اللِّسَانَ فَنَقُولُ اتَّقِ اللَّهَ فَيُنَا نَحْنُ بِكَ،

فَإِنْ اسْتَقَمَّتْ اسْتَقَمَّ نَأْمُ، وَإِنْ أَعْوَجَّتْ أَعْوَجَّ نَأْمُ

या'नी जब इन्सान सुब्ह करता है तो उस के तमाम आ'जा

ज़बान की खुशामद करते हैं, कहते हैं : “हमारे बारे में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ**

से डर ! क्यूँकि हम तुझ से वाबस्ता हैं अगर तू सीधी रहेगी तो हम सीधे रहेंगे अगर तू टेढ़ी होगी तो हम भी टेढ़े हो जाएंगे ।”

(ترمذی، کتاب الزهد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، ۱۸۳/۴، حدیث: ۲۴۱۵)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنّانِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : “नफ़अ नुक्सान, राहत व आराम, तकालीफ़ व आलाम में (ऐ ज़बान !) हम तेरे साथ वाबस्ता हैं अगर तू ख़राब होगी हमारी शामत आ जावेगी, तू दुरुस्त होगी हमारी इज़्ज़त होगी । ख़याल रहे कि ज़बान दिल की तर्जुमान है इस की अच्छाई बुराई दिल की अच्छाई बुराई का पता देती है ।” (मिरआत, 6/465)

ज़बान की बे एह्तियाती की आफ़तें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ज़बान अगर टेढ़ी चलती है तो बा’ज अवकात फ़सादात बर्पा हो जाते हैं, इसी ज़बान से अगर किसी को बुरा भला कहा और उस को गुस्सा आ गया तो बा’ज अवकात क़त्लो ग़ारत गिरी तक नौबत पहुंच जाती है । इसी ज़बान से किसी मुसलमान को बिला इजाज़ते शरई डांट दिया और उस की दिल आज़ारी कर दी तो यकीनन इस में गुनहगारी और जहन्नम की हक़दारी है ।

दिल की सख़्ती का अन्जाम

اَللّٰهُمَّ رَحْمٰنُ عَزَّوَجَلَّ हम पर रहम फ़रमाए हमारी

ज़बानों को लगाम नसीब करे और हमारे दिलों की सख़्ती को दूर

फ़रमाए कि सख़्त दिली फ़ोहूश गोई की अलामत है जैसा कि

अल्लाह ग़नी के प्यारे नबी मक्की मदनी **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने इब्रत निशान है : “**اَلْبَدَاءُ مِنَ الْجَفَاءِ وَالْجَفَاءُ فِي النَّارِ**” या’नी फ़ोहूश गोई सख़्त दिली से है और सख़्त दिली आग में है।”

(ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی الحياء، ۴/۶/۳، حدیث: ۲۰۱۶)

मुफ़सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنّٰن** इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : “या’नी जो शख़्स **ज़बान** का बे बाक हो कि हर बुरी भली बात बे धड़क मुंह से निकाल दे तो समझ लो कि **उस** का दिल सख़्त है उस में हया नहीं। सख़्ती वोह दरख़्त है जिस की जड़ इन्सान के दिल में है और उस की शाख़ **दोज़ख़** में। ऐसे बे धड़क इन्सान का अन्जाम येह होता है कि वोह **अल्लाह** (**عَزَّوَجَلَّ**) (और) रसूल (**صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**) की बारगाह में भी बे अदब हो कर **काफ़िर** हो जाता है।

(मिरआत, 6/641)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ामोशी की आदत बनाने के लिये बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीसे पाक को हिफ़ज़ कर लीजिये **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** काफ़ी सहूलत रहेगी। वोह हदीसे मुबारका येह है : मदीने के सुल्तान, सरकारे दो जहान, रहमते आलमिय्यान **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने इब्रत निशान है : **مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ** या’नी जो

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** और आखिरत पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि भलाई की बात करे या खामोश रहे ।”

(بخاری، کتاب الادب، باب من كان یؤمن بالله والیوم الآخر..... الخ، ۱۰/۴، حدیث: ۶۰۱۸)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें अपनी ज़बान को हर दम ज़िक्रो दुरूद से तर रखने और जिस्म के तमाम आ'जा का कुफ़ले मदीना लगाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।

मेरी ज़बान पर कुफ़ले मदीना लग जाए

फुज़ूल गोई से बचता रहूं सदा या रब !

करें न तंग खयालाते बद कभी कर दे

शुक्र व फ़िक्र को पाकीजगी अता या रब !

ब वक़ते नज़अ सलामत रहे मेरा ईमां

मुझे नसीब हो कलिमा है इल्तिजा या रब !

امین یحیٰ النبی الامین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

फ़रमाने मुस्तफ़ा

सवाब की खातिर अज़ान देने वाला उस शहीद की मानिन्द है जो खून में लिथड़ा हुवा है और जब मरेगा, क़ब्र में उस के जिस्म में कीड़े नहीं पड़ेंगे ।

(الترغیب والترہیب، ۱/ ۱۳۹، حدیث: ۳۸۴)



बयान नम्बर : 10

सरकार अहले महब्बत का दुरूद खुद सुनते हैं

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
का फ़रमाने बा क़रीना है :

أَسْمَعُ صَلَاةَ أَهْلِ مَحَبَّتِي وَ أَغْرِفُهُمْ وَ تُغَرِّضُ عَلَيَّ صَلَوةَ غَيْرِهِمْ عَرَضًا
या'नी अहले महब्बत का दुरूद मैं खुद सुनता हूं और उन्हें पहचानता
हूं जब कि दूसरों का दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है ।”
(مطالع المسرات شرح دلائل الخيرات، ص ۱۵۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे प्यारे आका
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की कुव्वते समाअत और इल्मे ग़ैब की शान
के क्या कहने कि दुन्या के कोने कोने में दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले
अहले महब्बत के दुरूद को न सिर्फ़ समाअत फ़रमाते हैं बल्कि उन्हें
पहचानते भी हैं । मुबारक कानों की शाने आली निशान को बयान
करते हुवे खुद इरशाद फ़रमाते हैं : اِنِّى اَرَى مَا لَا تَرَوْنَ وَ اَسْمَعُ مَا لَا تَسْمَعُونَ
या'नी मैं उन चीजों को देखता हूं जिन को तुम में से कोई नहीं
देखता और मैं उन आवाजों को सुनता हूं जिन को तुम में से कोई
नहीं सुनता ।” (الخصائص الكبرى، باب الآية فى سمعه الشريف، ۱/ ۱۱۳)

इस हदीसे पाक से साबित होता है कि सरकार
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की कुव्वते समाअत व बसारत बे मिसाल और

मो'जिजाना शान रखती हैं। क्योंकि आप ﷺ दूरो नज़दीक की आवाज़ों को यक्सां तौर पर सुन लिया करते हैं।

**दूरो नज़दीक के सुनने वाले वोह कान
काने ला 'ले करामत पे लाखों सलाम**

(हदाइके बख़्शाश, स. 300)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हम भी ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत ﷺ की जाते बा बरकत पर ब कसरत **दुरूदो सलाम** पढ़ते रहा करें और बारगाहे रिसालत ﷺ से फैज़याब होते रहें जो खुश नसीब रहमते अलमिय्यान, मक्की मदनी सुल्तान ﷺ पर **दुरूदे पाक** पढ़ने के आदी होते हैं उन पर नवाज़िशात की ऐसी बारिशें होती हैं कि देखने वाले मारे हैरत के अंगुशत बदन्दां रह जाते हैं। चुनान्चे, इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत सुनिये और मारे हैरत व मसरत के सर धुनिये।

बा क़माल मदनी मुन्नी

हज़रते सय्यिदुना शैख़ मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ूली عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : “मैं सफ़र में था, एक मक़ाम पर नमाज़ का वक़्त हो गया, वहां कुंवां तो था मगर रस्सी और डोल नदारद (या'नी डोल और रस्सी मौजूद न थी) मैं इसी फ़िक्र में था कि एक मकान के ऊपर से एक **मदनी मुन्नी** ने झांका और पूछा : “आप क्या तलाश कर रहे हैं ?” मैं ने कहा : “बेटी ! रस्सी और डोल।” उस ने पूछा : “आप का नाम ?” फ़रमाया : **मुहम्मद बिन**

सुलैमान जज़ूली । मदनी मुन्नी ने हैरत से कहा : “अच्छा आप ही हैं जिन की शोहरत के तो डंके बज रहे हैं मगर हाल येह है कि कुंवें से पानी भी नहीं निकाल सकते !” येह कह कर उस ने कुंवें में थूक दिया । कमाल हो गया ! आनन फ़ानन पानी ऊपर आ गया और कुंवें से छलकने लगा । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने वुजू से फ़राग़त के बा’द उस बा कमाल मदनी मुन्नी से फ़रमाया : “बेटी ! सच बताओ तुम ने येह कमाल किस तरह हासिल किया ?” कहने लगी : “येह उस जाते गिरामी पर दुरूदे पाक की बरकत से हुवा है अगर वोह जंगल में तशरीफ़ ले जाएं तो दरिन्दे, चरिन्दे आप के दामन में पनाह लें ।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “उस बा कमाल मदनी मुन्नी से मुतअस्सिर हो कर मैं ने वहीं अहद किया कि मैं दुरूद शरीफ़ के मुतअल्लिक़ किताब लिखूंगा ।”

(سعادة الدارين، الباب الرابع، اللطيفة الخامسة عشرة بعد المائة، ص ١٥٩ مفهوماً)

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने दुरूद शरीफ़ के बारे में किताब लिखी जो बहुत मक्बूल हुई और उस किताब का नाम “दलाइलुल ख़ैरात” है ।
(हुसैनी दुल्हा, स. 1)

सालिहीन का ज़िक्र बाइसे रहमत है

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :
عَنْدُكُمُ الصّٰلِحِيْنَ تَنْزِلُ الرّٰحْمَةُ يا’नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रहमत नाज़िल होती है ।”
(جلیة الاولیاء، ٤/ ٣٣٥، رقم: ١٠٤٥٠)

आइये हम भी हुसूले बरकत और नुज़ूले रहमत के लिये साहिबे दलाइलुल ख़ैरात का कुछ तज़क़िरा सुनते हैं ।

साहिबे दलाइलुल खैरात फनाफिल मुस्तफा, सनदुल अस्फिया, आरिफे कामिल, कुत्बुल अक्ताब, वहिदुद्दहर, फरीदुल अस्स, शैख इमाम अबू अब्दुल्लाह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का नामे नामी इस्मे गिरामी मुहम्मद, वालिद का नाम अब्दुर्रहमान, जब कि दादा का इस्मे गिरामी अबू बक्र बिन सुलैमान है। तारीख में बहुत से ऐसे बुजुर्ग मिलते हैं जिन की निस्बत वालिद की बजाए जदे आ'ला की तरफ होती है, हज़रते सय्यिदुना इमाम जज़ूली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَّى** को भी बिल उमूम इन के वालिद के दादा जान हज़रते सुलैमान की तरफ मन्सूब कर के मुहम्मद बिन सुलैमान कहा जाता है।

आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** सि. 807 हि. ब मुताबिक सि. 1404 ई. को मुल्के मराकिश के मक़ाम “सौस” में पैदा हुवे। आप हसनी सय्यिद हैं, इक्कीस वासितों से आप का सिलसिलए नसब हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन मुजतबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मिलता है। नीज़ आप मजहबन मालिकी (या'नी हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَّى** के मुकल्लिद) और मशरबन (या'नी तरीक़त के ए'तिबार से) शाज़िली थे।

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ूली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَّى** खुश अक़ीदा बुजुर्ग थे जिन का तअल्लुक अहले सुन्नत व जमाअत से था। आप ज़ाते बारी तआला के हवाले से बड़ा ठोस अक़ीदा रखते थे और आप ने जा बजा **अल्लाह** तआला की ज़ात व सिफ़ात और उस की कुदरते कामिला का

बड़े हसीन पैराए में जिक्र किया है। दलाइलुल खैरात शरीफ बुन्यादी तौर पर दुरूदो सलाम का मजमूआ है मगर इस के ज़िम्न में **अल्लाह** तआला की सिफ़ात को इस तरह बयान किया है कि दुरूद पढ़ने वाले के दिल में **अल्लाह** तआला की अज़मत व शान और उस का जलाल व कमाल रासिख हो जाता है।

आप हमा वक़्त अवरादो वज़ाइफ़ में मशगूल रहते, हर मुआमले में **अल्लाह** तआला की तरफ़ ध्यान रखते, किताब व सुन्नत पर सख़्ती से कार बन्द और हुदूदे इलाही की पासबानी करने वाले थे, बिल आख़िर आप की नेकी और बुजुर्गी की धूम मच गई और ख़ल्के खुदा आप से फैज़याब होने लगी। आप दिन रात में डेढ़ कुरआने करीम की तिलावत फ़रमाते, बिस्मिल्लाह शरीफ़ का वज़ीफ़ा पढ़ते, नीज़ शबो रोज़ में दो मरतबा दलाइलुल खैरात ख़त्म करना भी रोज़ के मा'मूलात में शामिल था।

हज़रते सय्यिदुना शैख़ मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ूली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي सिलसिलए शाज़िलिय्या में बैअत के बा'द चौदह साल तक ख़ल्वत गुर्जी रह कर इबादत व रियाज़त और मनाज़िले सुलूक तै करने में मशगूल रहे। चौदह साला तवील ख़ल्वत के बा'द नेकी की दा'वत को आ़म करने और ख़ल्के खुदा की हिदायत के लिये आप ने जल्वत इख़्तियार की, आसिफ़ी शहर को आप ने अपनी दीनी सरगर्मियों का मर्कज़ बनाया और मुरीदीन की तर्बियत व हिदायत का काम सर अन्जाम देना शुरू किया। बे शुमार लोग आप के दस्ते हक़ परस्त पर ताइब हुवे और आप का चर्चा दुन्या भर में फैल गया, आप से

बे शुमार अज़ीम करामात और हैरत अंगेज़ ख़वारिक़ रूनुमा हुवे, आप के मनाक़िब और कमालात में ग़ौर करने से अक्ले इन्सानाी दंग रह जाती है।

साहिबे दलाइलुल ख़ैरात हज़रते सय्यिदुना शैख़ मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ूली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي का इम्तियाज़ी वस्फ़ इश्के रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है। आप तहदीसे ने'मत के तौर पर अपने इश्क़ की कैफ़ियत को दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ में यूं बयान फ़रमाते हैं :

وَنَفَيْتُ عَنْ قُلُوبِي فِي هَذَا النَّبِيِّ الْكَرِيمِ الشُّكَّ وَالْإِرْتِيَابَ وَغَلَبَتْ حُبُّهُ عِنْدِي عَلَى حُبِّ جَمِيعِ الْأَقْرَبَاءِ وَالْأَحْبَاءِ
या'नी ऐ **अल्लाह !** तू ने मेरे दिल को उस नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बारे में हर किस्म के शको शुबा से दूर रखा है और आप की महब्वत को मेरे नज़दीक़ तमाम रिश्तेदारों और प्यारों की महब्वत पर ग़ालिब कर दिया है।" आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इश्के रसूल के नज़ारे दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ में जा बजा देखे जा सकते हैं।

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की सारी उम्र हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद पढ़ते, दुरूद शरीफ़ की तरगीब देते और दुरूद शरीफ़ की नशरो इशाअत में गुज़री।

दुरूद ख़्वां का बदन मिट्टी नहीं खा सकती

सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي बहारे शरीअत जिल्द 1 सफ़्हा 114 पर फ़रमाते हैं : “वोह लोग (जो) अपने अवकात दुरूद शरीफ़ में मुस्तग़क़ रखते हैं उन के बदन को मिट्टी नहीं खा सकती।”

77 साल बा'द श्री जिस्म सलामत था

हज़रते सय्यिदुना शैख़ मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ूली صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلَى दुरूदो सलाम की कसरत फ़रमाते थे बल्कि आप के मुरतब कर्दा मजमूअए दुरूद “दलाइलुल ख़ैरात” की मदद से दुन्या भर में दुरूदो सलाम पढ़ा जाता है। चुनान्चे विसाल के सतत्तर (77) साल बा'द जब आप को क़ब्र से निकाला गया तो आप का जिस्मे मुबारक बिल्कुल तरो ताज़ा था, जैसे आज ही दफ़न किया गया हो, इतनी त़वील मुद्दत गुज़र जाने के बा वुजूद आप का जिस्म मुतग़य्यर न हुवा था। आप की दाढ़ी और सर के बाल ऐसे थे, जैसे आज ही हज्जाम ने आप की हजामत बनाई हो। एक शख़्स ने आप के चेहरे को उंगली से दबाया तो उस की हैरत की इन्तिहा न रही कि उस जगह से ख़ून हट गया और जब उंगली उठाई तो ख़ून फिर अपनी जगह लौट आया, जैसे ज़िन्दों के साथ हुवा करता है।

मज़ारे पुर अन्वार से कस्तूरी की खुशबू

मराकिश में आप का मज़ार मरजए ख़लाइक़ है। मज़ार पर बड़े रो'ब व जलाल का समां है, लोग ज़ियारत के लिये जूक़ दर जूक़ हज़िरी देते हैं और दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ का बकसरत विर्द होता है। शायद येह दुरूद शरीफ़ ही की बरकत है कि आप की क़ब्रे अतहर से कस्तूरी की महक आती है।

आप की जात मरजए ख़लाइक़ थी, मुरीदीन के इलावा भी हज़ारों अफ़राद आप की ज़ियारत व मुलाकात के लिये हाज़िर होते थे। आप के आम मुरीदीन का तो क्या शुमार, ख़वास की ता'दाद भी हज़ारों में थी। यहां तक कि आप के फ़ैज़ याफ़ता मुरीदीन में से बारह हज़ार छे सो पेंसठ (12665) तो ऐसे कामिल थे कि मक़ामे विलायत पर मुतमक्किन हुवे और अपनी अपनी इस्ति'दाद के मुताबिक़ कुर्बे इलाही के आ'ला मक़ामात पर फ़ाइज़ हुवे।

अल्लाह ﷻ की इन पर रहमत हों और इन के सद्के हमारी मग़फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बैअत की अहमियत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! तारीख़े इस्लाम के मुतालए से पता चलता है कि तक्रीबन तमाम औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ ने राहे सुलूक तै करने के लिये किसी पीरे कामिल के हाथ पर बैअत की बल्कि खुद हमारे ग्यारहवीं वाले आका, सरदार औलिया हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِير ने भी हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद मुबारक मख़जूमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत फ़रमाई। हमें भी चाहिये कि किसी न किसी जामेए शराइत पीरे कामिल के मुरीद बन जाएं। अल्लाह ﷻ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है।

يَوْمَ مَدَدُ عَوَاكِلِ أَنْاسٍ بِأَمَامِهِمْ

(प ५, बनी اسرائील: ८१)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन हम हर जमाअत को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे।

मुफ़्सीरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ “नूरुल इरफ़ान” में इस आयते करीमा के तहूत फ़रमाते हैं : “इस से मा’लूम हुवा कि दुन्या में किसी सालेह को अपना इमाम बना लेना चाहिये शरीअत में “तक्लीद” कर के और तरीक़त में “बैअत” कर के ताकि ह़शर अच्छे के साथ हो। अगर सालेह इमाम न होगा तो उस का इमाम शैतान होगा। इस आयत में (1) तक्लीद (2) बैअत और मुरीदी सब का सुबूत है।”

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 979)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के पुर फ़ितन दौर में पीरी मुरीदी का सिलसिला वसीअ़ तर ज़रूर है, मगर कामिल और नाक़िस पीर का इम्तियाज़ मुश्किल है। येह **عَزَّوَجَلَّ** का ख़ास करम है कि वोह हर दौर में अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत की इस्लाह के लिये अपने औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام ज़रूर पैदा फ़रमाता है। जो अपनी मोमिनाना ह़िक्मत व फ़रासत के ज़रीए लोगों को येह ज़ेहन देने की कोशिश फ़रमाते हैं कि “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।” (إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ)

फ़ी ज़माना मुर्शिदे कामिल की एक मिसाल बानिये दा’वते इस्लामी, शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ हैं,

जिन की निगाहे विलायत ने लाखों मुसलमानों बिल खुसूस नौजवानों की जिन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बर्पा कर दिया। आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** सिलसिलए अलिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या में मुरीद करते हैं और क़ादिरि सिलसिले की तो क्या बात है कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : “मेरा मुरीद चाहे कितना ही गुनाहगार हो **(إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)** वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा, जब तक तौबा न कर ले।” (आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 22)

जो किसी का मुरीद न हो उस की ख़िदमत में मदनी मश्वरा है ! कि अपनी दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये इस ज़माने के सिलसिलए अलिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या के अज़ीम बुजुर्ग शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** का मुरीद हो जाए। यकीनन मुरीद होने में नुक्सान का कोई पहलू ही नहीं, दोनों जहां में **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाइदा ही फ़ाइदा है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह तअ़ाला हमें अपने नेक बन्दों का दामन अ़ता फ़रमाए, अच्छों के सदके हमें अच्छा बनाए और हमें प्यारे आक़ा **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



बयान नम्बर : 11

सूज़ने गुमशुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا सहरी के वक्त कुछ सी रही थीं कि अचानक सूई गिर गई और चराग़ भी बुझ गया। इतने में रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ले आए। चेहरए अन्वर की रोशनी से सारा घर रोशन हो गया हत्ता कि सूई भी मिल गई। उम्मुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप का चेहरए अन्वर कितना रोशन है।” सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “या’नी उस शख्स के लिये हलाकत है जो मुझे क़ियामत के दिन न देख सकेगा।” अर्ज़ की : “वोह कौन है जो आप को न देख सकेगा।” फ़रमाया : “वोह बख़ील है।” पूछा : “बख़ील कौन?” इरशाद फ़रमाया : الَّذِي لَا يُصَلِّي عَلَىٰ إِذْ سَمِعَ بِاسْمِي “जिस ने मेरा नाम सुना और मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा।”

(القول البديع، الباب الثالث في التحذير من ترك الصلاة عليه عند ذكره، ص ३०२)

सूज़ने गुमशुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे
शाम को सुब्ह बनाता है उजाला तेरा

(जौके ना’त, स. 16)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़रे पूरनूर, शाफ़ेए

यौमुनुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने नूरुन अ़ला नूर की भी क्या बात है कि चेहरए अक्दस की रोशनी से सूरई मिल जाती है । मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنّٰن फ़रमाते हैं : “रहमते अ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बशर भी हैं और नूर भी, या’नी नूरानी बशर हैं । ज़ाहिरी जिस्म शरीफ़ बशर है और हकीक़त नूर है ।”

(रसाइले नईमिया, स. 39,40)

क़ुरबान जाइये ! हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानिय्यत के कि इस नूर के पैकर की दुन्याए आबो गिल में जल्वा गरी भी इस शान से हुई की चहार सू रोशनी की किरनें बिखर गई । चुनान्वे,

ऐवाने शाम रोशन हो गए

हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिय्या फ़रमाते हैं कि आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنِّیْ عِنْدَ اللّٰهِ مَكْتُوْبٌ خَاتِمُ النَّبِیِّیْنَ ، وَاِنَّ اَدَمَ لَمُنْجِدِلٌ فِیْ طِیْنَتِهٖ या’नी मैं **अब्बाह** तअ़ला के नज़दीक़ ख़ातिमुन्नबिय्यीन लिखा हुआ था बहाल येह कि हज़रते आदम के पुतले का ख़मीर हो रहा था (फिर फ़रमाया) وَسَاخِرْکُمْ بِاَوَّلِ اَمْرِیْ मैं तुम्हें अपने इब्तिदाए हाल की ख़बर दूँ, دَعْوَةُ اِبْرَاهِیْمَ ، وَبِشَارَةُ عِیْسٰی ، وَرُؤْیَا اُمِّی الْتِیْ رَاَتْ جِبْنَ وَضَعْتِنِیْ या’नी मैं दुआए इब्राहीम हूँ, बिशारते ईसा हूँ, अपनी वालिदा के उस ख़्वाब

की ता'बीर हूं जो उन्होंने ने मेरी विलादत के वक्त देखा,
 وَقَدْ خَرَجَ لَهَا نُورٌ أَضَاءَتْ لَهَا مِنْهُ قُصُورُ الشَّامِ या'नी उन से एक नूरे सातिअ
 (चमकता हुआ नूर) ज़ाहिर हुआ जिस से मुल्के शाम के ऐवानो
 कुसूर उन के लिये रोशन हो गए।”

हज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन मुहम्मद हाफ़िज़ शीराज़ी
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي बारगाहे रिसालत में अर्ज़ गुज़ार हैं :

يَا صَاحِبَ الْجَمَالِ وَيَا سَيِّدَ الْبَشَرِ
 مِنْ وَجْهِكَ الْمُنِيرِ لَقَدْ نُورَ الْقَمَرِ

या'नी ऐ हुस्नो जमाल वाले صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और तमाम
 इन्सानों के सरदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बेशक आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 के नूरानी चेहरे की ताबानी से चांद को रोशन किया गया।

सशक़ा की बशरियत का इन्कार करना कैसा ?

बेशक हमारे मदनी आक़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हकीक़त
 नूर है मगर येह याद रखिये ! कि मुतलक़न बशरियत के इन्कार
 की इजाज़त नहीं। चुनान्वे, मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमाम
 अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : “ताजदारे रिसालत,
 शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बशरियत का मुतलक़न
 इन्कार कुफ़्र है।” (फ़तावा रज़विय्या, 14/358) लेकिन आप की
 बशरियत अ़ाम इन्सानों की तरह नहीं बल्कि आप सय्यिदुल
 बशर और अफ़ज़लुल बशर हैं।

अल्लाह तबारक व तअला का फ़रमाने नूर बार है :

تَرْجَمَہ کَنْزُالْ اِیْمَان : بَہْشَک
قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَ
کِتَابٌ مُبِیْنٌ ﴿۱۵﴾
तुम्हारे पास **अल्लाह** की तरफ से
एक नूर आया और रोशन किताब ।
(प १, المائدة: १५)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन जरीर
तबरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُبْرَى** (मुतवफ़ा 130 हि.) फ़रमाते हैं :
بِالنُّورِ مُحَمَّدًا (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) الَّذِي أَنَارَ اللَّهُ بِهِ الْحَقَّ وَأَظْهَرَ بِهِ الْإِسْلَامَ
या'नी नूर से मुराद मुहम्मद **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** हैं कि जिन के
जरीए **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने हक़ को रोशन और इस्लाम को ज़ाहिर
फ़रमा दिया । (تفسير الطبري، پ १، المائدة، تحت الآية ५، १/५)

सब से पहली तख़लीक

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है, वोह कहते हैं, मैं ने अर्ज की :
يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ! "يَا بَنِي أَنْتَ وَأُمِّي أَخْبِرْنِي عَنْ أَوَّلِ شَيْءٍ خَلَقَهُ اللَّهُ تَعَالَى قَبْلَ الْأَشْيَاءِ
या'नी या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मेरे मां-बाप आप पर
कुरबान ! मुझे बताइये कि सब से पहले **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने क्या
चीज़ बनाई ?" फ़रमाया : **يَا جَابِرُ إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَدْ خَلَقَ قَبْلَ الْأَشْيَاءِ نُورَ نَبِيِّكَ مِنْ نُورِهِ** :

या'नी ऐ जाबिर ! बेशक **अल्लाह** तअला ने तमाम मख़्लूक़ात

से पहले तेरे नबी ﷺ के नूर को अपने नूर से पैदा

फरमाया ।” (المواهب اللدنية، المقصد الاول، تشریف اللہ تعالیٰ له ﷺ، ۱/ ۳۶)

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

(हदाइके बख्शिश, स. 246)

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले

बल्कि आप ﷺ तो कासिमे नूर हैं जिसे चाहे पुरनूर कर दें। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना असीद बिन अबी अयास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ वोह खुश नसीब सहाबी हैं कि मदीने के ताजदार, शहनशाहे आली वकार ﷺ ने एक बार उन के चेहरे पर हाथ फेरा और उन के सीने पर अपना दस्ते पुर अन्वार रखा तो कहा जाता है कि जब भी वोह किसी तारीक घर में दाखिल होते तो वोह घर रोशन व मुनव्वर हो जाता।

(کنز العمال، کتاب الفضائل، باب فی فضائل الصحابة، ۱۲۳/۷، الجزء الثالث عشر، حدیث: ۳۶۸۱۹)

(الخصائص الكبرى، باب الآية فی اثریده من الشفاء والبریق..... الخ، ۱/ ۴۲)

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले

मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

(हदाइके बख्शिश, स. 158)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा गुफ्तगू से मा'लूम हुवा कि हुजूर जाने आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते तय्यिबा बशरियत के साथ साथ नूर से भी मा'मूर है। नूर व बशर की मजीद मा'लूमात के लिये मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ** के “रिसालए नूर” का मुतालआ बेहद मुफीद साबित होगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, हबीबे परवर दगार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का इरशादे नूर बार है :

زَيِّنُوا مَجَالِسَكُمْ بِالصَّلَاةِ عَلَى فَإِنَّ صَلَوَتَكُمْ عَلَى نُوْرٍ لَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ कर आरास्ता करो क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ना बरोजे क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।” (جامع صغير، حرف الزاى، ص २८०، حديث: २५८०)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

किस क़दर खुश नसीब हैं वोह लोग जो अपनी ज़िन्दगी में हुजूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** पर **दुरूदो सलाम** पढ़ने को सुब्हो शाम का वजीफ़ा बनाते हैं, रोजे क़ियामत उन का पढ़ा हुवा **दुरूदे पाक** उन के लिये नूर होगा।

का'बे के बदरुहुजा तुम पे करोड़ों दुरूद

तैबा के शम्सुहुद्दा तुम पे करोड़ों दुरूद

(हदाइके बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूदे पाक की आदत

बनाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्तगी और दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिकत नीज मदनी इन्आमात पर अमल करना इन्तिहाई मुफ़ीद है। मदनी इन्आमात दर हकीकत इस पुर फ़ितन दौर में बा आसानी नेकियां करने और गुनाहों से बचने का एक बेहतरीन और जामेअ मजमूआ है जो शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** ने ब सूरते सुवालात अपने मुरीदीन, मुहिब्बीन और मुतअल्लिकीन को अता फ़रमाया है इन मदनी इन्आमात में आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** ने जहां इल्मो अमल की तरगीब दी, वहीं जा बजा अहमदे मुजतबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते सितुदा सिफ़ात पर दुरूदे पाक पढ़ने का ज़ेहन भी दिया है जैसा कि मदनी इन्आम नम्बर 5 में फ़रमाते हैं : “क्या आज आप ने अपने शजरे के कुछ न कुछ अवराद और कम अज कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लिये ?”

मदनी इन्आम नम्बर 49 में फ़रमाते हैं : “क्या आज आप ने ज़रूरी गुफ़्तगू भी कम से कम अल्फ़ाज़ में निमटाने की कोशिश फ़रमाई ? नीज फुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में फ़ौरन नादिम हो कर दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया ?”

इसी तरह मदनी इन्आम नम्बर 51 में फ़रमाते हैं : “क्या आप ने इस हफ़्ते इजतिमाअ में आगाज़ ही से शरीक हो कर

(जितना बैठ सके इतनी देर) दो जानू बैठ कर अकसर निगाहें नीची किये हर बयान, ज़िक्रो दुआ और खड़े हो कर सलातो सलाम में शिर्कत और मस्जिद में (मअ हल्का तहज्जुद व नमाजे इशराक, चाशत) सारी रात ए'तिकाफ़ फ़रमाया ?”

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की भी क्या ख़ूब मदनी बहारें हैं कि इस से वाबस्तगी के ज़रीए न सिर्फ़ मुआशरे के बिगड़े हुवों की बिगड़ी बन जाती है बल्कि वोह इश्के रसूल से सरशार हो कर सौमो सलात के पाबन्द और दुरूदे पाक के आदी बन जाया करते हैं ऐसी ही एक मदनी बहार सुनिये और अमल का जज़्बा पैदा कीजिये । चुनान्वे,

ब्रेक डान्स कैसे सुधरा ?

लियाक़त पूर (ज़िलअ रहीमयार ख़ान, पंजाब) के मुक्मीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं सि. 1409 हि. ब मुताबिक़ सि. 1989 ई में ख़ानपूर (ज़िलअ रहीमयार ख़ान) में रिहाइश पज़ीर था । उन दिनों मैं एक कराटे क्लब में कराटे सीखता था । कराटे रेंकिंग के मुताबिक़ मेरी ग्रीन बेल्ट थी (कराटे के खेल में येह एक दरजा है) मैं अपनी ही दुन्या में मस्त था । वक़््त के साथ साथ मेरे नित नए शौक़ व इरादे बढ़ने लगे । यहां तक कि मैं ने बा काइदा एक माहिर उस्ताद से ब्रेक डान्स सीखना शुरूअ कर दिया, अपने फ़न में मैं ने इतनी महारत हासिल कर ली कि मेरा उस्ताद जो मुझे डान्स सिखाता था सि. 1992 ई. में पाक पतन चला गया । मैं ने उस्ताद की ग़ैर मौजूदगी में डान्स क्लब

बेहतरीन अन्दाज़ में संभाला । डान्स सीखने वाले लड़कों की

ता 'दाद भी बढ़ गई। वक्त के साथ साथ मुझे शोहरत मिली तो मैं लियाक़त पूर शिफ़्ट हो गया। यहां भी अपने फ़न का ख़ूब मुज़ाहरा किया और जल्द ही शागिर्दों में इज़ाफ़ा होने लगा। इसी दौरान मैं स्टेज ड्रामे करवाने वाली एक मक़ामी आर्ट काउन्सिल का रुक्न भी बन गया। मुझे ड्रामों में गानों और डांस के लिये मदद किया जाता। इस तरह मैं लोगों से ख़ूब दादे तहसीन हासिल करता। यूं मेरे शबो रोज़ मज़ीद गुनाहों की नज़्र होने लगे। इन गुनाहों में घिरे होने के बावजूद कभी कभार नमाज़ पढ़ने मस्जिद चला जाया करता था। येही नमाज़ पढ़ना ही मेरी इस्लाह का सबब बना। मेरी खुश नसीबी कि मैं जिस मस्जिद में नमाज़ पढ़ता था वहां के इमाम साहिब दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता थे। मैं जब भी मस्जिद जाता वोह इन्तिहाई मिलनसारी से मुलाक़ात फ़रमाते और क़ब्रों आखिरत की तय्यारी का ज़ेहन बनाते। एक रोज़ जब मैं इमाम साहिब से मिलने गया तो मेरी नज़र अचानक एक ज़ख़ीम किताब पर पड़ी जिस पर जली हुरूफ़ में "फ़ैज़ाने सुन्नत" लिखा हुआ था। मैं ने उसे उठाया और मुतालआ करना शुरू कर दिया किताब में लिखे ईमान अफ़रोज़ वाकिआत और बिल खुसूस दुरूदो सलाम के फ़ज़ाइल पढ़ कर दिल बाग़ बाग़ हो गया। किताब का हर्फ़ हर्फ़ इश्क़े रसूल में डूबा हुआ था येही वजह थी कि दिल भर ही नहीं रहा था।

अब तो मेरी आदत बन गई कि रोज़ाना शाम के वक्त इमाम साहिब के पास आता और देर तक मुतालआ करता रहता। इस

तर्ह मेरी **दुरूदे पाक** की भी आदत बन गई। एक मरतबा सर्दियों की शाम मैं होटल पर फ़िल्म देखने जा रहा था कि अचानक मेरी मुलाकात इमाम साहिब से हो गई, उन्होंने ने मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार इजतिमाअ में शिर्कत की दा'वत पेश की। मैं चूँकि शिर्कत नहीं करना चाहता था लिहाज़ा बहाना बनाया कि सर्दी बहुत है, मैं घर से चादर ले आऊँ। मेरा येह कहना था कि **इमाम साहिब ने अपनी चादर उतारी और मुझे ओढ़ा दी**। मैं ने चादर लेने से इन्कार किया मगर उन के पुर खुलूस इसरार के सामने हथियार डालना ही पड़े। मैं हैरान रह गया कि इतनी सर्दी में कोई इस तरह भी ईसार कर सकता है ? बिल आख़िर मैं सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शरीक हो ही गया। सुन्नतों भरे इजतिमाअ का रूह परवर मन्ज़र देख कर मेरी तो आंखें खुली की खुली रह गई, मुझे एहसास हुआ कि अफ़सोस ! मैं तो फ़ानी दुनिया की महब्बत में गुम था। हकीकी ज़िन्दगी तो येह हैं जहां ज़िन्दगी का हर रंग अपने अन्दर हज़ारों रहमतें व बरकतें समेटे हुवे हैं। इजतिमाअ में “इश्के मुस्तफ़ा” के मौजूअ पर होने वाले सुन्नतों भरे बयान ने मेरी आंखों से ग़फ़लत के पर्दे दूर कर दिये। मैं बे इख़्तियार रो पड़ा। ज़िक्रुल्लाह के दौरान मुझे ऐसा सुकून मिला कि इस से पहले कभी ऐसा इतमीनान न मिला था और आख़िर में होने वाली रिक्कत अंगेज़ दुआ ने जैसे जंग आलूद दिल का मैल उतार

दिया। मैं ने रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की। मुझे महसूस हुआ कि मेरे दिल की दुनिया में मदनी इन्क़िलाब बर्पा हो चुका है। इजतिमाअ के इख़िताम पर इस्लामी भाई इस तरह मिल रहे थे कि जैसे मुझे बरसों से जानते हों। मैं ने उसी वक़्त इमाम साहिब से कहा “अब आप आएँ या न आएँ मैं हर जुमा रात इजतिमाअ में जरूर आया करूँगा।” **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं हमेशा हमेशा की राहतेँ और बरकतेँ हासिल करने के ज़ब्बे के तहत दा'वते इस्लामी के मुश्कवार मदनी माहोल से वाबस्ता हो गया। 5,6,7 अप्रैल सि. 1995 ई. में मीनारे पाकिस्तान (लाहोर) में होने वाले सूबाई इजतिमाअ में शरीक हो कर अमीरे अहले सुन्नत से मुरीद हो कर क़ादिरि अत्तारी बन गया। कल तक ग्रीन बेल्ट मेरी कमर पर थी और आज ग्रीन इमामा मेरे सर पर है। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** ता दमे तहरीर सूबाई मुशावरत में मक्तूबातो ता 'वीज़ाते अत्तारिय्या के ज़िम्मेदार की हैसियत से सुन्नतों की ख़िदमत की सअदत हासिल कर रहा हूँ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **اَللّٰهُ** हमें नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर ब कसरत दुरूदे पाक पढ़ने की तौफीक़ अता फ़रमा और दुरूदे पाक की बरकत से हमारी तमाम मुश्किलात हल फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



जुमुआ के दिन दुखदे पाक की कसरत

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**
का फ़रमाने बा करीना है :

اَكْبِرُوا الصَّلَاةَ عَلَى يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَإِنَّهُ مَشْهُودٌ تَشْهَدُهُ
الْمَلَائِكَةُ وَإِنْ أَحَدًا لَّنْ يُصَلِّيَ عَلَى الْإِعْرَاضِ عَلَى صَلَاتِهِ حَتَّى يَفْرَغَ مِنْهَا

या'नी जुमुआ के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो क्यूंकि येह यौमे मशहूद (या'नी मेरी बारगाह में फ़िरिश्तों की खुसूसी हाज़िरी का दिन) है, इस दिन फ़िरिश्ते (खुसूसी तौर पर कसरत से मेरी बारगाह में) हाज़िर होते हैं, जब कोई शख्स मुझ पर दुरूद भेजता है तो उस के फ़ारिग़ होने तक उस का दुरूद मेरे सामने पेश कर दिया जाता है।" हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** का बयान है कि मैं ने अर्ज किया : "(या रसूलल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**) और आप के विसाल के बा'द क्या होगा ?" इरशाद फ़रमाया : "हां (मेरी ज़ाहिरी) वफ़ात के बा'द भी" (मेरे सामने इसी तरह पेश किया जाएगा।) **إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ** या'नी **अब्बाह** तआला ने ज़मीन के लिये अम्बियाए किराम **فَنَبِئُ اللّٰهَ حَتَّى يَرْزُقَ** के जिस्मों का खाना हराम कर दिया है। पस **अब्बाह** तआला का नबी ज़िन्दा होता है और उसे रिज़क़ भी अता किया जाता है।"

(ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ذكر وفاته..... الخ، ۲ / ۲۹۱، حديث: ۱۶۳۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें कोशिश कर के बिल खुसूस जुमुअतुल मुबारक के दिन **दुरूद शरीफ** की कसरत करनी चाहिये कि अहादीसे मुबारका में इस रोज़ कसरते दुरूद की खास तौर पर ताकीद की गई है जैसा कि आप ने अभी समाअत फ़रमाया। और ज़मीन अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के मुबारक जिस्मों को क्यूं नहीं खाती ? इस की ईमान अफ़रोज़ तौजीह बयान करते हुवे हज़रते अल्लामा अब्दुररुफ़ मनावी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** इरशाद फ़रमाते हैं : **لَئِنْهَا تَشْرَفُ بِوَقْعِ أَقْدَامِهِمْ عَلَيْهَا وَتَفْتَحُرُ بِضَمِّهِمْ إِلَيْهَا فَكَيْفَ تَأْكُلُ مِنْهُمْ** इस लिये कि ज़मीन अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के **मुबारक क़दमों** के बोसे से मुशररफ़ होती है और इसे येह सआदत मिलती है कि अम्बियाए किराम के **मुबारक अजसाम** ज़मीन से मस होते हैं तो येह उन के जिस्मों को कैसे खा सकती है।

(فيض القدير، حرف الهمزة، ٢/٢٤٨، تحت الحديث: ٢٢٨٠)

जिस खाक पे रखते थे क़दम सय्यिदे आलम

उस खाक पे कुरबां दिले शैदा है हमारा

(हदाइके बख़्शिश, स. 32)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हदीसे पाक से मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** अपने अपने मज़ाराते तय्यिबात में ज़िन्दा हैं। बा'ज़ अवकात इस मुआमले में मर्दूद शैतान तरह तरह के वस्वसे डालता है, आइये इस हवाले से कुछ सुनने की सआदत हासिल करते हैं।

अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी कब्रों में जिन्दा हैं

सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** तहरीर फ़रमाते हैं: “अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** अपनी अपनी कब्रों में उसी तरह ब हयाते हकीकी जिन्दा हैं, जैसे दुनिया में थे, खाते पीते हैं, जहां चाहें आते जाते हैं, तस्दीके वा'दए इलाहिया के लिये एक आन को उन पर मौत तारी हुई, फिर ब दस्तूर जिन्दा हो गए, उन की हयात, हयाते शुहदा से बहुत अरफ़ओ आ'ला है लिहाज़ा शहीद का तर्का तक्सीम होगा, उस की बीबी बा'दे इद्दत निकाह कर सकती है ब ख़िलाफ़े अम्बिया के, कि वहां येह जाइज़ नहीं।” (बहारे शरीअत, हिस्सा अब्वल, स. 58)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाते हैं : अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** और औलियाए किराम व उ-लमाए दीन व शुहदा व हाफ़िज़ाने कुरआन कि कुरआने मजीद पर अमल करते हों और वोह जो मन्सबे महब्बत पर फ़ाइज़ हैं और वोह जिस्म जिस ने कभी **اَبُو** की मा'सिय्यत न की और वोह कि अपने अवकात **दुरूद शरीफ़** में मुस्तग्रक रखते हैं, उन के बदन को मिट्टी नहीं खा सकती। जो शख्स अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَام** की शान में येह ख़बीस कलिमा कहे कि मर कर मिट्टी में मिल गए, गुमराह, बद दीन, ख़बीस, मुर्तकिबे तौहीन हैं।”

(बहारे शरीअत, हिस्सा अब्वल, स. 114)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! विसाले ज़ाहिरी फ़रमाने के बा'द अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का ज़िन्दा होना मुतअद्दिद अह्दादीसे मुबारका से साबित है । नीज़ येह हज़रात अपने मज़रात में नमाज़ भी पढ़ते हैं । चुनान्वे, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है :
 “لَا نَبِيَّاءَ أَحْيَاءُ فِي قُبُورِهِمْ يُصَلُّونَ”
 या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और नमाज़ भी पढ़ते हैं ।”

(مسند أبي يعلى، مسند انس بن مالك، ۲/۳، ۲/۱۶، حديث: ۳۱۱۲)

एक और हदीसे पाक में इरशाद फ़रमाया गया :

مَرَرْتُ عَلَى مُوسَى لَيْلَةَ أُسْرَى بِيْ عِنْدَ الْكَثِيبِ الْأَحْمَرِ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي قَبْرِهِ
 या'नी मे'राज की रात मेरा गुज़र सुर्ख टीले के पास से हुवा (तो मैं ने देखा कि) हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अपनी क़ब्र में खड़े हुवे नमाज़ पढ़ रहे हैं ।”

(مسلم، كتاب الفضائل، باب من فضائل موسى، ص ۲۹۳، حديث: ۲۳۷۴)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारी मौत और हुज़ूर के विसाले ज़ाहिरी में बहुत फ़र्क है जैसा कि ग़ज़ालिये ज़मां राज़िये दौरां हज़रते अल्लामा मौलाना अहमद सईद काज़िमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي तहरीर फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मौत हमारी मौत से कई ए'तिबारात से मुख़लिफ़ है ।

(1) सय्यिदे अलाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इख़्तियार

हासिल था कि दुन्या में रहें या रफ़ीके आ'ला के पास तशरीफ़ ले जाएं (بخاری شریف) लेकिन हमें दुन्या में रहने या आख़िरत की तरफ़ जाने में कोई इख़्तियार नहीं होता बल्कि हम मौत के वक़्त सफ़रे आख़िरत पर मजबूर हो जाते हैं।

(2) गुस्ल के वक़्त हमारे कपड़े उतारे जाते हैं लेकिन

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को उन्हीं मुबारक कपड़ों में गुस्ल दिया गया जिन में विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया था।”

(3) सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नमाज़े

जनाज़ा हमारी तरह नहीं पढ़ी गई बल्कि मलाइकए किराम, अहले बैते इज्जाम और हज़राते सहाबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ ने जमाअत के बिगैर अलग अलग हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर नमाज़ पढ़ी और इस नमाज़ में मा'रुफ़ दुआएं भी नहीं पढ़ी गई बल्कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ता'रीफ़ व तौसीफ़ के कलिमात अर्ज़ किये गए और दुरूद शरीफ़ पढ़ा गया।

(4) हमारी मौत के बा'द जल्दी दफ़न करने का ताकीदी

हुक्म है लेकिन सरकारे दो अलाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ विसाले ज़ाहिरी के बा'द सख़्त गर्मी के ज़माने में पूरे दो दिन के बा'द क़ब्रे

अन्वर में दफ़न किये गए।

(5) हमारी मौत के बा'द हमें आम मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफन किया जाएगा जब कि सरकारे दो अलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तदफ़ीन उसी मक़ाम पर की गई जहां विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया था ।

(6) हमारी मौत के बा'द हमारी मीरास तक्सीम होती है जब कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस से मुस्तसना हैं ।

(7) हमारी मौत के बा'द हमारी बीवियां इदत गुज़ार कर किसी और से निकाह कर सकती है जब कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की अज़्वाज के लिये ऐसा करना जाइज़ नहीं ।

(مقالات کاظمی، ج ۲، ص ۹۵ ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ न सिर्फ़ हयात हैं बल्कि खुश नसीबों को अपनी ज़ियारत और दस्तबोसी की सआदत भी अता फ़रमाते हैं । चुनान्चे,

दस्त बोसी का शरफ़

हज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي तहरीर फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना अहमद कबीर रिफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي जो मशहूर बुजुर्ग और अकाबिर सूफ़िया में से हैं उन का वाक़िआ मशहूर है कि जब वोह सि. 555 हि. में हज़ से फ़ारिग़ हो कर सरकारे आ'ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत के लिये

मदीनए तय्यिबा हाजिर हुवे और क़ब्रे अन्वर के सामने खड़े हुवे तो येह दो शे'र पढ़े :

فِي حَالَةِ الْبُعْدِ رُوحِي كُنْتُ أُرْسِلُهَا تُقْبَلُ الْأَرْضُ عَنِّي وَهِيَ نَائِيَتِي

मैं दूरी की हालत में अपनी रूह को खिदमत मुबारका में भेजा करता था जो मेरी नाइब बन कर आस्तानए मुबारक को चूमा करती थी ।

وَهَذِهِ دَوْلَةُ الْأَشْبَاحِ قَدْ حَضَرَتْ فَأَمْدُدْ يَمِينَكَ كَيْ تَحْطِيَ بِهَا شَفَتِي

अब जिस्म की हाजिरी का वक़्त आया लिहाज़ा अपना दस्ते अक़दस लाइये ताकि मेरे होंट इन का बोसा ले सकें ।

فَخَرَجَتْ الْيَدُ الشَّرِيفَةُ مِنَ الْقَبْرِ الشَّرِيفِ فَقَبَّلَهَا इस अर्ज़ पर सरकारे अक़दस صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने दस्ते अन्वर को क़ब्रे मुनव्वर से बाहर निकाला और हज़रते सय्यिदुना अहमद कबीर रिफ़ाई ने उसे बोसा दिया ।

(الحاوی للفتاوی، کتاب البعث، تنویر الحلق فی امکان رؤیة النبی الخ، ۲/۳۱)

उस वक़्त मस्जिदे नबवी में कई हज़ार अफ़राद मौजूद थे जिन्होंने ने दस्ते अक़दस की ज़ियारत की । (खुतबाते मुहर्म्म, स. 65)

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह

मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले

(हदाइके बख़्शिश, स. 158)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيبِ! صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदतुना आइशा

सिद्दीका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** का भी येही अक्कीदा था कि बा'दे विसाल न सिर्फ़ प्यारे आका **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** बल्कि हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** भी न सिर्फ़ हयात हैं बल्कि ज़ाइरीन को मुलाहज़ा भी फ़रमाते हैं । चुनान्चे,

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا इरशाद फ़रमाती हैं :

كُنْتُ أَدْخُلُ بَيْتِي الَّذِي دُفِنَ فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي

या'नी जब मैं उस हुजरए मुबारका में दाख़िल होती जहां सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** और मेरे वालिद (हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**) मदफून हैं ।" **فَأَضَعَ نَوْبِي وَأَقُولُ إِنَّمَا هُوَ زَوْجِي وَأَبِي** या'नी तो मैं पर्दे का कपड़ा उतार देती थी और कहती थी : यहां तो सिर्फ़ मेरे सरताज और वालिद हैं (जिन से पर्दा ज़रूरी नहीं होता) **لَكِنِ** जब वहां उन के साथ हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** भी मदफून हो गए तो मैं हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से हया के बाइस मुकम्मल हिजाब में दाख़िल होती थी । (مسند احمد، مسند السيدة عائشة رضى الله عنها، ٢/١٠، حديث: ٢٥٤١٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह रिवायत इस बात पर

दलील है कि हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** को इस बात में कोई शक न था कि हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी ज़िन्दा हैं और अपनी

क़ब्र से इन्हें देखते हैं इसी लिये आप हुज़रए मुबारका में दाख़िल होने से पहले पर्दा फ़रमा लिया करती थीं ।

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَانِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : “इस हदीसे पाक से बहुत से मसाइल मा’लूम हो सकते हैं । एक येह कि मय्यित का बा’दे वफ़ात एहतिराम (करना) चाहिये, फ़ुक़हा फ़रमाते हैं कि मय्यित का ऐसा ही एहतिराम करे जैसा कि उस की ज़िन्दगी में करता था दूसरे येह कि बुजुर्गों की कुबूर का भी एहतिराम और उन से भी शर्मों हया (करनी) चाहिये तीसरे येह कि मय्यित क़ब्र के अन्दर से बाहर वालों को देखती और उन्हें जानती पहचानती है देखो हज़रते उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) से आइशा सिद्दीका (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) उन की वफ़ात के बा’द शर्मों हया फ़रमा रही हैं अगर आप बाहर की कोई चीज़ न देखते तो इस हया फ़रमाने के क्या मा’ना ?”

(मिरआत, 2/527)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बा’दे विसाल हयात और मज़ार में जिस्मे मुबारक के सलामत होने पर बुख़ारी शरीफ़ की येह रिवायत भी दलील है । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना उर्वा बिन जुबैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में जब रौज़ए मुनव्वरा की दीवार गिर गई और लोगों ने (87 हि. में) इस की

ता'मीर शुरू की तो (बुन्याद खोदते वक्त) एक क़दम ज़ाहिर हुवा। इस पर लोग घबरा गए और उन्होंने ने गुमान किया कि शायद येह सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का क़दम शरीफ़ है और वहां कोई जानने वाला न मिला तो हज़रते सय्यिदुना उर्वा बिन जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : وَاللّٰهُ مَا هِيَ قَدَمُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا هِيَ إِلَّا قَدَمُ عُمَرَ या'नी खुदा की क़सम ! येह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का क़दम शरीफ़ नहीं बल्कि येह हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का क़दम मुबारक है।

(بخاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی قبر النبی ﷺ وابی بکر وعمر، ۴/۶۹، حدیث: ۱۳۹۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि विसाल के तक़रीबन **64** बरस के बा'द भी हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का जिस्मे मुबारक सलामत था और इस में किसी किस्म की तब्दीली भी नहीं हुई थी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अम्बियाए क़िराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की बरज़ख़ी ज़िन्दगी हमारी बरज़ख़ी ज़िन्दगियों की तरह नहीं बस फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि वोह हम जैसे लोगों की निगाहों से ओझल हैं। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना शैख़ हसन शुरुंबुलाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي तहरीर फ़रमाते हैं : “या'नी येह बात अरबाबे तहक़ीक़ के नज़दीक़ साबित है कि

اِنَّهٗ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَيٌّ يُرْزَقُ مُمْتِعٌ بِجَمِيعِ

الْمَلَاةِ وَالْعِبَادَاتِ غَيْرَ اَنَّهُ حَجَبٌ عَنْ ابْصَارِ الْقَاصِرِينَ عَنْ شَرِيفِ الْمَقَامَاتِ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

या'नी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिन्दा हैं, आप पर रोज़ी पेश की जाती है, सारी लज़्ज़त वाली चीज़ों का मज़ा और इबादतों का सुरूर पाते हैं लेकिन जो लोग बुलन्द दरज़ों तक पहुंचने से कासिर हैं उन की निगाहों से ओझल हैं । (नूर الايضاح مع مراقي الفلاح، ص ३८०)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

रईसुल मुहद्दिसीन हज़रते मुल्ला अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي फ़रमाते हैं :
या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की क़ब्ले विसाल और बा'दे विसाल की जिन्दगी में कोई फ़र्क नहीं । इसी लिये कहा जाता है कि **महबूबाने खुदा** मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर में मुन्तक़िल हो जाते हैं ।”

(مرقاة، کتاب الصلاة، باب الجمعة، ३/ ४५९، تحت الحديث: १३१६)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाते हैं :

या'नी बेशक हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिन्दा हैं, आप को रोज़ी पेश की जाती है और आप से हर किस्म की मदद त़लब की जाती है ।”

(مرقاة، کتاب المناسک، باب حرم المدينة حرسها الله تعالى، ६/ ६३२، تحت الحديث: २१०६)

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे

सरकार में न “ला” है न हाज़त “अगर” की है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 225)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मेरे आका आ'ला हज़रत

इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने हयाते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَامُ के इस्लामी अक़ीदे को अपने एक कलाम में इन्तिहाई प्यारे अन्दाज़ में बयान किया है। आप फ़रमाते हैं :

अम्बिया को भी अजल आनी है मगर ऐसी कि फ़क़त आनी है
फिर उसी आन के बा'द इन की हयात मिसले साबिक वोही जिस्मानी है
रूह तो सब की है ज़िन्दा इन का जिस्मे पुरनूर भी रूहानी है
औरों की रूह हो कितनी ही लतीफ़ इन के अजसाम की कब सानी है
पाउं जिस ख़ाक पे रख दें वोह भी रूह है पाक है नूरानी है
उस की अज़वाज को जाइज़ है निक्क़ह उस का तर्का बटे जो फ़ानी है
येह हैं हय्यी अबदी इन को रज़ा सिद्के वा'दा की क़ज़ा मानी है

(हदाइके बख़्शिश, स. 372)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जन्नत का पश्वाना

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद कुर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरशाद फ़रमाते हैं : “मेरी वालिदए माजिदा ने ख़बर दी कि मेरे वालिदे माजिद (या'नी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद कुर्दी के नानाजान) जिन का नाम मुहम्मद था उन्होंने ने मुझे वसियत की थी कि जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए और मुझे गुस्ल दे लिया जाए तो छत से मेरे कफ़न पर एक सब्ज़ रंग का रुक़़ा गिरेगा जिस में लिखा होगा

“يا'नी مُحَمَّدِنِ الْعَالَمِ بِعِلْمِهِ مِنَ النَّارِ”
 है इस को इस के इल्म के सबब जहन्नम से छुटकारा मिल गया है।” उस रुक़्ए को मेरे कफ़न में रख देना।” चुनान्वे, गुस्ल के बा'द रुक़आ गिरा, जब लोगों ने रुक़आ पढ़ लिया तो मैं ने उसे उन के सीने पर रख दिया। उस रुक़ए में एक ख़ास बात येह थी कि जिस तरह उसे सफ़हा के ऊपर से पढ़ा जाता था इसी तरह सफ़हा के पीछे से भी पढ़ा जाता था। मैं ने अपनी वालिदए माजिदा से पूछा कि नानाजान का अमल क्या था ? अम्मी जान ने फ़रमाया :
 “يا'नी उन का येह अमल था कि वोह हमेशा ज़िक्रुल्लाह करने के साथ साथ दुरूदे पाक की कसरत भी किया करते थे।”

(سعادة الدارين، الباب الرابع، اللطيفة السادسة التسعون، ص ۱۵۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें हयाते अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के बारे में इस्लामी अक़ीदा इख़्तियार करने और ज़िक्रो दुरूद की कसरत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



रिज़क में कुशादगी का राज़

सअदतुद्दारैन में है جاء رجل إلى النبي एक शख्स दरबारे
रिसालत में हाज़िर हुवा فَشَكَاَ إِلَيْهِ الْفَقْرَ وَضِيقَ الْعَيْشِ وَالْمَعَاشِ और फ़क्रो
फ़ाका और तंगिये मआश की शिकायत की तो महबूबे रब्बे जुल
जलाल, शहनशाहे खुश ख़िसाल صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया :
‘يا’नी जब तुम अपने
घर में दाख़िल हो तो السَّلَامُ عَلَيْكُمْ कह लिया करो चाहे घर में कोई
हो या न हो। फिर मुझ पर सलाम कहा करो और एक मरतबा
“قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ” पढ़ लिया करो। उस शख्स ने ऐसा ही किया तो
اَللّٰهُ ने उस पर रिज़क खोल दिया हत्ता कि उस के
हमसायों और रिश्तेदारों को भी उस रिज़क से हिस्सा पहुंचा।

(سعادة الدارين، الباب الثاني فيما ورد في فضل الصلاة والتسليم..... الخ، حرف الجيم، ص ٨٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरुदे पाक की बरकत से
जहां उख़रवी फ़ज़ाइल व बरकात का हुसूल होता है वहीं बारहा
दुन्यवी तौर पर भी ऐसी ऐसी परेशानियां दूर हो जाती हैं जिन का
हल ब ज़ाहिर दुश्वार महसूस होता है जैसा कि बयान कर्दा
रिवायत से ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि इन्तिहाई
फ़क्रो फ़ाका में मुब्तला शख्स को बज़बाने सादिको अमीन

عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ येह तजवीज़ मिली कि घर में दाख़िल होते

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

वक्त मेरी जात पर गुलहाए दुरूदो सलाम निछावर करने से तुम्हारे मसाइबो आलाम दूर हो जाएंगे। और फिर ऐसा ही हुवा कि न सिर्फ उस के बल्कि उस के सबब उस के पड़ोसियों और क़राबत दारों के दुखों का मदावा भी हो गया। इसी ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ हिक्कायत सुनिये और खुशी से सर धुनिये। चुनान्चे,

चेहरा सफ़ेद और वरम दूर हो गया

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :

“मैं हज़ कर रहा था (उसी दौरान) एक नौजवान आया, जो हर क़दम पर اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ का विर्द कर रहा था, मैं ने उस से पूछा : “क्या तुम जानबूझ कर हर जगह दुरूदे पाक पढ़ रहे हो ?” उस ने जवाब दिया : “जी हां।” फिर उस नौजवान ने मुझ से पूछा : आप कौन हैं ? मैं ने कहा : मैं सुफ़यान सौरी हूं। उस ने पूछा : वोही सुफ़यान सौरी जो इराक़ में रहते हैं ? मैं ने कहा ! “जी हां।” नौजवान ने कहा : क्या आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा’रिफ़त रखते हैं ? मैं ने जवाब दिया : “जी हां।” उस ने फिर पूछा : आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा’रिफ़त कैसे हासिल की ? मैं ने कहा : इस दलील से “वोही तो है जो रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल फ़रमाता है और मां के रेहूम में बच्चे की सूरत बनाता है।” नौजवान ने कहा : आप ने कमाहक्कुहु

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा’रिफ़त हासिल नहीं की, इस पर मैं ने उस

से पूछ : तुम ने मा'रिफ़त कैसे हासिल की ? वोह नौजवान बोला : मैं ने ग़मी व परेशानी के ख़त्म होने और इरादों के टूटने के ज़रीए **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की मा'रिफ़त हासिल की है इस लिये कि जब मैं परेशानी के आलम में होता हूं तो वोह मेरी परेशानी को दूर फ़रमा देता है और जब मैं कोई इरादा करता हूं तो वोह मेरे इरादे को तोड़ देता है जिस से मैं ने जान लिया कि बेशक मेरा रब **عَزَّوَجَلَّ** है जो मेरे कामों की तदबीर फ़रमाता है। मैं ने पूछा कि तुम नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** पर कसरत से **दुरूदे पाक** क्यूं पढ़ रहे हो ? वोह बोला : “बात दर अस्ल येह है कि मैं हज़ कर रहा था, मेरी वालिदा भी मेरे साथ थीं, उन्होंने ने मुझ से कहा : मुझे बैतुल्लाह शरीफ़ में ले चलो, मैं उन्हें बैतुल्लाह शरीफ़ ले गया, अचानक वोह गिर पड़ीं जिस की वजह से उन का पेट सूज गया और चेहरे पर सियाही छ गई। मैं उन के पास ग़मज़दा बैठ गया, आस्मान की तरफ़ हाथ उठाए और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में अपनी फ़रयाद की : “ऐ मेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** तू अपने घर में दाख़िल होने वाले के साथ ऐसा मुआमला फ़रमाएगा ?” अचानक कोहे तहामा की तरफ़ से एक बादल उठा, उस में से **सफ़ेद कपड़ों** में मलबूस एक शख़्सियत नुमूदार हुई, वोह बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल हुवे, उन्होंने ने अपना मुबारक हाथ मेरी वालिदा के चेहरे और पेट पर फेरा तो **चेहरा सफ़ेद** और वरम दूर हो गया, फिर वोह जाने लगे तो मैं उन के दामन से लिपट गया और पूछा : आप

कौन हैं जिन्होंने मेरी परेशानी को दूर कर दिया ? उन्होंने ने फ़रमाया : “मैं तेरा नबी मुहम्मद (ﷺ) हूँ।” मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ﷺ मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये, तो आप ﷺ ने फ़रमाया : “तुम दम बदम यूं दुरूदे पाक पढ़ो **اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ**”

(القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص २२१)

ख़ज़ां का सख़्त पहरा है ग़मों का घुप अन्धेरा है
ज़रा सा मुस्कुरा दोगे तो दिल में रोशनी होगी
अगर वोह चांद से चेहरे को चमकाते हुवे आए
ग़मों की शाम भी सुब्हे बहारां बन गई होगी
तड़प कर ग़म के मारों तुम पुकारो या रसूलल्लाह
तुम्हारी हर मुसीबत देखना दम में टली होगी

(वसाइले बख़्शिश, स. 278)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلِّ اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूदे पाक इन्तिहाई अहम्मियत का हामिल है इस की अहम्मियत व अज़मत का अन्दाज़ा इस बात से बख़ूबी लगाया जा सकता है कि खुद ख़ालिके अर्दो समा, मालिके दो जहां **عَزَّوَجَلَّ** हमें इस अमल का हुक्म इरशाद फ़रमाने से पहले तरगीब देते हुवे फ़रमाता है कि येह काम मैं और मेरे (मा'सूम) फिरिश्ते भी करते हैं तुम भी करो। चुनान्वे, पारह 22 सूरतुल अहज़ाब आयत नम्बर 56 में इरशादे रब्बानी है :

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ

عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

أُمْنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا

تَسْلِيمًا ﴿٥١﴾ (پ ۲۲، الاحزاب: ۵۶)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक

अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते

दुरूद भेजते हैं, उस ग़ैब बताने वाले

(नबी) पर। ऐ ईमान वालो उन पर

दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

तो किस क़दर खुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई जो अपने अवक़ात दीगर इबादात के साथ साथ ऐसे अज़ीम काम में सर्फ़ करते हैं जो काम **अल्लाह** और उस के बेशुमार मा'सूम फ़िरिश्ते भी कर रहे हैं। मगर येह बात भी ज़ेहन नशीन होनी चाहिये कि काम तो सब एक ही कर रहे हैं मगर **अल्लाह** तआला और उस के फ़िरिश्तों और उस के बन्दों के दुरूद भेजने का मतलब अ़लाहिदा अ़लाहिदा है। या'नी **अल्लाह** तआला के दुरूद भेजने का मतलब अपने महबूब की सना व अज़मत बयान करना है और फ़िरिश्तों और बन्दों के दुरूद भेजने का मतलब सना व अज़मत तलब करना है। चुनान्वे,

हज़रते अल्लामा इब्ने हज़र अस्क़लानी **लफ़्जे** **قُدُسِ سِرِّهِ التَّوْرَانِ** के मआनी बयान करते हुवे अबुल आलिया के हवाले से सब से राजेह क़ौल ज़िक्र करते हैं : “**अल्लाह** तआला के अपने नबी पर दुरूद भेजने का मा'ना उन की सना व अज़मत बयान करना है और फ़िरिश्तों वग़ैरा के दुरूद भेजने का मा'ना मज़ीद सना व अज़मत का मुतालबा करना है।”

(فتح الباری، کتاب الدعوات، باب الصلوة علی النبی، ۱۳/۱۲، تحت الحدیث: ۶۳۵۸)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आयते करीमा से येह भी पता चलता है कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के बे शुमार फिरिश्ते भी हमारे आका व मौला **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदे पाक पढ़ने में मशगूल हैं। मलाइका (या'नी फिरिश्ते) **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की नूरी मख्लूक हैं इन की ता'दाद सिवाए **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के कोई शुमार नहीं कर सकता, (येह मलाइका **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की तरफ से मुख्तलिफ़ कामों पर मामूर हैं।)

सअदतुद्दरैन में है : “कुछ मलाइका मुक़रबीन हैं, कुछ हामिलीने अर्श हैं, कुछ सातों आस्मानों में रहने वाले हैं, कुछ जन्नत के पहेरेदार, कुछ दोज़ख़ के दरोगे और कई बनी आदम के आ'माल को महफूज़ करने वाले हैं जैसे इरशाद है **يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ** कि ब हुक्मे खुदा उस की हिफ़ाज़त करते हैं कई समन्दरों, पहाड़ों, बादलों, बारिशों, रेहूमों, नुत्फ़ों, और सूरतें बनाने के काम के मुअक्किल हैं, कुछ जिस्मों में रूह फूंकने, नबातात को पैदा करने, हवाओं को चलाने, अफ़लाक व नुजूम को चलाने पर मा'मूर हैं, कुछ रसूले अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर हमारे दुरूद को पहुंचाने, नमाज़े जुमुआ के लिये आने वालों को लिखने, नमाज़ियों की क़िराअत पर आमीन कहने पर मस्रूफ़ हैं, कुछ सिर्फ़ **رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ** कहने वाले हैं, कुछ नमाज़ के मुन्तज़िरीन के लिये दुआ करने वाले हैं और कुछ उस औरत पर ला'नत करने के

लिये हैं जो अपने खावन्द का बिस्तर छोड़ कर गैर के पास जाती है, इस के इलावा भी कई फ़िरिश्तों का ज़िक्र मिलता है जिन के मुतअल्लिक अहादीस वारिद हैं ।

(سعادة الدارين، الباب الاول في تفسير آية إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتُهُ يُصَلُّونَ..... الخ، ص ١٩)

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ इस सारी गुफ्तगू से ये भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने कुछ फ़िरिश्तों को इस काम पर मामूर कर रखा है कि जब हम आकाए नामदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे पाक** पढ़ें तो वोह हमारा दुरूद सरकार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह में पहुंचाएं बल्कि एक रिवायत में तो ये भी बयान किया गया है कि बा'ज फ़िरिश्तों की महूज येह ज़िम्मेदारी है कि वोह हमारे मुंह से निकला हुवा दुरूद महफूज कर लेते हैं । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना उ़समान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से उन फ़िरिश्तों की ता'दाद पूछी जो इन्सान पर मुतअय्यन हैं, आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “हर आदमी पर रात को दस फ़िरिश्ते और दिन को दस फ़िरिश्ते मुतअय्यन होते हैं । एक दाई जानिब, एक बाई जानिब, दो आगे पीछे, दो उस के होंटों पर जो सिर्फ़ मुहम्मद (**صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**) पर पढ़ा जाने वाला दुरूद महफूज करते हैं, दो पेशानी पर और एक उस की पेशानी के बालों को पकड़े हुवे हैं अगर वोह तवाजोअ करता है तो वोह उसे बुलन्द करता है और अगर तकब्बुर करता है तो वोह उसे

झुका देता है, दसवां सांप से उस की हिफाजत करता है कि कहीं उस के मुंह में दाखिल न हो जाए या'नी जब वोह सोया हुवा हो ।”

येह भी कहा गया है कि हर इन्सान के साथ 360 फिरिश्ते हैं, ज़मीनो आस्मान में कोई ऐसी जगह नहीं है जो उन फिरिश्तों से मा'मूर न हो जिन की सिफ़त है **لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ** । या'नी (जो **अल्लाह** का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं ।) (التحریم: २८, (سعادة الدارين، ایضاً، ص ११)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायात से मा'लूम हुवा कि बेशुमार फिरिश्ते हमा वक़्त सरकारे दो अ़लम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** की बारगाह में **दुरूदो सलाम** पेश करते रहते हैं और ग़ौर त़लब बात तो येह है कि इन मज़कूरा रिवायात में बल्कि आयते करीमा में भी किसी वक़्त, हालत और **दुरूदे पाक** के अल्फ़ाज़ की तख़सीस व ता'यीन के बिग़ैर मुतलक़न **दुरूदे पाक** पढ़ने का ज़िक्र है लिहाज़ा अगर शैतान येह वस्वसा दिलाए कि फुलां वक़्त में **दुरूदे पाक** नहीं पढ़ना चाहिये या फुलां हालत में पढ़ना मन्अ है या फुलां फुलां **दुरूदे पाक** नहीं पढ़ना चाहिये तो येह शैतानी वस्वसे कुरआनो हदीस के मुतलक़ मफ़हूम के ख़िलाफ़ हैं ऐसे किसी भी वस्वसे को ज़ेहन में जगह दे कर **दुरूदे पाक** जैसे अज़ीम फे'ल से महरूम होने के बजाए इश्को महबबत का दामन थामते हुवे अपने कीमती अवकात फुज़ूलिय्यात में

बरबाद करने के बजाए उठते बैठते, चलते फिरते हर वक़्त हुज़ूर

की जाते बा बरकात के जिक्रे खैर से अपनी ज़बानें तर रखें क्योंकि येह दुन्या व आखिरत की सआदत के साथ साथ महब्बत की अलामत भी है जैसा कि हदीसे पाक में है **مَنْ أَحَبَّ شَيْئًا أَكْثَرَ ذِكْرِهِ**, (या'नी इन्सान जिस से महब्बत करता है उस का जिक्र कसरत से करता है)

जिक्रो दुरूद हर घड़ी विदे ज़बां रहे

मेरी फुज़ूल गोई की आदत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 290)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि सरकार

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से महब्बत रखें और बतकाजए महब्बत आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ें, कोई बईद नहीं कि दुरूदे पाक की बरकत से रोज़े क़ियामत सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का कुर्ब नसीब हो जाए। जैसा कि

कुर्बे खास

हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ूली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوَي** अपने मायानाज़ व मशहूरे ज़माना मजमूअए दुरूदो सलाम “दलाइलुल ख़ैरात” में एक हदीसे पाक नक़ल करते हैं कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने तक़रूब निशान है : **يَا'नी क़ियामत के दिन लोगों में से मेरे सब से ज़ियादा करीब वोह शख़्स होगा जिस ने मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़े होंगे।”** (दलाइलुल ख़ैरात, स. 8)

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ इस हृदीसे पाक में कसरत से दुरूदे पाक

पढ़ने वालों के लिये कैसी अजीमुशान बिशारत है कि उन्हें क़ियामत के दिन सय्यिदुल मुर्सलीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कुर्ब नसीब होगा ।

क़ियामत के दिन के बारे में सूरतुल मआरिज की आयत नम्बर 4 में इरशाद होता है : **كَانَ وَقْدًا رُءُوسَيْنِ أَلْفَ سَنَةٍ** : “जिस की मिक़दार पचास हजार बरस है ।” उस दिन सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, तांबे की दहकती हुई ज़मीन होगी, कुरआने पाक में सूरए अबस की आयत 34 ता 36 में इरशाद होता है :

تَرْجَمَةُ كَنْزُ الْجَلِيدِ : **يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ** : “उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई और मां और बाप और जोरू (बीवी) और बेटों से ।” ऐसे कड़े हालात में कि जब कोई पुरसाने हाल न होगा, तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की तरफ़ से भी **إِذْهَبُوا إِلَىٰ غَيْرِي** (किसी और के पास जाओ) का जवाब मिलेगा, ऐसे कड़े वक़्त में एक ही ऐसी हस्ती होगी जो हम गुनाहगारों की यास को आस में बदल देगी, हमारी टूटी उम्मीदों का सहारा होगी, जिस के लबों पर **نَاسِهَا** (शफ़ाअत के लिये मैं हूँ) की सदाएं होंगी, जी हां ! वोह मुबारक हस्ती कोई और नहीं बल्कि हमारे प्यारे आका **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते वाला सिफ़ात ही

तो है। तो क्यूं न हो कि ऐसी अजीम हस्ती पर दुरूदे पाक की कसरत कर के हम भी दुन्या व आखिरत की दीगर सआदतों के साथ साथ रोजे कियामत उन की कुर्बत के हकदार हो जाएं।

अजीज बच्चे को मां जिस तरह तलाश करे

कसम खुदा की येही हाल आप का होगा

اَذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي

मेरे हुजूर के लब पर اَنَالَهَا होगा

(जौके ना'त, स. 35)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें कियामत की हौलनाकियों और दुश्वार गुज़ार घाटियों से नजात अता फ़रमाए और कियामत के दिन शफीए रोजे शुमार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कुर्बे खास और जन्नतुल फिरदौस में उन का पड़ोस अता फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुश्तफ़

किसी शख्स के लिये येह हलाल नहीं कि दो आदमियों के दरमियान उन की इजाजत के बिगैर जुदाई कर दे (या'नी उन के दरमियान बैठ जाए)। (अबुदाउद, ४२८/४, حديث: ४८४५)



बयान नम्बर : 14

100 हाजतें पूरी होने का वज़ीफ़ा

रहमते अलमिय्यान, सरवरे जीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : **يَا'نِي جُو شَخْص يَوْمِيَّيَا مُؤْجِلُ پَر 100 मरतबा दुरूद भेजेगा**” **عَزَّوَجَلَّ** उस की 100 हाजात पूरी फ़रमाएगा, **قَضَى اللهُ لَهُ مِائَةَ حَاجَةٍ** **سَبْعِينَ مِنْهَا لِأَخْرَجَتْهُ وَثَلَاثِينَ مِنْهَا لِدُنْيَاهُ** या'नी इन में से सत्तर आख़िरत की और तीस दुन्या की हाजात होंगी ।”

(کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السادس فی الصلاة علیه وعلى آله، ٢٥٥/١، الجزء الاول، حدیث: ٢٢٢٩)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम गौर करें तो हमें इस बात का ब ख़ूबी अन्दाज़ा हो सकता है कि फ़ी ज़माना हम में से तक़रीबन हर शख़्स ही हमरा वक़्त न जाने कितनी परेशानियों में घिरा हुवा होता है मगर कुरबान जाइये, महबूबे रब्बुल अलमीन, ख़ातिमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कि जिन का फ़रमाने दिल नशीन आप ने समाअत फ़रमाया कि “जो शख़्स दिन भर में सो बार मेरी ज़ात पर **दुरूदे पाक** पढ़ लिया करेगा तो इस की बरकत से **عَزَّوَجَلَّ** उस की सो हाजतें पूरी फ़रमा देगा ।” तो क्यूं न हो कि हम भी अपनी हाजात की तक्मील के लिये अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ लिया करें ।

मगर याद रहे कि जब भी हुजुरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए, महबबत व शौक के साथ पढ़ा जाए क्यूंकि दुर्तुन्नासिहीन में है : يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَشْيَاءُ لَا تَرْنُ عَنْكَ اللَّهُ جَنَاحَ يَغُوضِي या'नी तीन चीजें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी वज़न नहीं रखती أَحَدَهَا الصَّلَاةُ بِغَيْرِ خُضُوعٍ وَخُشُوعٍ इन में से एक येह कि नमाज़ खुशूअ व खुजूअ के बिगैर पढ़ी जाए दूसरी येह कि وَالثَّانِي الذِّكْرُ بِالْغَفْلَةِ لِأَنَّ اللَّهَ تَعَالَى لَا يَسْتَجِيبُ دُعَاءَ قَلْبٍ غَافِلٍ ज़िक्र, ग़फ़लत के साथ किया जाए, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दिले ग़ाफ़िल की दुआ क़बूल नहीं फ़रमाता और तीसरी وَالثَّلَاثُ الصَّلَاةُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم مِنْ غَيْرِ حُرْمَةٍ وَنَبَاةٍ येह कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर बिला ता'ज़ीम व बिला निय्यत दुरूदे पाक पढ़ना ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हक़ तो येह है कि महबबते सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم महूज़ दुरूदे पाक के लिये ही नहीं बल्कि हमारे ईमान के लिये भी शर्त है इस के बिगैर तो हमारा ईमान भी राएगां है । चुनान्वे,

मतालिज़ल मसर्रात शर्हे दलाइलुल ख़ैरात में है : “अस्ले ईमान के लिये अस्ले महबबत शर्त है और कमाले ईमान के लिये (नबिय्ये मुअज़्ज़म, रसूले मोहतरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ) कमाले महबबत शर्त है ।”

(مطالع المسرات شرح دلائل الخیرات مترجم، ص ۱۴۸)

दीने हक़ की शर्तें अक्वल

अल्लामा क़स्तलानी قُدُس سرُّهُ التُّورَانِي ने अपनी किताब मसालिकुल हुनफ़ा के शुरूअ में हदीसे अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ज़िक्र की, कि राहते क़ल्बे नाशाद, महबूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे इब्रत बुन्याद है : لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّىٰ أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَالِدِهِ وَوَلَدِهِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ या'नी तुम में से कोई ईमानदार नहीं हो सकता यहां तक कि मैं उस का महबूब तर न हो जाऊं, उस के बाप, बेटे और तमाम लोगों से बढ़ कर।" इस हदीसे पाक के तहत अल्लामा क़स्तलानी قُدُس سرُّهُ التُّورَانِي ने फ़रमाया : “अगर हमारे जिस्म के एक एक बाल के नीचे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्बत हो तो येह भी उस हक़ के जुज़ का जुज़ होगा जो हम पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का है और तुम्हें मा'लूम है जो जिस से महब्बत करे अकसर उसी का ज़िक्र करता है।” जैसा कि मुस्नदे फ़िरदौस में हज़रते सय्यिदतुना अ़इशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी हदीस है : “पस अहले महब्बत के दिल ज़िक्रे महबूब की बिना पर लज़्ज़ात से बेगाना होते हैं और उन के ख़यालात ख़्वाहिशाते नफ़्स की तरगीब देने वाले उमूर से ख़ाली होते हैं और बिला शुबा औला व आ'ला, बेश कीमत, अफ़ज़ल, अक्मल, रख़शन्दा तर, ख़ूब तर जिस का तुम ज़िक्र करते हो, वोह

येही महबूबे करीम और रसूले अज़ीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ ही तो

हैं। **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** अपने फ़ज़ले अमीम से आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** की तकरीम व ता'जीम में इज़ाफ़ा फ़रमाए कि येही दो सिफ़ात आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** की दाइमी महबबत और इस में तरक्की का सबब हैं इस लिये कि येही वोह बुन्यादी अक्कीदा है जिस के बिगैर ईमान मुकम्मल नहीं हो सकता।”

वजह येह है कि इन्सान जितना कसरत से महबूब का ज़िक्र करता और इस की खूबियों का तसव्वुर करता और कशिश पैदा करने वाली बातों को **तसव्वुर** में लाता है, उस की महबबत बढ़ जाती है और उस का शौक ज़ियादा हो जाता है और तमाम दिल पर उसी का कब्ज़ा हो जाता है और दीदारे यार से बढ़ कर चश्मे मुहिब्ब को ठन्डा करने वाली कोई चीज़ नहीं और ज़िक्रे यार व तसव्वुरे महासिने दिलदार से बढ़ कर किसी शै में उस के दिल का सुरूर नहीं। जब येह दौलत उस के दिल में मज़बूती से जम जाती है तो ज़बान उस की हम्दो सना में मसरूफ़ हो जाती है। पस सुब्हो शाम हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** पर **दुरूदो सलाम** पढ़ना उस की आदत हो जाती है और वोह ऐसी तिजारत से बहरामन्द हो जाता है जो कभी ख़सारे से आशना नहीं होती और वोह मिश्काते नबुव्वत से अज़ीमुश्शान अन्वार हासिल कर लेता है।

(سعادة الدارين، الباب الثالث فيماورد عن الانبياء والعلماء في فضل الصلاة عليه، ص ۱۱۱)

सफ़ेद पश्न्दा

दुर्तुन्नासिहीन में है, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** के दौरे ख़िलाफ़त में एक मालदार शख्स था जिस का किरदार अच्छा नहीं था, मगर उसे **दुरूद शरीफ़** पढ़ने का बहुत शौक था। उठते बैठते **दुरूद**

शरीफ़ पढ़ता रहता । जब उस की मौत का वक़्त करीब आया तो उस का चेहरा सियाह पड़ गया और मस्ख़ हो कर इस क़दर भयानक हो गया कि जो देखता वोह ख़ौफ़ज़दा हो जाता । इस कस्म पुर्सी के आलम में उस ने फ़रयाद की : “या हबीबल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मैं आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से महबूबत रखता हूँ और आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ता हूँ ।” अभी उस ने इतना ही अर्ज़ किया था कि अचानक आस्मान से एक सफ़ेद परन्दा उतरा और उस ने अपना पर उस शख्स के चेहरे पर फेर दिया । देखते ही देखते उस का चेहरा चमक उठा फिर फ़ज़ा मुश्कबार हो गई, और उस की ज़बान पर कलिमए तय्यिबा जारी हो गया और उस की रूह क़फ़से इन्सुरी से परवाज़ कर गई । जब उस को क़ब्र में उतारा जा रहा था तो ग़ैब से येह आवाज़ आई : “हम ने इस बन्दे को क़ब्र में रखने से पहले ही किफ़ायत की और हमारे महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर पढ़े हुवे दुरूद शरीफ़ ने इसे क़ब्र से उठा कर जन्नत में पहुंचा दिया है ।” रात किसी ने ख़्वाब में येह मन्ज़र देखा कि महूम फ़ज़ा में चल रहा है और उस की ज़बान पर येह आयते करीमा जारी है :

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿१०﴾ (الاحزاب: ५६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **ﷺ** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर, ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो ।”

(درة الناصحين، المجلس السابع والاربعون في فضيلة القرآن، ص ۱۸۱)

दुरूदो सलाम पढ़ने वाले इस्लामी भाइयो ! आप को मुबारक

हो, हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي

“जज़्बुल कुलूब” में फ़रमाते हैं : “जब तुम एक बार दुरूद

शरीफ़ पढ़ते हो तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) दस बार रहमत भेजता है,

दस गुनाह मिटाता है, दस दरजात बुलन्द करता है, दस नेकियां

अता फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है और दस गुलाम आज़ाद करने

का सवाब (अल-तरغ़ीब व-अल-थरिह, کتاب الذکر والدعاء، الترغيب فی اکثر الصلاة علی النبی، ۳۲۲/۲، حدیث: ۲۵۷۴)

और बीस ग़ज़ात में शुमूलिय्यत का सवाब अता फ़रमाता है ।

(अल-तरغ़ीब व-अल-थरिह، کتاب الذکر والدعاء، الترغيب فی اکثر الصلاة علی النبی، ۳۲۲/۲، حدیث: ۲۵۷۴)

दुआ है (अल-तरغ़ीब व-अल-थरिह، کتاب الذکر والدعاء، الترغيب فی اکثر الصلاة علی النبی، ۳۲۲/۲، حدیث: ۲۵۷५)

शफ़ाअते मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** वाजिब हो जाती है ।

(अल-तरغ़ीब व-अल-थरिह، کتاب الذکر والدعاء، الترغيب فی اکثر الصلاة علی النبی، ۳۲۲/२، حدیث: ۲५८५)

मुस्तफ़ा जाने रहमत **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का बाबे जन्नत पर कुर्ब नसीब होगा, दुरूदे

पाक तमाम परेशानियों को दूर करने के लिये और तमाम हाजात

की तक्मील के लिये काफ़ी है, (अल-तरغ़ीब व-अल-थरिह، کتاب الذکر والدعاء، الترغيب فی اکثر الصلاة علی النبی، ۳۲۲/२، حدیث: ۲५८५)

दुरूदे पाक गुनाहों का कफ़ारा है । (अल-तरغ़ीब व-अल-थरिह، کتاب الذکر والدعاء، الترغيب فی اکثر الصلاة علی النبی، ۳۲۲/२، حدیث: ۲५८५)

सदके का काइम मक़ाम बल्कि सदके से भी अफ़ज़ल है ।”

(जुब्बुल कुलूब, ص २२९)

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस

देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي मज़ीद फ़रमाते हैं : “दुरूद शरीफ़ से

मुसीबतें टलती हैं, बीमारियों से शिफा हासिल होती है, खौफ दूर होता है, जुल्म से नजात हासिल होती है, दुश्मनों पर फ़तह हासिल होती है, **अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ)** की रिज़ा हासिल होती है और दिल में उस की महबूबत पैदा होती है, फिरिश्ते उस का ज़िक्र करते हैं, आ'माल की तक्मील होती है, दिलो जान और अस्बाब व माल की पाकीजगी हासिल होती है, पढ़ने वाला खुशहाल हो जाता है, बरकतें हासिल होती है, अवलाद दर अवलाद चार नस्लों तक बरकत रहती है ।”

(جذبُ القلوب، ص २२९)

दुरूद शरीफ़ पढ़ने से क़ियामत की हौलनाकियों से नजात हासिल होती है, सकराते मौत में आसानी होती है, दुन्या कि तबाहकारियों से ख़लासी (या'नी नजात) मिलती है, तंगदस्ती दूर होती है, भूली हुई चीज़ें याद आ जाती हैं, मलाइका दुरूदे पाक पढ़ने वाले को घेर लेते हैं, **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाला जब पुल सिरात से गुज़रेगा तो नूर फैल जाएगा और वोह उस में साबित क़दम हो कर पलक झपकने में नजात पा जाएगा और अज़ीम तर सआदत येह है कि **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाले का नाम हुज़ूर सरापा नूर, ताजदारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह में पेश किया जाता है, ताजदारे मदीना, हबीबे किब्रिया **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महबूबत बढ़ती है, महासिने नबविय्या दिल में घर कर जाती हैं

और कसरते दुरूद शरीफ से साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

का तसव्वुर जेहन में काइम हो जाता है और खुश नसीबों को दरजए कुर्बते मुस्तफ़वी हासिल हो जाता है और ख़्वाब में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदारे फैज़ आसार नसीब होता है। रोज़े क़ियामत मदनी ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से मुसाफ़्हा की सआदत नसीब होगी, फिरिश्ते मरहूबा कहते हैं और महब्बत रखते हैं, फिरिश्ते उस के दुरूद को सोने के क़लमों से चांदी की तख़्खियों पर लिखते हैं। और उस के लिये दुआए मग़फ़िरत करते हैं और फिरिश्तगाने सय्याहीन (या'नी ज़मीन पर सैर करने वाले फिरिश्ते) उस के दुरूद शरीफ़ को मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बेकस पनाह में पढ़ने वाले और उस के बाप के नाम के साथ पेश करते हैं।

(جذبُ القلوب، ص २२९)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ने के दुन्यवी और उख़रवी फ़वाइदे कसीरा सुन कर यकीनन हम भी इस बात के मुतमन्नी होंगे कि इन फुयूज़ों बरकात से हमें भी हिस्सा मिले, तो आइये अपनी इस नेक ख़्वाहिश में कामयाबी पाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार मदनी माहोल

से वाबस्ता हो जाइये और निय्यत कर लें कि हम भी दुन्या व
उक्बा की कामरानियों के हुसूल के लिये सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
की बारगाह में खूब खूब दुरूदे पाक पढ़ने की आदत बनाएंगे ।

ऐ हमारे प्यारे **اَللّٰهُ** हमें हुजूर **عَزَّوَجَلَّ** عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की
जाते तथ्यिबा पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफीक अता
फरमा और हमें दुरूदो सलाम की बरकतों से माला माल फरमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

नेकी की दा'वत की फज़ीलत

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू
बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फरमाते हैं कि ऐ लोगो ! भलाई
का हुक्म दो, बुराई से मन्अ करो तुम्हारी ज़िन्दगी ब खैर
गुज़रेगी । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात,
अलिख्युल मुर्तज़ा शरे खुदा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيْم** फरमाते
हैं कि तब्लीग़ बेहतरीन जिहाद है । (तफ़्सीर क़िबिर, ३/११३)



बयान नम्बर : 15

दुखदे पाक की रशाई

इमामुल अन्सार वल मुहाजिरीन, मुहिब्बुल फुकराए वल मसाकीन, जनाबे रहूमतुल्लिल अलमीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फरमाने दिल नशीन है : “दुरूद पढ़ने वाले के दुरूद की इन्तिहा अर्श से नीचे नहीं होती और जब वोह दुरूद मेरे पास से गुजरता है तो **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** फरमाता है : ऐ फ़िरिश्तो ! इस दुरूद भेजने वाले पर उसी तरह दुरूद भेजो जैसे इस ने मेरे नबी मुहम्मद **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद भेजा ।”

(क़िज़रुल अमाल, क़ताबुल अज़कार, الباب السادس فى الصلاة عليه وعلى آله، २/५३/१، حديث: २२२३)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुखदे पाक की बरकतों के भी क्या कहने ! अल्लामा उक्लीसी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَنَى** फरमाते हैं : “कौन सा अमल अरफ़अ है और कौन सा वसीला ऐसा है जिस की शफ़ाअत ज़ियादा क़बूल होती है और कौन सा अमल ज़ियादा नफ़अ बख़्श है ? उस ज़ाते अक़दस पर दुरूद पढ़ने से जिस पर **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के तमाम फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जिस को दुनिया व आख़िरत में अज़ीम कुर्ब के लिये मख़्सूस किया गया है । आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद भेजना सब से अज़ीम नूर

है, यह ऐसी तिजारत है जिसे कभी ख़सारा नहीं, यह सुब्हो शाम औलियाए किराम का वज़ीफ़ा है। ऐ मुखातब ! तू अपने नबी **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** पर हमेशा दुरूद पढ़ता रह, यह तेरी गुमराही को पाक कर देगा, तेरा अमल इस की वजह से सुथरा हो जाएगा, उम्मीद की शाख़ बार आवर होगी, तेरे दिल का नूर जगमगाने लगेगा, तू अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा हासिल करेगा और क़ियामत की हौलनाकियों से महफूज़ हो जाएगा।”

(القول البديع، سبعة فصول خاتمة باب الثانی، الفصل الاول، ص ۲۸۳)

के कलाम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنٰی** अल्लामा उक्लीसी **سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** से पता चला कि सरकार **عَلَيْهِ السَّلَام** की जाते बा बरकात पर दुरूदे पाक पढ़ना न सिर्फ़ नफ़अ बख़्श तिजारत है बल्कि अक़ाइदो आ'माल की पाकीज़गी का सबब भी है नीज़ यह औलियाए किराम **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** का वज़ीफ़ा भी है। तो किस क़दर खुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें जिन्हें **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की तौफ़ीक़ व करम से इस आ'ला व अरफ़अ अमल की सआदत हासिल होती है।

ख़ूब ख़ूब शूरत आंखों वाली हूरे

हज़रते सय्यिदुना उक़बा बिन अमिर **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہٗ** से मरवी है कि मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान, सरवरे जीशान **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने रहमत निशान है : “मसाजिद में अवताद (औलिया) होते हैं जिन के हम मजलिस मलाइका होते हैं। अगर वोह गाइब होते हैं तो फ़िरिश्ते उन्हें

तलाश करते हैं, अगर वोह मरीज़ होते हैं तो उन की इयादत करते हैं, और अगर उन्हें देखते हैं तो खुश आमदीद कहते हैं, अगर वोह कोई हाजत तलब करते हैं तो फ़िरिश्ते उन की मदद करते हैं, जब वोह बैठते हैं तो फ़िरिश्ते उन के क़दमों से ले कर आस्मान तक की जगह को घेर लेते हैं, उन के हाथों में चांदी के वरक़ और सोने की क़लमें होती हैं, वोह नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर पढ़े जाने वाले दुरूद को लिखते हैं और येह आवाज़ देते हैं कि ज़ियादा ज़िक्र करो, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** तुम पर रहम फ़रमाए और तुम्हारे अज़्र में इज़ाफ़ा फ़रमाए। जब वोह ज़िक्र शुरूअ करते हैं तो उन के लिये आस्मान के दरवाज़े खुल जाते हैं, उन की दुआ क़बूल की जाती हैं ख़ूब सूरत आंखों वाली हूँ उन की तरफ़ झांकती हैं और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उन पर खुसूसी रहमत की तवज्जोह फ़रमाता रहता है, जब तक कि वोह किसी और काम में मशगूल नहीं हो जाते।”

(مسند احمد، مسند ابی هريرة، ۳/ ۳۹۹، حديث: ۹۴۲۳، بستان الواعظین ص ۲۵۹،

القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة الخ، ص ۲۵۲)

एक और रिवायत में है : “जब तक कि वोह अहले ज़िक्र हज़रात जुदा नहीं हो जाते और जब वोह बिखर जाते हैं तो ज़ाइरीन फ़िरिश्ते ज़िक्र की महफ़िलों की तलाश शुरूअ कर देते हैं।”

(القول البدیع، ایضاً، ص ۲۵۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस बात में कोई शक

नहीं कि सरकार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** की ज़ाते अक्दस पर **दुरूदे पाक** पढ़ना भी ज़िक्रे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** ही है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** फ़रमाते हैं :
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नबिय्ये करीम **الصَّلَاةُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** पर दुरूद पढ़ना इबादत है ।”

(القول البديع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة الخ، ص ۲۷۲)

और तफ़्सीरे कबीर में हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي** आयते करीमा (البقرة: ۱۵۲) **فَاذْكُرُونِي اَذْكُرْكُمْ** (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा ।) के तहत इरशाद फ़रमाते हैं कि : “तमाम इबादात ज़िक्र के तहत दाख़िल हैं ।”
 (تفسير کبیر، پ ۲، البقرة، تحت الاية: ۱۵۲/۲، ۱۲۲)

लिहाज़ा नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** पर दुरूद पढ़ना इबादत है और तमाम इबादात ज़िक्र के तहत दाख़िल हैं तो हासिले कलाम येह हुवा कि दुरूद पढ़ना ज़िक्र के तहत दाख़िल है । बल्कि बा’ज़ बुजुर्गाने दीन के नज़दीक तो **दुरूदे पाक** ज़िक्रे इलाही की आ’ला तरीन किस्म है जैसा कि

अल्लामा नब्हानी **قَدِيسٌ سَيِّدُهُ النُّورَانِي** फ़रमाते हैं : “दुरूद शरीफ़ से ज़िक्र की तजदीद होती है, बल्कि यूं कहना चाहिये कि हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ना ज़िक्रे खुदावन्दी **عَزَّوَجَلَّ** की अफ़ज़ल तरीन किस्मों में से है । (اتحاف السادة المتقين، ۵/۲۷۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की रहमत

के कुरबान जाइये कि उस ने अपने बा'ज् मा'सूम फिरिशतों को महज येह जिम्मेदारी सोंप रखी है कि जिक्रो दुरूद की महफ़िलों को तलाश करें और उन पर रहमत की बरखा बरसाएं लिहाजा हमें चाहिये कि जब कभी किसी महफ़िल में बैठने का इत्तिफ़ाक़ हो ख़्वाह वोह महफ़िल दीनी हो या दुन्यवी उस में कुछ न कुछ जिक्रो दुरूद की आदत बनाएं ताकि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के मा'सूम फिरिशते इस पर हमारे गवाह हो जाएं और हम पर रहमते खुदावन्दी की बारिश बरसाएं इस जिम्न में एक रिवायत सुनिये और खुशी से झूम उठिये । चुनान्चे,

रहमते खुदावन्दी का जोश

साहिबे दुर्गे मन्सूर जेरे आयत (البقرة: १०२) **فَاذْكُرُونِيْ اَذْكُرْكُمْ**

एक हदीसे पाक नक़ल करते हैं कि सरकारे नामदार, दो आलम के मालिको मुख्तार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया :

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ के कुछ फिरिशते रूए ज़मीन की सैर करते हैं और वोह ज़िक्र के हल्कों की तलाश में लगे रहते हैं । **فَاِذَا اتَّوٰا عَلَیْهَا حَفُّوْا بِهٖم** । जब कभी किसी हल्क़ए ज़िक्र पर आते हैं तो उन लोगों को घेर लेते हैं । फिर अपने में से एक गुरौह को कासिद बना कर आस्मान की तरफ़

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ के दरबारे आली में भेजते हैं, वोह फिरिशते जा कर अर्ज करते हैं :

رَبَّنَا آتِنَا عَلَى عِبَادٍ مِنْ عِبَادِكَ يُعْظَمُونَ الْإِنِّكَ وَتِلْوَن
كِتَابِكَ وَ يُصَلُّونَ عَلَى نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

या'नी या इलाहल आलमीन ! हम तेरे बन्दों में से कुछ ऐसे लोगों के पास पहुंचे जो तेरे इन्आमात की ता'जीम करते हैं, तेरी किताब पढ़ते हैं और तेरे नबिय्ये करीम हज़रते मुहम्मद **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे पाक** भेजते हैं। “وَيَسْتَلُونَكَ لِأَخْرَجَهُمْ وَدُنْيَاهُمْ” और तुझ से अपनी आखिरत और दुन्या के लिये दुआ करते हैं।” इस पर **अल्लाह** तबारक व तआला फ़रमाता है उन को मेरी रहमत से ढांप दो, (एक रिवायत में है कि इस पर उन में से एक फ़िरिश्ता अर्ज करता है :) ऐ हमारे रब्बे करीम ! उन में फुलां फुलां शख्स शुरकाए महफ़िल में से नहीं था वोह तो महज किसी काम की गरज से आया हुवा था (उस के बारे में क्या हुक्म है ?) **अल्लाह** तआला का दरयाए रहमत मजीद जोश में आता है, फ़रमाता है : غَشَوْهُمْ رَحْمَتِي فَهُمْ الْجُلَسَاءُ لَا يَشْفِي بِهِمْ جَلِيسُهُمْ या'नी उन को मेरी रहमत से ढांप दो कि येह आपस में मिल बैठने वाले ऐसे लोग हैं कि इन की सोहबत की बरकत से इन के साथ उठने बैठने वाला भी **बद नसीब** व महरूम नहीं रहता।

(درمنثور، پ ۲، البقرة، تحت الآية ۱۵۲، ۱/ ۳۶۷)

سَبَقْتُ رَحْمَتِي عَلَى غَضَبِي तू ने जब से सुना दिया या रब !
आसरा हम गुनाह गारों का और मज़बूत हो गया या रब !

(जौके ना'त, स.60)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल में

सुल्ताने अम्बियाए किराम, शाहे खैरुल अनाम
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इश्को महब्बत के जाम तो पिलाए ही
 जाते हैं साथ ही साथ सुन्नतों भरे इजतिमाआत में कसरत से
 जिक्रुल्लाह करने, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतें सीखने
 सिखाने और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की जाते बा बरकात पर
 दुरूदे पाक पढ़ने पढ़ाने की अमली तौर पर तरगीब दिलाने
 का इल्तिजाम भी किया जाता है बल्कि आगाजे बयान में ही
 ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की
 जाते बा बरकत पर दुरूदे पाक के चार सीगे इन अल्फाज के
 साथ पढ़ाए जाते हैं ।

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَعَلَى الْاَكْ وَاصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ وَعَلَى الْاَكْ وَاصْحَابِكَ يَا نُوْرَ اللّٰهِ

दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता
 आशिकाने रसूल की सोहबत की बदौलत अगर हम दुरूदे
 पाक की कसरत के आदी बन गए तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की
 बरकत से हमारे तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे । चुनान्चे, इस
 जिम्न में एक ईमान अफ़रोज़ हिकायत सुनिये और झूम
 जाइये । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अहमद बिन साबित मग़रिबी

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي फ़रमाते हैं : “एक रात ख़्वाब में मैं ने किसी मुनादी

की निदा सुनी कि “जो शख़्स रसूले अकरम ﷺ

की ज़ियारत करना चाहता है वोह हमारे साथ आ जाए” इस के

साथ ही मैं ने देखा कि कुछ लोग दौड़े आ रहे हैं लिहाज़ा मैं भी

उन के साथ हो लिया । कुछ देर चलने के बा’द मैं ने देखा कि

सरवरे दो आलम ﷺ एक बालाख़ाने में जल्वा

अफ़रोज़ हैं, मैं बाई तरफ़ को बढ़ा ताकि दरवाज़ा मिल जाए तो

लोगों ने बुलन्द आवाज़ से कहा दरवाज़ा दाई जानिब है लिहाज़ा

मैं दाएं मुड़ा तो दरवाज़ा मिल गया और मैं दाख़िल हो गया, जब

मैं करीब हुवा तो मेरे और हुज़ूर ﷺ के दरमियान एक

बादल हाइल हो गया जिस की वजह से मैं किसी का चेहरा न देख

सका । मैं ने बे साख़्ता येह पढ़ना शुरूअ कर दिया ।

“الْصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ” और अर्ज गुज़ार हुवा : “या

रसूलल्लाह ﷺ क्या येही मेरी आदत नहीं है ?”

आप ﷺ ने फ़रमाया : “मेरे और तेरे दरमियान

दुन्या के हिजाब (पर्दे) हाइल हो गए हैं ।” मुझे सरकार जज़्र

(या’नी डांट डपट) फ़रमाते रहे कि “हम तुझे मन्अ करते हैं कि

दुन्या और दुन्या के एहतिमाम से बाज़ आ जा और तू बाज़ नहीं

आता ।” मैं ने दिल में सोचा कि येह मेरी शामते आ’माल ही का

नतीजा है, साथ ही साथ मेरी आंखें अश्कबार हो गई और मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह ﷺ क्या आप मेरे ज़ामिन नहीं हैं ?” फ़रमाया : “हां तू जन्नती है ।” फिर हुज़ूर ﷺ ने दुआ फ़रमाई तो वोह बादल आहिस्ता आहिस्ता उठना शुरूअ हुवा हत्ता कि मैं ने सय्यिदे दो जहां ﷺ और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ज़ियारत से अपनी आंखों की प्यास बुझाई ।

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيما ورد من لطائف المرائي والحكايات.....الخ، ص ۱۲۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! ﷺ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** हमें अपने प्यारे रसूल ﷺ की गुलामी ता दमे ज़िन्दगानी और दा'वते इस्लामी से वाबस्ता अशिक़ाने रसूल की सोहबते जावेदानी के साथ साथ कसरते दुरूद ख़्वानी की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ ﷺ

लिबाश पहनने की दुआ

जो शख़्स कपड़ा पहने और येह पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ هٰذَا وَرَزَقْنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّيْ وَلَا قُوَّةٍ

तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे ।

(شعب الايمان، ۵/ ۱۸۱، حديث: ۶۲۸۵)

बयान नम्बर : 16

बद नसीब कौन...?

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है :
 يَا نِي جِس نے माहे रमज़ान को पाया और इस के रोज़े न रखे वोह शख्स शकी (या'नी बदबख़्त) है ।
 وَمَنْ أَذْرَكَ وَالِدَيْهِ أَوْ أَحَدَهُمَا فَلَمْ يَبْرَهُ فَقَدْ شَقِيَ يَا نِي जिस ने अपने वालिदैन् या किसी एक को पाया और इन के साथ अच्छा सुलूक न किया वोह भी शकी (या'नी बदबख़्त) है ।
 وَمَنْ ذَكَرْتُ عَنْدَهُ فَلَمْ يَصِلْ عَلَيَّ فَقَدْ شَقِيَ और जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा वोह भी शकी (या'नी बदबख़्त) है ।
 (مجمع الزوائد، كتاب الصيام، باب فيمن أدرک شهر رمضان..... الخ، ۳/۳۰، حديث: ۲۷۷۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इस हदीसे पाक में तीन किस्म के अशख़ास की बदबख़्ती व शकावत का ज़िक्र किया गया है जिस से इन तीन चीज़ों की अहम्मियत व अफ़ज़लियत का ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है । (1) माहे रमज़ानुल मुबारक में इबादत की कसरत ।

(2) वालिदैन् की ताबेअदारी और उन की ख़िदमत । (3) हुज़ूर

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदो सलाम की कसरत ।

❶ माहे रमजानुल मुबारक में इबादत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन में से पहली चीज “रमजानुल मुबारक” है। खुदाए रहमान **عَزَّوَجَلَّ** का करोड़हा करोड़ एहसान कि उस ने हमें माहे रमजान जैसी अजीमुश्शान ने’मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। माहे रमजान के फैज़ान के क्या कहने ! इस की तो हर घड़ी रहमत भरी है। इस महीने में अज़्रो सवाब बहुत ही बढ़ जाता है इस माहे मुबारक का हर दिन और हर रात अपने अन्दर बे शुमार बरकतें समेटे हुवे है। चुनान्चे,

अल्लाह तआला की इनायतों, रहमतों और बख़्शिशों का तज़क़िरा करते हुवे एक मौक़अ पर सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, शहनशाहे अबरार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “जब रमजान की पहली रात होती है तो **अल्लाह** तआला अपनी मख़्लूक की तरफ़ नज़र फ़रमाता है और जब **अल्लाह** तआला किसी बन्दे की तरफ़ नज़र फ़रमाए तो उसे कभी अज़ाब न देगा। और हर रोज़ दस लाख (गुनहगारों) को जहन्म से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये उन के मजमूए के बराबर इस एक रात में आज़ाद फ़रमाता है।

(کنز العمال، کتاب الصوم، الباب الاول فی صوم الفرض، ٤٠/٢١٩، الجزء الثامن، حدیث: ٢٣٧٠٢)

नीज़ शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ (या’नी जुमा’रात को गुरुबे आफ़ताब से ले कर जुमुआ को गुरुबे आफ़ताब तक) की हर हर घड़ी में ऐसे दस दस लाख गुनहगारों को जहन्म से

आज़ाद किया जाता है जो अज़ाब के हक़दार करार दिये जा चुके होते हैं । (क़ज़़ العمال، کتاب الصوم، ۲/۲۲۳، الجزء الثامن، حدیث: ۲۳۷۱)

इस्यां से कभी हम ने कनारा न किया

पर तू ने दिल आजुर्दा हमारा न किया

हम ने तो जहन्नम की बहुत की तजवीज़

लेकिन तेरी रहमत ने गवारा न किया

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ رضي الله تعالى عنه

से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “रोज़ादार का सोना इबादत और उस की ख़ामोशी तस्बीह करना और उस की दुआ कबूल और उस का अमल मक़बूल होता है ।”

(شعب الايمان، باب في الصيام، ۳/۵۱، حدیث: ۳۹۳۸)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात,

अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كرم الله تعالى وجهه الكريم फ़रमाते हैं :

“अगर **अब्बाह** عز وجل को उम्मेते मुहम्मदिय्या على صاحبها الصلوة والسلام पर अज़ाब करना मक़सूद होता तो उन को रमज़ान और सूरए इख़्लास शरीफ़ हरगिज़ इनायत न फ़रमाता ।” (نزهة المجالس ۱/۲۱۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अब्बाह** عز وجل को उम्मेते

मुहम्मदिय्या से किस क़दर प्यार है कि उस ने बख़्शिश व मग़फ़िरत के लिये उन्हें रमज़ानुल मुबारक अता फ़रमाया इस के बा वुजूद भी अगर कोई शख़्स इस माहे मुबारक को पाए और इस में नमाज़ व रोज़े का एहतिमाम कर के अपनी बख़्शिश व मग़फ़िरत न करवा सके तो वाक़ेई वोह बहुत बड़ा बदबख़्त और बद नसीब है ।

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** हमें रमजानुल मुबारक का अदबो एहतिराम करने की तौफीक अता फ़रमाए और अपने करम से हमें खुश बख़्तों में दाख़िल फ़रमाए। आमीन

डर था कि इस्यां की सज़ा अब होगी या रोज़े जज़ा दी उन की रहमत ने सदा येह भी नहीं वोह भी नहीं

(हदाइके बख़्शिश, स. 110)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
﴿2﴾ वालिदैन् की ताबेअदारी और उन की ख़िदमत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हदीसे पाक के ज़िम्न में अहम्मिय्यत व अफ़ज़लिय्यत की हामिल दूसरी चीज़ “**वालिदैन् की ताबेअदारी और उन की ख़िदमत**” करना है और इस की अज़मत के लिये येही काफ़ी है कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने कुरआने पाक में जहां अपनी इबादत का हुक्म इरशाद फ़रमाया वहीं वालिदैन् के साथ भलाई और एहसान का हुक्म भी इरशाद फ़रमाया : चुनान्वे पारह **15** सूरए बनी इस्राईल की आयत **23** में इरशाद होता है :

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ
وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ إِمَّا يَبْعَثَنَّ
عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا
فَلَا تَقُلْ لَهُمَا آفٌ وَلَا تُنْهَرُهُمَا
وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ﴿٢٣﴾

(५५, बनी इस्राईल: २३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने इन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो इन से हूं (उफ़ तक) न कहना और इन्हें न झिड़कना और इन से ता'जीम की बात कहना।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मां या बाप को दूर से आता देख कर ता'जीमन खड़े हो जाइये, इन से आंखें मिला कर बात मत कीजिये, बुलाएं तो फ़ौरन लब्बैक (या'नी हाज़िर हूं) कहिये, तमीज़ के साथ “आप जनाब” से बात कीजिये, इन की आवाज़ पर हरगिज़ अपनी आवाज़ बुलन्द न होने दीजिये । ख़ूब हमदर्दी और प्यार व महबूबत से मां-बाप का दीदार कीजिये, मां-बाप की तरफ़ ब नज़रे रहमत देखने के भी क्या कहने ! जनाबे रहमते आलमिय्यान्, मक्की मदनी सुल्तान **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने रहमत निशान है : “जब अवलाद अपने मां-बाप की तरफ़ रहमत की नज़र करे तो **अल्लाह** तआला उस के लिये हर नज़र के बदले **हज़्जे मबरूर** (या'नी मक्बूल हज़) का सवाब लिखता है । सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** ने अर्ज़ की : अगर्चे दिन में सो मरतबा नज़र करे ! फ़रमाया : “नअम, अल्लाहु अक्बरु व अतयब” या'नी हां ! **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** सब से बड़ा है और सब से ज़ियादा पाक है ।”

(شعب الإيمان، باب في بر الوالدين، ١/٨٦، حديث: ٤٨٥٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि वालिदैन् के साथ एहसान व भलाई और उन की ता'जीम व तौकीर बहुत ज़रूरी है तो जिन खुश नसीब इस्लामी भाइयों के वालिदैन् ज़िन्दा

हैं उन्हें चाहिये कि उन का अदबो एहतिराम करें और उन की खिदमत को अपने लिये बाइसे सअदत समझें और हो सके तो रोज़ाना कम अज़ कम एक बार उन की क़दम बोसी भी करें। हादिये राहे नजात, सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने जन्नत निशान है : **الْحَنَّةُ تَحْتَ أَقْدَامِ الْأَمْهَاتِ** “या’नी जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है। (مسند الشّهاب، १/१०२، حديث: ११९) या’नी इन से भलाई करना जन्नत में दाखिले का सबब है।

दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूअ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअत” जिल्द 3 सफ़हा 445 पर है : “वालिदा के क़दम को बोसा भी दे सकता है, ह़दीस में है : जिस ने अपनी वालिदा का पाउं चूमा, तो ऐसा है जेसे जन्नत की चौखट (या’नी दरवाज़े) को बोसा दिया।”

(درمختار و رد المحتار، کتاب الحظر والإباحة، فصل فی النظر والمس، १/१०२)

सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने इब्रत निशान है : “मां-बाप तेरी दोज़ख़ और जन्नत हैं।”

(ابن ماجه، کتاب الادب، باب بر الوالدین، १/१०२، حديث: ३६२२) एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : “सब गुनाहों की सज़ा **عَذَابٌ اَلْبَاطِل** चाहे तो क़ियामत के लिये उठा रखता है मगर मां-बाप की नाफ़रमानी की सज़ा जीते जी पहुंचाता है।”

और तो और मरने के बा'द भी ऐसे शख्स का अन्जाम बहुत बुरा होता है। चुनान्वे, मन्कूल है : “जब मां-बाप के नाफ़रमान को दफ़न किया जाता है तो क़ब्र उसे दबाती है यहां तक कि उस की पसलियां (टूट फूट कर) एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं।”

(الزواج عن اقتراح الكبراء، كتاب النفقات على الزوجات والأقارب الخ، عقوق الوالدين أو أحدهما الخ १३९/२०)

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** हमें मां-बाप की अहम्मियत समझने की तौफ़ीक़ बख़्शो और इन का अदब नसीब फ़रमाए। आमीन

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿3﴾ दुख्खो सलाम की कसरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हदीसे पाक के जिम्न में अहम्मियत व अफ़ज़लियत की हामिल तीसरी चीज़ “दुरूदे पाक की कसरत” है कि इस में दुन्या व आख़िरत की सअ़ादत ही सअ़ादत है जब कि **दुरूदे पाक** पढ़ने में सुस्ती बाइसे महरूमि व हलाकत है जैसा कि आप ने हदीसे पाक समाअ़त फ़रमाई कि ताजदारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “مَنْ ذُكِرْتُ عَنْدهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ فَقَدْ شَقِيَ” जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और उस ने मुझ पर **दुरूदे पाक** न पढ़ा वोह भी शक़ी (या'नी बदबख़्त) है।” लिहाज़ा हमें भी **दुरूदे पाक** की कसरत करनी चाहिये इस की बरकत से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** हमारी शक़ावत दूर होगी और हमें सअ़ादतों की मे'राज़ नसीब होगी।

दुखदो सलाम की आदत बनाने का नुस्खा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूदे पाक की कसरत का आदी बनने के लिये हमें चाहिये कि दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाएं लिहाजा इस जिम्न में एक मदनी बहार सुनिये और झूम उठिये ।

बरोज इतवार 26 रबीउन्नूर शरीफ़ सि. 1420 हि. ब मुताबिक 11 जुलाई सि. 1999 ब वक्ते दोपहर पंजाब के मशहूर शहर लाला मूसा की एक मसरूफ़ शाहराह (highway) पर किसी ट्रैलर ने एक जिम्मेदार, मुबल्लिगे दा 'वते इस्लामी मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي (महल्ला साकिन इस्लाम पूरा, लाला मूसा) को बुरी तरह कुचल दिया । यहां तक कि उन के पेट की जानिब से ऊपर और नीचे का हिस्सा अलग अलग हो गया । मगर हैरत की बात यह थी कि फिर भी वोह जिन्दा थे, और हैरत बालाए हैरत येह कि हवास इतने बहाल थे कि बुलन्द आवाज़ से لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ पढ़े जा रहे थे । लाला मूसा के अस्पताल में डॉक्टरों के जवाब दे देने पर उन्हें शहर गुजरात के अजीज भट्टी अस्पताल ले जाया गया । उन्हें अस्पताल ले जाने वाले इस्लामी भाई का ब क़सम बयान है, اَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي की ज़बान पर पूरे रास्ते इसी तरह बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और कलिमए तय्यिबा का विर्द जारी था । येह मदनी मन्ज़र देख कर डॉक्टर्ज़ भी हैरान व शशदर थे कि

येह जिन्दा किस तरह हैं ? और हवास इतने बहाल की बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और कलिमए तय्यिबा पढ़े जा रहे हैं। इन का कहना था कि हम ने अपनी जिन्दगी में ऐसा बा हौसला और बा कमाल मर्द पहली मरतबा ही देखा है। कुछ देर बा'द वोह खुश नसीब आशिके रसूल मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने बारगाहे महबूबे बारी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي** में बसद बेकरारी इस तरह इस्तिग़ासा किया,

या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** आ भी जाइये

या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मेरी मदद फ़रमाइये

या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मुझे मुआफ़ फ़रमा दीजिये

इस के बा'द ब आवाज़े बुलन्द **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ** पढ़ते हुवे जामे शहादत नौश कर गए। जी हां जो मुसलमान हादिसे में फ़ौत हो वोह शहीद है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्तगी अता फ़रमा और सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ात पर कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। **اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم**



बयान नम्बर : 17

दुआओं का मुहाफिज़

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ** से रिवायत है नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : “तुम्हारा मुज़्ज़ पर **दुरूदे पाक** पढ़ना तुम्हारी दुआओं का मुहाफिज़, रब तआला की रिज़ा का बाइस और तुम्हारे आ'माल की पाकीज़गी का सबब है ।” (القول البديع، الباب الثاني في ثواب الصلاة الخ، ص २८०)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अपनी दुआओं की हिफ़ाज़त, रब तआला की रिज़ा व खुशनूदी और अपने आ'माल की पाकीज़गी हासिल करने के लिये नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते बा बरकत पर **दुरूदो सलाम** की कसरत की आदत बना लेनी चाहिये । **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से रोज़े महशर सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की शफ़ाअत और आप की ज़ियारत का शरफ़ हासिल होगा । लिहाज़ा जब भी हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** का ज़िक्रे ख़ैर खुद करें या सुनें तो आप की जात पर बसद अक़ीदत व महब्वत **दुरूद**

शरीफ़ ज़रूर बिज़्ज़रूर पढ़ लिया करें, कहीं ऐसा न हो कि हमारी

जरा सी गफलत कल बरोजे कियामत हमारी हसरत और हुजूर
 ﷺ की जियारत से महरूमी का बाइस बन जाए।

कुछ ऐसा कर दे मेरे किरदगार आंखों में
 हमेशा नक्श रहे रूए यार आंखों में

उन्हें न देखा तो किस काम की हैं येह आंखें
 कि देखने की है सारी बहार आंखों में

(सामाने बख्शिश, स.129)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकेई एक उम्मत की लिये
 बहुत बड़ी महरूमी की बात है कि जिन आका ﷺ
 की गुलामी में अपनी जिन्दगानी बसर की उन की न तो दुन्या में
 जियारत कर सका और न ही आखिरत में आप की शफ़ाअत व
 जियारत से बहरा मन्द हो पाया, हां ! अगर दीगर इबादात के साथ
 साथ सरकार ﷺ की जाते तय्यिबा पर दुरूदे पाक
 पढ़ने की आदत होगी तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सरकार ﷺ
 नजरे करम फ़रमा ही देंगे बल्कि अहादिसे मुबारका से पता चलता
 है कि रोज़े महशर, खल्क के रहबर, शाफ़ेए महशर
 ﷺ अपने आशिकों को कसरते दुरूदे पाक की
 बदौलत पहचानेंगे। चुनान्चे,

नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत **ﷺ** का
 फ़रमाने रहमत निशान है : **“لَيْسَ دَنْ الْحَوْضِ عَلَى أَقْوَامٍ مَا أَعْرِفُهُمْ إِلَّا بِكَثْرَةِ الصَّلَاةِ عَلَى”**
 हौजे कौसर पर कुछ लोग आएंगे जिन्हें मैं कसरते दुरूद के सबब
 पहचान लूंगा।” (२५२) (الغ، ص २५२)

हौजे कौसर की शान

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ हौजे कौसर की भी क्या शान है ! चुनान्वे,

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 176 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहिश्त की कुन्जियां” सफ़हा 15 ता 16 पर है : जन्नत में शीरीं (या'नी मीठे) पानी, शहद, दूध और शराब की नहरें बहती हैं ।

(ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة انهار الجنة، ٢٥٧/٤، حدیث: ٢٥٨٠)

जब जन्नती पानी की नहर में से पियेंगे तो उन्हें ऐसी ह्यात मिलेगी कि कभी मौत न आएगी और जब दूध की नहर में से नौश करेंगे तो उन के बदन में ऐसी फ़रबगी पैदा होगी कि फिर कभी लाग़र (या'नी कमज़ोर) न होंगे और जब शहद की नहर में से पी लेंगे तो उन्हें ऐसी सिद्दहत व तन्दुरुस्ती मिल जाएगी कि फिर कभी वोह बीमार न होंगे और जब शराब की नहर में से पियेंगे तो उन्हें ऐसा नशात और खुशी का सुरूर हासिल होगा कि फिर कभी वोह ग़मगीन न होंगे । येह चारों नहरें एक हौज़ में गिर रही हैं जिस का नाम हौजे कौसर है येही हौज़, हज़ूरे अकरम صَلَّی اللّهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हौजे कौसर है जो अभी जन्नत के अन्दर है लेकिन क़ियामत के दिन मैदाने मह़शर में लाया जाएगा । जहां हज़ूरे अकरम صَلَّی اللّهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस हौज़ से अपनी उम्मत को

सैराब फ़रमाएंगे ।

(روح البیان، پ ۱، البقرة، تحت الآیة: ۲۵، ۸۲/۱، ۸۳)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

या इलाही गर्मिये महशर से जब भड़के बदन
 दामने महबूब की ठन्डी हवा का साथ हो
 या इलाही जब ज़बानें बाहर आएँ प्यास से
 साहिबे कौसर शहे जूदो अता का साथ हो

(हदाइके बख़्शिश, स. 132)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मतलिलिउल मसर्रात में है हुजूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह में अर्ज की गई : “أَرَأَيْتَ صَلَاةَ الْمُصَلِّينَ عَلَيْكَ مِمَّنْ غَابَ عَنْكَ وَمَنْ يَأْتِي بِعَدَاكَ،” या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** उन लोगों के मुतअल्लिक़ ख़बर दीजिये जो आप पर **दुरूद शरीफ़** भेजते हैं और आप से गाइब हैं, (या'नी आप की हयाते मुबारका में) और उन लोगों के मुतअल्लिक़ भी ख़बर दीजिये जो आप के बा'द होंगे (या'नी आप के विसाल के बा'द) इस पर आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “أَسْمِعْ صَلَاةَ أَهْلِ مَحَبَّتِي وَأَعْرِفُهُمْ” मैं अहले महब्बत का दुरूद बिला वासिता सुनता हूं और उन्हें पहचानता भी हूं। “وَتُعَرِّضْ صَلَاةَ غَيْرِهِمْ عَرَضًا” और अहले महब्बत के इलावा दुरूद भेजने वालों का **दुरूद शरीफ़** फ़िरिशतों के वासिते से पेश किया जाता है।

(مطالع المسرات (مترجم)، ص 191)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सरकार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की नज़रे इनायत पर कुरबान जाइये कि आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** अपने आशिकों पर किस क़दर मेहरबान हैं कि न सिर्फ़ उन की जानिब तवज्जोह रखते हैं बल्कि अहले महब्बत का **दुरूदो सलाम** भी ब नफ़से नफ़ीस समाअत फ़रमाते हैं।

वस्वसा और इस का जवाब

वस्वसा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है शैतान किसी के जेहन में येह वस्वसा डाले कि हुजूर ﷺ तो इस दुनिया से पर्दा फ़रमा चुके हैं लिहाज़ा अब किसी उम्मीती का दुरूद सुनना क्यूंकर मुमकिन हो सकता है ?

जवाबे वस्वसा :

जलाउल अफ़हाम में एक रिवायत बयान की गई है जिस में इस शैतानी वस्वसे की काट खुद हुजूर नबिय्ये करीम ﷺ ने फ़रमाई है । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :
 لَيْسَ مِنْ عَبْدٍ يُصَلِّي عَلَى إِلَّا بَلَغَنِي صَوْتُهُ حَيْثُ كَانَ
 मुझ पर दुरूद भेजता है तो मुझे उस की आवाज़ पहुंचती है, वोह जहां भी हो । अर्ज़ की गई : وَبَعْدَ وَفَاتِكَ؟
 या रसूलल्लाह और क्या आप की वफ़ात के बा'द (भी इसी तरह होगा ?) इरशाद फ़रमाया : وَبَعْدَ وَفَاتِي ! मेरी वफ़ात के बा'द भी (दुरूदे पाक पढ़ने वालों की आवाज़ मुझ तक पहुंचेगी ख़्वाह दुनिया के किसी भी ख़ित्ते से वोह मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ें ।) اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि वोह अम्बिया के जिस्मों को खाए ।

(جلاء الافهام، ص ५१)

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वोह कान
काने ला 'ले करामत पे लाखों सलाम

(हदाइके बख़्शिश, स. 300)

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ आज भी हमारे ग़ैबदान आका صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अपनी उम्मत के हाल से बाख़बर हैं बल्कि बारहा अपने चाहने वालों की ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते हैं और उन के ख़्वाब में आ कर दुख-दर्द का मदावा भी करते हैं। चुनान्चे,

सअ़ादतुद्दारैन में है : “एक बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं : मैं हम्माम में गिर गया, मेरे हाथ पर सख़्त चोट आई जिस की वजह से हाथ में काफ़ी सूजन आ गई, मैं बड़ी तकलीफ़ महसूस कर रहा था, रात जब सोया तो क्या देखता हूं कि ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जल्वए आलम ताब नज़र आया, लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई रहमत के फूल झड़ने लगे और मीठे बोल कुछ यूं तरतीब पाए : “बेटा ! तुम्हारे दुरूद ने मुझे मुतवज्जेह किया ।” सुब्ह उठा तो मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से दर्द तो काफ़ूर हो ही चुका था साथ ही साथ वरम (या'नी सूजन) का नामो निशान भी मिट चुका था ।”

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيماورد من لطائف المرائي والحكايات في فضل الصلاة..... الخ، ص: ١٤٠)

ख़ज़ां का सख़्त पहरा है ग़मों का घुप अन्देरा है

ज़रा सा मुस्कुरा दोगे तो दिल में रोशनी होगी

अगर वोह चांद से चेहरे को चमकाते हुवे आए

ग़मों की शाम भी सुब्हे बहारां बन गई होगी

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

तड़प कर ग़म के मारो तुम पुकारो या रसूलल्लाह
तुम्हारी हर मुसीबत देखना दम में टली होगी

(वसाइले बख़्शिश, स. 278)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह तो महज़ दुन्या की
मा'मूली सी तकलीफ़ थी दुख्खे पाक की बदौलत तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**
हमारी उख़रवी परेशानियां भी हल हो जाएंगी जैसा कि हुज़ूर
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया :

“يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ أَنْجُكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ أَهْوَالِهَا وَمَوَاطِنِهَا أَكْثَرُكُمْ عَلَى صَلَاةٍ فِي دَارِ الدُّنْيَا”

ऐ लोगों ! बेशक तुम में से क़ियामत के दिन उस की
दहशतों और दुश्वार गुज़ार घाटियों से जल्द नजात पाने वाला
वोह शख्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर कसरत से **दुख्खे पाक**
पढ़ा होगा ।

(جمعُ الجوامع، حرف الياء، ۹/ ۲۹، حديث: ۲۷۸۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन ज़िन्दगी के अय्याम
चन्द घन्टों से और येह चन्द घन्टे चन्द लम्हों से इबारत हैं,
ज़िन्दगी का हर सांस अनमोल हीरा है, काश ! एक एक सांस की
कद्र नसीब हो जाए कि कहीं कोई सांस बे फ़ाइदा न गुज़र जाए और
कल बरोज़े क़ियामत ज़िन्दगी का ख़ज़ाना नेकियों से ख़ाली पा
कर अशके नदामत न बहाने पड़ जाए ! सद करोड़ काश ! एक
एक लम्हे का हिसाब करने की आदत पड़ जाए कि कहां बसर हो
रहा है, ज़हे मुक़द्दर ! ज़िन्दगी की हर हर साअत मुफ़ीद कामों ही

में सर्फ हो । बरोजे कियामत अवकात को फुजूल बातों, खुश गप्पियों में गुजरा हुवा पा कर कहीं कफे अफ़सोस मलते न रह जाएं लिहाजा हमें चाहिये कि हम अपने लम्हाते ज़िन्दगी की क़द्र करते हुवे इन्हें फुजूल बातों और फुजूल कामों में सर्फ करने की बजाए ज़िक्रो दुरूद और दीगर नेक कामों में गुज़ारें !

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहकी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ** शुअबुल ईमान में नक़ल करते हैं कि ताजदारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने इब्रत निशान है : “रोज़ाना सुब्ह जब सूरज तुलूअ होता है तो उस वक़्त “दिन” येह ए’लान करता है कि अगर आज कोई अच्छा काम करना है तो कर लो कि आज के बा’द मैं कभी पलट कर नहीं आऊंगा ।” (३८४/३, حديث: ३८४/३) (شعب الإيمان، باب ما جاء في ليلة النصف من شعبان، ३/ ३८४)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फुजूलिय्यात में अपना कीमती वक़्त ज़ाएअ करने से जान छुड़ाने और नेकियों पर इस्तिफ़ामत पाने के लिये दा ‘वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये इस की बरकत से न सिर्फ़ वक़्त की क़द्र का एहसास दिल में उजागर होगा बल्कि फुजूलगोई से दामन तही करते हुवे ज़िक्रो दुरूद से ज़बान तर रखने का ज़ेहन भी बनेगा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

चुनान्चे, इस ज़िम्न में एक मदनी बहार सुनिये और झूम उठिये ।

गुनाहों की आदत छूट गई

उर्क रोड़ (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई (उम्र 25 बरस) की तहरीर कुछ इस तरह है : “मैं ने तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के आलमी मदनी मर्कज़ फैज़ाने मदीना में आखिरी अशरए रमज़ानुल मुबारक के ए'तिकाफ़ की सआदत हासिल की। मुझे ए'तिकाफ़ की बहुत सी बरकतें हासिल हुई। मिनजुमला राह चलते हुवे बाज़ारी लड़कों की तरह फ़िल्मी गीत गाने की जो आदत थी वोह निकल गई और **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** इस की जगह ना'त शरीफ़ पढ़ने की आदत बन गई। नीज़ ज़बान का कुफ़ले मदीना लगाने (या'नी बुरी तो बुरी गैर ज़रूरी बातों से भी बचने) का ज़ेहन बना और अब हाल येह है कि जूँ ही मुंह से फुज़ूल बात सरज़द होती है बतौर कफ़ारा झट ज़बान पर **दुरूदो सलाम** जारी हो जाता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **اَزَبْلَاه** **عَزَّوَجَلَّ** हमें तादमे हयात दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहते हुवे अपने प्यारे हबीब **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर ब कसरत **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



बयान नम्बर : 18

दस गुना सवाब

सय्यिदुल मुर्सलीन, जनाबे रहमतुल्लिल अलमीन **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने अज़मत निशान है : “जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **اَللّٰهُمَّ عَزَّوَجَلَّ** उस के लिये दस नेकियां लिख देता है, दस गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है और उस के दस दरजात बुलन्द फ़रमा देता है और येह दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।”

(التَّوْبَةُ وَالتَّوْبَةُ، كِتَابُ الذِّكْرِ وَالدَّعَاءِ، التَّوْبَةُ فِي أَكْثَارِ الصَّلَاةِ عَلَى النَّبِيِّ، ٣٢٢/٢، حَدِيثُ: ٢٥٧٤)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! प्यारे प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा, शबे अस्रा के दुल्हा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की जाते मुबारका पर दुरूदो सलाम पढ़ने के बे शुमार फ़ज़ाइलो बरकात हैं। हमें भी अपना ज़ेहन बनाना चाहिये कि उठते बैठते, चलते फिरते, ज़ौको शौक के साथ, अदबो एहतिराम के साथ दुरूदो सलाम की कसरत करें क्योंकि आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का ज़िक्रे ख़ैर करना बाइसे नुज़ूले रहमत है। हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : **عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزَلُ الرَّحْمَةُ** : जहां **اَللّٰهُمَّ عَزَّوَجَلَّ** के नेक बन्दों का ज़िक्रे ख़ैर होता है वहां **اَللّٰهُمَّ** की रहमतों का नुज़ूल होता है।

(حُلِيِّ الْاَوْلِيَاءِ، سَفِيَّانُ بْنُ عَيِّنَةَ، ٣٣٥/٤، حَدِيثُ: ١٠٤٥٠)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा वते इस्लामी)

जब नेक बन्दों का जिक्र सबबे नुजूले रहमत है तो फिर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के जिक्र का क्या आलम होगा ? और फिर शाहे खैरुल अनाम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जिक्रे खैर के तो क्या ही कहने, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जिक्रे खैर के वक्त यकीनन **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की रहमतों का नुजूल होगा, और उस की रहमतों की छमा छम बरसात होगी क्योंकि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तो सय्यिदुल अम्बियाए वल मुर्सलीन हैं ।

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने मशहूरो मा'रूफ़ ना'तिया कलाम “हदाइके बख़्शिश” में क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

ख़ल्क़ से औलिया, औलिया से रुसुल और रुसूलों से आ'ला हमारा नबी मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार ताजदारों का आक़ा हमारा नबी

(हदाइके बख़्शिश, स. 138)

اَلْحَبْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हमें अपने प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से हद दरजा महब्बत है और क्यूं न हो कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्बत कमाले ईमान के लिये शर्त है इस लिये हम आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का कसरत से जिक्रे खैर करते हैं, **दुरूदे पाक** पढ़ते हैं क्यूंकि इन्सान को जिस से महब्बत होती है उस का जिक्र कसरत से करता है । चुनान्वे, हादिये राहे नजात, सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद

फरमाया : “مَنْ أَحَبَّ شَيْئًا أَكْثَرَ ذِكْرُهُ” या’नी इन्सान को जिस से महबबत होती है उस का जिक्र कसरत से करता है ।”

और फिर आप ﷺ (زرقانی علی المواهب) पर दुरूदो सलाम की कसरत करना तो अहले सुन्नत की अलामत भी है ।
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अली बिन हुसैन बिन अली
फरमाते हैं :

ﷺ يا’नी रसूलुल्लाह ﷺ عَلَامَةُ أَهْلِ السُّنَّةِ كَثْرَةُ الصَّلَاةِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ
पर दुरूद की कसरत करना अहले सुन्नत की अलामत और उन
का शिआर है ।”

(القول البدیع، الباب الاول فی الامر بالصلاة علی رسول الله.....الخ، ص ۱۳۱)

हम को **अल्लाह** और नबी से प्यार है

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ दो जहां में अपना बेड़ा पार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 600)

जिक्रे रसूल जिक्रे खुदा है

याद रखिये ! आप ﷺ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर दुरूद पढ़ना
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का जिक्र करना है क्यूंकि दुरूद शरीफ **अल्लाह**
عَزَّوَجَلَّ के जिक्र पर मुश्तमिल है जैसा कि हनफ़ियों के अज़ीम पेशवा
हज़रते अल्लामा अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं :
”لَاِنَّ الصَّلَاةَ عَلَيْهِ مُشْتَمِلَةٌ عَلَى ذِكْرِ اللَّهِ وَتَعْظِيمِ الرَّسُولِ
पर दुरूद पढ़ना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जिक्र और नबिय्ये करीम,
रऊफ़ुरहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَام की ता’जीम पर मुश्तमिल है ।

(مرقاة، کتاب الصلاة، باب الصلاة علی النبی وفضلها، ۴/۱، تحت الحديث: ۹۲۹)

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** का अपने प्यारे हबीब पर इतना करम है

कि अपने प्यारे महबूब के ज़िक्र को खुद अपना ज़िक्र करार देता है जैसा कि हदीसे कुदसी में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** फ़रमाता है :
 إِذَا ذُكِرْتُ مَعِيَ ! जब भी मेरा ज़िक्र होगा मेरे साथ साथ तेरा भी ज़िक्र होगा । इब्ने अता इस हदीस का मतलब इन अल्फ़ाज़ में बयान करते हैं : “ يَا نَبِيَّ إِنِّي جَعَلْتُكَ مَعِيَ ” मैं ने आप के ज़िक्र को अपना ज़िक्र ठहरा दिया है ।” इब्ने अता मज़ीद फ़रमाते हैं : “ جَعَلْتُكَ ذِكْرًا مِنِّي ” मैं ने आप का ज़िक्र किया उस ने मेरा ज़िक्र किया ।” (الشفا بتعريف حقوق المصطفى، ص २०)

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “मेरे पास जिब्राईल आप का **إِنَّ رَبَّكَ يَقُولُ تَذَرْنِي كَيْفَ رَفَعْتُ ذِكْرَكَ؟** आए और कहा : क्या तुम्हें मा'लूम है कि मैं ने तुम्हारा ज़िक्र किस तरह बुलन्द किया है ? **فُلْتُ اللَّهُ أَغْلَمُ** मैं ने कहा : **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ख़ूब जानता है ।” **فَالِ إِذَا ذُكِرْتُ مَعِيَ** फ़रमाया : जब मेरा ज़िक्र होगा तो मेरे ज़िक्र के साथ तुम्हारा ज़िक्र भी होगा ।”

(درمنثور، प ३०، الانشراح، تحت الآية: ५३९/८०)

وَرَفَعْنَاكَ ذِكْرَكَ का है साया तुझ पर
 बोल बाला है तेरा ज़िक्र है ऊंचा तेरा

(हदाइके बख़्शिश, स. 28)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

से रिवायत है **اَبَلّٰه** لَا اَذْكُرُ فِى مَكَانٍ اِلَّا ذُكِرْتُ مَعِىَ يَامُحَمَّدُ ने फ़रमाया : “ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जहां मेरा ज़िक्र होगा वहां तेरा ज़िक्र भी मेरे ज़िक्र के साथ होगा । فَمَنْ ذَكَرْنِىْ وَلَمْ يَذْكُرْكَ जिस ने मेरा ज़िक्र किया और तुम्हारा ज़िक्र न किया, لَيْسَ لَهُ فِى الْجَنَّةِ نَصِيبٌ तो जन्नत में उस का कोई हिस्सा नहीं होगा ।

(در منشور، پ ۳۰، الكوثر، تحت الآية: ۸۳/ ۶۴۷)

ज़िक्रे खुदा जो उन से जुदा चाहो नजदियो !

वल्लाह ! ज़िक्रे हक नहीं कुंजी सकर की है

(हदाइके बख्शिश, स. 207)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन रिवायात से सरकारे आली वकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्र की अहम्मियत का अन्दाज़ा होता है लिहाज़ा जब भी प्यारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर किया जाए तो आप पर **दुरूदो सलाम** पढ़ा जाए और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाने नामी इस्मे गिरामी सुन कर इश्को मस्ती में झूम कर अपने अंगूठों को चूम कर आंखों से लगा लेना चाहिये, हो सकता है कि हमारी येही अदा **अब्लाह** तआला की बारगाह में मक्बूल हो जाए और **अब्लाह** तआला हम से राजी हो जाए और अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अदबो एहतिराम और ता'जीमो

तौकीर और उन की महबूत के सबब हमारी मग़फ़िरत फ़रमा दे । इस जिस्म में एक रिवायत सुनिये और अपना ईमान ताज़ा कीजिये । चुनान्वे,

हुज़ूर की ता'ज़ीम बरि़श्श क़ सबब बन गई

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि बनी इस्राईल में एक ऐसा शख्स था जिस ने अपनी ज़िन्दगी के दो सो साल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में गुज़ारे इसी नाफ़रमानी के आलम में उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई तो बनी इस्राईल ने उस के मुर्दा जिस्म को टांग से पकड़ कर घसीट कर गन्दगी के ढेर पर फेंक दिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वही भेजी कि उस को वहां से उठा कर उस की तजहीज़ व तक्फ़ीन कर के उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो । हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने लोगों से उस के मुतअल्लिक़ पूछा तो उन्होंने उस के बद किरदार होने की गवाही दी, हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अर्ज़ की : “या रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बनी इस्राईल तो इस के बद किरदार होने की गवाही दे रहे हैं कि इस ने अपनी ज़िन्दगी के दो सो साल तेरी नाफ़रमानी में गुज़ारे हैं ?”

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़

वही फ़रमाई कि येह ऐसा ही बद किरदार था “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ كَانَ كَلَّمَانَشَرِ التَّوْرَةِ” मगर इस की येह आदत थी कि जब कभी तौरात शरीफ़ पढ़ने के लिये खोलता” وَنَظَرَ إِلَى اسْمِ مُحَمَّدٍ” और मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) तो “قَبْلَهُ وَوَضَعَهُ عَلَى عَيْنَيْهِ وَصَلَّى عَلَيْهِ” के इस्मे गिरामी की तरफ़ देखता उस को चूम कर अपनी आंखों से लगा देता और उन पर दुरूद पढ़ता “فَسَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ وَغَفَرْتُ ذُنُوبَهُ” पस मैं ने इस के इस अमल की क़द्र की और इस के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दिया “وَرَزَوُجُهُ سَبْعِينَ حُورًا” और मैं ने इस का निकाह सत्तर हूरों के साथ कर दिया ।

(حلیة الاولیاء، وهب بن منبه، ۴/۲، حدیث: ۴۶۹۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ इस हिकायत ने तो अहले ईमान के दिलो दिमाग़ मुअत्तर व मुअम्बर कर दिया कि बनी इस्राईल का ऐसा शख्स जिस ने अपनी ज़िन्दगी के दो सो साल **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में गुज़ारे, फ़िस्को फुजूर करता रहा, गुनाहों का बाज़ार गर्म रखा लेकिन उस की येह आदत थी कि जब कभी वोह तौरात शरीफ़ खोलता तो उस में हमारे प्यारे आका, मदीने वाले मुस्त्फ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नाने नामी इस्मे गिरामी देखता तो फ़र्ते महब्बत से उस को चूम लेता और अपनी आंखों से लगाता और दुरूद शरीफ़ पढ़ता तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ को उस की येह अदा इतनी पसन्द आई कि उस के दो सो

साल के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दिया और अपने जलीलुल क़द्र

पैग़मबर हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

को उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का हुक्म इरशाद फ़रमाया और करम बालाए करम येह कि सत्तर हूरों के साथ उस का निकाह भी कर दिया । येह तो बनी इस्राईल के एक शख्स पर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का करम था तो भला उस मुसलमान का क्या आलम होगा जो आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का उम्मीती हो कर आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के नामे पाक का अदबो एहतिराम कर के उस को चूम कर अपनी आंखों से लगा कर आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरुदो सलाम** भेजेगा, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से क़वी उम्मीद है कि वोह उस से राज़ी हो कर उस को भी अपने रहमो करम से नवाजेगा ।

इस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के नामे मुबारक “मुहम्मद” को चूमना जाइज़ और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा का बाइस है इसी तरह आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** का नामे पाक सुन कर अपने अंगूठों को चूमना भी जाइज़ और बाइसे बरकत और सुन्नते सिद्दीके अक्बर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** है । चुनान्चे,

सुन्नते सिद्दीके अक्बर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा शैख़ इस्माईल हक्की **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** अपनी मायानाज़ तफ़सीर रुहूल बयान में नक्ल फ़रमाते हैं : “एक मरतबा महबूबे रब्बे काइनात, शहनशाहे मौजूदात

में **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मस्जिदे नबवी शरीफ़ **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام**

तशरीफ़ लाए और एक सुतून के पास जल्वा अफ़ोज़ हुवे । हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ भी आप के पास बैठ गए, (इतने में) हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अज़ान देने लगे, जब उन्होंने ने “أَشْهَدُ أَنْ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ” कहा तो उस वक़्त सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने दोनों अंगूठों के नाख़ुनों को अपनी दोनों आंखों पर रख कर قُرْءَةُ عَيْنِي بِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ या'नी या रसूलल्लाह ! आप मेरी आंखों की ठन्डक हैं कहा, फिर जब हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अज़ान से फ़ारिग़ हुवे तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबू बक्र जो शख़्स तुम्हारी तरह करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के अगले पिछले, इरादी ग़ैर इरादी तमाम गुनाहों को बख़्श देगा ।”

(روح البیان، پ ۲۲، الاحزاب، تحت الآية: ۵۶، ۴/۲۲۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सच्ची महबबत अता फ़रमा, आप عليه السلام की जाते बा बरकत पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफीक़ अता फ़रमा, आप का नामे पाक सुन कर फ़र्ते महबबत से अंगूठे चूमने की सआदत नसीब फ़रमा और हमारी बे हिसाब बख़्शिश व मग़फ़िरत फ़रमा ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِہٖ وَسَلَّم



बयान नम्बर : 19

पुल सिरात पर आशानी

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन समुरह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक दिन सरकारे अबद करार, शाफ़ेए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमारे पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : **يَا'नी गुज़स्ता रात में** ने एक अजीब मन्ज़र देखा **وَرَأَيْتُ رَجُلًا مِنْ أُمَّتِي يَرْحَفُ عَلَى الصِّرَاطِ مَرَّةً وَيَحِبُّ مَرَّةً** मैं ने देखा कि मेरा एक उम्मती **पुल सिरात** पर कभी घुटनों के बल और कभी पेट के बल रेंग कर चल रहा है और कभी तो नीचे लटक जाता है, **فَجَاءَتْهُ صَلَواتُهُ عَلَى** पस उस का मुझ पर पढ़ा हुवा **دुरूदे पाक** आया **فَأَخَذَتْهُ بِيَدِهِ فَأَقَامَتْهُ عَلَى الصِّرَاطِ حَتَّى جَارَ** और उस ने उस का हाथ थाम कर उसे **पुल सिरात** पर सीधा खड़ा कर दिया **هَتَّا** कि वोह सहीह व सलामत गुज़र गया ।”

(القول البديع، الباب الثاني في ثواب الصلاة والسلام على رسول الله، ص ۱۳۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत ने तो हम गुनाहगारों के ग़म ही ग़लत कर दिये कि अगर हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ाते सितूदा सिफ़ात पर **दुरूदे पाक** की पत्तियां निछावर करें तो दीगर फ़ज़ाइल के साथ साथ इस के उम्दा नताइज का यूं जुहूर होगा कि इस की बरकत से **پُل سیرات** बा आसानी उ़बूर होगा । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

याद रखिये ! कि जहन्नम की आग तारीक होगी और

पुल सिरात अन्धेरे में डूबा हुवा होगा फ़क़त वोही कामयाब होगा जिस पर रब्बुल अकरम **عَزَّوَجَلَّ** का फ़ज़्लो करम होगा, यकीनन **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** के इस फ़ज़्लो करम के हुसूल का एक बेहतरीन ज़रीआ हुज़ूर ताजदारे रिसालत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह में दुरूदे पाक की कसरत भी है कि अगर हम हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदे पाक पढ़ें तो इस की बरकत से पुल सिरात की तारीक राह रोशन व मुनव्वर हो जाएगी और हम इस दुश्वार गुज़ार मरहले से नजात पा जाएंगे । जैसा कि

पुल सिरात का नूर

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने नूरबार है : **يَا'نِي مُؤِذُّ الصَّلَاةِ عَلَى نَوْرِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ عِنْدَ ظُلْمَةِ الصِّرَاطِ** : या'नी मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत पुल सिरात की तारीकी में नूर होगा । **وَمَنْ أَرَادَ أَنْ يُكْتَالَهُ بِالْمِكْيَالِ الْأَوْفَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ** और जिसे येह पसन्द हो कि क़ियामत के दिन उसे अज़्र का पैमाना भर भर के दिया जाए **فَلْيَكْثِرْ مِنَ الصَّلَاةِ عَلَى** तो उसे चाहिये कि मुझ पर बकसरत दुरूद भेजे ।

(القول البديع، الباب الاول في الامر بالصلاة على رسول الله.....الخ، ص ۱۱۸)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ **1250** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअत” जिल्द अव्वल सफ़हा **253** पर है : सिरात हक़ है, येह एक पुल है कि पुश्ते जहन्नम पर नस्ब किया जाएगा, बाल से ज़ियादा बारीक और तल्वार से ज़ियादा तेज़ होगा जन्नत में जाने का येही रास्ता है, सब से पहले नबी **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** गुज़र फ़रमाएंगे, फिर और अम्बिया व मुर्सलीन, फिर येह उम्मत फिर और उम्मतें गुज़रेंगी और हस्बे इख़िलाफ़े आ'माल (अपने मुख़्तलिफ़ आ'माल के हिसाब से) **पुल सिरात** पर लोग मुख़्तलिफ़ तरह से गुज़रेंगे, **बा'ज़** तो ऐसे तेज़ी के साथ गुज़रेंगे जैसे बिजली का कुंदा कि अभी चमका और अभी गाइब हो गया और **बा'ज़** तेज़ हवा की तरह, कोई ऐसे जैसे परन्द उड़ता है और बा'ज़ जैसे धोड़ा दौड़ता है और बा'ज़ जैसे आदमी दौड़ता है, यहां तक कि **बा'ज़** शख़्स सुरीन पर घसीटते हुवे और कोई च्यूंटी की चाल जाए और पुल सिरात के दोनों जानिब बड़े बड़े आंकड़े (**أَعْلَاهُ عَزَّوَجَلَّ** ही जाने कि वोह कितने बड़े होंगे) लटकते होंगे, जिस शख़्स के बारे में हुक्म होगा उसे पकड़ लेंगे, मगर बा'ज़ तो ज़ख़्मी हो कर नजात पा जाएंगे और बा'ज़ को जहन्नम में गिरा देंगे और येह हलाक हुवा ।

येह तमाम अहले महशर तो पुल पर से गुज़रने में मशगूल, मगर वोह बे गुनाह, गुनाहगारों का शफ़ीअ पुल के किनारे खड़ा हुवा ब कमाले गिर्या व ज़ारी अपनी उम्मते आसी की नजात की

फ़िक्र में अपने रब से दुआ कर रहा है : رَبِّ سَلِّمْ سَلِّمْ या इलाही इन गुनाहगारों को बचा ले बचा ले । और एक उसी जगह क्या ! हुजूर

ﷺ उस दिन तमाम मवातिन (मक़ामात) में दौरा फ़रमाते रहेंगे, कभी मीज़ान पर तशरीफ़ ले जाएंगे, वहां जिस के हसनात में कमी देखेंगे, उस की शफ़ाअत फ़रमा कर नजात दिलवाएंगे और फ़ौरन ही देखो तो हौज़े कौसर पर जल्वा फ़रमा हैं, प्यासों को सैराब फ़रमा रहे हैं और वहां से पुल पर रौनक़ अफ़रोज़ हुवे और गिरतों को बचाया । (बहारे शरीअत, स. 147 ता 149)

जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अनस रज़ी अल्ले त़ैअल्य एन्हे अपने वालिद से रिवायत करते हैं, वोह फ़रमाते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत ﷺ में रोज़े महशर अपनी शफ़ाअत करने की दरख़्वास्त की तो ख़ल्क के रहबर, शाफ़ेअ महशर, महबूबे दावर ﷺ ने फ़रमाया : ”أَنَا فَاعِلٌ“ वोह तो मैं करूंगा ही । मैं ने अर्ज़ की ! या रसूलल्लाह ﷺ तो फिर मैं आप को तलाश कहाँ करूँ....? फ़रमाया : ”أَطْلُبُنِي أَوَّلَ مَا تَطْلُبُنِي عَلَى الصِّرَاطِ“ पहले पहल तुम मुझे पुल सिरात पर तलाश करना, मैं अर्ज़ गुज़ार हुवा कि अगर सिरात पर आप को न पाऊँ तो....? फ़रमाया : ”أَطْلُبُنِي عِنْدَ الْمِيزَانِ“ तो फिर मीज़ान पर मुझे देख लेना । मैं ने अर्ज़ की : अगर मीज़ान पर भी आप से मुलाक़ात न हो पाए तो.....? फ़रमाया : ”أَطْلُبُنِي عِنْدَ الْحَوْضِ، فَإِنِّي لَا أَخْطِئُ هَذِهِ الثَّلَاثَ الْمَوَاطِنَ“ तो फिर ऐसा करना कि हौज़े कौसर पर देख लेना (बस) मैं इन तीन जगहों में से किसी जगह तुम्हें ज़रूर मिल जाऊंगा ।

(ترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ما جاء في شأن الصراط، ۱۹۵/۴، حدیث: ۲۴۴۱)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा वते इस्लामी)

उस्ताजे ज़मन शहनशाहे सुखन मौलाना हसन रज़ा ख़ान
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने ना'तिया दीवान "ज़ौके ना'त" में इस मज़मून
 की मन्ज़र कशी कुछ यूं फ़रमाते हैं :

ज़बान सूखी दिखा कर कोई लबे कौसर
 जनाबे पाक के क़दमों पे गिर गया होगा
 कोई क़रीबे तराजू कोई लबे कौसर
 कोई सिरात पर इन को पुकारता होगा
 हज़ार जान फ़िदा नर्म नर्म पाउं से
 पुकार सुन के असीरों की दौड़ता होगा

(ज़ौके ना'त, स. 36)

ग़रज़ हर जगह इन्हीं की दूहाई, हर शख्स इन्हीं को
 पुकारता, इन्हीं से फ़रयाद करता है और इन के सिवा किस को
 पुकारे...? कि हर एक तो अपनी फ़िक्र में है, दूसरों को क्या पूछे ?
 सिर्फ़ एक येही हैं, जिन्हें अपनी कुछ फ़िक्र नहीं और तमाम
 आलम का बार इन के ज़िम्मे :

कोई कहेगा दुहाई है या रसूलल्लाह
 तो कोई थाम के दामन मचल गया होगा
 किसी को ले के चलेंगे फ़िरिश्ते सूए ज़हीम
 वोह इन का रास्ता फिर फिर के देखता होगा
 अज़ीज़ बच्चे को मां जिस तरह तलाश करे
 क़सम ख़ुदा की येही हाल आप का होगा

(ज़ौके ना'त, स. 36)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

जन्नत में ठिकाना

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : مَنْ صَلَّى عَلَىَّ فِي يَوْمِ أَلْفِ مَرَّةٍ जो शख्स एक दिन में हज़ार मरतबा मुझ पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ लिया करे **لَمْ يَمُتْ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ فِي الْجَنَّةِ** वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना ठिकाना न देख ले ।

(الترغيب والترهيب، كتاب الذكر والدعاء، الترغيب في اكثار الصلاة على النبي، ٣٢٦/٢، حديث: ٢٥٩١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जन्नत एक मकान है कि **अल्लाह** तआला ने ईमान वालों के लिये बनाया है इस में वोह ने'मते' मुहय्या की हैं जिन को न **आंखों** ने देखा, न **कानों** ने सुना, न किसी आदमी के **दिल** पर इन का ख़तरा गुज़रा । इस में किस्म किस्म के जवाहिर के महल हैं, ऐसे साफ़ शफ़्फ़ाफ़ कि अन्दर का हिस्सा बाहर से और बाहर का अन्दर से दिखाई दे, जन्नत में चार दरया हैं : एक **पानी** का, दूसरा **दूध का**, तीसरा **शहद का** और चौथा **शराब का**, फिर इन से नहरें निकल कर हर एक के मकान में जारी हैं । जन्नतियों को जन्नत में हर किस्म के लज़ीज़ से लज़ीज़ खाने मिलेंगे, जो चाहेंगे फ़ौरन उन के सामने मौजूद होगा अगर किसी परन्द को देख कर उस का गोश्त खाने को जी हो तो उसी वक़्त भुना हुवा उस के पास आ जाएगा ।

(बहारे शरीअत, स.152 ता 156 मुलतक़तन)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

दुरूदे पाक पढ़ने वाला किस क़दर बख़्तर है कि मरने से पहले ही जन्नत में अपना ठिकाना देख लेता है और जिस खुश नसीब को दुनिया ही में उस का जन्नती महल दिखा दिया जाए तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत और हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की नज़रे इनायत से उम्मीदे वासिक है कि न सिर्फ़ वोह दाख़िले जन्नत होगा बल्कि इस की अबदी ने'मतों से महज़ूज़ भी होगा **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**

इसी ज़िम्न में एक इस्लामी भाई की **मदनी बहार** सुनिये और खुशी से सर धुनिये । चुनान्वे,

अन्दरूने सिन्ध के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि मेरे भाई नो'मान अत्तारी (उम्र तक़रीबन **18** साल) सि. **2002** ई. में दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हुवे । सर पर मुस्तक़िल तौर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजा लिया । **फ़राइज़ व वाजिबात** की अदाएगी की कोशिश के साथ **सुननो मुस्तहब्बात** पर अमल की कोशिश किया करते । नमाज़े फ़ज़्र के लिये मुसलमानों को बेदार करने के लिये “**सदाए मदीना**” लगाना उन का मा'मूल था । दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में पाबन्दी से शिर्कत करते । उन का ख़ास अमल जो हम महसूस करते थे वोह कसरत के साथ **दुरूद शरीफ़** पढ़ना था । सि. **2004** ई. में वोह शदीद बीमार हो गए यहां तक कि चारपाई से जा लगे । इस हालत में भी चार पाई के क़रीब ही मुसल्ला बिछा कर **नमाज़** अदा किया करते । जब हालत ज़ियादा बिगड़ी तो उन्हें हस्पताल में दाख़िल करवा दिया गया । एक बार मुझ से फ़रमाने लगे कि आज मैं बैठ कर आंखें

बन्द किये दुरूदे पाक पढ़ रहा था और आगे पीछे झूम रहा था तो मेरी खुश नसीबी अपनी मे'राज को पहुंच गई, मैं ने देखा कि सामने सरकारे मदीना, सुल्ताने बा करीना, करारे क़ल्बो सीना, फैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** जल्वा फ़रमा हैं। लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रहमत के फूल झड़ने लगे अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : “जब दुरूद शरीफ़ पढ़ो तो आगे पीछे नहीं दाएं बाएं झूमो।” अपने भाई की बख़्त आवरी का बयान सुन कर मैं भी झूम उठा। अब तो वोह कई कई घन्टे आंखें बन्द किये मुसलसल दुरूदे पाक, **الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ** और कलिमए तय्यिबा **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ** का विर्द करते रहते। वालिद साहिब जब कभी जवान अवलाद की बीमारी के बाइस ज़ियादा रन्जीदा होते और डॉक्टर पर अपनी तशवीश का इज़हार करते तो डॉक्टर साहिब वालिद साहिब को तसल्ली देते हुवे कहते : “मौत तो बर हक़ है मगर हम आप के बेटे के इलाज पर खुसूसी तवज्जोह दे रहे हैं और रश्क कर रहे हैं कि आप कितने खुश नसीब बाप हैं, जिन की अवलाद ऐसी नेक है कि बराबर ज़िक्रो दुरूद में मस्रूफ़ रहती है।”

10 रमज़ानुल मुबारक सि. **1424** हि. बरोज़ जुमुआ रात कमो बेश **2** बजे भाई की तबीअत ज़ियादा ख़राब होने पर ओक्सीजन लगा दी गई। फिर भी आलमे गुनूदगी में कुछ पढ़े जा

रहे थे। हत्ता कि उन्होंने ने आंखें बन्द कर लीं। मैं ने होंटों से कान लगाए तो **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** उस वक़्त उन की ज़बान पर कलिमए तय्यिबा **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ** के अल्फ़ाज़ थे। फिर देखते ही देखते भाई ने दम तोड़ दिया। चन्द दिनों बा'द अहले ख़ाना में से किसी ने ख़्वाब देखा कि भाई नो 'मान अत्तारी जन्नतुल फ़िरदौस में सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाए तशरीफ़ फ़रमा हैं और चेहरा खुशी से दमक रहा है। पूछा : “तुम्हें येह मक़ाम कैसे मिला ?” फ़रमाया : “सब्ज़ इमामा शरीफ़ अपनाने की बरकत से, जब मुझे क़ब्र में सब छोड़ कर चल दिये और जब सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तशरीफ़ आवरी हुई तो मैं ने अदबन हाथ बांध लिये, आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मुस्कुरा दिये और कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : “जो हमारी सुन्नत से राज़ी हैं वोह हमारे हैं और जिन्हें हमारी सुन्नत से प्यार नहीं उन से हमारा भी कोई वासिता नहीं।”

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **اَبُو** हमें भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल पर इस्तिक़ामते जावेदानी और तौफ़ीके कसरते **اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** दुरूद ख़्वानी अता फ़रमा।



बयान नम्बर : 20

सब से अफ़ज़ल दिन

खातमुन्नबियीन, साहिबे कुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आलमीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने दिल नशीन है :
 يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنَّ مِنْ أَفْضَلِ أَيَّامِكُمْ يَوْمَ الْجُمُعَةِ
 दिन जुमूआ का दिन है। **فِيهِ خُلِقَ آدَمُ وَفِيهِ قُبِضَ** इसी दिन आदम की पैदाइश हुई और इसी दिन उन की रूह कब्ज़ की गई।
وَفِيهِ النَّفْحَةُ وَفِيهِ الصُّعْقَةُ और इसी दिन सूर फूँका जाएगा।
فَاكْثِرُوا عَلَيَّ مِنَ الصَّلَاةِ فِيهِ लिहाज़ा इस दिन मुझ पर कसरत से **دुरूदे पाक** पढ़ा करो।
فَإِنَّ صَلَاتَكُمْ مَغْرُوضَةٌ عَلَيَّ क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है।

(अबु दाउद, किताबुल्ला, باب فضل يوم الجمعة وليلة الجمعة، १/ ३९१, حديث: १०४७)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुलताने अम्बियाए किराम, शाहे ख़ैरुल अनाम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते बा बरकात पर **दुरूदे पाक** पढ़ने के फ़वाइदे कसीरा के पेशे नज़र यूँ तो किसी दिन की तख़सीस के बिग़ैर हर दिन ही आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर ब कसरत **दुरूदे पाक** पढ़ना चाहिये मगर जुमुअतुल मुबारक की मुबारक घड़ियों में और दिनों की निस्बत, बतौर ख़ास **दुरूदे पाक** की कसरत

का एहतिमाम करना चाहिये क्यूंकि ब कसरत अहादीसे मुबारका में इस दिन दुरूद ख़्वानी की कसरत की ताकीद फ़रमाई गई है।

अहादीसे करीमा में रोज़े जुमुआ के बे शुमार फ़ज़ाइल भी बयान किये गए हैं, **अल्लाह** तबारक व तआला का हम पर किस क़दर एहसाने अज़ीम है कि उस ने अपने प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के सदके हमें जुमुअतुल मुबारक की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। मगर अफ़सोस ! हम नाक़द्रे जुमुआ शरीफ़ को भी आ़म दिनों की तरह ग़फ़लत में गुज़ार देते हैं। हालांकि जुमुआ यौमे ईद है, जुमुआ सब दिनों का सरदार है, जुमुआ के रोज़ जहन्नम की आग नहीं सुलगाई जाती, जुमुआ की रात दोज़ख़ के दरवाज़े नहीं खुलते, जुमुआ को बरोज़े क़ियामत दुल्हन की तरह उठाया जाएगा, जुमुआ के रोज़ मरने वाला खुश नसीब मुसलमान शहीद का रुत्बा पाता और अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ भी हो जाता है। मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَان** के फ़रमान के मुताबिक़ : “जुमुआ को हज़ हो तो इस का सवाब सत्तर हज़ के बराबर है, जुमुआ की एक नेकी का सवाब सत्तर गुना है।” (मरा० ३२३/२, ३२०, ३२५, مَلَخَصًا) (चूँकि इस का शरफ़ बहुत ज़ियादा है लिहाज़ा) जुमुआ के रोज़ गुनाह का अज़ाब (भी) सत्तर गुना है। (ऐज़न स. 236)

कबूलिय्यते दुआ की साझत

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इनायत निशान है, जुमुआ में एक

ऐसी घड़ी है कि अगर कोई मुसलमान उसे पा कर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से कुछ मांगे तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस को ज़रूर देगा और वोह घड़ी मुख़्तसर है ।

(مسلم، کتاب الجمعة، باب فی الساعة التي فی يوم الجمعة، ص ۴۴، حدیث: ۸۵۲)

एक मौक़अ पर हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** ने उस घड़ी की निशान देही करते हुवे इरशाद फ़रमाया : “जुमुआ के दिन जिस साअत की ख़्वाहिश की जाती है उसे अ़स्स के बा’द से गुरूबे आफ़ताब तक तलाश करो ।”

(ترمذی، کتاب الجمعة، باب ماجاء فی الساعة التي ترجی الخ، ۳۰/۲، حدیث: ۴۸۹)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَان** फ़रमाते हैं : “हर रात में रोज़ाना क़बूलिय्यते दुआ की साअत आती है मगर दिनों में सिर्फ़ जुमुआ के दिन । मगर यकीनी तौर पर येह नहीं मा’लूम कि वोह साअत कब है ? ग़ालिब येह कि दो ख़ुतबों के दरमियान या मगरिब से कुछ पहले ।” एक और हदीसे पाक के तहत मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : “इस साअत के मुतअल्लिक़ उ-लमा के चालीस क़ौल हैं, जिन में दो क़ौल ज़ियादा क़वी हैं, एक दो ख़ुतबों के दरमियान का, दूसरा आफ़ताब डूबते वक़्त का ।”

हिकायत :- हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا** इस वक़्त खुद हुजरे में बैठतीं और अपनी ख़ादिमा फ़िज़्ज़ा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا** को बाहर खड़ा करतीं, जब आफ़ताब डूबने लगता

तो ख़ादिमा आप को ख़बर देतीं, उस की ख़बर पर सय्यिदा अपने हाथ दुआ के लिये उठातीं ।

बेहतर येह है कि इस साअत में (कोई) जामेअ दुआ मांगे जैसे येह कुरआनी दुआ :

رَبِّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (پ ۲ البقرة: ۲۰۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आखिरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा) ।

(मिरआतुल मनाजीह, 2/319 ता 325 मुलख़ब़सन)

दुआ की निय्यत से दुरूद शरीफ़ भी पढ़ सकते हैं कि दुरूद भी अज़ीमुश्शान दुआ है बल्कि अगर हम इख़्लास के साथ दुरूदे पाक पढ़ कर सिदके दिल से **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में किसी हाज़त का सुवाल करें तो उस की रहमत से क़वी उम्मीद है कि वोह हमारा सुवाल रद्द नहीं फ़रमाएगा और हमारे ख़ाली दामन गोहरे मुराद से भर देगा । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

इस ज़िम्न में एक हिकायत सुनिये और झूम उठिये ।
चुनान्चे,

जो मांगना है मांगो

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन साबित **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : दुरूदो सलाम के फ़ज़ाइल में से जो मैं ने देखे हैं एक येह भी है कि एक रात (ख़्वाब में) क्या देखता हूं कि जिन्नात की एक जमाअत के रूबरू खड़ा हूं, मैं ने उन से पूछा : तुम कहां से आए हो ? उन्होंने ने किसी बुजुर्ग का नाम लिया कि उन के हां से । वोह बुजुर्ग हमारे अहले क़राबत में से थे, मैं ने पूछा : तुम्हारा इरादा कहां का है ? कहने लगे : **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मक्कए मुअज़्जमा

और रौज़ए नबवी ﷺ का इरादा है। मैं ने कहा :

मुझे भी अपने साथ ले चलो। बोले अगर इरादा है तो **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ बरकत देगा। मैं उठ खड़ा हुवा और वोह मुझे ले कर हवा

में बिजली की सी तेज़ी के साथ उड़ने लगे, एक साअत के बा'द

हम मक्का में थे। वोह बोले : येह रहा बैतुल हुराम। उन्होंने ने

तवाफ़ किया और मैं ने भी उन के हमराह तवाफ़ किया, फिर उन्होंने

ने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का नाम ले कर मुझे साथ लिया और अगले

ही लम्हे हम लोग मस्जिदे नबवी ﷺ में थे, हम

लोग बैठे ही थे कि एक ख़ूब सूरत शख्स हाथ में एक बड़ा बरतन

जिस में सरीद (शोरबे में भिगोई हुई रोटी) और शहद ले कर

आया और कहा : शुरू कीजिये। मैं ने उसे कहा : मैं रसूलुल्लाह

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखना चाहता हूं। उस ने कहा : खाना खा

लो, रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** भी तशरीफ़ लाएंगे और

إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ तुम उन की ज़ियारत से भी मुशरफ़ होगे। मैं ने

दिल में कहा : कैसी तअज्जुब की बात है अभी मैं ने अपना घर

छोड़ा और थोड़ी ही देर में मक्काए मुअज्जमा और रौज़ए रसूल

की हाज़िरी से मुशरफ़ हो गया, मुझे येह भी मा'लूम नहीं कि जिन

साथियों ने मुझे उठाया था वोह कौन लोग थे और उन का नसब

क्या था ? मैं ने उन से कहा : मैं तुम से खुदाए बुजुर्ग व बरतर और

उस के नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** और **अल्लाह** के नबी

हज़रते सय्यिदुना दावूद **عَلَيْ نَبِيِّنَا وَ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** का वासिता दे कर

सुवाल करता हूं कि तुम्हारा ठिकाना कहां है और तुम्हारा नसब क्या है ? उन्होंने ने गर्दने झुका लीं और बोले : हम हमेशा मदीनए मुनव्वरा के रहने वाले जिन्न हैं । मैं ने कहा : मैं हुजूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का दीदार करना चाहता हूं । बोले, खाना खा लो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** दीदार भी हो जाएगा । मैं ने खाना खाया, फिर हम निकले तो क्या देखते हैं कि रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** एक जमाअत के हमराह तशरीफ़ ला रहे हैं और आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की गर्दन मुबारक सब से बुलन्द है और अपनी गर्दन मुबारक और शानए अक्दस के लिहाज से सब पर फ़ाइक हैं, जब हुजूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने मुझे देखा तो फ़रमाया : “अहमद ! क्या सारी नेकियां दफ़अतन समेटना चाहते हो ?” अपने नफ़्स पर नर्मी करो, तुम पर येही लाज़िम है और येह भी इरशाद फ़रमाया : “मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ा करो तुम्हारे लिये बेहतरी ही बेहतरी है ।” मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मेरे ज़ामिन हो जाएं ?” फ़रमाया : “मुझ पर दुरूद पढ़ना लाज़िम कर लो, जो मांगोगे मिलेगा ।”

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيملورد من لطائف التراثي والحكايات..... الخ، اللطيفة السادسة عشرة: ص ١٣١)

मांग मन मानती मुंह मांगी मुरादे लेगा
न यहां “ना” है न मंगते से येह कहना “क्या है”

(हदाइके बख़्शिश, स. 171)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा वते इस्लामी)

रोजे महशर की प्यास से महफूज

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ जो वही की गई थी उस में **अल्लाह** तआला ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को वसियत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : **يَا مُوسَى لَوْلَا مَنْ يَحْمَدُنِي** तो मैं आस्मान से एक क़तरा भी पानी का न उतारता **وَلَا أَنْبَتُ مِنَ الْأَرْضِ وَرَقَةً** और न ही ज़मीन पर कोई पत्ता उगाता **يَا مُوسَى لَوْلَا مَنْ يَعْْبُدُنِي** तो मैं नाफ़रमानों को पलक झपकने की भी मोहलत न देता **يَا مُوسَى لَوْلَا مَنْ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** अगर **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** की शहादत देने वाले न होते तो जहन्नम को दुनिया पर बहा देता, फिर इरशाद फ़रमाया **يَا مُوسَى أَتَجِبُ أَنْ لَا يَنَالَكَ مِنْ عَطَشٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ** : क्या तुम येह पसन्द करते हो कि क़ियामत के दिन तुम्हें प्यास महसूस न हो ? अर्ज़ की : ऐ मेरे परवर दगार ! हां मैं येह पसन्द करता हूँ। इरशाद फ़रमाया : **فَاكْثِرْ مِنَ الصَّلَاةِ عَلَى مُحَمَّدٍ** तो ऐसा करो कि मुहम्मदे अरबी **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करो ।”

(القول البديع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة والسلام علی رسول الله، ص ۲۲۳)

पेशकश : मजलसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

गर्मिये महशर का आलम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत से ब खूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि कारवाने हयात अगर रवां दवां है तो सिर्फ और सिर्फ **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की हम्दो सना बजा लाने वालों और उस की इताअत व फ़रमां बरदारी करने वालों के तुफ़ैल, अगर येह मक्बूलाने बारगाह न होते तो न जाने हम गुनाहगारों का क्या बनता । नीज़ इस रिवायत से येह भी पता चला कि **रोज़े महशर** की प्यास से नजात का बेहतरीन ज़रीअ़ा प्यारे प्यारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ना है । याद रखिये ! कि महशर की प्यास कोई मा'मूली प्यास न होगी क्यूंकि उस दिन इस क़दर शिद्दत की गर्मी होगी कि अहले महशर सर ता पा पसीने में नहाते होंगे और प्यास की शिद्दत से बेहाल हो रहे होंगे, हदीस शरीफ़ में है **ग़ैबदान** आका **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : **يَعْرِقُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ** कियामत के दिन लोग पसीने से शराबोर होंगे “**حَتَّى يَذْهَبَ عَرَقُهُمْ فِي الْأَرْضِ سُبُيْنِ ذِرَاعًا**” हत्ता कि इस कसरत से पसीना निकलेगा कि सत्तर गज़ ज़मीन में ज़ब्ब हो जाएगा ।

(بخاری، کتاب الرقاق، باب قول الله تعالى الا يظن اولئك انهم مبعوثون..... الخ، ٢٥٥/٤، حديث: ٦٥٣٢)

या इलाही ! गर्मिये महशर से जब भड़कें बदन

दामने महबूब की ठन्डी हवा का साथ हो

या इलाही ! जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से

साहिबे कौसर शहे जूदो अ़ता का साथ हो

(हदाइके बख़्शिश, स. 132)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा 'वते इस्लामी)

सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي क़ियामत के दिन की प्यास के बारे में फ़रमाते हैं : “उस गर्मी की हालत में प्यास की जो कैफ़ियत होगी मोहताजे बयान नहीं, **ज़बानें** सूख कर कांटा हो जाएंगी, बा'जों की **ज़बानें** मुंह से बाहर निकल आएंगी, दिल उबल कर गले को आ जाएंगे (बहारे शरीअत, 1/134) अगर ऐसी कड़ी धूप और शदीद प्यास से नजात हादिये राहे नजात, सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ाते बा बरकात पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ने से हासिल हो जाए तो यकीन जानिये कि येह इन्तिहाई सस्ता सौदा है ।

सूखे धानों पे हमारे भी करम हो जाए
छाए रहमत की घटा बन के तुम्हारे गैसू
हम सियाह कारों पे या रब तपिशे महशर में
साया अफ़गन हों तेरे प्यारे के प्यारे गैसू

(हदाइके बख़्शिश, स. 119)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीके रफ़ीक़ मरहमत फ़रमा और इस की बरकत से हमारी दुन्यवी और उख़रवी परेशानियां दूर फ़रमा ।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



बयान नम्बर : 21

एक अजीम नूर

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم** से रिवायत है कि शनहशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने बे मिसाल है : **مَنْ صَلَّى عَلَى يَوْمِ الْجُمُعَةِ مِائَةَ مَرَّةٍ** जो शख़्स रोज़े जुमुआ मुझ पर सो बार **دुरूदे पाक** पढ़े, **جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَعَهُ نُورٌ** जब वोह क़ियामत के रोज़ आएगा तो उस के साथ एक नूर होगा, **لَوْ قَسِمَ ذَلِكَ النُّورُ بَيْنَ الْخَلْقِ كُلِّهِمْ لَوْ سَعَهُمْ** अगर वोह नूर पूरी मख़्लूक में भी तक्सीम कर दिया जाए तो सब को क़िफ़ायत करे ।”

(حلیة الأولیاء، ابراهیم بن ادهم، ۸/ ۴۹، حدیث: ۱۱۳۴۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَللّٰهُ** ने कुरआने मजीद में हमें अपना ज़िक्र करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया और ज़िक्र को अपनी ऐसी इबादत बनाया जो हर वक़्त की जा सकती है इस के लिये कोई ख़ास मक़ाम और ख़ास वक़्त मुक़र्रर नहीं फ़रमाया हम जिस वक़्त चाहें, जहां चाहें, **اَللّٰهُ** का ज़िक्र कर सकते हैं ऐसे ही अपने प्यारे महबूब, दानाए गुयूब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद पढ़ने को भी ऐसी मुन्फ़रिद इबादत

बना दिया जो किसी वक्त के साथ खास नहीं, सुब्हो शाम, दिन रात, चलते फिरते, उठते बैठते, दुआ से पहले और दुआ के बा'द, अल गरज़ जब चाहें जिस जगह चाहें जिन अल्फ़ाज़ के साथ चाहें दुरूद पाक पढ़ सकते हैं। लिहाज़ा जिस वक्त भी हम दुरूद शरीफ़ पढ़ेंगे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकतों से मुस्तफ़ीज़ होंगे और येह दुरूद शरीफ़ हमारे तमाम रन्जो अलम को दूर करने और गुनाहों की मुआफ़ी के लिये काफ़ी होगा। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मैं अपना सारा वक्त आप पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहूंगा।" तो हज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **إِذَا تَكْفَى هَمَّكَ وَيُغْفِرُ لَكَ ذَنْبَكَ** तब येह दुरूद शरीफ़ तेरे रन्जो अलम दूर करने के लिये काफ़ी है और तेरे सारे गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।"

(ترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ۲۳، ۴/ ۲۰۷، حدیث: ۲۴۶۵)

इस से मा'लूम हुवा कि दुरूद शरीफ़ हर वक्त पढ़ सकते हैं अलबत्ता बा'ज़ अवकात ऐसे हैं जिन में बतौर ख़ास दुरूद शरीफ़ पढ़ना अहादीसे मुबारका में मज़कूर है और उ-लमाए किराम ने भी कुछ मवाकेअ बयान फ़रमाए हैं। इन में से एक मक़ाम तशहहूद है, तशहहूद के बा'द और दुआ से क़ब्ल दुरूद

शरीफ़ पढ़ने की आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने तरगीब दी है जैसा कि

हज़रते सय्यिदुना फ़जाला बिन उबैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि बहरो बर के बादशाह, दो आलम के शहनशाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक शख़्स को नमाज़ में सिर्फ़ दुआ मांगते हुवे सुना, न तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अज़मत व किब्रियाई बयान की और न ही आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ा। हज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि उस ने जल्दी की फिर उसे बुलाया उसे और दूसरों को इस बात की ता'लीम फ़रमाई कि जब तुम नमाज़ पढ़ो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना से शुरू किया करो फिर मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा करो फिर जो चाहो दुआ मांगो। (अबुदाउद, کتاب الوتر, باب الدعاء, १०/२, حديث: १२८१)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि तशहहद के बा'द और दुआ से क़ब्ल दुरूद शरीफ़ पढ़ने की आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तरगीब दी है लिहाज़ा हमें भी इस मौक़अ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये और इस को हरगिज़ हरगिज़ तर्क नहीं करना चाहिये।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े **आ'ज़म** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : **إِنَّ الدُّعَاءَ مَوْقُوفٌ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ** : दुआ ज़मीनो आस्मान के दरमियान रोक दी जाती है, वोह बुलन्द नहीं **لَا يَصْعَدُ مِنْهُ شَيْءٌ حَتَّى تُصَلِّيَ عَلَى نَبِيِّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** होती जब तक कि तुम अपने नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर **दुरूदे पाक** न पढ़ो।”

(ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاة علی النبی، २/२८، حديث: २८१)

दुर्तुनासिद्दीन में है एक बुजुर्ग नमाज़ पढ़ रहे थे जब तशह्हुद में बैठे तो रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना भूल गए। रात जब आंख लगी तो ख़्वाब में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवे आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ मेरे उम्मी ! तू ने मुझ पर दुरूदे पाक क्यूं नहीं पढ़ा ? अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना में ऐसा महव हुवा कि दुरूदे पाक पढ़ना याद नहीं रहा, येह सुन कर सरदारो मक्कए मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या तू ने मेरी येह हदीस नहीं सुनी कि सारी नेकियां, इबादतें और दुआएं रोक दी जाती हैं जब तक मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा जाए। सुन ले ! अगर कोई बन्दा क़ियामत के दिन दरबारे इलाही में सारे जहान वालों की नेकियां ले कर भी हाज़िर हो जाए और उन नेकियों में मुझ पर दुरूदे पाक न हुवा तो सारी की सारी नेकियां उस के मुंह पर मार दी जाएंगी और एक भी क़बूल न होगी।”

(दرة الناصحين، المجلس الرابع في فضيلة شهر رمضان، ص ۱۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत व हिक़ायत से दुरूद शरीफ़ की अहम्मियत का अन्दाज़ा होता है कि दुरूद शरीफ़ जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमतों के नुज़ूल का सबब है वहीं इबादतों, नेकियों और दुआओं की क़बूलियत का सबब भी है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी तरह दुरूद शरीफ़

पढ़ने का एक मक़ाम दुआ का अव्वलो आख़िर भी है कि जब भी दुआ मांगें तो उस के आदाब का लिहाज़ रखते हुवे, अव्वलो आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुवे दुआ मांगें **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से हमारी दुआएं **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में मक़बूल होंगी क्यूंकि दो दुरूदों के दरमियान दुआ कभी रद्द नहीं होती । मगर याद रखिये ! हमारी दुआ दरजए क़बूलियत को उसी सूरत में पहुंचेगी कि जब हम दुआ के आदाब को मल्हूजे ख़ातिर रखेंगे, आज हम दुआएं तो मांगते हैं लेकिन वोह क़बूल नहीं होतीं इस की क्या वजह है ? हालांकि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया :

تَرْجَمَةُ كَنْزُْلِ إِيْمَان : मुझ से **أَدْعُونِيَّ أَسْتَجِبْ لَكُمْ** (प २३, المؤمن: १००)
दुआ करो मैं क़बूल करूंगा ।

तीन किस्म के लोगों की दुआ क़बूल नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शायद इस की वजह येह है कि हम लोग दुआ के आदाब का ख़याल नहीं रखते, बे तवज्जोगी के साथ दुआ मांगते हैं और फिर दुआ की क़बूलियत में बहुत जल्दी भी मचाते बल्कि **مَعَاذَ اللَّهِ** बातें बनाते हैं कि हम तो इतने अर्से से दुआएं मांग रहे हैं, बुजुर्गों से भी दुआएं करवाते

रहे हैं, कोई पीर फ़कीर नहीं छोड़ा, येह वज़ाइफ़ पढ़ते हैं, वोह अवराद भी पढ़ते हैं, फुलां फुलां मज़ार पर भी गए मगर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमारी हाज़त पूरी करता ही नहीं। हालांकि बसा अवकात क़बूलिय्यते दुआ की ताख़ीर में काफ़ी मस्लेहतें भी होती हैं जो हमारी समझ में नहीं आतीं लिहाज़ा दुआ में जल्दी नहीं मचानी चाहिये कि येह दुआ के आदाब के ख़िलाफ़ है। जैसा कि रईसुल मुतकल्लिमीन हज़रते अल्लामा मौलाना नक़ी अली ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** अहसनुल विआइ लिआदाबिदुआ में फ़रमाते हैं : “(दुआ के आदाब में से येह भी है कि) दुआ के क़बूल में जल्दी न करे। हदीस शरीफ़ में है कि खुदाए तआला तीन आदमियों की दुआ क़बूल नहीं करता **एक** वोह कि गुनाह की दुआ मांगे **दूसरा** वोह कि ऐसी बात चाहे कि क़तए रेहूम हो **तीसरा** वोह कि क़बूल में जल्दी करे कि मैं ने दुआ मांगी अब तक क़बूल न हुई ऐसा शख़्स घबरा कर दुआ छोड़ देता है और मतलब से महरूम रहता है।”

(مسلم، كتاب الذكر والدعاء، باب بيان أنه يستجاب للداعي ما لم يعجل..... إلخ، ص ١٤٦، حديث: ٢٧٣٥)

क़बूलिय्यते दुआ में ताख़ीर हो तो !

इस के हाशिये में आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** दुआ की क़बूलिय्यत में जल्दी मचाने वालों को अपने मख़सूस अन्दाज़ में समझाते हुवे फ़रमाते हैं : “ओ अहमक ! अपने सर से पाउं तक नज़रे ग़ौर कर ! एक एक रूएं में हर वक़्त

हर आन कितनी कितनी हज़ार दर हज़ार दर हज़ार सद हज़ार
बेशुमार ने'मते हैं। तू सोता है और उस के मा'सूम बन्दे (या'नी
फ़िरिश्ते) तेरी हिफ़ाज़त को पहरा दे रहे हैं, तू गुनाह कर रहा है
और (फिर भी) सर से पाउं तक सिद्दहत व अफ़िय्यत, बलाओं
से हिफ़ाज़त, खाने का हज़्म, फुजलात (या'नी जिस्म के अन्दर
की गन्दगियों) का दफ़अ, खून की रवानी, आ'ज़ा में ताक़त,
आंखों में रोशनी बे हिसाब करम बे मांगे बे चाहे तुझ पर उतर रहे
हैं। फिर अगर तेरी बा'ज़ ख़्वाहिशें अता न हों, किस मुंह से
शिकायत करता है ? तू क्या जाने कि तेरे लिये भलाई काहे में
है ? तू क्या जाने कैसी सख़्त बला आने वाली थी कि इस
(ब ज़ाहिर न क़बूल होने वाली) दुआ ने दफ़अ की, तू क्या जाने
कि इस दुआ के इवज़ कैसा सवाब तेरे लिये ज़ख़ीरा हो रहा है, उस
का वा'दा सच्चा है और क़बूल की येह तीनों सूरतें हैं जिन में हर
पहली, पीछली से आ'ला है। हां, बे ए'तिकादी आई तो यकीन
जान कि मारा गया और इब्लीसे लईन ने तुझे अपना सा कर
लिया। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالٰی (और **अल्लाह** की पनाह वोह पाक
है और अज़मत वाला)

ऐ ज़लील खाक ! ऐ आबे नापाक ! अपना मुंह देख
और इस अज़ीम शरफ़ पर गौर कर कि अपनी बारगाह में हाज़िर
होने, अपना पाक, मुतअली (या'नी बुलन्द) नाम लेने, अपनी
तरफ़ मुंह करने, अपने पुकारने की तुझे इजाज़त देता है। लाखों
मुरादे इस फ़ज़्ले अज़ीम पर निसार। **ओ बे सब्बे !** ज़रा भीक
मांगना सीख। इस आस्ताने रफ़ीअ की खाक पर लौट जा। और

लिपटा रह और टिक-टिकी बन्धी रख कि अब देते हैं, अब देते हैं ! बल्कि पुकारने, उस से मुनाजात करने की लज़्ज़त में ऐसा डूब जा कि इरादा व मुराद कुछ याद न रहे, यकीन जान कि इस दरवाज़े से हरगिज़ महरूम न फिरेगा कि مَنْ دَقَّ بَابَ الْكَرِيمِ انْفَتَحَ (जिस ने करीम के दरवाज़े पर दस्तक दी तो वोह उस पर खुल गया)

(फ़ज़ाइले दुआ, स. 102)

सुवार के पियाले की मानिन्द न बनाओ

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ख़ातमुन्नबिय्यीन, साहिबे कुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल अलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे सुवार के पियाले की मानिन्द न बनाओ कि सुवार अपने पियाले को पानी से भरता है फिर उसे रखता है और सामान उठाता है, फिर जब उसे पानी की हाज़त होती है तो उसे पीता है, वुज़ू करता है वरना उसे फेंक देता है लेकिन मुझे तुम अपनी दुआ के अव्वलो आखिर और दरमियान में याद रखो ।”

(مجمع الزوائد، كتاب الادعية، باب فيما يستفتح به الدعاء من حسن الثناء..... الخ، ٢٣٩/١٠، حديث: ١٧٢٥٦)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अता رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि दुआ के अरकान, पर, सामान और अवकात हैं, पस अगर दुआ अरकान के मुवाफ़ि़क़ हुई तो क़वी होगी और अगर परो के मुवाफ़ि़क़ हुई तो आस्मान की तरफ़ उड़ जाएगी और अगर वक्तों के मुवाफ़ि़क़ हुई तो कामयाब हो जाएगी और अगर अस्बाब के मुवाफ़ि़क़ हुई तो कमाल तक पहुंच जाएगी, दुआ के अरकान

हजरते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدَس سرُّهُ التُّورَانِي

(दलाइलुल खैरात, स. 4)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारें प्यारें **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** हमें नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफीक अता फ़रमा और इस की बरकत से हमारी तमाम जाइज़ हाजात को पूरा फरमा ।

امین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



सदके की इस्तिताअत न हो तो !

महबूबे खुदाए तव्वाब, जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
का फ़रमाने अलीशान है : **أَيُّمَارَ جُلٍّ كَسَبَ مَالًا مِنْ حَلَالٍ فَاطْعَمَ نَفْسَهُ أَوْ كَسَاَهَا** :
जो शख्स हलाल माल कमाए फिर खुद खाए या पहने
عَزَّوَجَلَّ की मख़लूक या फिर **اللَّهُ** की मख़लूक
में से किसी को खिलाए या पहनाए (या'नी सदका करे) तो येह उस
के लिये ज़कात है **وَأَيُّمَارَ جُلٍّ لَمْ يَكُنْ لَهُ عِنْدَهُ صَدَقَةٌ فَلَيْقُلْ فِي دُعَائِهِ** और जिस
शख्स के पास सदका करने के लिये कुछ न हो तो उस शख्स को
चाहिये कि वोह अपनी दुआ में येह **दुरूदे पाक** पढ़ लिया करे,
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلٰى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ
बेशक येह दुरूद उस के लिये ज़कात होगा ।

(شعب الايمان، باب التوكل بالله عز وجل والتسليم، ٨٦/٢، حديث: ١٢٣١)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّيْ اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हदीसे पाक में तीन
चीजों का जिक्र है । (1) कस्बे हलाल (2) सदका (3) दुरूदे पाक

❶ कस्बे हलाल

मेहनत व मशक्कत कर के अपने हाथ से जो रिज़क
कमाया जाए उसे कस्बे हलाल कहा जाता है । हलाल रोज़ी में
बड़ी बरकत होती है और हदीसे पाक की रू से पता चलता है कि
इस से बेहतर कोई कमाई नहीं । चुनान्वे,

सब से बेहतर और पाकीजा खाना

हज़रते सय्यिदुना मिक्दाम बिन मा'दी कर्ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि राहते क़ल्बे नाशाद, महबूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे हकीक़त बुन्याद है : **مَا أَكَلَ أَحَدٌ طَعَامًا قَطُّ خَيْرًا مِّنْ أَنْ يَأْكُلَ مِنْ عَمَلٍ يَدِهِ** : सब से बेहतर वोह खाना है जो इन्सान अपने हाथ से कमा कर खाए, **عَزَّ وَجَلَّ** أَللَّهُ और बेशक **أَللَّهُ** और बेशक **أَللَّهُ** (हाथ की कमाई) से के नबी दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अपनी दस्तकारी (हाथ की कमाई) से खाते थे ।” (بخاری، کتاب البیوع، باب کسب الرجل..... الخ، ۱/۲، حدیث: ۲۰۷۲)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : **تُمْهَارَةِ خَانَوْنَ مِّنْ پَاكِيژَا خَانَا** वोह है जो तुम्हारी मेहनत की कमाई का हो ।

(ترمذی، کتاب الاحکام، باب ملجاء ان الوالد یاخذ من مال ولده، ۷/۳، حدیث: ۱۳۶۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जाइज ज़राएए आमदनी इख़्तियार करते हुवे अपने अहलो इयाल के लिये बक़द्रे ज़रूरत माल कमाने में कोई क़बाहत नहीं मगर येह ख़याल रखना बेहद ज़रूरी है कि हमारी ला परवाही की वजह से हमारी **हलाल** रोज़ी में **हराम** की आमेज़िश हरगिज़ हरगिज़ न होने पाए वरना बड़ी हसरत होगी । याद रखिये ! बन्दा अपने हिस्से की रोज़ी खा कर,

जिन्दगी गुज़ार कर लोगों के कान्धों पर जनाजे के पिन्जरे में सुवार हो कर जब जानिबे क़ब्रिस्तान सिधारता है तो दुनिया में अपने अहलो इयाल की महबूबत में अन्धा हो कर इन की खातिर जाइज़ व नाजाइज़ की परवा किये बिगैर कमाए हुवे माल पर मलाल करते हुवे लोगों को जो नसीहत करता है उसे बयान करते हुवे सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इरशाद फ़रमाते हैं : “जब मुर्दे को तख़्त पर रख कर उठाया जाता है तो उस की रूढ़ फड़ फड़ा कर तख़्त पर बैठ कर निदा करती है कि ऐ मेरे अहलो इयाल ! दुनिया तुम्हारे साथ इस तरह न खेले जैसा कि उस ने मेरे साथ खेला, मैं ने हलाल और ग़ैरे हलाल माल जम्अ किया और फिर वोह माल दूसरों के लिये छोड़ आया । इस का नफ़अ उन के लिये है और इस का नुक़सान मेरे लिये पस जो कुछ मुझ पर गुज़री है इस से डरो ।” (या’नी इब्रत हासिल करो ।)

(التذكرة قرطبي، ص ٤٦)

लुक़्मा ह़राम का ववाल

मन्कूल है कि जब इन्सान के पेट में ह़राम का लुक़्मा पड़ता है तो ज़मीनो आस्मान का हर फ़िरिश्ता उस पर उस वक़्त तक ला’नत करता है जब तक कि वोह ह़राम लुक़्मा उस के पेट में रहे और अगर इसी हालत में मर गया तो उस का ठिकाना जहन्नम होगा ।

(مكاشفة القلوب، ص ١٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿2﴾ सदका

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हदीस शरीफ में सदके का तज़क़िरा भी है जैसा कि ख़ल्क के रहबर, शाफ़ेए महशर, महबूबे दावर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अलीशान है : “जिस ने हलाल माल कमाया और मख़्लूके खुदा में से किसी को खिलाया या पहनाया तो वोह उस के लिये ज़कात है ।”

कुरआने पाक और अह़ादीसे करीमा में जा बजा सदके की तरगीब के साथ साथ इस के फ़ज़ाइल भी बयान किये गए हैं । चुनान्वे, **عَزَّوَجَلَّ** कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ

مُسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ①

(प २९, الدهर: ८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और खाना खिलाते हैं उस की महबूबत पर मस्कीन और यतीम और असरी को ।

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي** ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते करीमा का शाने नुज़ूल बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : “येह आयत हज़रते अलिय्ये मुर्तज़ा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** और हज़रते फ़ातिमा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** और इन की कनीज़ फ़िज़्ज़ा के हक़ में नाज़िल हुई, हसनैने करीमैन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** बीमार हुवे, इन हज़रात ने इन की सिद्दहत पर तीन रोज़ों की नज़्र मानी, **عَزَّوَجَلَّ**

ने सिहहत दी, नज़ की वफ़ा का वक्त आया, सब साहिबों ने रोज़े रखे, हज़रते अलिय्ये मुर्तज़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** एक यहूदी से तीन साअ (साअ एक पैमाना है) जव लाए, हज़रते ख़ातूने जन्नत **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** ने एक एक साअ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्तार का वक्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक रोज़ मिस्कीन, एक रोज़ यतीम, एक रोज़ असीर आया और तीनों रोज़ येह सब रोटियां उन लोगों को दे दी गई और सिर्फ़ पानी से इफ़्तार कर के अगला रोज़ा रख लिया गया। **اَبْلَاهُ عَزَّوَجَلَّ** को इन हज़रात की येह अदा इस क़दर पसन्द आई कि उस ने इन्हें जन्नत का हक़दार क़रार देते हुवे इन की बाबत इरशाद फ़रमाया :

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً

وَحَرِيرًا ۝ (پ २९، الدهر: ۱२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इन के सब्र पर इन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में दिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदक़ा व ख़ैरात ढेरों बरकात के साथ साथ आफ़ात व बलय्यात से नजात हासिल करने का भी बेहतरीन ज़रीआ है।

सबके से अमराज़ दूर करो

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا**

से मरवी कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो

जमाल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने रहमत निशान है :

تَصَدَّقُوا وَ دَاوُوا مَرَضَاكُمْ بِالصَّدَقَةِ
 فَإِنَّ الصَّدَقَةَ تَدْفَعُ عَنِ الْأَعْرَاضِ وَالْأَمْرَاضِ
 अपने मरीजों का मुदावा किया करो
 बेशक सदका हादिसों और बीमारियों की रोक थाम करता है
 और येह तुम्हारे आ'माल और नेकियों में
 इज़ाफ़े का बाइस है ।”

(شعب الايمان، باب فى الزكاة، فصل فىمن اتاه الله ما لامن غير مسألة، ٣/ ٢٨٢، حديث: ٣٥٥٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿3﴾ दुरूदे पाक

हदीस शरीफ़ में तीसरी चीज़ जिस की हमें ता'लीम दी गई वोह हबीबे मुकर्रम, महबूबे रब्बे अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की जाते मोहतरम पर दुरूदे पाक पढ़ना है कि अगर कोई शख्स इस क़दर मुफ़िलस व नादार है कि उस के पास अपनी हाज़त से ज़ाइद माल नहीं जिसे वोह राहे खुदावन्दी में सदका करे तो उसे चाहिये कि गुम न करे बल्कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की जाते बा बरकत पर दुरूदे पाक पढ़ लिया करे कि उस का येह दुरूदे पाक पढ़ना ही उस की तरफ़ से ज़कात (सदके के काइम मक़ाम) होगा जैसा कि बयान कर्दा हदीसे पाक में सदका करने वाले और दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले, दोनों के हक़ में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने एक ही बात इरशाद फ़रमाई : **فَإِنَّهَا لَهُ زَكَاةٌ** : येह उस के लिये ज़कात है ।”

यू भी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म पर अमल करते हुवे दुरूदे

पाक पढ़ना बाइसे सआदत होने के इलावा एक अज़ीम इबादत भी है, बुजुर्गों ने दुरूद शरीफ पढ़ने की हिक्मतें भी बयान फ़रमाई हैं। जिस का खुलासा येह है कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते तय्यिबा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के बा'द मख्लूक़ात में सब से ज़ियादा करीम, रहीम और शफ़ीक़ है और हबीबे खुदा, ताजदार अम्बिया, सरवरे हर दो सरा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के मोमिनों पर सब से ज़ियादा एहसानात हैं इस लिये मोहसिने आ'ज़म **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** के एहसान के शुक्रिया के तौर पर हम पर दुरूदे पाक पढ़ना मुक़र्र किया गया है। चुनान्वे, अल्लामा सखावी फ़रमाते हैं : “नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद पढ़ने का मक्सद **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म की पैरवी कर के उस का कुर्ब हासिल करना और नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** के हक़ को अदा करना है।” बा'ज़ बुजुर्गों ने मज़ीद फ़रमाया : “हमारा नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद भेजना हमारी तरफ़ से आप **عَلَيْهِ السَّلَام** के दरजात की बुलन्दी की सिफ़ारिश नहीं हो सकता क्यूंकि हम जैसे नाक़िस बन्दे, आप जैसी कामिल व अकमल जाते बा बरकत के लिये शफ़ाअत नहीं कर सकते। लेकिन हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** के हम पर बे पनाह एहसानात हैं। आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** हमारे लिये दोज़ख़ से नजात, जन्नत में दुखूल, आसान तरीन अस्बाब के ज़रीए कामयाबी के हुसूल, हर तरफ़ से सआदत की वुसूल और बुलन्द मर्तबों और अज़ीम फ़ज़ीलतों तक पहुंचने का ज़रीआ हैं इस लिये **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने हमें इस

का बदला चुकाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया ।” हम चूँकि आप عَلَيْهِ السَّلَام के एहसान का बदला चुकाने से अजिज थे तो उस ने **दुरूद शरीफ़** पढ़ने की तरफ़ हमारी रहनुमाई फ़रमाई । ताकि हमारे पढ़े हुवे दुरूद आप عَلَيْهِ السَّلَام के एहसान का बदला बन जाएं ।

(रहमतों की बरसात, स. 37 ता 38)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूदे पाक पढ़ने में सरासर हमारा ही फ़ाइदा है चुनान्वे, अबू मुहम्मद फ़रमाते हैं : “नबिय्ये रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेजने का नफ़अ हकीकत में तेरी तरफ़ लौटता है गोया तू अपने लिये ही दुआ कर रहा है ।” जैसा कि

दुरूदे पाक अपने पढ़ने वाले के लिये इस्तिग़फ़ार करता है

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **पाक** पढ़ता है तो फ़िरिश्ता उस दुरूद को ले कर ऊपर जाता है **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पहुंचाता है, तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : **إِذْهَبُوا بِهَا إِلَى قَبْرِ عَبْدِی** : **दुरूदे पाक** को मेरे बन्दे की क़ब्र में ले जाओ **تَسْتَغْفِرُ لِقَائِهَا وَتَقْرُبُهَا عَيْنُهُ** येह दुरूद अपने पढ़ने वाले के लिये इस्तिग़फ़ार करता रहेगा और उस की आंखें इसे देख कर ठन्डी होती रहेंगी ।

(کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السادس فی الصلاة علیه وعلى آله ۲۵۲/۱، حدیث: ۲۲۰۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा वते इस्लामी)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें रिज़्के हलाल कमाने और इस के ज़रीए अपनी राह में सदका व ख़ैरात करने और नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की सआदत नसीब फ़रमा ।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा

रहूम किया करो तुम पर रहूम किया जाएगा और मुआफ़ करना इख़्तियार करो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें मुआफ़ फ़रमा देगा ।

(مسند احمد، २/४८२، حدیث: ६०१२)



बयान नम्बर : 23

रिज़ाए इलाही वाला काम

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साहिबे मे'राज **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने फ़रहत निशान है : **مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَلْقَى اللَّهَ رَاضِيًا فَلْيُكْثِرْ مِنَ الصَّلَاةِ عَلَى** जिसे येह बात पसन्द हो कि वोह **عَزَّوَجَلَّ** से इस हाल में मिले कि **عَزَّوَجَلَّ** उस से राज़ी हो उसे चाहिये कि वोह मुझ पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़े ।”

(القول البديع، الباب الثاني في ثواب الصلاة والسلام على رسول الله، ص २१२)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हदीस शरीफ़ से मा'लूम हुवा कि अगर हम रोज़े कियामत **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में सुख़ रू होना चाहते हैं तो महब्बत व शौक के साथ सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते तय्यिबा पर **दुरूदे पाक** पढ़ने को अपने रोज़ो शब का वज़ीफ़ा बना लें क्यूंकि **दुरूदे पाक** न सिर्फ़ **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा व खुशनूदी और हुसूले रहमत का बेहतरीन ज़रीआ है बल्कि **عَزَّوَجَلَّ** के क़हरो ग़ज़ब से अमान का ज़ामिन भी है । चुनान्वे,

ग़ज़बे इलाही से अमान

मरवी है कि एक मरतबा जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िरे ख़िदमत हुवे और अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तबारक व तअला फ़रमाता है : مَنْ صَلَّى عَلَيْكَ عَشْرَ مَرَّاتٍ اسْتَوْجَبَ الْأَمَانُ مِنْ سَخَطِي जो शख्स आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दस मरतबा दुरूद भेजेगा उस के लिये मेरे ग़ज़ब से अमान वाजिब हो गई ।”

(سعادة الدارين، الباب الثاني فيماورد في فضل الصلاة..... الخ، حرف القاف، ص १०)

मुख़्लिस का अमले क़लील भी काफ़ी है

मगर याद रहे कि हमारा हर अमल इख़्लास पर मब्नी होना चाहिये कि बेशक इख़्लास के साथ किया जाने वाला ब ज़ाहिर छोटा अमल भी बहुत बड़ा दरजा रखता है । चुनान्वे, सय्यिदुल मुर्सलीन, रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ज़ीशान है : تُمْ اِنْ اَخْلَصْتُمْ دِيْنَكُمْ يَكْفِيْكُمْ الْقَلِيْلُ مِنَ الْعَمَلِ तुम अपने दीन में मुख़्लिस हो जाओ तुम्हारा थोड़ा अमल भी काफ़ी होगा ।

(شعب الايمان، باب في إخلاص العمل لله، ३/२/५، حديث: १८५९)

घड़ी भर का इख़्लास बाइसे नजात

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي एक बुजुर्ग से नक़ल करते हैं : “एक साअत का इख़्लास हमेशा की नजात का बाइस है मगर इख़्लास बहुत कम पाया जाता है ।”

(احياء علوم الدين، كتاب النية والاخلاص والصدق، الباب الثاني في الاخلاص وفضيلته..... الخ، १/०/१)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा वते इस्लामी)

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के हवारियों ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की खिदमत में अर्ज की : “किस का अमल ख़ालिस होता है ?” फ़रमाया : “उसी शख्स का अमल इख़्लास पर मब्नी माना जाएगा जो सिर्फ़ **اَبْلَاح** की रिज़ा के लिये अमल करे और इस बात को नापसन्द करे कि लोग इस अमल के सबब उस की ता'रीफ़ करे ।”

(احياء علوم الدين، كتاب النية والاخلاص والصدق، الباب الثاني في الاخلاص وفضيلته..... الخ، ١١٠/٥)

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थर थर रहूँ कांपता या इलाही !
मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो कर इख़्लास ऐसा अता या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

लम्हा भर में मग़फ़िरत

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि मदीने के सुल्तान, रहमते अलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : “जिस ने येह **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ** अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस की मग़फ़िरत कर दी जाती है ।”

(سعادة الدارين، الباب الثامن في كفيات الصلاة..... الخ، الصلاة السادسة، ص 242)

रहमते हक़ “बहाना” मी जूयद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** रहमत करने पर आता है तो यूं भी सबब बनाता है कि किसी एक अमल को अपनी बारगाह में शरफ़े क़बूलिय्यत अता फ़रमा देता है और फिर इसी के बाइस उस पर **रहमतों** की बारिश कर देता है। इस ज़िम्न में एक और हृदीसे मुबारक पेश की जाती है जिस में मुतअद्दिद ऐसे लोगों का बयान किया गया है कि वोह किसी न किसी नेकी के सबब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की गिरिफ़्त से बच गए और रहमते खुदावन्दी ने उन्हें अपनी आगोश में ले लिया। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन समुरह **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि एक बार हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** हमारे पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : “आज रात मैं ने एक अजीब ख़्वाब देखा कि एक शख़्स की रूह क़ब्ज़ करने के लिये मलकुल मौत **عَلَيْهِ السَّلَام** तशरीफ़ लाए लेकिन उस का मां-बाप की इताअत करना सामने आ गया और वोह बच गया। एक शख़्स पर अज़ाबे क़ब्र छा गया लेकिन उस के वुज़ू (की नेकी) ने उसे बचा लिया। एक शख़्स को शयातीन ने घेर लिया लेकिन ज़िक्रुल्लाह (करने की नेकी) ने उसे बचा लिया। एक शख़्स को अज़ाब के फ़िरिशतों ने घेर लिया लेकिन उसे (उस की) नमाज़ ने बचा लिया। एक शख़्स को देखा कि प्यास की शिद्दत से ज़बान निकाले हुवे था और एक हौज़ पर पानी पीने जाता था मगर लौटा दिया जाता था कि इतने में उस के रोज़े आ गए और (इस नेकी ने)

उस को सैराब कर दिया। एक शख्स को देखा कि जहां अम्बियाए किराम عَلَيْهِ السَّلَام हल्के बनाए हुवे तशरीफ़ फ़रमा थे, वहां उन के पास जाना चाहता था लेकिन घुतकार दिया जाता था कि इतने में उस का गुस्ले जनाबत आया और (इस नेकी ने) उस को मेरे पास बिठा दिया। एक शख्स को देखा कि उस के आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे अन्धेरा ही अन्धेरा है और वोह इस अन्धेरे में हैरानो परेशान है तो उस के हज व उमरह आ गए और (इन नेकियों ने) उस को अन्धेरे से निकाल कर रोशनी में पहुंचा दिया। एक शख्स को देखा कि वोह मुसलमानों से गुफ्तगू करना चाहता है लेकिन कोई उस को मुंह नहीं लगाता तो सिलए रेहमी (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करने की नेकी) ने मोअमिनीन से कहा कि तुम इस से बात चीत करो। तो मुसलमानों ने उस से बात करना शुरू की। एक शख्स के जिस्म और चेहरे की तरफ़ आग बढ़ रही है और वोह अपने हाथ से बचा रहा है तो उस का सदक़्ा आ गया और उस के आगे ढाल बन गया और उस के सर पर साया फ़िगन हो गया। एक शख्स को ज़बानिय्या (या'नी अज़ाब के मख़सूस फ़िरिश्तों) ने चारों तरफ़ से घेर लिया लेकिन उस का **أَمْرًا لِّمَعْرُوفٍ وَنَهَى عَنِ الْمُنْكَرِ** आया (या'नी नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ करने की नेकी आई) और इस ने उसे बचा लिया और रहमत के फ़िरिश्तों के हवाले कर दिया। एक शख्स को देखा जो घुटनों के बल बैठा है लेकिन उस के और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के दरमियान हिजाब (या'नी पर्दा) है मगर उस का हुस्ने अख़्लाक आया और इस

(नेकी) ने उस को बचा लिया और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से मिला दिया। एक शख्स को उस का आ'माल नामा उलटे हाथ में दिया जाने लगा तो उस का **खौफ़े खुदा** आ गया और (इस अज़ीम नेकी की बरकत से) उस का नामए आ'माल सीधे हाथ में दे दिया गया। एक शख्स की नेकियों का वज़्न हल्का रहा मगर उस की **सखावत** आ गई और नेकियों का वज़्न बढ़ गया। एक शख्स जहन्नम के कनारे पर खड़ा था मगर उस का **खौफ़े खुदा** आ गया और वोह बच गया। एक शख्स जहन्नम में गिर गया लेकिन उस के **खौफ़े खुदा** में बहाए हुवे **आंसू** आ गए और (इन आंसूओं की बरकत से) वोह बच गया।

एक शख्स पुल सिरात पर खड़ा था और टहनी की तरह लरज़ रहा था लेकिन उस का **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के साथ **हुस्ने ज़न** (या'नी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से अच्छा गुमान कि वोह रहमत ही करेगा) आया और (इस नेकी ने) उसे बचा लिया और वोह पुल सिरात से गुज़र गया। एक शख्स पुल सिरात पर घिसट घिसट कर चल रहा था कि उस का मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ना आ गया और (इस नेकी ने) उस को खड़ा कर के पुल सिरात पार करवा दिया। मेरी उम्मत का एक शख्स जन्नत के दरवाज़ों के पास पहुंचा तो वोह सब उस पर बन्द थे कि उस का **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** की गवाही देना आया और उस के लिये जन्नती दरवाज़े खुल गए और वोह जन्नत में दाखिल हो गया।

(القول البديع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة والسلام علی رسول الله، ص ۲۶۵)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

चुगुल खोरी और तोहमत का वबाल

इसी तरह बसा अवकात हमारी नज़र में ब जाहिर छोटा सा गुनाह जिसे हम मा'मूली समझ रहे होते हैं वोही हमारी बरबादिये आखिरत का सबब भी बन सकता है जैसा कि बयान कर्दा रिवायत के आखिर में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी इरशाद फ़रमाया : “मैं ने कुछ ऐसे लोगों को भी देखा कि जिन के होंट कटे जा रहे थे, मैं ने जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त किया : ऐ जिब्रईल ! येह कौन हैं ?” तो उन्होंने ने बताया : الْمَشَاءُ وَنَ بَيْنَ النَّاسِ بِالنَّمِيمَةِ येह लोगों की चुगुल खोरी करने वाले हैं ।” और कुछ लोगों को ज़बानों से लटके हुवे देखा । मैं ने जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से उन के बारे में पूछा तो उन्होंने ने बताया : هَؤُلَاءِ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغَيْرِ مَا كَسَبُوا येह लोगों पर बिला वजह इल्ज़ामे गुनाह लगाया करते थे ।”

(شرح الصدور، باب ما شئ من عذاب القبر، ص ۱۸۳)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी

हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

अफ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाहज़ा

फ़रमाया, इताअते वालिदैन्, वुज़ू, नमाज़, रोज़ा, ज़िक्रुल्लाह,

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा 'वते इस्लामी)

हज़ व उमरह, सिलए रेहूमी, **أَمْرًا لِمَعْرُوفٍ وَنَهْيًا عَنِ الْمُنْكَرِ**, सदका, हुस्ने अख़लाक़, सखावत, ख़ौफ़े ख़ुदा में रोना, हुज़ूर **عَزَّوَجَلَّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे पाक** पढ़ना नीज़ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के साथ हुस्ने ज़न वगैरा वगैरा नेकियों के सबब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने मुअज़्ज़बीन (या'नी जो लोग अज़ाब में मुव्तला थे उन) पर करम फ़रमा दिया और उन्हें इताब व अज़ाब से रिहाई मिल गई। बहर हाल येह उस के फ़ज़्लो करम के मुआमलात हैं। वोह मालिको मुख़्तार है। जिसे चाहे बख़्श दे, जिसे चाहे अज़ाब करे, येह सब उस का अद्ल ही अद्ल है। जहां वोह किसी एक नेकी से खुश हो कर अपनी रहमत से बख़्श देता है वहीं किसी एक गुनाह पर जब वोह नाराज़ हो जाता है तो उस का क़हरो ग़ज़ब जोश पर आ जाता है और फिर उस की गिरिफ़्त निहायत ही सख़्त होती है। जैसा कि अभी गुज़श्ता तवील हदीस के आख़िर में चुगुल ख़ोरों और दूसरों पर गुनाह की तोहमत बांधने वालों का अन्जाम भी हमारे प्यारे प्यारे आका **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने मुलाहज़ा फ़रमा कर हमें बता कर मुतनब्बेह (या'नी ख़बरदार) किया लिहाज़ा अक्लमन्द वोही है कि बज़ाहिर कोई छोटी सी भी नेकी हो उसे तर्क न करे कि हो सकता है येही नेकी नजात का ज़रीआ बन जाए और बज़ाहिर गुनाह कितना ही मा'मूली नज़र आता हो हरगिज़ हरगिज़ न करे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमारे हाले ज़ार पर रहूम
 फ़रमा, हमें झूट, ग़ीबत, चुगली, बोहतान तराज़ी जैसे गुनाहों से
 महफूज़ फ़रमा कर ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां करने और हुज़ूर
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीक़
 अता फ़रमा और अपने करम से हमारी बे हिसाब बख़्शिश व
 मग़फ़िरत फ़रमा ।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

دُرُودِ تَنْجِيَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَاةً تُنَجِّنَا بِهَا مِنْ
 جَمِيعِ الْاَمْوَالِ وَالْاَفَاتِ وَتَقْضِيْ لَنَا بِهَا جَمِيعَ
 الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيعِ السَّيِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا
 بِهَا اَعْلٰى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصٰى الْغَايَاتِ
 مِنْ جَمِيعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيَاةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ
 اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ



बयान नम्बर : 24

जुदा होने से पहले पहले बख़्शिश

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, दो आलम के मालिको मुख्तार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है :
 जब **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में महब्बत करने वाले दो दोस्त मुलाकात करते हैं और वोह मुसाफ़हा करते हैं और सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर **दुरूदे पाक** पढ़ते हैं **إِلَّا لَمْ يَتَفَرَّقَا حَتَّى تَغْفِرَ ذُنُوبَهُمَا مَا تَقَدَّمَ وَمَا تَأَخَّرَ** तो उन दोनों के जुदा होने से पहले पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं ।

(شعب الإيمان، فصل في المصافحة والمعانقة وغيرهما..... الخ، ٦ / ٤٧١، حديث : ٨٩٤٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हमें भी अपनी येह आदत बना लेनी चाहिये कि हम जब भी किसी से मुलाकात करें तो सलाम की सुन्नतें और आदाब का खयाल रखते हुवे मुसाफ़हा किया करें और अपने प्यारे प्यारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर **दुरूदे पाक** भी पढ़ लिया करें कि सलाम करने से आपस में महब्बत बढ़ती है और **दुरूदे पाक** पढ़ने से हमारे दिल में हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्बत पैदा होती है और येह हमारे गुनाहों की बख़्शिश का ज़रीआ भी है ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हदीसे मुबारक में सलाम व मुसाफ़हा का ज़िक्र है और येह हमारे प्यारे आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बहुत ही प्यारी **सुन्नत** भी है लिहाज़ा हमें भी अपनी येह आदत बना लेनी चाहिये कि हम जब भी किसी से मुलाक़ात करें तो सलाम की **सुन्नतों** और **आदाब** का ख़याल रखते हुवे सलाम व मुसाफ़हा किया करें और हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे पाक** भी पढ़ लिया करें ।

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने हमें कुरआने पाक में एक दूसरे को सलाम करने की तरगीब दिलाई है चुनान्चे, इरशादे बारी तआला है :

وَإِذَا حُيِّتُمْ بِتَحِيَّةٍ
فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا ط

(प ५, النساء: ८६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या वोही कह दो ।”

जवाबे सलाम का अफ़ज़ल तरीक़ा

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** फ़तावा रज़विख्या जिल्द **22** सफ़हा **409** पर इरशाद फ़रमाते हैं :

“कम अज़ कम **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ** और इस से बेहतर **اللَّهُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ** मिलाना और सब से बेहतर **وَبَرَكَاتُهُ** शामिल करना और इस पर ज़ियादत

नहीं। फिर सलाम करने वाले ने जितने अल्फ़ाज़ में सलाम किया है जवाब में उतने का इआदा तो ज़रूर है और अफ़ज़ल यह है कि जवाब में ज़ियादा कहे। उस ने **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ** कहा तो यह **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ** कहे। और अगर उस ने **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ** कहा तो यह **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ** तक कहा तो यह भी इतना ही कहे कि इस से ज़ियादत नहीं।”

जवाबे सलाम के वक्त ख़िलाफ़े सुन्नत अल्फ़ाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बद किस्मती से आज कल हमारे मुआशरे से यह सुन्नत ख़त्म होती नज़र आ रही है। बद किस्मती से हम मुलाकात के वक्त **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ** से इब्तिदा करने के बजाए “आदाब अर्ज़”, “क्या हाल है?”, “मिज़ाज शरीफ़”, “सुब्ह बख़ैर”, “शाम बख़ैर” वगैरा वगैरा अज़ीबो ग़रीब कलिमात से गुफ़्तगू का आगाज़ करते हैं इसी तरह रुख़्सत होते वक्त भी “ख़ुदा हाफ़िज़”, “गुडबाई”, “टाटा” वगैरा कह देते हैं जो कि ख़िलाफ़े सुन्नत है, हां रुख़्सत होते हुवे **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ** के बा’द अगर ख़ुदा हाफ़िज़ कह दें तो हरज नहीं। होना तो यह चाहिये कि जब भी बाहम एक दूसरे से मुलाकात करें, अपने घर में दाख़िल हों या किसी अज़ीज़ो अक़ारिब के घर जाएं तो सलाम किया करें कि कुरआने पाक भी हमें येही दर्स देता है जैसा कि इरशादे बारी तआला है।

فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا
عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ
اللَّهِ مُبْرَكَةٌ طَيِّبَةٌ

(प १८, नूर: ६१)

तर्जमए कन्जुल ईमान : फिर
जब किसी घर में जाओ तो अपनों
को सलाम करो मिलते वक्त की
अच्छी दुआ **अल्लाह** के पास से
मुबारक पाकीजा ।

घर में दाखिल होने के आदाब

हजरते सदरुल अफ़ज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद
नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस
आयते करीमा के तहत चन्द मसाइल बयान किये हैं जिन्हें तवज्जोह
से सुन कर अमल की नियत भी कर लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सवाब
का ढेरों ख़ज़ाना हाथ आएगा । चुनान्वे, आप फ़रमाते हैं : “जब
आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो अपने अहल (घर वालों) को
सलाम करे और उन लोगों को जो मकान में हों ब शर्त येह कि उन
के दीन में ख़लल न हो ।” अगर ख़ाली मकान में दाख़िल हो जहां
कोई नहीं है तो कहे :

السَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى وَبَرَكَاتُهُ

السَّلَامُ عَلَيْنَا وَ عَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ السَّلَامُ عَلَى أَهْلِ الْبَيْتِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى وَبَرَكَاتُهُ

हजरते सय्यिदुना इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया
कि मकान से यहां मस्जिदें मुराद हैं । इमाम नख़्ई ने कहा कि जब
मस्जिद में कोई न हो तो कहे **السَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ** हजरते मुल्ला अली

कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِ ने शर्हे शिफा में लिखा : “ख़ाली मकान में सय्यिदे अलाम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर सलाम अर्ज करने की वजह यह है कि अहले इस्लाम के घरों में रूहे अक़दस जल्वा फ़रमा होती है ।”

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सलाम को आम करो सलामती पाओगे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहदीसे मुबारका में भी सलाम की बड़ी अहम्मियत बयान की गई है । चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना बरा बिन अज़िब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : أَفْشُوا السَّلَامَ تَسْلُمُوا सलाम को आम करो सलामती पा लोगे ।

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، باب افشاء السلام... الخ، ٣٥٧/١، حديث: ٤٩١)

महबूब पैदा करने वाला अमल

एक और हदीसे पाक में अब्बाह के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : कि तुम में पिछली उम्मतों की बीमारियां बुग़ज़ और हसद फैल जाएंगी और बुग़ज़ एक उस्तरा है जो बालों को नहीं बल्कि दीन को काट देता है उस जाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़े कुदरत में मुहम्मद की जान है !

لَا تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوا तुम उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं

हो सकते जब तक ईमान न ले आओ وَلَا تُؤْمِنُوا حَتَّىٰ تَحَابُّوا और (कामिल) मोमिन नहीं हो सकते जब तक एक दूसरे से महबूब न करो फिर फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें ऐसा अमल न बताऊं जो महबूब पैदा करे ? आपस में सलाम को आम करो ।”

(مسند احمد، مسند الزبير بن العوام، ٣٤٨/١، حديث: ١٤١٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَى مُحَمَّدٍ

सरकार से मुसाफ़हे का शरफ़

ताजदारे रिसालत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बिशारत निशान है مَنْ صَلَّى عَلَىٰ فِي يَوْمِ خَمْسِينَ مَرَّةً जो दिन भर में मुझ पर पचास मरतबा दुरूद पढ़ेगा । صَافَحَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूंगा ।

(القول البديع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة والسلام علی رسول الله، ص ٢٨٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम दिनभर में सिर्फ़ पचास मरतबा हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ लिया करें तो ब हुक्मे हदीस कल बरोजे क़ियामत हम गुनाह गारों को भी आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से मुसाफ़हा करने का शरफ़ ज़रूर हासिल होगा और जिस खुश नसीब के जिस्म से आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के दस्ते मुबारक मस हो जाएं उस की खुश बख़्ती के क्या कहने ? उसे तो जहन्नम की आग भी नहीं जलाएगी إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

इस ज़िम्न में एक रिवायत सुनिये और झूम उठिये ।

चुनान्चे,

आग ने कुछ असर न किया

मरवी है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا तन्नूर में रोटियां लगा रही थीं कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ लाए और हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के आटे की कुछ रोटियां बना कर तन्नूर में लगाईं तो उन रोटियों पर आग ने कुछ असर न किया हत्ता कि उन की रूतूबत भी खुश्क न हुई और जिस तरह लगाई थीं उसी तरह रहीं ।
(कोثر الخيرات، ص २७७)

आग से धुलने वाला रूमाल

इसी तरह हज़रते सय्यिदुना उब्बाद बिन अब्दुस्समद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : कि हम एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौलत ख़ाने पर हाज़िर हुवे । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का हुक्म पा कर कनीज़ ने दस्तरख़्वान बिछाया । फ़रमाया : “रूमाल भी लाओ ।” वोह एक रूमाल ले आई जिसे धोने की ज़रूरत थी । हुक्म दिया : इस को तन्नूर में डाल दो ! उस ने भड़कते तन्नूर में डाल दिया ! थोड़ी देर के बा 'द जब उसे आग से निकाला गया तो वोह ऐसा सफ़ेद था जैसा कि दूध । हम ने हैरान हो कर अर्ज की : इस में क्या राज़ है ? हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “येह वोह रूमाल है जिस से हुज़ूर सरापा नूर, फैज़ गन्ज़ूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपना रुख़े पुरनूर साफ़ फ़रमाया करते थे । जब धोने की ज़रूरत पड़ती है हम इस को इसी तरह आग में धो लेते हैं ।”

(الخصائص الكبرى، باب الآية في النار، २/ १३६)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आरिफे कामिल हज़रते सय्यिदुना मौलाना रूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرُ “मसनवी शरीफ़” में इस वाकिअए मुबारक को लिखने के बा’द फ़रमाते हैं :

اے دلِ ترسندہ از نار و عذاب با چنان دُست و لبے کُن اقتراب

جوں جماوے را چنان تشریف داد جان عاشق را چہا خواہد کشاد

(या’नी ऐ वोह दिल जिस को अज़ाबे नार का डर है, उन प्यारे प्यारे होंटों और मुक़द्दस हाथों से नज़दीकी क्यूं नहीं हासिल कर लेता जिन्हों ने बे जान चीज़ तक को ऐसी फ़ज़ीलत व बुजुर्गी अता फ़रमाई कि वोह आग में न जले, तो उन के जो आशिके ज़ार हैं उन पर अज़ाबे नार क्यूं न हराम हो !)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूदे पाक पढ़ना अज़ीम तरीन सआदत और अफ़ज़ल तरीन आ’माल में से है। येह अमल **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में इस क़दर महबूब है कि जो इस का आमिल बन जाता है तो उस पर **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमतों की बारिश छमा छम बरसना शुरू हो जाती है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वहहाब शा’रानी قُدَسَ سِرُّهُ الْتَّوَرَانِ “तबक़ात” में सय्यिदी अबुल मवाहिब शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلٰی का कौल बयान फ़रमाते हैं : “मैं ने एक रात सय्यिदुल आलमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा तो अर्ज़ की :

“या रसूलल्लाह **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** उस शख़्स صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है जो आप ﷺ पर एक मरतबा दुरूद भेजे। क्या येह बिशारत उस के लिये है जो हुज़ूरे क़ल्ब से दुरूद शरीफ़ पढ़े ?” फ़रमाया : “नहीं ! येह फ़ज़ीलत तो हर उस शख़्स के लिये है जो मुझ पर दुरूद भेजे अगर्चे ग़फ़लत से ही क्यूं न पढ़े और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उसे भी ऐसे फ़िरिश्ते अता फ़रमाता है जो उस के लिये दुआ व इस्तिग़फ़ार करते हैं। हां सिदके दिल के साथ पूरी तवज्जोह से दुरूद पढ़े तो उस का सवाब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई नहीं जानता।”

(سعادة الدارين، ص ११)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें सलाम व मुसाफ़हा के आदाब को पेशे नज़र रखते हुवे मुलाक़ात करने, सलाम को आम करने और अपने प्यारे हबीब **ﷺ** पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और रोज़े क़ियामत अपने महबूब के दामन में जगह अता फ़रमा।

اٰمِیْنِ بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْنِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم



बयान नम्बर : 25

घरों को कब्रिस्तान मत बनाओ

हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रहूमतुल्लिल आलमीन, शफीउल मुज़निबीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है : لَا تَجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قُبُورًا وَلَا تَجْعَلُوا قُبُورًا عِيْدًا : अपने घरों को कब्रिस्तान मत बनाओ और न ही मेरी क़ब्र को ईद बनाओ وَصَلُّوا عَلَيَّ فَإِنَّ صَلَاتَكُمْ تَبْلُغُنِي حَيْثُ كُنْتُمْ और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा करो, बेशक तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है चाहे तुम जहां भी हो। (अबु दाउद, کتاب المناسک، باب زیة القبور، ۳۱۵/۲، حدیث: ۲۰۴۲)

मुफ़सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ “मिरआतुल मनाजीह” में इस हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : “अपने घरों को कब्रिस्तान की तरह **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ख़ाली मत रखो बल्कि फ़राइज़ मस्जिदों में अदा करो और नवाफ़िल घर में। और जैसे ईदगाह में साल में सिर्फ़ दो बार जाते हैं ऐसे मेरे मज़ार पर न आओ बल्कि अकसर हाज़िरी दिया करो या जैसे ईद के दिन खेल कूद के मेलों में जाते हैं ऐसे तुम हमारे रौज़े पर बे अदबी से न आया करो बल्कि बा अदब रहा करो।”

मज़ीद फ़रमाते हैं कि : “अरवाहे कुदसिय्या बदन से निकल कर मलाइका की तरह हो जाती हैं कि वोह सारे आलम को

कफ़े दस्त की तरह देखती हैं और उन के लिये कोई शै हिजाब नहीं रहती। लिहाज़ा इस हदीस के मा'ना येह हुवे कि तुम जहां भी हो तुम्हारे दुरूद की आवाज़ मुझ तक पहुंचती है जब आज बिजली की ताक़त से वायरलेस और रेडियों के ज़रीए लाखों मील की आवाज़ सुन ली जाती है तो अगर ताक़ते नबुव्वत से दुरूद की आवाज़ सुन ली जाए तो क्या बर्इद है ? या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने सदहा मील से पैराहने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام (या'नी उन की क़मीस) की खुशबू पाई। सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन मील से च्यूटी की आवाज़ सुनी हालांकि आज तक कोई ताक़त च्यूटी की आवाज़ न सुना सकी तो हमारे हुज़ूर भी दुरूद ख़्वानों की आवाज़ ज़रूर सुनते हैं।”

(मिरआत, 2/101 मुलख़ब्रसन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो खुश नसीब लोग नबिय्ये मुअज़्ज़म, रसूले मोहतरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ना अपनी आदत बना लेते हैं, जिन्दगी भर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़मत व महब्बत दिल में बिठाते हैं जब वोह अहले दुरूद और अहले महब्बत इस दुन्याए फ़ानी से आलमे जाविदानी की तरफ़ सफ़र करते हैं तो उन पर कैसा करम होता है ! आइये इस की एक झलक मुलाहज़ा फ़रमाइये।

मौत की तलख़ी से महफूज़

एक साहिब किसी बीमार के पास तशरीफ़ ले गए (उन पर नज़्ज़ का आलम तारी था) उन से पूछा कि मौत की

कड़वाहट कैसी महसूस कर रहे हो ? उन्होंने ने कहा कि मुझे तो कुछ मा'लूम नहीं हो रहा इस लिये कि मैं ने उ-लमाए किराम से सुना है कि जो शख्स कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ता है वोह मौत की तल्खी से महफूज रहता है । (फ़ज़ाइले दुरूद शरीफ़, स. 57)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुहक्किफ़े अलल इतलाक़, खातिमुल मुहद्दीसीन, हज़रते अल्लामा **शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दीस देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي अपनी मायानाज़ किताब जज़्बुल कुलूब में इरशाद फ़रमाते हैं : “दुरूद शरीफ़ पढ़ने से क़ियामत की हौलनाक़ियों से नजात हासिल होती है, सकराते मौत में आसानी होती है ।”

(جذب القلوب، ص २२९)

चुनान्चे, इस ज़िम्न में एक हिक्क़ायत सुनिये और झूम उठिये ।

नशीहतों के फूल

हज़रते सय्यिदुना **शैख़ अहमद बिन साबिद मगरिबी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “एक दिन मैं दीवार के साथ टेक लगाए कि़ल्ला रुख़ **दुरूदे पाक** के मौजूअ पर मजमून को तरतीब दे रहा था । क़लम मेरे हाथ में था और तख़्ती मेरी गोद में थी कि तबीअत बोझल होने लगी, दर्री असना मुझे नींद ने आ लिया । मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं एक सुनसान जगह पर हूं जहां कोई इमारत नहीं कुछ लोग जामेअ मस्जिद के दरवाजे पर मौजूद हैं और बाक़ी मस्जिद के अन्दर, मैं अन्दर गया और उन के दरमियान बैठ गया, वहां मैं ने एक हसीनो जमील **नौजवान** को देखा नेक बख़्ती के आसार उस के चेहरे ही से इयां थे ।”

मैं ने कहा : “तुझे तमाम नबियों का वासिता दे कर पूछता हूं कि तेरा नाम व नसब क्या है ?” यह सुन कर उस ने कहा : “ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के बन्दे मेरा नाम **रुमान** है और मैं **रहमान** के मलाइका में से हूं।” इस पर मैं ने सुवाल किया : “तो फिर आप आदमियों में क्यूं आए हैं ?” फ़रमाया : “येह सब, आदमी नहीं बल्कि फ़िरिश्ते हैं।” मैं ने कहा : “मैं आप की **सोहबत** में रहना चाहता हूं।” तो उस फ़िरिश्ते ने कहा : “नहीं ! आप एक घड़ी भी मेरे साथ नहीं रह सकते।”

मैं ने अर्ज की : “**हुज़ूर !** येह तो फ़रमाइयें कि इन फ़िरिश्तों में कौन कौन है ?” फ़रमाया : “इन में हज़रते सय्यिदुना **जिब्राईल** **عَلَيْهِ السَّلَام**, हज़रते सय्यिदुना **मीकाईल** **عَلَيْهِ السَّلَام**, हज़रते सय्यिदुना **इस्राफ़ील** **عَلَيْهِ السَّلَام** और हज़रते सय्यिदुना **इज़राईल** **عَلَيْهِ السَّلَام** हैं।” मैं ने तमाम नबियों का वासिता दे कर हज़रते सय्यिदुना **जिब्राईल** **عَلَيْهِ السَّلَام** की ज़ियारत की ख़्वाहिश ज़ाहिर की जो हमारे आका हबीबे खुदा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के साथ महबबत करने वाले हैं। अचानक **मेहराब** के पास से आवाज़ आई : “मैं **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का बन्दा **जिब्राईल** हूं।” मेरी आंख ने पहले कभी ऐसा हसीनो जमील न देखा था। मैं उन के पास हाज़िर हुवा, सलाम अर्ज किया और उन से दुआए ख़ैर की दरख़्वास्त की। आप ने दुआ फ़रमाई, तब मैं ने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का वासिता दे कर अर्ज की, कि आप मुझे कोई

नसीहत फ़रमाएं जिस से मुझे फ़ाइदा हो तो उन्होंने ने फुज़ूल व बेकार काम से बचे रहने और अमानत को अदा करने की नसीहत फ़रमाई।”

फिर मैं ने हज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो उन बैठे हुवे हज़रात में से एक बोले मैं **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा मीकाईल हूं। मैं उन के पास हाज़िर हुवा और दुआ और नसीहत की दरख़्वास्त की, उन्होंने ने दुआ दी और फ़रमाया : “तुम पर अद्लो इन्साफ़ और ईफ़ाए अहद (वा'दे की पासदारी) लाज़िम है।”

फिर मैं ने सुवाल किया कि मैं हज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत करना चाहता हूं, तो उन में से एक साहिब खड़े हुवे और कहा : मैं **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा इस्राफ़ील हूं। उन जैसा पुरनूर चेहरा भी मैं ने पहले कभी नहीं देखा था, मैं ने उन से भी दुआए ख़ैर त़लब की, उन्होंने ने भी दुआ फ़रमाई। फिर दिल में ख़याल आया कि न जाने येह वाकेई फ़िरिश्ते हैं या मैं ग़लती पर हूं? और येह हज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील हो भी कैसे सकते हैं? जब कि हदीसे पाक में है कि हज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام का सर अर्श तक है और पाउं सातवीं ज़मीन के नीचे हैं, येह ख़याल आते ही देखा कि हज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام उठ खड़े हुवे तो सर आस्मान तक बुलन्द हो गया और पाउं ज़मीन के नीचे चले गए। तो उन की महबूबत मेरे दिल में मज़ीद

बैठ गई फिर मैं ने अर्ज की : तमाम नबियों का वासिता देता हूं कि आप उस पहली सूरत में आ जाएं, मैं मानता हूं कि आप वाकेई हज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام हैं ।

फिर मैं ने अर्ज की : मुझे कोई मुफ़ीद नसीहत फ़रमाएं । आप ने फ़रमाया : “दुन्या को छोड़ दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हासिल होगी और जो तेरे पास है उसे ख़ैरबाद कह दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महबूबत पा लेगा ।” फिर मैं ने अर्ज की : मैं हज़रते सय्यिदुना इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत करना चाहता हूं । फ़ौरन एक साहिब उठे, वोह भी निहायत हसीन थे, फ़रमाया : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा इज़राईल हूं । हस्बे साबिक मैं ने उन से भी दुआए ख़ैर की दरख्वास्त की, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ फ़रमाई । आख़िर में मैं ने हज़रते सय्यिदुना इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام से अर्ज की : “मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का वासिता दे कर इल्तिजा करता हूं कि आप मेरी जान निकालते वक़्त मुझ पर नमी फ़रमाएं ।” फ़रमाया : “रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करो ।” मैं ने नसीहत त़लब की तो फ़रमाया : “लज़्ज़तों को तोड़ने वाली, बापों और माओं को क़त्ल करने वाली, बेटों और बेटियों को (मां-बाप) से जुदा करने वाली और ख़ालिकुस्समावाते वल अर्द के मासिवा की रूहों को खींच लेने वाली मौत को याद रखा करो !” इस पर मैं बेदार हो गया ।

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيماورد من لطائف المراثي والحكايات، اللطيفة السادسة، ص ١٢٤، ملخصاً)

बे वफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार तू अचानक मौत का होगा शिकार
मौत आ कर ही रहेगी याद रख जान जा कर ही रहेगी याद रख
जब फिरिश्ता मौत का छा जाएगा फिर बचा कोई न तुझ को पाएगा
एक दिन मरना है आखिर मौत है कर ले जो करना है आखिर मौत है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत में हमारे लिये नसीहत के बे शुमार मदनी फूल हैं और साथ ही साथ ये बात भी मा'लूम हुई कि जांकनी के कड़े और कठिन वक़्त में दुरुदे पाक की कसरत हमारी मुश्किलों को आसान कर देगी और इस की बरकत से हमें मौत की सख़्तियों से नजात हासिल हो जाएगी। रिवायात से मा'लूम होता है कि जब इन्सान की रूह उस के जिस्म से जुदा हो रही होती है तो वोह बड़ी आजमाइश का वक़्त होता है। चुनान्वे,

मोत कांटेदार शाख़ की मानिन्द है

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया : “ऐ का'ब ! رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हमें मौत के बारे में बताओ।” हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मौत उस टहनी की मानिन्द है जिस में कसीर कांटे हों और उसे किसी शख़्स के पेट में दाख़िल किया जाए और जब हर कांटा एक एक रग में पैवस्त हो जाए फिर कोई खींचने वाला

उस शाख को जोर से खींचे तो वोह (कांटेदार टहनी) कुछ (गोشت के रेशे वगैरा) साथ ले आए और कुछ बाकी छोड़ दे ।”

(مکاشفة القلوب، ص ۱۶۸)

तकालीफ़े मौत का एक क़तरा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकई बेहद तश्वीश नाक मुआमला है । बन्दा जब बुख़ार या दर्दे सर वगैरा में मुब्तला होता है तो उस से किसी बात में फैसला करना दुश्वार हो जाता है । फिर नज़्अ की तकालीफ़ तो बहुत ही ज़ियादा होती हैं । “शर्हुस्सुदूर” में है, अगर मौत की तकालीफ़ का एक क़तरा तमाम आस्मान व ज़मीन में रहने वालों पर टपका दिया जाए तो सब के सब हलाक हो जाएं ।” (شرح الصدور، باب من دنا اجله وكيفيّة الموت وشدة ص ۳۲)

ख़ुद ख़ातिमा से अमन चाहते हो तो !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तश्वीश....तश्वीश... निहायत ही सख़्त तश्वीश की बात है, हम नहीं जानते कि हमारे बारे में **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** की ख़ुफ़्या तदबीर क्या है ? न मा'लूम हमारा ख़ातिमा कैसा होगा ? हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** का फ़रमाने अ़ली है : “बुरे ख़ातिमे से अमन चाहते हो तो अपनी सारी ज़िन्दगी **अब्बाह** रब्बुल इज़्ज़त **عَزَّوَجَلَّ** की इताअत में बसर करो और हर हर गुनाह से बचो, ज़रूरी है कि तुम पर अरिफ़ीन जैसा ख़ौफ़ ग़ालिब रहे ह़त्ता कि इस के सबब तुम्हारा रोना धोना तवील हो जाए और तुम

हमेशा गुमगीन रहो ।” आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : तुम्हें

अच्छे ख़ातिमे की तय्यारी में मशगूल रहना चाहिये । हमेशा जिफ़्रुल्लाह में लगे रहो, दिल से दुन्या की महबूबत निकाल दो, गुनाहों से अपने आ'जा बल्कि दिल की भी हिफ़ाज़त करो, जिस क़दर मुमकिन हो बुरे लोगों को देखने से भी बचो कि इस से भी दिल पर असर पड़ता है और तुम्हारा ज़ेहन उस तरफ़ माइल हो सकता है । (احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان معنى سوء الخاتمة، ٢١٩٤، مُلخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे अब्बाह एज़ुजल हमें अपने हबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और इस की बरकत से हमें मौत की सख़्तियों से नज़ात, ईमान पर ख़ातिमा और वक़्ते नज़अ अपने महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हसीन ज़ल्वे दिखा ।

नज़अ के वक़्त मुझे जल्वए महबूब दिखा

तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 90)

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा

हर मरज़ की दवा होती है और गुनाहों की दवा इस्तिग़फ़ार करना है । (كنز العمال، ٢٤٢/١، حديث: ٢٠٨٦)

बयान नम्बर : 26

खुदा चाहता है रिज़ाउ मुहम्मद

हज़रते सय्यिदुना अबू तलहा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि एक दिन रहूमतुल्लिल आलमीन, शफीज़ल मज़निबीन صلى الله تعالى عليه وآله وسلم तशरीफ़ लाए और हालत येह थी कि खुशी के आसार आप عليه السلام के चेहरए वदूहा से इयां थे, फ़रमाया : “जिब्रईल मेरे पास हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवे, आप का रब عز وجل इरशाद फ़रमाता है : **”أَمَّا يُرْضِيكَ يَا مُحَمَّدَانُ لَا يُصَلِّي عَلَيْكَ أَحَدٌ مِنْ أُمَّتِكَ إِلَّا صَلَّيْتُ عَلَيْهِ عَشْرًا**” ऐ मुहम्मद (صلى الله تعالى عليه وآله وسلم) क्या आप इस बात पर राज़ी नहीं कि आप का जो भी उम्मीती आप पर एक बार दुरूदे पाक भेजे तो मैं उस पर दस बार रहमत भेजूं **وَلَا يُسَلِّمُ عَلَيْكَ أَحَدٌ مِنْ أُمَّتِكَ إِلَّا سَلَّمْتُ عَلَيْهِ عَشْرًا** और अगर वोह आप पर एक बार सलाम भेजे तो मैं उस पर दस बार सलाम भेजूं।”

(مشكاة، کتاب الصلاة ، باب الصلاة على النبي وفضلها، ١/١٨٩، حديث: ٩٢٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किस क़दर खुश बख़्त है वोह शख्स जो हुज़ूर عليه الصلوة والسلام की बारगाह में दुरूदे पाक पढ़ कर खुद को **अल्लाह** عز وجل की दस रहमतों का सज़ावार बना लेता है हालांकि अब्बलीनो आखिरीन की इन्तिहाई तमन्ना तो येह होती है कि **अल्लाह** عز وجل की एक ख़ास रहमत ही उन को हासिल हो जाए तो ज़हे नसीब, बल्कि अगर अक्लमन्द से पूछा

जाए कि सारी मख्लूक की नेकियां तेरे नामए आ'माल में हों तुझे येह पसन्द है या येह कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की एक खास रहमत तुझ पर नाज़िल हो जाए तो यकीनन वोह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की एक खास रहमत को पसन्द करेगा। और फिर येह फ़ज़ीलत तो एक बार **दुरूदे पाक** पढ़ने वाले को हासिल होगी कि उस पर **अल्लाह** तबारक व तआला की सलामती और दस रहमतों का नुज़ूल होगा तो उस बन्दए मोमिन के क्या कहने जो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ता होगा।

मुफ़सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَان** “मिरआतुल मनाजीह” में इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : “रब के सलाम भेजने से मुराद या तो ब ज़रीअए मलाइका उसे **सलाम** कहलवाना है या आफ़तों और मुसीबतों से **सलामत** रखना। हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** को येह खुश ख़बरी इस लिये दी गई कि आप को अपनी उम्मत की राहत से बहुत खुशी होती है जैसे कि अपनी उम्मत की तकलीफ़ से ग़म होता है। मज़कूरा हदीस इस आयत की मोअय्यिद है।”

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ
فَتَرْضَىٰ ۝

(प ३०, الضحی: ५)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

(मरा० १०२/२०)

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** तआला का

अपने हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से येह वा'दए करीमा उन ने 'मतों को भी शामिल है जो आप को दुन्या में अता फ़रमाई । कमाले नफ़्स और उलूमे अव्वलीनो आख़िरीन और जुहूरे अम्र और ए'लाए दीन और वोह फुतूहात जो अहदए मुबारक में हुई और अहदए सहाबा में हुई और ता क़ियामत मुसलमानों को होती रहेंगी और दा'वत का अ़ाम होना और इस्लाम का मशारिक व मग़ारिब में फैल जाना और आप की उम्मत का बेहतरीने उमम होना और आप की वोह करामात व कमालात जिन का **अल्लाह** ही अ़ालिम है और आख़िरत की इज़्ज़त व तकरीम को भी शामिल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को शफ़ाअते अ़ाम्मा व खास्सा और मक़ामे महमूद वग़ैरा जलील ने'मतें अता फ़रमाई । मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दोनों दस्ते मुबारक उठा कर उम्मत के हक़ में रो रो कर दुआ फ़रमाई और अ़र्ज की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिब्रील أَللّهُمَّ اُمْنِيْ اُمْنِيْ को हुक्म दिया कि मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की ख़िदमत में जा कर दरयाफ़्त करो कि रोने का क्या सबब है बा वुजूद येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है, जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने हस्बे हुक्म हाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया तो सय्यिदे अ़ालम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें तमाम हाल बताया और ग़मे उम्मत का इज़हार फ़रमाया, जिब्रीले अमीन ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज की, कि तेरे हबीब येह फ़रमाते हैं बा वुजूद येह कि वोह ख़ूब जानने वाला है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया जाओ और मेरे हबीब (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) से कहो कि मैं आप को आप

की उम्मत के बारे में अُنकरीब राजी करूंगा और आप को गिरां खातिर न होने दूंगा, हदीस शरीफ में है कि जब येह आयत नाजिल हुई तो सय्यिदे आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया कि जब तक मेरा एक उम्मती भी दोख़ में रहे, मैं राजी न होऊंगा। आयते करीमा साफ़ दलालत करती है कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** वोही करेगा जिस में रसूल राजी हों।”

डर था कि इस्यां की सज़ा अब होगी या रोज़े जज़ा दी उन की रहमत ने सदा येह भी नहीं वोह भी नहीं

(हदाइके बख़्शिश, स. 110)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पांच को पांच से पहले ग़नीमत जानो !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन ज़िन्दगी बेहद मुख़्तसर है, जो वक़्त मिल गया सो मिल गया, आइन्दा वक़्त मिलने की उम्मीद रखना धोका है। क्या मा'लूम आइन्दा लम्हे हम मौत से हम आगोश हो चुके हों। रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** फ़रमाते हैं : **اَعْتَمِمْ خَمْسًا قَبْلَ خَمْسٍ** : पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले ग़नीमत जानो !

شَبَابَكَ قَبْلَ هَرَمِكَ

जवानी को बुढ़ापे से पहले।

وَصِحَّتَكَ قَبْلَ سَقَمِكَ

सिहहत को बीमारी से पहले।

وَعِنَاكَ قَبْلَ فَقْرِكَ

मालदारी को तंगदस्ती से पहले।

وَفَرَاغَكَ قَبْلَ شُغْلِكَ

फ़ुरसत को मशगूलियत से पहले।

وَحَيَاتَكَ قَبْلَ مَوْتِكَ

और ज़िन्दगी को मौत से पहले।

(مستدرک، کتاب الرقاق، ۴۳۰/۵، حدیث: ۷۹۱۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा 'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** अपने रिसाले “अनमोल हीरे” में इरशाद फ़रमाते हैं : वाक़ेई सिद्दहत की क़द्र बीमार ही कर सकता है और वक़्त की क़द्र वोह लोग जानते हैं जो बेहद मसरूफ़ होते हैं वरना जो लोग “फ़ुरसती” होते हैं उन को क्या मा'लूम कि वक़्त की क्या अहम्मियत है !”

लिहाज़ा वक़्त की क़द्र करते हुवे फुज़ूल बातों, फुज़ूल कामों और फुज़ूल दोस्तों से किनारा कशी इख़्तियार कीजिये और अपने आप को ऐसे कामों में मशगूल कर लीजिये जिस में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की रिज़ा व खुशनूदी पोशीदा हो ।

याद रहे कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा उसी सूरत में हासिल हो सकती है कि जब उस के प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** हम से राज़ी हों और हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** को राज़ी करने का एक ज़रीआ आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते बा बरकत पर **दुरूदे पाक** पढ़ना भी है और येह वोह बेहतरीन अमल है कि जो शख़्स इस का आदी हो उस से न सिर्फ़ सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** खुश होते हैं बल्कि उसे अपने दीदार से भी मुशरफ़ फ़रमाते हैं नीज़ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के मा'सूम फ़िरिशते उस का ज़िक्र आस्मानों में करते हैं । चुनान्वे,

साहिबे “तम्बीहुल अनाम” हज़रते अब्दुल जलील

मग़रबी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي** ने दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल पर जो किताब लिखी है। उस के मुक़दमे में फ़रमाते हैं : “मैं ने इस के बे शुमार बरकात देखे और बारहा सरकार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ियारत नसीब हुई।” इसी ज़िम्न में फ़रमाते हैं कि एक बार **ख़्वाब** में देखा कि माहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मेरे ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ़ लाए हैं, चेहरा **अन्वर** की ताबानी से पूरा घर जगमगा रहा है। मैं ने तीन मरतबा अर्ज़ की **“الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ”** या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मैं आप के जवार में हूं और आप की **शफ़ाअत** का उम्मीद वार हूं नीज़ मैं ने देखा कि मेरा हमसाया जो कि फ़ौत हो चुका था मुझ से कह रहा है : “तू हज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के उन खुदाम में से है जो उन की मदद सराई करने वाले हैं।” मैं ने उस से कहा कि तुझे कैसे मा’लूम हुवा ? इस पर उस ने कहा : “हां **अब्बाह** की क़सम ! तेरा ज़िक़्र आस्मानों में हो रहा था।” और मैं ने देखा कि सरकार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** हमारी गुफ़्तगू सुन कर मुस्कुरा रहे हैं। इतने में मेरी आंख खुल गई और मैं निहायत हश्शाश बश्शाश था।

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيماوردمن لطائف المرائي والحكايات..... الخ، اللطيفة الثانية والتسعون، ص ١٥١)

तुम को तो गुलामों से है कुछ ऐसी महबूबत

है तर्के अदब वरना कहें हम पे फ़िदा हो

(जौके ना’त, स. 147)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा वते इस्लामी)

जितना गुड, उतना मीठा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रहे कि जब भी दुरूदे पाक पढ़ा जाए तो इन्तिहाई शौक व महब्वत में डूब कर बसद अकीदत व इख़्लास पढ़ा जाए कि जिस क़दर महब्वत व इख़्लास ज़ियादा होगा अज़्रो सवाब भी उसी क़दर ज़ियादा होगा और यकीनन **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में आ'माल की क़बूलिय्यत का दारो मदार इख़्लास व तक्वा पर है जैसा कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

لَنْ يَنَالَ اللَّهُ لُحُومَهَا
وَلَا دِمَآؤُهَا وَلَكِنْ يَنَالُهُ
التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ (پ १७, الحج: ३७)

तर्जमए कन्जुल ईमान : **अल्लाह**
को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं
न उन के खून, हां तुम्हारी परहेज़गारी
उस तक बारयाब होती है ।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ **عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِبَاد** ने “अल इबरीज़” के बाब सिवुम में एक सिलसिलए कलाम के बा'द फ़रमाया : “इसी लिये तुम देखोगे कि दो शख़्स नबिय्ये मुअज़्ज़म, रसूले मोहतरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं, एक को तो थोड़ा सा अज़्र मिलता है जब कि दूसरे को इतना ज़ियादा सवाब मिलता है जिस का न तो बयान किया जा सकता है और न शुमार किया जा सकता है । इस का सबब येह है कि पहले शख़्स की ज़बान से हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद ग़फ़लत के साथ निकल रहा है उस का दिल और बहुत सी बातों

से भरा पड़ा है गोया उस की ज़बान से दुरूद शरीफ़ महज़ एक आदत की बिना पर निकल रहा है इसी लिये उसे कम अज़्र मिला । और दूसरे की ज़बान से दुरूद शरीफ़ महब्बत व ता'ज़ीम के साथ निकला है, महब्बत इस लिये कि वोह अपने दिल में नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जलालत व अज़मत का तसव्वुर करता है और येह तसव्वुर भी करता है कि आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** काइनात के वुजूद में आने का सबब हैं और हर नूर आप ही के नूर से है और येह कि आप काइनात के लिये रहमत और हिदायत हैं और येह कि अगलों पिछलों सब के लिये रहमत और मख़्लूक की हिदायत, आप ही की तरफ़ से और आप ही के सदके से है । पस वोह आप **عَلَيْهِ السَّلَام** की इज़्ज़तो अज़मत के पेशे नज़र आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता है न कि किसी और वजह से जिस का तअल्लुक आदमी के अपने ज़ाती मफ़ाद से हो ।”

(الابريز، الباب الثالث فى ذكر الظلام الذى يدخل على ذوات العباد..... الخ (٤٤٦/١)

पस जब आदमी की ज़बान से नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद शरीफ़ निकलता है तो उस का अज़्र हुज़ूर **عَزَّوَجَلَّ** के मर्तबे और **اَبَّاه** के फ़ज़्लो करम के मुताबिक़ ही मिलता है क्यूंकि इस दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सबब और इस पर आमादा करने वाली चीज़ आप **عَلَيْهِ السَّلَام** की येही कद्रो मन्ज़िलत है लिहाज़ा दुरूद शरीफ़ पर जो अज़्रो सवाब मिलता है उस का दारो मदार भी इसी महब्बत के ज़ब्बे के

मुताबिक होगा, पहले शरूद के दुरूद पढ़ने में जज़्बा इस का ज़ाती मफ़ाद है। लिहाज़ा उस का सवाब भी इस के मुताबिक मिलेगा, येही हाल उस अमल का है, जो बन्दा अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** के लिये बजा लाता है। जब उस नेक अमल पर उभारने वाला जज़्बा रब की अज़मत व जलाल और रिफ़अत व किब्रियाई हो तो उस का अज़्र भी रब की अज़मत के मुताबिक होगा और जब उस अमल पर उभारने वाली सिर्फ़ बन्दे की अपनी गरज़ हो और उस की अपनी ज़ात की तरफ़ लौटने वाला मफ़ाद हो तो अज़्रो सवाब भी इसी के मुताबिक होगा।

लिहाज़ा हमें चाहिये कि इस बात का हमेशा खयाल रखे कि **दुरूदे पाक** और किसी भी अमले सालेह से मक़सूद दुन्यावी अग़राज़ का हुसूल या मसाइल का हल न हो बल्कि रिज़ाए रब्बुल अनाम **عَزَّوَجَلَّ** और खुशनूदिये शहनशाहे खैरुल अनाम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ही हमारा मतलूब व मक़सूद हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

اَللّٰهُ **عَزَّوَجَلَّ** हमें इख़लास की दौलत से माला माल फ़रमाए और हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** पर ब कसरत **दुरूदो सलाम** पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



बयान नम्बर : 27

ग़ीबत से हिफ़ाज़त का नुस्खा

हज़रते अल्लामा मजदुद्दीन फ़ीरोज़ाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي से मन्कूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो तो यूं कह लिया करो, بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ (इस की बरकत) से **اَللّٰهُمَّ عَزِّزْ لِّ** तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़रर फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा और जब मजलिस से उठो तो उस वक़्त भी بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ कह लिया करो तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज़ रखेगा ।
(القول البديع، الباب الثاني في ثواب الصلاة والسلام على رسول الله، ص २७८)

लम्हणु फ़िक्रिय्या

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ अपनी मायानाज़ तालीफ़ “ग़ीबत की तबाहकारियां” में फ़रमाते हैं :
“मां-बाप, भाई बहन, मियां बीवी, सास बहू, सुसर दामाद, नन्द भावज बल्कि अहले ख़ाना व ख़ानदान नीज़ उस्ताज़ व शागिर्द, सेठ व नोकर, ताजिर व गाहक, अफ़सर व मज़दूर, मालदार व नादार, हाकिम व महकूम, दुन्यादार व दीनदार, बुढ़ा हो या जवान

अल गरज तमाम दीनी और दुन्यवी शो'बों से तअल्लुक रखने वाले मुसलमानों की भारी अकसरिय्यत इस वक्त गीबत की ख़ौफ़नाक आफ़त की लपेट में है, अफ़सोस ! सद करोड़ अफ़सोस ! बे जा बक बक की आदत के सबब आज कल हमारी कोई मजलिस (बैठक) उमूमन गीबत से ख़ाली नहीं होती । बहुत सारे परहेज़गार नज़र आने वाले लोग भी बिला तकल्लुफ़ गीबत सुनते, सुनाते, मुस्कुराते और ताईद में सर हिलाते नज़र आते हैं, चूँकि गीबत बहुत ज़ियादा आम है इस लिये उमूमन किसी की इस तरफ़ तवज्जोह ही नहीं होती कि गीबत करने वाला नेक परहेज़गार नहीं बल्कि फ़ासिक़ व गुनहगार और अज़ाबे नार का हक़दार होता है ।

गीबत का अन्जाम

कुरआनो हदीस और अक्वाले बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ السَّيِّئِينَ में गीबत की मुतअद्दिद तबाहकारियां बयान की गई हैं जिन्हें सुन कर शायद खाइफ़ीन के बदन में झुर झुरी की लहर दौड़ जाए ! जिगर थाम कर चन्द एक वईदें मुलाहज़ा फ़रमाइये । चुनान्वे,
 ❀ गीबत ईमान को काट कर रख देती है । ❀ गीबत बुरे ख़ातिमे का सबब है । ❀ गीबत से नेकियां बरबाद होती हैं । ❀ गीबत मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मुतरादिफ़ है । ❀ गीबत करने वाला जहन्नम का बन्दर होगा । ❀ नीज़ गीबत करने वाला क़ियामत में कुत्ते की शक्ल में उठेगा ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत की आदत से सच्ची

तौबा कीजिये, ज़बान की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाइये, तौबा पर इस्तिफ़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये और ज़िक्रो दुरूद की आदत बना लीजिये ।

हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : **عَلَيْكُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ تَعَالَى فَإِنَّهُ شِفَاءٌ** : “बेशक इस में शिफ़ा है” **وَأَيُّكُمْ وَذَكَرَ النَّاسَ فَإِنَّهُ دَاءٌ** और लोगों के तज़किरों (मसलन ग़ीबत) से बचो कि येह बीमारी है ।”

(احياء علوم الدين، كتاب آفات اللسان، الآفة الخامسة عشرة الغيبة، १७७/३)

हमारे बुजुर्गानि दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْمُبِين का येह आलम था कि वोह ज़िक्रो दुरूद से किसी भी सूरत में ग़ाफ़िल नहीं होते थे । जैसा कि **क़ियामत की ज़िल्लत व नुहूसत का एक सबब**

इमाम शा'रानी قُدَسَ سِرُّهُ الْوَرَّانِي ने सलफ़े सालिहीन के अख़्लाक़ पर एक किताब लिखी है जिस का नाम “**तम्बिहुल मुग़तररीन**” है । इस में फ़रमाते हैं : सलफ़े सालिहीन की आदत में से येह भी है कि वोह **عَزَّوَجَلَّ** के ज़िक्र और रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेजने से किसी मजलिस में ग़ाफ़िल नहीं होते । हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इस फ़रमान पर अमल करते हुवे : **لَا يَجْلِسُ قَوْمٌ مَجْلِسًا لَمْ يَذْكُرُوا اللَّهَ فِيهِ وَلَمْ يُصَلُّوا عَلَى نَبِيِّهِ مُحَمَّدٍ** जो कौम किसी मजलिस में बैठे और उस में न **عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक्र करे और न ही उस के नबी मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर

दुरूद भेजे, **إِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ تَرَةٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ** तो क़ियामत के दिन उस कौम पर ज़िल्लत व नुहूसत मुसल्लत होगी ।”

(سعادة الدارين، الباب الثالث فيماورد عن الانبياء والعلماء في فضل الصلاة عليه، ص ۱۰۹)

सय्यिदी अबुल अब्बास तीजानी **قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي** ने **عَلَيْهِ السَّلَام** हमारा हुज़ूर **يَا إِلَهَ الْعَالَمِينَ** (या'नी **اللَّهُمَّ اجْعَلْ صَلَاتَنَا عَلَيْهِ مِفْتَاحًا** पर दुरूदे पाक पढ़ना चाबी बना दे ।) की शर्ह में फ़रमाया : दुरूद पढ़ने वाला **اَللّٰهُ** से दुआ करता है कि उस का पढ़ा हुआ दुरूदे पाक गुयूब व मअरिफ़ और अन्वार व असरार के बन्द दरवाज़ों के लिये चाबी बन जाए । जब इस मैदाने (मा'रिफ़त व असरार) की चाबी खुद हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते मुक़द्दसा है तो इस के हुसूल के लिये बेहतर येह है कि आप **عَلَيْهِ السَّلَام** की बारगाह में दुरूदो सलाम के नज़राने भेजे जाएं । जो इस फ़रीजे से अलग रहा और इस राह पर चलने वाले तमाम मुसलमानों से कट गया तो कट ही गया और धुतकारा गया और उस की क़िस्मत में कुर्बे खुदावन्दी नहीं ।” (سعادة الدارين، ص ۱۰۹، ايضاً)

अल्लामा शा'रानी **قُدِّسَ سِرُّهُ الثُّورَانِي** फ़रमाते हैं : “दुरूदे पाक वोह अज़ीमुश्शान अहद है जो रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से मुतअल्लिक हम से किया गया है कि हम रसूले पाक **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर रात दिन कसरत से दुरूदो सलाम भेजें और हम अपने भाइयों के सामने इस का अज़्रो सवाब बयान करें और आप **عَلَيْهِ السَّلَام** की महब्बत के इज़हार के पेशे नज़र इन को इस की कामिल तरगीब दें ।” (سعادة الدارين، ص ۱۰۹، ايضاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैखे तरीक़त, अमीरे

अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीकों पर मुश्तमिल शरीअत व तरीक़त का जामेअ मजमूआ (इस्लामी भाइयों के लिये) **“72 मदनी इन्आमात”** ब सूरते सुवालात अता फ़रमाया है इस में एक मदनी इन्आम येह भी है : **“क्या आज आप ने अपने शजरे के कुछ न कुछ अवराद और कम अज़ कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लिये ?”** येही वजह है कि तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी का तुरए इम्तियाज़ है कि इस से वाबस्ता इस्लामी भाई **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** न सिर्फ़ खुद दुरूदे पाक की कसरत करते हैं बल्कि दूसरों को भी इस की तरगीब देते हैं लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि दुरूद शरीफ़ को अपने रोज़ो शब के मा'मूलात में शामिल कर लें ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल अब्बास तीजानी

قَدِيسَ سِرْمَةِ التَّوْرَانِ ने एक तालिबे इल्म के पास ख़त भेजा और उस में

بِسْمِ اللّٰهِ और सलातो सलाम के बा'द लिखा कि मैं जिस चीज़ की

तुझे नसीहत व वसियत करता हूं वोह येह है कि सफ़ाए क़ल्ब के

साथ ज़ाहिरो बातिन, हर हाल में रब **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म की मुख़ालफ़त से बचते रहना और दिल से उस की तरफ़ मुतवज्जेह रहना और हर हाल में उस के हुक्म पर राज़ी रहना, बहर सूरत उस की तक्दीर पर सब्र करते रहना, उन तमाम उमूर में बक़दरे इस्तिताअत हुज़ूरे क़ल्ब के साथ ब कसरत **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक्र करना और उस से मदद चाहना। जिन उमूर की मैं ने तुझे वसिय्यत की है उन में वोह तेरी मदद करेगा और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का सब से बढ़ कर मुफ़ीद ज़िक्र रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर हुज़ूरे क़ल्ब के साथ दुरूद भेजना है। बिला शुबा येह दुन्यवी और उख़रवी तमाम मक़ासिद के हुसूल का ज़ामिन और तमाम मुशिकलात का हल है और जो शख़्स इस पर अमल करेगा वोही **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का सब से बढ़ कर बरगुज़ीदा होगा। (سعادة الدارين، ص १०९, ایضاً)

लुत्फ़े इलाही का ज़रीआ

हज़रते सय्यिद अहमद दहलान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** अपनी किताब तक्रीबुल उसूल में इब्ने अता का येह कौल नक़ल करते हुवे फ़रमाते हैं : “जो शख़्स कसरत से **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक्र करे, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का लुत्फ़ उस से कभी जुदा नहीं होगा और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस को कभी ग़ैर का मोहताज नहीं रखता।”

ज़िक्र की अफ़ज़ल तरीन किस्म

अल्लामा नबहानी **قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي** फ़रमाते हैं : “दुरूद शरीफ़ से ज़िक्र की तजदीद होती है। बल्कि यूं कहना चाहिये

कि हुजूर عَلَيْهِ السَّلَام पर दुरूद शरीफ पढ़ना ज़िक्रे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ

की अफ़ज़ल तरीन किस्मों में से है ।”

(سعادة الدارين، المسئلة الرابعة فى سبب مضاعفة اجر الصلاة عليه، ص ٥١)

दुरूद कई नेकियों का मजमूआ है

इहयाउल उलूम की शर्ह में है कि हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

पर पढ़े जाने वाले दुरूदे पाक के सवाब में (बे पनाह) इज़ाफ़ा कर दिया जाता है क्योंकि दुरूद शरीफ़ महज़ एक नेकी नहीं

बल्कि कई नेकियों का मजमूआ है वोह इस तरह कि (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान की तजदीद होती है । (2) फिर रसूलुल्लाह

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर ईमान की तजदीद होती है । (3) फिर आप

عَلَيْهِ السَّلَام की ता’जीम की तजदीद होती है । (4) फिर आप

عَلَيْهِ السَّلَام के लिये इज़्ज़त व अज़मत त़लब की जाती है । (5) फिर

रोज़े क़ियामत पर ईमान की तजदीद और कई तरह की बुजुर्गियों

की त़लब होती है । (6) फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र की

तजदीद होती है और नेकों के ज़िक्र के वक़्त रहमत नाज़िल होती

है । (7) फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام की आल के ज़िक्र की तजदीद होती

है क्योंकि आल की निस्बत भी आप عَلَيْهِ السَّلَام ही की त़रफ़ है ।

(8) इस से इज़हारे महब्बत की तजदीद होती है क्योंकि खुद हुजूर

عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी उम्मत से अपने अहले क़राबत की महब्बत के

सिवा किसी चीज़ का सुवाल नहीं किया । (9) फिर इस में दौराने

अज़िज़ी दुआ करना और गिड़ गिड़ाना है और दुआ इबादत का

मग़ज़ है। (10) फिर इस में ए'तिराफ़ है कि तमाम इख़्तियार

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के लिये है और येह कि नबिय्ये करीम **عَلَيْهِ السَّلَام**

अपने तमाम शानो शौकत और मर्तबे के बा वुजुद रहमते खुदावन्दी **عَزَّوَجَلَّ** के मोहताज हैं। पस येह दस नेकियां इन के सिवा हैं जिस का शरीअत ने ज़िक्क किया है कि एक नेकी दस के बराबर है।

(سعادة الدارين، ص १०५ ايضاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ताजदारो रिसालत, मम्बए जूदो सखावत, कासिमे ने'मत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे शरीफ़** की कसरत अपने ऊपर लाजिम कर लीजिये कि **दुरूदे पाक** बीमारियों से शिफ़ा देता है और मसाइबो आलाम को दूर कर देता है और बसा अवकात **दुरूदे पाक** के वसीले से बिगड़ी भी बन जाती है चुनान्वे,

अनोखा मिम्बर

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन साबित **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد** फ़रमाते हैं : “नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे पाक** पढ़ने से मुतअल्लिक़ जो मुशाहदात मुझे कराए गए उन में से एक येह भी है कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि जंगल में एक **मिम्बर** है जिस पर मैं चढ़ बैठा, जब मैं उस की सीढ़ियों पर चढ़ गया तो मैं ने ज़मीन की तरफ़ नज़र की तो क्या देखता हूँ कि ज़मीन से दूर हवा में एक **मिम्बर** है, मैं कई दरजे ऊपर चढ़ गया, जब मुड़ कर देखा तो सिर्फ़ वोह दरजा नज़र आया जिस पर मेरे पाउं थे बाक़ी

कुछ नज़र न आया, मैं ने दुरूदो सलाम का वासिता दे कर

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में दुआ की : या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ**

मुझे सलामती की राह चला । इतने में पुल सिरात की मानिन्द एक सियाह धागा दिखाई दिया, मैं ने दिल में सोचा कि हो न हो येह पुल सिरात है जिस ने मुझे आ घेरा है, मेरे पास **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के फ़ज़्लो करम और रसूले अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर दुरूदो सलाम के सिवा कोई अमल ऐसा नहीं था जो इस कठिन और दुश्वार गुज़ार मन्ज़िल को उ़बूर करने में काम आए ।

इतने में हातिफ़े ग़ैबी से येह आवाज़ सुनाई दी कि अगर तुम इस मन्ज़िल को उ़बूर कर लो तो उस पार रसूले अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** और आप के सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** की मुलाकात से मुशरफ़ होगे, येह बात सुन कर मैं फूले न समाया और मैं ने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की जनाब में दुरूदो सलाम का वसीला पेश किया तो दफ़अतन मुझे एक नूरानी बादल ने उठा कर रसूले अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के क़दमों में ला डाला, क्या देखता हूँ कि सरकार **عَلَيْهِ السَّلَام** तशरीफ़ फ़रमा हैं और आप के दाई जानिब हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ**, बाई जानिब हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ**, आप के अक़ब में हज़रते सय्यिदुना उ़समाने ग़नी **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** मौजूद हैं और हज़रते क़ैम अल्लाह **تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيم** मौलाए काइनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा

भी आप के रू बरू खड़े हैं, मैं ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! आप मेरे ज़ामिन

हो जाएं, तो फ़रमाया : मैं तुम्हारा ज़ामिन हूं और तुम्हारा ख़ातिमा बिल ख़ैर होगा। फिर मैं ने दुआ की दरख्वास्त की तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ना लाज़िम कर लो और फुज़ूलिय्यात से कनारा कशी इख़्तियार करो।

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيها ورود من لطائف المراتى..... الخ، المطبعة السابعة، ص ۱۲۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** हमें हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते तय्यिबा पर कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और दुरूदो सलाम की बरकतों से माला माल फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा

चार चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने महबूब बन्दों ही को अता फ़रमाता है : (1) ख़ामोशी और येही इबादत की इब्तिदा है (2) तवक्कुल (3) तवाजोअ (4) और दुन्या से बे रग़बती।

(اتحاف السادة المتقين، کتاب ذم الکبر، ۱۰/۲۵۶)



बयान नम्बर : 28

हज़रते अली रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की करामत

एक दफ़आ यहूदियों के एक गुरौह के पास एक साइल ने आ कर सुवाल किया। उन्होंने ने अज़ राहे मज़ाक़ कहा, वोह अली खड़ा है वोह अमीर आदमी है उस के पास जाओ वोह तुम्हें बहुत कुछ देगा। हालांकि हज़रते अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ उस वक़्त खुद तही दस्त थे। साइल आप के पास आया और आते ही सुवाल किया। आप अपनी मोमिनाना फ़िरासत से भांप गए कि येह यहूदियों की शरारत है। चुनान्चे, आप ने दस बार दुरूद पढ़ कर साइल के हाथ पर दम कर दिया और फ़रमाया, इस मुठ्ठी को यहूदियों के पास जा कर खोल देना। जब वोह यहूदियों के पास गया तो उन्होंने ने पूछा कि क्या दिया है? इस पर उस साइल ने उन के सामने हथेली खोली तो उस में दस अशरफ़ियां मौजूद देख कर यहूद दम ब खुद रह गए, और कई एक यहूदी आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की येह करामत देख कर दाइराए इस्लाम में दाख़िल हो गए।

(راحة القلوب، ص ७२، مفهوماً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

शा'बान मेश महीना है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो उठते बैठते, चलते फिरते जब कभी हमें मौक़अ मिले हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की जाते बाबरकात पर दुरूदे पाक के फूल निछावर करते ही रहना चाहिये

और फिर माहे शा'बानुल मुअज्जम में तो ख़ास तौर पर कसरत के साथ दुरूदो सलाम पढ़ने का एहतिमाम करना चाहिये, क्यूंकि येह वोह खुश नसीब महीना है जिस की निस्बत हमारे प्यारे आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अपनी तरफ़ करते हुवे फ़रमाया कि शा'बान मेरा महीना है जैसा कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने मुअज्जम है : **شَعْبَانُ شَهْرِي وَرَمَضَانُ شَهْرُ اللَّهِ** या'नी शा'बान मेरा महीना है और रमज़ान **اللَّهُ** तबारक व तआला का महीना है ।

(جامع صغير، حرف الشين، ص: ३०१، حديث: ६८८९)

शा'बान में दुसुबे पाक की कसरत

याद रखिये ! येह दोनों महीने इन्तिहाई बरकत वाले हैं । इन में नेकियों का सवाब बढ़ा दिया जाता है और नेकियों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, बरकात का नुज़ूल होता है, ख़ताएं तर्क कर दी जाती हैं और गुनाहों का कफ़ारा अदा किया जाता है, लिहाज़ा हमें भी इन दोनों मुबारक महीनों का एहतिराम करते हुवे इन में ज़ियादा से ज़ियादा इबादत करनी चाहिये और अपने प्यारे आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते बा बरकत पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ना चाहिये, यूं भी येह महीना आप **عَلَيْهِ السَّلَام** पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने का महीना है । चुनान्चे, गुन्यतुत्तालिबीन में है कि

शा'बानुल मुअज्जम में ख़ैरुल बरिय्या सय्यिदुल वरा जनावे

मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक की कसरत की जाती है और येह नबिय्ये मुख्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेजने का महीना है। (غنية الطالبين، مجلس في فضل شهر شعبان، ३६२/१)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

शा'बान की आमद पर अस्लाफ़ का मा'मूल

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मा'मूल था कि इस मुबारक महीने की आमद होते ही अपना ज़ियादा तर वक़्त नेक आ 'माल में सर्फ़ करते। चुनाच्चे,

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “माहे शा'बानुल मुअज़्ज़म का चांद नज़र आते ही सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तिलावते कुरआने पाक में मशगूल हो जाते, अपने अम्वाल की ज़कात निकालते ताकि कमज़ोर व मिस्कीन लोग माहे रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों के लिये तय्यारी कर सकें, हुक्काम कैदियों को तलब कर के जिस पर हद (या'नी सज़ा) काइम करना होती उस पर हद काइम करते बक़िय्या को आज़ाद कर देते, ताजिर अपने कर्ज़े अदा कर देते, दूसरों से अपने कर्ज़े वुसूल कर लेते। (यूं माहे रमज़ानुल मुबारक का चांद नज़र आने से क़ब्ल अपने आप को फ़ारिग कर लेते) और रमज़ान शरीफ़ का चांद नज़र आते ही गुस्ल कर के (बा'ज हज़रात पूरे माह के लिये) ए'तिकाफ़ में बैठ जाते।”

(غنية الطالبين، مجلس في فضل شهر شعبان، ३६१/१)

पेशकश : मजलसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा 'वते इस्लामी)

سُبْحَانَ اللَّهِ पहले के मुसलमानों को इबादत का किस

क़दर जौक़ था ! मगर अफ़सोस ! आज कल के मुसलमानों को ज़ियादा तर हुसूले माल ही का शौक़ है । पहले के मदनी सोच रखने वाले मुसलमान मुतबर्रिक अय्याम में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा से ज़ियादा इबादत कर के उस का कुर्ब हासिल करने की कोशिश करते थे और आज कल के मुसलमान इन मुबारक अय्याम की क़द्र तक नहीं करते और अपना कीमती वक़्त फुज़ूलिय्यात में बरबाद कर देते हैं । हालांकि इस महीने में शबे बराअत ऐसी मुबारक रात है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस रात में बे शुमार लोगों की बख़्शिश फ़रमा कर उन्हें जहन्नम से आज़ादी अता फ़रमाता है । चुनान्चे,

निस्फ़ शा'बान की फ़ज़ीलत

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : “मेरे पास हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आए और अर्ज़ की, कि येह निस्फ़ शा'बान की रात है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस रात में बनी कल्ब की बकरियों के बालों के बराबर लोगों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस रात में मुशरिक, बुग़ज़ रखने वाले और क़तलू रेहमी करने वाले और तकब्बुर की वजह से अपने तहबन्द को लटकाने वाले और वालिदैन् के नाफ़रमान और शराब के आदी की तरफ़ नज़रे रहमत नहीं फ़रमाता ।”

(الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی صوم شعبان، ۷۳/۲۰، حدیث: (۱))

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

आतश बाजी का मूजिद कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** शबे बराअत जहन्नम की आग से बराअत या'नी छुटकारा पाने की रात है । मगर आज कल के मुसलमानों को न जाने क्या हो गया है कि वोह आग से छुटकारा हासिल करने के बजाए पैसे खर्च कर के खुद अपने लिये आग या'नी **आतश बाजी का सामान** खरीदते हैं और इस तरह खूब खूब आतश बाजी चला कर इस मुकद्दस रात का तकद्दुस पामाल करते हैं । **मुफ़स्सिरे** शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ** फ़रमाते हैं : “**आतश बाजी** नमरूद बादशाह ने ईजाद की जब कि उस ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** को आग में डाला और आग गुलज़ार हो गई तो उस के आदमियों ने आग के अनार भर कर उन में आग लगा कर हज़रते ख़लीलुल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** की तरफ़ फेंके ।

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 63)

हाए अफ़्सोस ! आतश बाजी की नापाक रस्म अब मुसलमानों में भी जोर पकड़ती जा रही है, मुसलमानों का करोड़हा करोड़ रुपिया हर साल **आतश बाजी** की नज़्र हो जाता है और आए दिन येह ख़बरे आती हैं कि फुलां जगह **आतश बाजी** से इतने घर जल गए और इतने आदमी झुलस कर मर गए वगैरा वगैरा । इस में जान का ख़तरा, माल की बरबादी और मकान में आग लगने का अन्देशा है, फिर येह काम **اَبْلَاٰهُ** की नाफ़रमानी भी है । हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** फ़रमाते हैं :

“आतश बाजी बनाना, बेचना, खरीदना और खरीदवाना, चलाना और चलवाना सब हुराम है।” (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 63)

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक्ते दुआ है

उम्मत पे तेरी आ के अज़ब वक्त पड़ा है

फ़रयाद है ऐ किशितये उम्मत के निगहबां

बेड़ा येह तबाही के करीब आन लगा है

आह ! दीन से दूरी के सबब आज मुसलमानों की अकसरिय्यत इस मुतबर्क व मुक़द्दस रात को भी आम रातों की तरह ग़फ़लत की नज़र कर देती है। हमें चाहिये कि इस मुबारक रात का एहतिराम करें और सारी रात आतश बाज़ी में गुज़ारने के बजाए अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** की इबादत करें और ज़ियादा से ज़ियादा सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते गिरामी पर **दुरूदे पाक** के गजरे निछावर करते रहें और हो सके तो कोई ऐसा **दुरूदे पाक** पढ़ते रहें कि जिस को कम ता'दाद में पढ़ने से ज़ियादा **दुरूद शरीफ़** पढ़ने का सवाब मिलता हो जैसा कि उ-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि जो शख्स **दस हज़ारी दुरूद शरीफ़** एक बार पढ़ ले तो गोया उस ने दस हज़ार बार **दुरूद शरीफ़** पढ़े। आइये, हुसूले बरकत के लिये आप भी **दस हज़ारी दुरूद शरीफ़** सुन लीजिये !

दस हज़ारी दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ مَا اٰخْتَلَفَ الْمَلَوَانِ وَتَعَاَقَبَ

الْعَصْرَانِ وَكَرَّ الْجَدِيدَانِ وَاسْتَقَلَّ الْفَرْقَدَانِ وَبَلَغَ رُوحُهُ

وَاَرْوَاحُ اَهْلِ بَيْتِهِ مِّنَّا التَّحِيَّةَ وَالسَّلَامَ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ عَلَيْهِ كَثِيْرًا

तर्जमा : ऐ **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** हमारे सरदार मुहम्मद (ﷺ) पर दुरूद भेज जब तक कि दिन गर्दिश में रहें और बारी बारी आएँ

सुब्हो शाम और बारी बारी आएँ रात दिन, और जब तक कि दो सितारे बुलन्द हैं और हमारी तरफ़ से आप (ﷺ) की और अहले बैत (رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ) की अरवाह को सलाम पहुंचा और बरकत दे और उन पर बहुत सलाम भेज ।

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب ! صَلَّ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

عَزَّوَجَلَّ हमारा रब हम पर कितना मेहरबान है कि हमारे एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने पर हमें दस हजार दुरूदे पाक का सवाब अता फ़रमाता है । आइये, इस ज़िम्न में एक हिकायत भी सुनते चलिये जिस में जनाबे सादिको अमीन **عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْمِ** की ज़बाने मुबारक से दुरूदे हज़ारी के बारे में उ-लमाए किराम के इस कौल की तस्दीक होती है कि जिस ने दस हज़ारी दुरूद शरीफ़ एक बार पढ़ा तो गोया उस ने दस हजार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा । चुनान्चे,

हर रात साठ हजार दुस्रोदे पाक

हज़रते सुल्तान महमूद गज़नवी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَوْفَى** की ख़िदमत में एक शख्स हाज़िर हुवा और अर्ज की, कि मैं मुहते मदीद से हबीबे रब्बे मजीद **ﷺ** की दीद की ईंदे सईद का आरजू मन्द था कि किस्मत से गुज़श्ता रात सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात **ﷺ** की ज़ियारत की सआदत मिल ही

गई। हुज़ूर मुफ़ीज़ूनूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मसरूर पा कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं एक हज़ार दिरहम का मकरूज़ हूं, इस की अदाएगी से आजिज़ हूं और डरता हूं कि अगर इसी हालत में मर गया तो बारे कर्ज़ (या'नी कर्ज़ का बोझ) मेरी गर्दन पर होगा। रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “महमूद सुबुकतगीन के पास जाओ वोह तुम्हारा कर्ज़ उतार देगा।” मैं ने अर्ज़ की : वोह कैसे ए'तिमाद करेंगे ? अगर उन के लिये कोई निशानी इनायत फ़रमा दी जाए तो करम बालाए करम होगा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जा कर उस से कहो : ऐ महमूद ! तुम रात के अब्बल हिस्से में तीस हज़ार बार दुरूद पढ़ते हो और फिर बेदार हो कर रात के आख़िरी हिस्से में मज़ीद तीस हज़ार बार पढ़ते हो। इस निशानी के बताने से वोह तुम्हारा कर्ज़ उतार देगा।” सुल्तान महमूद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَدُود ने जब शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का रहमतों भरा पैग़ाम सुना तो रोने लगे और तस्दीक़ करते हुवे उस का कर्ज़ उतार दिया और एक हज़ार दिरहम मज़ीद पेश किये। वुज़रा वग़ैरा मुतअज्जिब हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवे। आलीजा ! इस शख़्स ने एक नामुमकिन सी बात बताई है और आप ने भी इस की तस्दीक़ फ़रमा दी ? हालांकि हम आप की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं आप ने कभी इतनी ता'दाद में दुरूद शरीफ़ पढ़ा ही नहीं और न ही कोई आदमी रात

भर में साठ हज़ार बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ सकता है। सुल्तान महमूद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَدُود** ने फ़रमाया : “तुम सच कहते हो लेकिन मैं ने उ-मलाए किराम से सुना है कि जिस शख्स ने **दस हज़ारी दुरूद शरीफ़** एक बार पढ़ लिया तो गोया उस ने दस हज़ार बार **दुरूद शरीफ़** पढ़े। मैं तीन बार अव्वल शब में और तीन बार आख़िर शब में येह **दुरूद शरीफ़** पढ़ लेता हूँ। मेरा गुमान था कि इस तरह गोया मैं हर रात साठ हज़ार बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ता हूँ। जब इस खुश नसीब आशिके रसूल ने सुल्ताने दो जहां, रहमते आलमिय्यान् **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का रहमतों भरा पयाम पहुंचाया तो मुझे इस **दस हज़ारी दुरूद शरीफ़** की तस्दीक़ हो गई और मेरा गिर्या करना (या'नी रोना) इस खुशी से था कि उ-लमाए किराम का फ़रमान सहीह़ साबित हुवा क्यूंकि खुद हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** ने इस पर गवाही दी है।” (روح البيان، प २२، الاحزاب، تحت الآية १/७०५६/२३४)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें इस माहे मुबारक का एहतिराम करने, इस में ज़ियादा से ज़ियादा इबादत करने और अपने हबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم



बयान नम्बर : 29

रोज़ी में बरकत

ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जिसे कोई सख़्त हाज़त दर पेश हो तो उसे चाहिये कि मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े। क्योंकि येह मसाइबो आलाम को दूर कर देता और रोज़ी में बरकत और हाज़ात को पूरा करता है।”

(بستان الواعظین وریاض السامعین لابن جوزی، ص ۴۰۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ देखा आप ने कि दुरूदे पाक पढ़ने की किस क़दर बरकात हैं कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुताबिक़ दुरूद शरीफ़ रोज़ी में बरकत का सबब, हाज़तों को पूरा करने वाला, मुसीबतों और परेशानियों का दाफ़ेअ है। आज अगर हम अपने गिर्दो पेश पर ताइराना (उड़ती) निगाह दौड़ाएं तो हमें इस बात का ब ख़ूबी अन्दाज़ा होगा कि हमारे मुआशरे का तक़रीबन हर फ़र्द ही किसी न किसी मुसीबत में गिरिफ़्तार है, कोई क़र्ज़दार है तो कोई घरेलू नाचाक़ियों का शिकार, कोई तंगदस्त है तो कोई बे रोज़गार, कोई अवलाद का त़लबगार है तो कोई नाफ़रमान अवलाद की वजह से बेज़ार, अल ग़रज़ हर एक किसी न किसी मुसीबत में गिरिफ़्तार है। इन में सरे फ़ेहरिस्त, तंगदस्ती और रिज़क़ में बे बरकती का मस्अला है, शायद ही कोई घराना इस परेशानी से

महफूज नज़र आए । तंगदस्ती का सबबे अज़ीम खुद हमारी बे
अमली है जिस को सूरए शूरा में इस तरह बयान किया गया है :

وَمَا أَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيبَةٍ

فَمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا

عَن كَثِيرٍ ۚ

(प २५, الشورى: ३०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और तुम्हें

जो मुसीबत पहुंची । वोह इस के सबब

से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और

बहुत कुछ तो मुआफ़ कर देता है ।

जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत

शिकवा है ज़माने का न किस्मत का गिला है

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़लत की बदौलत

सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़सोस सद अफ़सोस !

कि आज हम अपने मसाइल के हल के लिये मुश्किल तरीन

दुन्यवी ज़राएअ़ इस्ति'माल करने को तो तय्यार हैं मगर **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के अ़ता कर्दा

रोज़ी में बरकत के आसान ज़राएअ़ की तरफ़ हमारी तवज्जोह

नहीं । आज कल बेरोज़गारी व तंगदस्ती के गंभीर मसाइल ने

लोगों को बेहाल कर दिया है । शायद ही कोई घर ऐसा हो जो

तंगदस्ती का शिकार न हो । इन मसाइल के बाइस हर शख़्स

परेशान है और हर फ़र्द येह चाहता है कि किसी तरह तंगदस्ती के इस

अज़ाब से छुटकारा मिल जाए और रोज़ी में बरकत हो जाए । याद

रखिये ! अगर हम अपने मसाइल **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के

प्यारे रसूल ﷺ के फ़रमान के मुताबिक़ हल करने की सड़ये पैहम (मुसलसल कोशिश) करें तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हासिल करने में ज़रूर कामयाब होंगे। चुनान्चे,

तंगदस्ती से नजात का ज़रीआ

जबरदस्त मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَاجِدِ** को ख़लीफ़े बग़दाद मामूनरुशीद ने अपने हां मदरू किया, त़अम से फ़रागत के बा'द खाने के जो दाने वग़ैरा गिर गए थे, मुहद्दिस मौसूफ़ चुन चुन कर तनावुल फ़रमाने लगे। मामून ने हैरान हो कर कहा, ऐ शैख़ ! क्या अभी तक आप का पेट नहीं भरा ? फ़रमाया : क्यूं नहीं ! दर अस्ल बात येह है कि मुझ से हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन सलमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने एक हदीस बयान फ़रमाई है कि “जो शख़्स दस्तरख़्वान पर गिरे हुवे टुकडों को चुन चुन कर खाएगा वोह तंगदस्ती से बे ख़ौफ़ हो जाएगा।” (اتحاف السادة المتقين، الباب الاول، ५/५१८)

लिहाज़ा मैं इसी हदीसे मुबारक पर अमल कर रहा हूं। येह सुन कर मामून बेहद मुतअस्सिर हुवा और अपने एक ख़ादिम की तरफ़ इशारा किया तो वोह एक हज़ार दीनार रूमाल में बान्ध कर लाया। मामून ने उस को हज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَاجِدِ** की ख़िदमत में बतौरै नज़राना पेश कर दिया।

आप **أَلْحَدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** ने फ़रमाया **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** हदीसे पाक पर अमल

की हाथों हाथ बरकत ज़ाहिर हो गई। (या'नी बैठे बिठाए मुझे एक हजार दीनार हासिल होना हृदीसे मज़कूर पर अमल ही की बरकत से है)

(ثمرات الاوراق، १/१)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! जिस तरह रोज़ी में बरकत की वुजूहात हैं इसी तरह रोज़ी में तंगी के भी अस्बाब हैं अगर इन से बचा जाए तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** रोज़ी में बरकत ही बरकत होगी। क्योंकि रिज़क़ में बरकत के तालिब के लिये ज़रूरी है कि वोह पहले बे बरकती के अस्बाब से आगाही हासिल कर के इन से छुटकारा हासिल करे, ताकि रिज़क़ में बरकत के ज़राएअ हासिल होने में कोई रुकावट पेश न आए। आप की मा'लूमात के लिये तंगदस्ती के चन्द अस्बाब बयान किये जाते हैं। चुनान्वे,

तंगदस्ती के अस्बाब

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** रिज़क़ में बे बरकती के अस्बाब बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : “आज कल रिज़क़ की बे क़द्री और बे हुर्मती से कौन सा घर ख़ाली है, बंगले में रहने वाले अरब पती से ले कर झोंपड़ी में रहने वाला मज़दूर तक इस बे एह्तियाती का शिकार नज़र आता है, शादी में किस्म किस्म के

खानों के जाएअ होने से ले कर घरों में बरतन धोते वक्त जिस तरह सालन का शोरबा, चावल और इन के अज्जा बहा कर **مَعَاذَ اللَّهِ** नाली की नज़र कर दिये जाते हैं, इन से हम सब वाकिफ़ हैं, काश रिज़्क में तंगी के इस अज़ीम सबब पर हमारी नज़र होती ।”

मजीद फ़रमाते हैं : “बिगैर हाथ धोए खाना खाना, नंगे सर खाना, चारपाई पर **बिगैर दस्तरख़्वान** बिछाए खाना, चीनी या मिट्टी के टूटे हुवे **बरतन** इस्ति’माल में रखना ख़्वाह इस में पानी पीना, येह सब रोज़ी में तंगी के अस्बाब हैं अगर इन से बचा जाए तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** रोज़ी में बरकत ही बरकत देखेंगे ।”

(तंगदस्ती के अस्बाब और इन का हल) (सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर स. 595 ता 601 मुलाख़्ख़सन)

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** ने तंगदस्ती के जो अस्बाब बयान फ़रमाए हैं उन में से चन्द येह भी हैं : चेहरा लिबास से खुश्क कर लेना, घर में **मकड़ी** के जाले लगे रहने देना, **नमाज़** में सुस्ती करना, गुनाह करना, खुसूसन झूट बोलना, **मां-बाप** के लिये दुआए ख़ैर न करना, इमामा बैठ कर बान्धना और पाजामा या शलवार खड़े खड़े पहनना, नेक आ’माल में टाल मटोल करना । (تعليم المتعلم طريق التعلم، ص ٤٣ تا ٤٦)

रिज़्क में बरकत के तालिब को चाहिये कि बे बरकती के ज़िक्र कर्दा अस्बाब का ख़याल रखते हुवे इन से नजात की हर मुमकिन सूरत में कोशिश करे और येह भी मा’लूम हुवा कि

कसरते गुनाह के सबब रिज़्क से बरकत ख़त्म हो जाती है, लिहाज़ा गुनाहों से हर सूरत बचने की कोशिश करे कि गुनाह, कसीर आफ़ात व बलव्यात के नुज़ूल का सबब भी होते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज का मुसलमान सख़्त गर्मी में रोज़गार की तलाश में मारा मारा तो फिरता है, मगर **बद किस्मती** से रिज़्क में बरकत के इस आसान और यकीनी हल को अपनाने के लिये तय्यार नहीं। काश ! हर मुसलमान अहकामे इस्लाम पर सहीह मा'नों में कार बन्द हो जाए तो **बेरोज़गारी** का मुआमला, जो आज बैनल अक्वामी मस्अला बन चुका है इस पर ब आसानी काबू पाया जा सकता है।

नमाज़े चाश्त की बरकत

तंगदस्ती से नजात के चन्द मदनी हल बयान किये जाते हैं आप भी हमातन गोश हो कर सुनिये और अमल की निय्यत भी फ़रमा लीजिये। चुनान्वे, मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं : दो चीज़ें कभी जम्अ नहीं हो सकतीं **मुफ़िलसी** और **चाश्त की नमाज़** (या'नी जो कोई चाश्त की **नमाज़ का पाबन्द** होगा, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** कभी **मुफ़िलस** न होगा।)

हज़रते शफ़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : हम ने पांच चीज़ों की ख़्वाहिश की तो वोह हम को पांच चीज़ों में दस्तयाब हुई। (इस में से एक येह भी है) कि जब हम ने रोज़ी

में बरकत तलब की तो वोह हम को नमाजे चाशत पढ़ने में मयस्सर हुई । (या'नी रिज़्क में बरकत पाई)

(نزهة المجالس، باب فضل الصلوات ليلا ونهاراً ومتعلقاتها، ۱/۱۶۶)

सूरए वाकिअ का हमेशा बिल खुसूस बा'दे मगरिब पाबन्दी से पढ़ना । नमाजे तहज्जुद पढ़ते रहना, तौबा करते रहना और फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्जों के दरमियान सत्तर बार इस्तिग़फ़ार करना, घर में आयतुल कुर्सी और सूरए इख़लास पढ़ना और बकसरत दुरूद शरीफ़ पढ़ना रिज़्क में बरकत के अस्बाब में से है ।

(सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर स. 609 मुख़ब़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

साहिबे तोहफ़तुल अख़्यार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار ने एक हदीसे पाक नक्ल की है कि सरकारे नामदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे मुश्क बार है : “जो मुझ पर रोज़ाना पांच सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें वोह कभी मोहताज न होगा ।” (روح البيان، प २२، الاحزاب، تحت الآية: ५६، २३/१/५६)

(المستطرف، الباب الرابع والثمانون، فيما جاء في فضل الصلاة على الرسول، २/५०८)

फिर इस हदीस शरीफ़ को नक्ल करने के बा'द येह वाकिअ बयान फ़रमाया : “एक नेक आदमी था उस ने येह हदीस सुनी तो ग़लबए शौक के साथ पांच सो बार दुरूद शरीफ़ का रोज़ाना

विर्द शुरूअ कर दिया । इस की बरकत से **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस

को गनी कर दिया और ऐसी जगह से उसे रिज़्क अता फ़रमाया कि उसे पता भी न चल सका, हालांकि इस से पहले वोह मुफ़्लिस और हाजतमन्द था ।

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** फ़रमाते हैं : “अगर कोई शख्स मज़कूरा ता’दाद में **दुरूदे पाक** का विर्द करे और मज़कूरा तंगदस्ती के अस्बाब से बचते हुवे इस से नजात के हल भी अपनाए, मगर फिर भी उस का फ़क्र (या’नी तंगदस्ती व मोहताजी) दूर न हो तो येह उस की निय्यत का फ़तूर (या’नी फ़साद) है कि उस के बातिन में ख़राबी की वजह से काम नहीं बन सका ।”

दर अस्ल दुरूदे पाक पढ़ने या मज़कूरा अस्बाब से बचने और नजात के हल अपनाने में निय्यत **عَزَّوَجَلَّ** और उस के प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का कुर्ब हासिल करने की हो तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** मोहताजी ज़रूर दूर होगी ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मोहताजी सिर्फ़ माल की कमी का नाम नहीं है बल्कि बसा अवकात माल की कसरत के बा वुजूद भी इन्सान मोहताजी का शिक्वा करता है और येह मज़मूम फ़े’ल है । **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** मज़कूरा आ’माले सालेहा की बरकत से क़नाअत की दौलत नसीब होगी और क़नाअत (या’नी जो मिल जाए उस पर राज़ी रहना) ही अस्ल में ग़ना (या’नी दौलत मन्दी) है और दुन्यावी माल का हरीस (या’नी लालची) ही हकीकत में मोहताज है । कोई ख़्वाह कितना ही मालदार हो, क़नाअत वोह ख़ज़ाना है जो कि ख़त्म होने वाला नहीं और दुन्यावी माल से

यकीनन अफ़ज़ल है, क्यूंकि दुन्यावी माल फ़ानी भी है और वबाल भी, कि कियामत में हिसाब देना पड़ेगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें माले दुन्या की महब्वत से नजात अता फ़रमा कर क़नाअत की लाज़वाल ने'मत नसीब फ़रमा और तंगदस्ती के अस्बाब से बचने और रिज़्क की क़द्र करने और सुन्नत के मुताबिक़ खाना खाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा

रहमते अलमिय्यान **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने जन्नत निशान है, जिस ने बुध, जुमा'रात व जुमुआ को रोजे रखे **अल्लाह** तअाला उस के लिये जन्नत में एक मकान बनाएगा जिस का बाहर का हिस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का बाहर से । (مجمع الزوائد، ۴/۵۲، حدیث: ۵۲۰۴)



बयान नम्बर : 30

गुलाम आजाद करने से अफ़ज़ल अमल

हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :
 النَّبِيُّ عَلَى النَّبِيِّ أَمْحَقُّ لِلْخَطَايَا مِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ :
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ना ठन्डे पानी से भी ज़ियादा ख़ताओं को मिटाता है ।
 وَالسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ أَفْضَلُ مِنْ عِتْقِ الرِّقَابِ और
 सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर सलाम पढ़ना गर्दने
 (गुलामों को) आजाद करने से अफ़ज़ल है ।”

(درمنثور، ۲/۲۲، الاحزاب، تحت الآية: ۵۲، ۶/۲۵۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि दुरूदे पाक पानी के ज़रीए आग बुझाने से भी बढ़ कर ख़ताओं को मिटाने में मुअस्सिर है या’नी जिस तरह ठन्डा पानी आग की शिद्दत व तमाज़त को बहुत जल्द ख़त्म करता है इसी तरह प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ना भी हमारी ख़ताओं को मिटाता है बल्कि ख़ताएं मिटाने में येह तो पानी से आग को बुझाने से भी ज़ियादा सरीइल असर है । लिहाज़ा हमें भी आप عَلَيْهِ السَّلَام पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहना

चाहिये ताकि **اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ** दुरूदे पाक की बरकत से हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दे ।

बारे इस्यां की तरक्की से हुवा हूं जां बलब
मुझ को अच्छा कीजिये हालत मेरी अच्छी नहीं

(जौके ना'त, स. 129)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूद शरीफ़ की कसरत के ब कसरत फ़ज़ाइल हम सुनते ही रहते हैं, इन फ़ज़ाइल व बरकात को सुन कर हो सकता है कि हम में से किसी के ज़ेहन में येह सुवाल पैदा हो कि आख़िर कसरते दुरूद की ता'रीफ़ क्या है ? क्या चोबीस घन्टे **दुरूदो सलाम** ही पढ़ते रहें जभी हम कसरत से **दुरूदो सलाम** पढ़ने वाले कहलाएंगे ? इस उक़दे (गुथ्थी) को हल करने के लिये मुस्तनद किताबों से कसरते दुरूद की ता'रीफ़ में चन्द बुजुर्गाने दीन के अक्वाल पेश किये जाते हैं । इन में से किसी भी बुजुर्ग के बताए हुवे अ़दद को मा'मूल बना लें तो आप का शुमार भी कसरत से **दुरूदो सलाम** पढ़ने वालों में हो जाएगा । और **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ** वोह तमाम बरकात व समरात हासिल होंगे जिन का अह़ादीसे मुबारका में तज़क़िरा है । और हक़ीक़त तो येह है कि अगर किसी को करोड़ों साल की उम्र मिल जाए और वोह हर लम्हा **दुरूदो सलाम** ही पढ़ता रहे फिर भी उस का हक़ अदा नहीं हो सकता । चुनान्वे,

कसरत से दुस्द पढ़ने की ता'रीफ़

अबुल हसन दारिमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने अबू अब्दुल्लाह बिन हामिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَاجِد को मौत के बा'द कई मरतबा ख़्वाब में देखा और पूछा : **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या सुलूक किया ? फ़रमाया : मुझे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने बख़्श दिया और रहूम फ़रमाया । इसी तरह एक मरतबा हज़रते दारिमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने पूछा कि कोई ऐसा अमल बताइये जिस के ज़रीए जन्नत में दाख़िल होना नसीब हो जाए । तो उन्होंने ने फ़रमाया : एक हज़ार रक्अत नफ़ल अदा करो, और इन में से हर रक्अत में एक हज़ार मरतबा **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** (पूरी सूरत) पढ़ लिया करो । उन्होंने ने कहा : येह तो मुझ से नहीं हो सकेगा तो हज़रते अबू अब्दुल्लाह बिन हामिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَاجِد ने कहा कि फिर मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर हर रात हज़ार मरतबा **दुरूदो सलाम** पढ़ लिया करो । हज़रते दारिमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि इस के बा'द से हर रात एक हज़ार मरतबा **दुरूदे पाक** पढ़ना मेरा मा'मूल बन गया ।

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيماورد من لطائف المرائي والحكايات..... الخ، اللطيفة السابعة والعشرون، ص ۱۳۶)

हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “रोज़ाना कम अज़ कम सो (100) बार **दुरूदे पाक** ज़रूर पढ़ना चाहिये ।” (جذب القلوب، ص ۲۳۱) मज़ीद फ़रमाते हैं : “बा'ज **दुरूद शरीफ़** के ऐसे सीगे भी हैं कि जिन के पढ़ने से हज़ार (1000) का अदद ब आसानी और जल्द पूरा हो जाता है मसलन “**صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**” लिहाज़ा इसी को वज़ीफ़ा बना लेना

चाहिये । और वैसे भी जो कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने का आदी होता है उस पर वोह आसान हो जाता है । गरज येह कि जो आशिके सादिक होता है उसे दुरूदो सलाम पढ़ने से वोह लज्जत व शीरीनी हासिल होती है जो उस की रूह को तक्वियत पहुंचाती है ।
(جذبُ القلوب، ص २३२)

अल्लामा नबहानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي कसरत की ता'रीफ़ में एक बुजुर्ग का कौल नक्ल करते हुवे फ़रमाते हैं : “कम अज़ कम रोज़ाना साढ़े तीन सो बार दिन में और हर शब में साढ़े तीन सो बार दुरूदे पाक पढ़ा जाए ।” (افضل الصلوات على سيد السادات، ص ३०) मज़ीद फ़रमाते हैं : कि हज़रते इमाम शा'रानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي ने अपनी किताब “अन्वारुल कुदसिय्या” में फ़रमाया है : “हम से रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अहद लिया कि हम आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर हर रात ब कसरत दुरूदो सलाम पढ़ा करेंगे और अपने भाइयों के आगे इस का अज़्रो सवाब बयान किया करेंगे और आप عَلَيْهِ السَّلَام से इज़हारे महब्बत के लिये उन्हें पूरी तरगीब देंगे और येह कि हम हर दिन और रात और सुब्ह और शाम एक हज़ार से ले कर दस हज़ार तक दुरूदो सलाम का विर्द किया करेंगे ।” (لواقح الانوار القدسيّة في بيان العهود المحمدية للشعراني، ص २१०)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़ाना सो बार, तीन सो बार, या सुब्हो शाम दो दो सो बार बल्कि रोज़ाना एक हज़ार बार दुरूदो सलाम पढ़ना भी ज़ियादा मुश्किल काम नहीं । लेकिन येह सुवाल ज़रूर पैदा होता है कि बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ الْمُبِين रोज़ाना दस दस हज़ार बार बल्कि चालीस चालीस हज़ार बार

दुरूद शरीफ़ किस तरह पढ़ते होंगे ? और उन्हें दूसरी इबादात, घरेलू और मुआशी मुआमलात, फिर सुन्नतों की तब्लीग़ और तआम व आराम वगैरा के लिये किस तरह वक़्त मिलता होगा ?

इस का जवाब येह है कि बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللهُ السَّيِّئِينَ हमारी तरह दुनिया की महबूबत में गिरिफ़्तार नहीं थे और न ही हमारी तरह हरज़ा गोई (फुज़ूल बातें) उन का शैवा था । हम लोगों ने शैतान के फ़रैब में आ कर इस चन्द रोज़ा ज़िन्दगी ही को सब कुछ समझ रखा है । और हर वक़्त, हर लम्हा इस फ़ानी दुनिया की आराइशों और आसाइशों में गुम हैं ।

अफ़सोस ! क़ब्र की त़वील ज़िन्दगी और आख़िरत की कड़ी और कठिन तरीन मन्ज़िल की तरफ़ हमारी बिल्कुल तवज्जोह नहीं । बुजुर्गाने दीन और औलियाए कामिलीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ को इस बात का मुकम्मल एहसास रहता है कि यहां की ज़िन्दगी चन्द रोज़ा है, येह आनन फ़ानन ख़त्म हो जाएगी । जो कुछ है वोह मरने के बा'द वाली अबदी ज़िन्दगी है ।

नीज़ औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام और बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللهُ السَّيِّئِينَ को येह भी एहसास होता है कि दुनिया की मुख़्तसर सी ज़िन्दगी पर ही बा'द वाली त़वील ज़िन्दगी का इन्हिसार है । अगर दुनिया की ज़िन्दगी ऐश परस्ती और नाफ़रमानी में न गुज़ारी तो मरने के बा'द रहमते खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ अबदी व सरमदी ने'मतों की उम्मीदे वासिक् (या'नी क़वी उम्मीद) है । चुनान्चे, येह **अल्लाह** वाले अपनी ज़िन्दगी इस्लाम के ज़र्री उसूलों और प्यारे

महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों और आप की ज़ाते तय्यिबा पर दुरूदे पाक पढ़ने में गुज़ार देते हैं ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन जब एक आशिके सादिक सरकारे दो आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की सुन्नतों पर अमल करता है और सिदके दिल से जाने दो आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर **दुरूदे पाक** पढ़ने को अपनी आदत बना लेता है तो फिर वोह गमख्वार आका **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** दुखी दिलों के दर्द का मुदावा बन कर कभी तो ऐन बेदारी के आलम में और कभी ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर शरबते दीदार पिलाते हैं और हाजत मन्दों की हाजत रवाई भी फ़रमाते हैं । चुनान्चे,

इमाम बूसैरी पर सरकार का करम

इमाम बूसैरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं कि मुझ पर फ़ालिज का शदीद हम्ला हुवा जिस की वजह से मेरा निस्फ़ जिस्म बिल्कुल बे हिंसो हरकत हो गया । बहुत इलाज करवाया मगर ख़ातिर ख़्वाह फ़ाइदा न हुवा । इन्तिहाई यास व हिरास की हालत में मैं ने सोचा कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की शान में एक क़सीदा लिखूं और उस के तवस्सुत से बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अपनी सिहहतयाबी के लिये दुआ करूं, **اَللّٰهُمَّ جَلِّ شَأْنَهُ** के फ़ज़्लो करम से मैं अपने इस इरादे में कामयाब हो गया । चुनान्चे, मैं ने क़सीदा (बुर्दा शरीफ़) लिखना शुरू किया, क़सीदे का इख़िताम होते ही मैं नींद की आगोश में चला गया । सर की आंखें तो क्या बन्द हुई दिल की आंखें रोशन हो गई, मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले

कर जाग उठी, क्या देखता हूं कि मेरे ख़्वाब में नबिय्ये करीम
 صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना दस्ते
 मुबारक मेरे जिस्म पर फेरा और अपनी मुबारक चादर मेरे जिस्म
 पर डाल दी। इस की बरकत से मैं फ़ौरन सिहूहतयाब हो
 गया। जब मैं नींद से बेदार हुवा तो अपने आप को खड़े होने और
 हरकत करने के काबिल पाया।

يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اُنْظُرْ حَالَنَا तालिबे नज़रे करम बदकार है
 يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ اِسْمَعْ قَالَنَا इल्तिजा या सय्यिदल अबरार है
 اِنْنِیْ فِیْ بَحْرِ هَمِّ مُغْرَقٌ नाव डांवां डोल दर मंजधार है
 خُذْیْدِیْ سَهْلًا لَّنَا اَشْكَالَنَا नाख़ुदा आओ तो बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वस्वशा और इस का जवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ही शिफ़ा
 देने वाला है मगर इस हिकायत को सुन कर वस्वसे आते हैं कि
 क्या **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के इलावा भी कोई शिफ़ा दे सकता है ?

इस वस्वसे का इलाज येह है कि बेशक ज़ाती तौर पर
 सिर्फ़ और सिर्फ़ **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ही शिफ़ा देने वाला है, मगर
اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से उस के बन्दे भी शिफ़ा दे सकते हैं।
 हां अगर कोई येह दा'वा करे कि **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की दी हुई ताक़त
 के बिग़ैर फुलां दूसरे को शिफ़ा दे सकता है तो यकीनन वोह काफ़िर
 है। क्यूंकि शिफ़ा हो या दवा एक ज़र्रा भी कोई किसी को **اَلलّٰهُ**
عَزَّوَجَلَّ की अ़ता के बिग़ैर नहीं दे सकता। हर मुसलमान का येही

अक़ीदा है कि अम्बिया व औलिया عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَرَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى जो कुछ भी देते हैं वोह महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से देते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर कोई येह अक़ीदा रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी नबी या वली को मरज़ से शिफ़ा देने या कुछ अ़ता करने का इख़्तियार ही नहीं दिया। तो ऐसा शख्स हुक्मे कुरआनी को झुटला रहा है। पारह 3 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 49 और इस का तर्जमा पढ़ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ वस्वसे की जड़ कट जाएगी और शैतान नाकाम व नामुराद होगा। चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ के मुबारक क़ौल की हिकायत करते हुवे कुरआने पाक में इरशाद होता है :

وَأُبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ
وَأُحْيِي الْمَوْتَى بِإِذْنِ اللَّهِ

(प ३, आल इमरान : ४९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं शिफ़ा देता हूं मादरज़ाद अन्धों और सफ़ेद दाग़ वाले (या'नी कोढ़ी) को और मैं मुर्दे जिलाता हूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से।

देखा आप ने ? हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَزَّوَجَلَّ साफ़ साफ़ फ़रमा रहे हैं कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बख़्शी हुई कुदरत से मादरज़ाद अन्धों को बीनाई और कोढ़ियों को शिफ़ा देता हूं। हत्ता कि मुर्दों को भी ज़िन्दा कर दिया करता हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَامُ को तरह तरह के इख़्तियारात अ़ता किये गए हैं और फ़ैज़ाने अम्बिया से औलिया को भी अ़ता किये जाते हैं लिहाज़ा वोह भी शिफ़ा दे

सकते हैं और बहुत कुछ अता फ़रमा सकते हैं। जब हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की येह शान है तो आकाए ईसा, सरदार अम्बिया, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शाने अज़मत निशान कैसी होगी ! येह याद रखिये कि सरवरे काइनात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जमीअ मख़्लूक़ात और जुम्ला अम्बिया व मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام के कमालात के जामेअ हैं, बल्कि जिस को जो मिला आप عَلَيْهِ السَّلَام ही के सदके मिला ।

तो मा'लूम हुवा कि जब सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام मरीजों को शिफ़ा, अन्धों को आंखें और मुर्दों को ज़िन्दगी दे सकते हैं तो सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ येह सब बदरजए औला अता फ़रमा सकते हैं ।
(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 51 ता 53)

हुस्ने यूसुफ़ दमे ईसा पे नहीं कुछ मौकूफ़
जिस ने जो पाया है, पाया है बदौलत उन की

(जौके ना'त, स. 153)

अब्बाह عَزَّوَجَلَّ हमें हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सच्ची महब्बत अता फ़रमाए और आप عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ात पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم



बयान नम्बर : 31

भलाई के तलबगार

ख़ातिमुल मुर्सलीन, रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है : “ مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَحَمِدَ الرَّبَّ وَصَلَّى عَلَى النَّبِيِّ وَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ ” या’नी जिस ने कुरआने पाक की तिलावत की और रब तअ़ाला की हम्द बयान की और फिर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की मग़फ़िरत त़लब की, فَقَدْ طَلَبَ الْخَيْرَ مَكَانَهُ तो यकीनन उस ने भलाई को अपनी जगह से तलाश कर लिया ।” (दरमन्थूर, प ३०, ذکر دعاء ختم القرآن, ११/८/१३९०)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी भलाई और मग़फ़िरत के त़लबगार और **اَبَّوْه** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिज़ा के ख़्वाहिश मन्द हैं तो हमें भी चाहिये कि हमा वक़्त शौक़ व महब्बत के साथ ब कमाले खुशूअ व खुजूअ दिल को सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ मुतवज्जेह कर के आप की जाते गिरामी पर दुरूदो सलाम के गजरे निछावर करते रहें तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्बत हमारे दिलों में जा गुर्जों होगी और जिसे सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की महब्बत नसीब हो गई यकीनन वोह दुन्या व आख़िरत में सुख़ रू हो गया ।

सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत में इस क़दर मुन्हमिक व मुस्तग़क़ रहा करते थे कि उन्हें दुन्या व माफ़िहा से कोई रग़बत न होती, वोह हज़रात अकसर अवकात जल्वए महबूब की ताबानियों से महजूज़ होते और हर लम्हा आप की सोहबते बा बरकत में रहना पसन्द करते, आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** से जुदाई उन्हें हरगिज़ गवारा न थी हत्ता कि हमारे प्यारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** की ज़ाते मुक़द्दसा को अपने अहले ख़ाना पर तरजीह देते। चुनान्चे,

जैद बिन हारिशा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** का इश्के रसूल

हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا** ने हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** से निकाह के बा'द अपने गुलाम हज़रते जैद बिन हारिशा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** को सरकार **عَلَيْهِ السَّلَام** की ख़िदमत में बतौर पेश कर दिया, आप **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** सिगर सिनी (बचपन) ही से बारगाहे रिसालत में रहा करते और आप की सोहबते बा बरकत में रह कर आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** के दीदारे पुर बहार से फैज़याब हुवा करते, हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** की बे पनाह शफ़क़तों की वजह से आप की महब्बत में ऐसे गिरिफ़्तार हुवे कि मां-बाप और दीगर अहले ख़ाना की याद न आती। एक बार इन के वालिद और चचा फ़िदये की रक़म ले कर इन को गुलामी से छुड़ाने की ख़ातिर मक्काए मुकर्रमा पहुंचे, तहकीक़ की, पता चलाया और हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** की ख़िदमत

में पहुंच कर अर्ज की : ऐ हाशिम की अवलाद और कौम के सरदार ! आप हरम के रहने वाले और **अब्ल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के घर के पड़ोसी हैं, कैदियों को रिहा कराते और भूकों को खाना खिलाते हैं। हम अपने बेटे की तलब में आप के पास पहुंचे हैं हम पर एहसान फ़रमाते हुवे फ़िदया क़बूल करें और उस को रिहा कर दें बल्कि जो फ़िदया हो उस से ज़ियादा ले लें, हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : बस इतनी सी बात है ? अर्ज की ! जी हां ! आप **عَلَيْهِ السَّلَام** ने इरशाद फ़रमाया : उस को बुलाओ और उस से पूछ लो अगर वोह तुम्हारे साथ जाना चाहे तो बिगैर फ़िदया ही के वोह तुम्हारी नज़्र है और अगर न जाना चाहे तो मैं ऐसे शख्स पर ज़ब्र नहीं कर सकता जो खुद न जाना चाहे। उन्होंने ने अर्ज की, कि आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इस्तिहकाक़ से भी ज़ियादा एहसान फ़रमाया येह बात खुशी से मन्ज़ूर है। जब हज़रते जैद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बुलाए गए आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : तुम इन को पहचानते हो ? अर्ज किया : जी हां ! पहचानता हूं येह मेरे बाप और येह मेरे चचा हैं। हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि मेरा हाल भी तुम्हें मा'लूम है। अब तुम्हें इख़्तियार है कि मेरे पास रहना चाहो तो मेरे पास रहो, इन के साथ जाना चाहो तो इजाज़त है।

हज़रते जैद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अर्ज की : हुज़ूर ! मैं आप के मुक़ाबले

में भला किस को पसन्द कर सकता हूं आप मेरे लिये बाप की जगह भी हैं और चचा की जगह भी हैं। इन के वालिद और चचा ने कहा कि जैद गुलामी को आज़ादी पर तरजीह देते हो ? बाप चचा और सब घर वालों के मुक़ाबले में गुलाम रहने को पसन्द करते हो ? हज़रते जैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने (हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ इशारा कर के) फ़रमाया : “हां मैं ने इन में ऐसी बात देखी है जिस की वजह से मैं इन के मुक़ाबले में किसी चीज़ को भी पसन्द नहीं कर सकता।” हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जब येह जवाब सुना तो फ़र्ते महब्बत से उन को गोद में उठा लिया और फ़रमाया : “मैं ने इस को अपना बेटा बना लिया।” हज़रते जैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के वालिद और चचा भी येह मन्ज़र देख कर बहुत खुश हुवे और ब खुशी उन को छोड़ कर चले गए। (الاصابة في تمييز الصحابة، زيد بن حارثة، ٢/ ٢٩٥ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हज़रते जैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बचपन की हालत में बेचैन दिलों के चैन, रहमते दारै न صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से महब्बत की ख़ातिर अपने घर वालों और अज़ीज़ो अक़ारिब के पास जाना पसन्द नहीं किया, तो क्या हम महब्बते रसूल का दम भरने वाले अपना थोड़ा सा वक़्त निकाल कर एहतिमाम के साथ हमारे मोहसिन आक़ा عَلَيْهِ السَّلَام पर दुरूदे पाक भी नहीं पढ़ सकते हालांकि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तो हुज़ूर की महब्बत में अपने दिन रात दुरूदे पाक पढ़ने में सर्फ़ फ़रमा दिया करते थे। चुनान्चे,

दम ब दम सल्ले अल्ला

हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि उन्होंने ने अर्ज किया : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर बहुत ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ा करता हूं, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बता दीजिये कि दिन का कितना हिस्सा दुरूद ख़्वानी के लिये मुक़र्रर कर दूं ?” तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : **مَا شِئْتَ** या'नी तुम जिस क़दर चाहो मुक़र्रर कर लो । हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज किया कि दिन रात का चौथाई हिस्सा दुरूद ख़्वानी के लिये मुक़र्रर कर लूं ? तो सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : **مَا شِئْتَ فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ** या'नी तुम जिस क़दर चाहो मुक़र्रर कर लो, हां अगर तुम चौथाई से ज़ियादा हिस्सा मुक़र्रर कर लोगे तो तुम्हारे लिये बेहतर ही होगा । हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज की, कि मैं दिन रात का निस्फ़ हिस्सा दुरूद ख़्वानी के लिये मुक़र्रर कर लूं ? तो हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : **مَا شِئْتَ فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ** तुम जिस क़दर चाहो मुक़र्रर कर लो और अगर तुम इस से भी ज़ियादा वक़्त मुक़र्रर कर लोगे तो तुम्हारे लिये बेहतर ही होगा । तो हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा मैं दिन रात का दो तिहाई मुक़र्रर कर लूं ? तो

हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : **مَا شِئْتَ فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ**

तुम जितना चाहो वक्त मुक़रर कर लो और अगर तुम इस से ज़ियादा वक्त मुक़रर करोगे तो तुम्हारे लिये बेहतर ही होगा । तो हज़रते उबय्य बिन का'ब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अर्ज़ की : **أَجْعَلْ لَكَ صَلَاتِي كُلَّهَا** मैं दिन रात का कुल हिस्सा दुरूद ख़वानी ही में सर्फ़ करूंगा ।” तो सरकार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **إِذَا تَكْفَى هَمُّكَ وَيُغْفَرُ لَكَ ذَنْبُكَ** अगर तुम ऐसा करोगे तो दुरूद शरीफ़ तुम्हारी तमाम फ़िक्रों और ग़मों को दूर करने के लिये काफ़ी हो जाएगा और तुम्हारे तमाम गुनाहों के लिये कफ़ारा हो जाएगा ।” (ترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ۲۳، ۲۴/۴، حدیث: ۲۴۶۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते मौलाना नकी अली ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** अपनी किताब “अन्वारे जमाले मुस्तफ़ा” में फ़रमाते हैं कि बुजुर्ग़ तरिन समरात और गिरामी तरिन फ़वाइदे सलात येह हैं कि जब आदमी दुरूदे पाक के आदाब का लिहाज़ रखते हुवे सरदारे मक्कए मुक़रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते तय्यिबा पर कसरत के साथ दुरूद भेजता है तो आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महब्बत उस के तमाम दिल को घेर लेती है और इस शजरे महब्बत से हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** की ताअत व इत्तिबाअ का समरा

हासिल होता है । (अन्वारे जमाले मुस्तफ़ा, स. 240 मफ़हूमन व मुलख़ब़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिजा जरूरी है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम जब भी नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जाते बा बरकत पर **दुरूदे पाक** पढ़ें तो इस बात का खास खयाल रखें कि इस से मक्सूद सिर्फ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिजा हो, न कि कोई और गरज और अगर बिलफर्ज हमारी कोई मुश्किल है भी तो **दुरूदे पाक** इस निय्यत से न पढ़ा जाए कि मेरी येह गरज पूरी हो, या मुझे येह फ़ाइदा हासिल हो, या मेरी येह मुश्किल हल हो जाए बल्कि आदाब को मल्हूजे खातिर रखते हुवे नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये और इस के वसीले से रब तअ़ाला की बारगाह में गिड़ गिड़ा कर आजिजी व इन्किसारी के साथ अपने मक़ासिद व मतालिब के लिये भी दुआ करनी चाहिये إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से क़बूलिय्यत की उम्मीद है ।

जैसा कि शैख़ अबू इस्हाक़ शातिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْبَى शर्हे अलफ़िया में फ़रमाते हैं कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में पेश किया जाने वाला **दुरूदे पाक** यकीनन मक़बूल है और इस के साथ जब कोई दुआ मांगी जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ल से वोह भी क़बूल की जाएगी ।

(مطالع المسرات، ص ३०३)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

हालते बेदारी में जवाबे सलाम

हज़रते सय्यिदुना महमूदुल कुर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي अपनी किताब “अलबाक़ियातुस्सालिहात” में फ़रमाते हैं : एक रात जब मैं सोया तो मेरी किस्मत का सितारा चमक उठा ! क्या देखता हूँ कि मेरे ख़्वाब में शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ले आए । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कमाले शफ़क़त फ़रमाते हुवे मुझे सीने से लगा लिया और इरशाद फ़रमाया : **اَكْثِرُوا عَلَيَّ مِنَ الصَّلَاةِ** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो । नीज़ मुझे अपनी और **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा व खुशनूदी की खुश ख़बरी सुनाई, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इस क़दर महब्बत देख कर मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए, मुझे अपनी किस्मत पर रश्क आ रहा था कि आप عَلَيْهِ السَّلَام ने मेरा ऐसा वालेहाना इस्तिक़बाल फ़रमाया और मुझे इतनी इज़्ज़त से नवाज़ा, मैं ने देखा कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मुबारक आंखों से भी फ़र्ते शफ़क़त और जोशे महब्बत से आंसू रवां थे, इतने में मेरी आंख खुल गई मेरे रुख़्सार पर अब तक आंसू बह रहे थे इस के बा’द मैं मुवाजहा शरीफ़ की तरफ़ गया तो मैं ने **रौज़ए मुबारका** के अन्दर से ऐसी ऐसी बिशारतें सुनीं जो बयान से बाहर हैं । अभी मैं मुवाजहा शरीफ़ के पास ही खड़ा था कि ऐन बेदारी के अ़लम में मैं ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़बाने मुबारक से अपने

सलाम का जवाब सुना तो मुझे इस बात का कामिल यकीन हो गया कि आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपने रौज़ए अन्वर में न सिर्फ़ हयात हैं बल्कि मुसलमानों के सलाम का जवाब भी अता फ़रमाते हैं। (سعادة الدارين، الباب الرابع فيملورد من لطائف المرائي الخ، اللطيفة الحادي والتسعون، ص ١٥١ ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि **दुरूदो सलाम** पढ़ने वाले से सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** किस क़दर महबूबत फ़रमाते हैं और उस की ज़बान से अदा होने वाले दरूदो सलाम के कलिमात को न सिर्फ़ ब नफ़से नफ़ीस समाअत फ़रमाते हैं बल्कि खुश हो कर उसे अपने दीदार से भी मुशरफ़ फ़रमाते हैं।

तुम को तो गुलामों से है कुछ ऐसी महबूबत

है तर्कें अदब वरना कहें ! हम पे फ़िदा हो

(जौक़े ना'त, स. 175)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें सरकार **عَلَيْهِ السَّلَام** की बारगाह में महबूबत व शौक के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हमें इस के फ़वाइद व बरकात से बहरामन्द फ़रमा।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



मुबारक पर्चा

क्रियामत के दिन किसी मुसलमान की नेकियां मीज़ान (या'नी तराजू) में हल्की हो जाएंगी तो **सरवरे काइनात**, शाहे मौजूदात, महबूबे रब्बिल अर्दे वस्समावात (ﷺ) एक पर्चा अपने पास से निकाल कर नेकियों के पलड़े में रख देंगे तो उस से नेकियों का पलड़ा वज़नी हो जाएगा। वोह अर्ज़ करेगा : “मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! आप कौन हैं ?” **हुज़ूर** (ﷺ) फ़रमाएंगे : “मैं तेरा नबी **मुहम्मद** (ﷺ) हूं और येह तेरा वोह **दुरूदे पाक** है जो तूने मुझ पर पढ़ा था।”

(मوسुवे ابن ابی دنیا فی حسن الظن بالله، ۱/ ۹۱، حدیث: ۹۷)

वोह पर्चा जिस में लिखा था **दुरूद इस ने कभी**
येह उस से **नेकियां इस की बढ़ाने आए हैं**

(सामाने बख़्शाश, स. 126)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत से **दुरूदे पाक** की बरकत का बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि जहां दुनिया में इस के फ़वाइद व समरात हासिल होते हैं वहीं उख़रवी फ़ज़ाइलो बरकात का हुसूल भी होता है। **दुरूदे पाक** पढ़ना ऐसा अमल है कि जिसे खुद ख़ालिके अर्दे वस्समावात **عَزَّوَجَلَّ** और उस के मा'सूम फ़िरिश्ते भी करते हैं। **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ

عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا

تَسْلِيمًا ٥٦ (پ ۲۲، الاحزاب: ۵۶)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक

अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते

दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले

(नबी) पर ऐ ईमान वालो ! उन पर

दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो ।

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** और फ़िरिश्तों का अमल

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَلَاءِ** अपनी मायानाज़ किताब “शाने हबीबुर्हमान मिन आयातिल कुरआन” में फ़रमाते हैं : “मज़कूरा बाला आयाते करीमा सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सरीह ना’त है । इस में ईमान वालों को प्यारे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदो सलाम भेजने का हुक्म दिया गया है । लुत्फ़ की बात येह है कि **अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ**** ने कुरआने करीम में काफ़ी अहकामात सादिर फ़रमाए मसलन नमाज़, रोज़ा, हज़, वग़ैरा वग़ैरा । मगर किसी जगह येह इरशाद नहीं फ़रमाया कि येह काम हम भी करते हैं, हमारे फ़िरिश्ते भी करते हैं और ईमान वालो ! तुम भी किया करो । सिर्फ़ दुरूद शरीफ़ के लिये ही ऐसा फ़रमाया गया है । इस की वजह बिल्कुल ज़ाहिर है । क्यूंकि कोई काम भी ऐसा नहीं जो खुदा **عَزَّوَجَلَّ** का भी हो और बन्दे का भी । यकीनन **अल्लाह**

तबारक व तआला के काम हम नहीं कर सकते और हमारे कामों

से **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** बुलन्दो बाला है। अगर कोई काम ऐसा है जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का भी हो, मलाइका भी करते हों और मुसलमानों को भी उस का हुक्म दिया गया हो वोह सिर्फ और सिर्फ आकाए दो जहां **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद भेजना है। जिस तरह हिलाले ईद पर सब की नजरें जम्अ हो जाती हैं इसी तरह मदीने के चांद पर सारी मख़लूक की और खुद ख़ालिक **عَزَّوَجَلَّ** की भी नज़र है।

जिस के हाथों के बनाए हुवे हैं हुस्नो जमाल
ऐ हसीं ! तेरी अदा उस को पसन्द आई है

(जौके ना'त, स. 175)

ऐसा तुझे ख़ालिक ने तरहदार बनाया
यूसुफ़ को तेरा त़ालिबे दीदार बनाया

(जौके ना'त, स. 32)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस आयते मुबारका के नाज़िल होने के बा'द महबूबे रब्बे जुल जलाल, सुल्ताने शीरीं मक़ाल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का चेहरा नूरबार खुशी से झूम उठा और फ़रमाया : “मुझे मुबारक बाद दो क्यूंकि मुझे वोह आयते मुबारका अता की गई है जो मुझे “दुन्या व माफीहा” (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है इस) से ज़ियादा महबूब है।”

(روح البیان، ۲/۲۲۲ الاحزاب، تحت الآية: ۵۶: ۴/۲۲۳)

दुस्ब भेजने की हिक्मत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने आयते मुबारका में येह ख़बर दी है कि हम हर आन और हर घड़ी अपने प्यारे महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर रहमतों की बारिश बरसाते हैं।

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

यहां एक सुवाल येह पैदा होता है कि जब **عَزَّوَجَلَّ** खुद ही रहमतें नाज़िल फ़रमा रहा है तो हमें दुरूद शरीफ़ पढ़ने या'नी रहमत के लिये दुआ मांगने का क्यूं हुक्म दिया जा रहा है ? क्यूंकि मांगी वोह चीज़ जाती है जो पहले से हासिल न हो, तो जब पहले ही से रहमतें उतर रही हैं फिर मांगने का हुक्म क्यूं दिया ? इस का **जवाब** येह है कि कोई सुवाली किसी दरवाज़े पर मांगने जाता है तो घर वाले के माल व अवलाद के हक़ में दुआएं मांगता हुवा जाता है। सखी के बच्चे ज़िन्दा रहें, माल सलामत रहे, घर आबाद रहे वगैरा वगैरा। जब येह दुआएं मालिके मकान सुनता है तो समझ जाता है कि येह बड़ा मुहज़ज़ब सुवाली है। भीक मांगना चाहता है मगर हमारे बच्चों की ख़ैर मांग रहा है। खुश हो कर कुछ न कुछ झोली में डाल देता है। यहां हुक्म दिया गया : ऐ ईमान वालो ! जब तुम हमारे यहां कुछ मांगने आओ तो हम तो अवलाद से पाक हैं मगर हमारा एक प्यारा हबीब है मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** उस हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की उस के अहले बैत (**عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان**) की और उस के अस्ह़ाब (**عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان**) की ख़ैर मांगते हुवे, उन को दुआएं देते हुवे आओ तो जिन रहमतों की उन पर बारिश हो रही है उस का तुम पर भी छींटा डाल दिया जाएगा। **दुरूद शरीफ़** पढ़ना दर अस्ल अपने परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह से मांगने की एक आ'ला तरकीब है। इस आयते मुक़दसा में मुसलमानों को मुतनब्बेह (ख़बरदार) फ़रमा दिया

गया कि ऐ **दुरूदो सलाम** पढ़ने वालो ! हरगिज़ हरगिज़ येह गुमान भी न करना कि हमारे महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर हमारी रहमतें तुम्हारे मांगने पर मौकूफ हैं और हमारे महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** तुम्हारे **दुरूदो सलाम** के मोहताज हैं । तुम दुरूद पढ़ो या न पढ़ो, इन पर हमारी रहमतें बराबर बरसती ही रहती हैं । तुम्हारी पैदाइश और तुम्हारा **दुरूदो सलाम** पढ़ना तो अब हुवा, प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर रहमतों की बरसात तो जब से है जब कि “जब” और “कब” भी न बना था । “जहां”, “वहां”, “कहां” से भी पहले इन पर रहमतें ही रहमतें हैं । तुम से **दुरूदो सलाम** पढ़वाना या’नी प्यारे महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** के लिये दुआए रहमत मंगवाना तुम्हारे अपने ही फ़ाइदे के लिये है । तुम **दुरूदो सलाम** पढ़ोगे तो इस में तुम्हें कसीर अज़्रो सवाब मिलेगा ।

(शाने हबीबुर्रहमान, स. 184,185 मुलख़ब्रसन)

वोही रब है जिस ने तुझ को हमातन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया

(हदाइके बख़्शिश, स. 363)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले बरकत और तरक्किये

मा’रिफ़त और हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की कुरबत के लिये **दुरूदो**

सलाम से बेहतर कोई ज़रीआ नहीं है। यकीनन सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदो सलाम** भेजने के बे शुमार फ़ज़ाइल

व बरकात हैं जिन को बयान करना मुमकिन नहीं। दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल में बे शुमार कुतुब तस्नीफ़ की जा चुकी हैं, इस के फ़ज़ाइलो समरात अकसर मुबल्लिगीन बयान करते रहते हैं। क़लम की रोशनाई तो ख़त्म हो सकती है, बयान के अल्फ़ाज़ भी ख़त्म हो सकते हैं मगर फ़ज़ाइले **दुरूदो सलाम** बर ख़ैरुल अनाम का इहाता नहीं हो सकता। दिन हो या रात हमें अपने मोहसिन व ग़मगुसार आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदो सलाम** के फूल निछावर करते ही रहना चाहिये। इस में कोताही नहीं करनी चाहिये क्यूंकि सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हम पर बे शुमार एहसानात हैं। बतने सय्यिदा आमिना **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** से दुन्याए आबो गिल में जल्वा अफ़रोज़ होते ही आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने सजदा फ़रमाया और होंटों पर येह दुआ जारी थी : “ رَبِّ هَبْ لِي أُمَّتِي ” मेरी उम्मत मेरे हवाले फ़रमा ।”

इमाम ज़ुरक़ानी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْفَى** नक़ल फ़रमाते हैं : “उस वक़्त आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** उंगलियों को इस तरह उठाए हुवे थे जैसे कोई गिर्या व ज़ारी करने वाला उठाता है ।”

(ज़रक़ानी علی المواهب، نکر تزویج عبداللہ آمنہ، ۲/ ۱۱)

हुवे पैदा हुवे कहते **رَبِّ هَبْ لِي أُمَّتِي**

الصَّلَاةُ وَالسَّلَام कि बख़्शा हक़ ने फ़रमाया

(क़बालए बख़्शिश, स. 94)

रहमते आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** सफ़रे मे'राज पर रवानगी के वक़्त उम्मत के आसियों को याद फ़रमा कर आबदीदा हो गए। दीदारे जमाले खुदावन्दी **عَزَّوَجَلَّ** और खुसूसी नवाज़िशात के वक़्त भी गुनहगाराने उम्मत को याद फ़रमाया। उम्र भर गुनहगाराने उम्मत के लिये ग़मगीन रहे।

मदारिजुनुबुव्वत में है : हज़रते सय्यिदुना कुसम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** वोह खुश नसीब सहाबी थे जो आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को क़ब्रे अन्वर में उतारने के बा'द सब से आख़िर में बाहर आए थे। चुनान्चे, उन का बयान है कि मैं ही आख़िरी शख़्स हूं जिस ने हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** का रूए मुनव्वर, क़ब्रे अतहर में देखा था। मैं ने देखा कि सुलताने मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** क़ब्रे अन्वर में अपने लब्हाए मुबारका जुम्बिश फ़रमा रहे थे। (या'नी मुबारक होंट हिल रहे थे) मैं ने अपने कानों को **اَللّٰهُ** के प्यारे हबीब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** के दहन (या'नी मुंह) मुबारक के क़रीब किया, मैं ने सुना कि आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** कह रहे थे : "رَبِّ اُمَّتِي اُمَّتِي" (या'नी ऐ मेरे परवर दगार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत)। (مدارج النبوة، २/२२२)

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : "जब मेरी वफ़ात हो जाएगी तो अपनी क़ब्र में हमेशा पुकारता रहूंगा, يَا رَبِّ اُمَّتِي اُمَّتِي या'नी ऐ परवर दगार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत, यहां तक कि दूसरा सूर फूँका जाए।" (کنز العمال، کتاب القيامة، ۴/۴۸، حدیث: ۳۹۱۰۸)

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आदत कीजिये

(हदाइके बख़्शिश, स. 198)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब हमारे प्यारे आका
ﷺ हम से इस क़दर महबूबत फ़रमाते हैं तो हमारी
अक़ीदत बल्कि मुरव्वत का भी येही तकाज़ा होना चाहिये कि
ग़मख़्तारे उम्मत ﷺ की याद और दुरूदो सलाम
से कभी ग़फ़लत न बरती जाए ।

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ रशीद अत्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار
अश्शार की सूरत में फ़रमाते हैं :

أَلَا أَيُّهَا الرَّاجِي الْمَثُوبَةَ وَالْأَجْرَ وَتَكْفِيرَ ذَنْبٍ سَالِفٍ أَنْقَضَ الظُّهْرَ
عَلَيْكَ بِاِكْتِفَارِ الصَّلَاةِ مُوَظَّبًا عَلَى أَحْمَدَ الْهَادِي شَفِيعِ الْوَرَى طَرًّا

“या’नी ऐ अज़्रो सवाब और उस गुज़श्ता गुनाह की
तलाफ़ी की उम्मीद रखने वाले जिस ने (तेरी) कमर तोड़ दी है, सुन
ले ! तुझ पर लाज़िम है कि उस ज़ाते गिरामी पर हमेशा कसरत
से दुरूद भेज जिन का नाम अहमद है, इन्सानिय्यत के हादी और
तमाम मख़्लूक के शफ़ीअ हैं ।”

(القول البديع، خاتمة الباب الثاني، الفصل الاول، ص २८३)

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन कैदो बन्द
हशर को खुल जाएगी ताक़त रसूलुल्लाह की

(हदाइके बख़्शिश, स. 153)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें अपने प्यारे हबीब

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महबूबत में डूब कर आप की जाते तय्यिबा पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफीक अता फ़रमा और रोज़े क़ियामत आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की शफ़ाअत से बहरा मन्द फ़रमा ।
اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने हसन बसरी

हज़रते सय्यिदुना हसन (बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی**) फ़रमाते हैं कि “जो अच्छी बातों का हुक्म दे, बुराइयों से रोके वोह **अल्लाह** तअ़ाला का भी ख़लीफ़ा है, उस के रसूल (**صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**) का भी और उस की किताब (या'नी कुरआने करीम) का भी ।” (हदीसे पाक में है) अगर मुसलमानों ने तब्लीग़ छोड़ दी तो उन पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत होंगे, और उन की दुआएं क़बूल न होंगी ।
(رَوْحُ التَّعَانِی، ۳/۳۲۶)



होंटों पर मुतअय्यन फिरिश्ते

अमीरुल मोअमिनीन जुनूरैन हजरते सय्यिदुना उस्मान बिन अफ्फान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नबियों के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमते वाला शान में हाजिर हो कर अर्ज गुजार हुवे : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे बताइये कि बन्दे के साथ कितने फिरिश्ते होते हैं ?” सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : ऐ उस्मान ! एक फिरिश्ता तेरी दाई (सीधी) तरफ है जो तेरी नेकियों पर मामूर है और येह बाई (उलटी) तरफ वाले फिरिश्ते का अमीन है। जब तुम एक नेकी करते हो तो इस की दस नेकियां लिखी जाती हैं, जब तुम कोई गुनाह करते हो तो बाई (उलटी) तरफ वाला फिरिश्ता दाई (सीधी) जानिब वाले फिरिश्ते से पूछता है : “(क्या) मैं (इस का येह गुनाह) लिख लूं ?” तो वोह कहता है : “नहीं, शायद येह (अपने गुनाह पर) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिगफार करे और तौबा करे।” तो जब बाई तरफ वाला फिरिश्ता तीन मरतबा गुनाह लिखने की इजाजत मांगता है तो (दाई तरफ वाला) कहता है : हां (अब लिख लो) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस से महफूज रखे। येह कैसा बुरा साथी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुतअल्लिक कितना कम सोचता है और हम से किस क़दर कम हया करता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फरमाता है :

और दो फ़िरिश्ते तुम्हारे सामने और पीछे हैं। **अल्लाह**

तर्जमए कञ्जुल ईमान : आदमी
के लिये बदली वाले फिरिश्ते हैं
उस के आगे पीछे कि ब हुक्मे खुदा
उस की हिफाजत करते हैं ।

(پ ۱۳، الرعد: ۱۱)

और एक फ़िरिश्ते ने तुम्हारी पेशानी को थामा हुआ है।

जब तुम **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये तवाजोअ (या'नी इन्किसारी) करते हो तो वोह तुम्हें बुलन्द करता है और जब तुम **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** पर तकब्बुर का इज़हार करते हो तो वोह तुम्हें तबाही में डाल देता है। और दो फ़िरिश्ते तुम्हारे होंटों पर (मुतअय्यन) हैं, वोह तुम्हारे लिये सिर्फ़ मुहम्मद **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर पढ़े जाने वाले दुरूद को महफूज़ करते हैं और एक फ़िरिश्ता तुम्हारे मुंह पर मुक़र्र है वोह तुम्हारे मुंह में सांप दाख़िल होने नहीं देता। और दो फ़िरिश्ते तुम्हारी आंखों पर मुक़र्र हैं। येह कुल दस फ़िरिश्ते हैं जो हर इन्सान पर मुक़र्र हैं रात के फ़िरिश्ते दिन के फ़िरिश्तों पर उतरते हैं, क्यूंकि रात के फ़िरिश्ते दिन के फ़िरिश्तों के इलावा होते हैं। येह बीस फ़िरिश्ते हर आदमी पर मुक़र्र हैं।

(تفسير الطبري، ب ١٣، الرعد، تحت الآية: ١١، ٤، ٣٥٠، حديث: ٢٠٢١١)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा 'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के मुक़र्रर

कर्दा मा'सूम फिरिश्ते हमारी अच्छी बुरी हर बात लिखते हैं लेकिन **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** हमें इस की बिल्कुल परवा नहीं होती । आ़म दिनों में तो गुनाहों का सिलसिला जारी ही रहता है मगर जब रमज़ानुल मुबारक का मुक़द्दस महीना तशरीफ़ लाता है तो हम बद किस्मती से इस का एहतिराम नहीं करते और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा व खुशनूदी वाले काम करने के बजाए रोज़े की हालत में भी अपने कीमती लम्हात को फुज़ूलिय्यात में बरबाद कर देते हैं, यकीनन येह ज़िल्लत व रुस्वाई और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की नाराज़ी का सबब है चुनान्चे,

हुक्को रमज़ान से मुतअल्लिक नशीहतें

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हानी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** से रिवायत है कि दो जहां के सुल्तान, शहनशाहे कौनो मकान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने इब्रत निशान है : “मेरी उम्मत ज़लीलो रुस्वा न होगी जब तक वोह **माहे रमज़ान** का हक़ अदा करती रहेगी ।” अर्ज़ की गई : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** रमज़ान के हक़ को ज़ाएअ करने में इन का ज़लीलो रुस्वा होना क्या है ? फ़रमाया : इस माह में इन का हराम कामों का करना, फिर फ़रमाया : जिस ने इस माह में ज़िना किया, या शराब पी तो अगले रमज़ान तक **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और जितने आस्मानी फिरिश्ते हैं सब इस पर ला'नत करते

हैं। पस अगर येह शख्स अगले माहे रमज़ान को पाने से पहले ही मर गया तो इस के पास कोई ऐसी नेकी न होगी जो इसे जहन्नम की आग से बचा सके। पस तुम माहे रमज़ान के मुआमले में डरो क्यूंकि जिस तरह इस माह में और महीनों के मुकाबले में नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी तरह गुनाहों का भी मुआमला है। (معجم صغير، من اسمه عبد الملك، ص २४८، حديث: १२८८)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लरज़ उठिये ! और रमज़ान की नाक़्द्री से बचने का खुसूसियत के साथ सामान कीजिये। इस माहे मुबारक में दूसरे महीनों के मुकाबले में जिस तरह नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी तरह दीगर महीनों के मुकाबले में गुनाहों की हलाकत ख़ैज़ियां भी बढ़ जाती हैं। माहे रमज़ान में **शराब** पीने वाला और **ज़िना** करने वाला तो ऐसा बद नसीब है कि आइन्दा रमज़ान से पहले पहले मर गया तो अब इस के पास कोई नेकी ऐसी न होगी जो इसे जहन्नम की आग से बचा सके। याद रहे ! आंखों का ज़िना बद निगाही, हाथों का ज़िना अजनबिय्या को (या शहवत के साथ अम्रद को) छूना है। लिहाज़ा ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार ! माहे रमज़ान में बिलखुसूस अपने आप को बद निगाही और अम्रद बीनी से बचाइये। हत्तल इम्कान आंखों का **कुफ़्ले मदीना** लगा लीजिये या'नी निगाहें नीची रखने की भरपूर सई कीजिये। आह ! सद हज़ार आह ! बसा अवकात नमाज़ी और रोज़ादार भी माहे रमज़ान की बे हुरमती कर के क़हरे क़हहार और ग़ज़बे जब्बार का शिकार हो कर अज़ाबे नार में गिरिफ़्तार हो जाते हैं।

दिल पर एक सियाह नुक्ता

याद रखिये! हृदीसे मुबारक में आता है, जब कोई इन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता बन जाता है, जब दूसरी बार गुनाह करता है तो दूसरा सियाह नुक्ता बनता है यहां तक कि उस का दिल सियाह हो जाता है। नतीजतन भलाई की (कोई) बात उस के दिल पर असर अन्दाज़ नहीं होती।

(درمنثور، پ ۳۰، المطففين، تحت الآية: ۴، ۸/ ۴۴۶)

अब ज़ाहिर है कि जिस का दिल ही जंग आलूद और सियाह (काला) हो चुका हो उस पर भलाई की बात और नसीहत कहां असर करेगी? माहे रमज़ान हो या ग़ैरे रमज़ान ऐसे इन्सान का गुनाहों से बाज़ व बेज़ार रहना निहायत ही दुश्वार हो जाता है। उस का दिल नेकी की तरफ़ माइल ही नहीं होता। अगर वोह नेकी की तरफ़ आ भी गया तो बसा अवकात उस का जी इसी सियाही के सबब नेकी में नहीं लगता और वोह सुन्नतों भरे मदनी माहोल से भागने ही की तदबीरें सोचता है। उस का नफ़्स उसे लम्बी उम्मीदें दिलाता, ग़फ़लत उसे घेर लेती और यूं वोह बद नसीब सुन्नतों भरे मदनी माहोल से दूर हो जाता है। माहे रमज़ान की मुबारक साअतें बल्कि बसा अवकात पूरी पूरी रातें ऐसा शख़्स खेल कूद, गाने बाजे, ताश व शतरंज, गप शप वगैरा में बरबाद करता है।

लम्हऽ फ़िक्रिय्या

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खुदारा अपने हाले ज़ार पर तरस खाइये और गौर फ़रमाइये ! कि रोज़ादार माहे रमज़ानुल मुबारक में दिन के वक़्त खाना पीना छोड़ देता है हालांकि येह खाना पीना इस से पहले दिन में भी बिल्कुल जाइज़ था । फिर खुद ही सोच लीजिये कि जो चीज़ें रमज़ान शरीफ़ से पहले हलाल थीं वोह भी जब इस मुबारक महीने के मुक़द्दस दिनों में मन्अ कर दी गई । तो जो चीज़ें रमज़ानुल मुबारक से पहले भी ह़राम थीं, मसलन झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी, गालम गलोच, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे, बद निगाही, दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से घटाना, वालिदैन् को सताना, बिला इजाज़ते शरई लोगों का दिल दुखाना वगैरा वोह रमज़ानुल मुबारक में क्यूं न और भी ज़ियादा ह़राम हो जाएंगी ? रोज़ादार जब रमज़ानुल मुबारक में ह़लाल व तय्यिब खाना पीना छोड़ देता है, ह़राम काम क्यूं न छोड़े ? अब फ़रमाइये ! जो शख़्स पाक और ह़लाल खाना, पीना तो छोड़ दे लेकिन ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम ब दस्तूर जारी रखे । वोह किस किस्म का रोज़ादार है ? **अब्बाह**

عَزَّوَجَلَّ

को उस के भूके प्यासे रहने की कोई हाजत नहीं । चुनान्चे,

भूके प्यासे रहने की कुछ हाजत नहीं

नबियों के सुल्तान, सरवरे जीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “जो बुरी बात कहना और उस पर अमल करना न छोड़े तो उस के भूके प्यासे रहने की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कुछ हाजत नहीं।”

(بخاری، کتاب الصوم، باب من لم يدع قول الزور..... الخ، ۱/ ۶۲۸، حدیث: ۱۹۰۳)

एक और मक़ाम पर फ़रमाया : सिर्फ़ खाने और पीने से बाज़ रहने का नाम रोज़ा नहीं बल्कि रोज़ा तो येह है कि लगव और बेहूदा बातों से बचा जाए।

(مستدرک، کتاب الصوم، باب من افطر فی رمضان فاسیا..... الخ، ۲/ ۶۷، حدیث: ۱۶۱۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रमज़ान हो या ग़ैरे रमज़ान हमें गुनाहों से बाज़ रहते हुवे दीगर नेक आ'माल के साथ साथ सुब्हो शाम अपने प्यारे आका عَلَيْهِ السَّلَام पर **दुरूदो सलाम** के फूल निछावर करते रहना चाहिये कि बा'ज़ अवक़ात **दुरूदे पाक** पढ़ने वाले आशिक़ाने रसूल पर ऐसा करम होता है कि उन्हें नारे दोज़ख़ से आज़ादी का परवाना मिल जाता है इसी ज़िम्न में एक हिकायत सुनिये और झूम जाइये। चुनान्चे,

आग से नजात का परवाना

हज़रते सय्यिदुना ख़ल्लाद बिन कसीर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की नज़्अ की हालत में उन के तकये के नीचे एक काग़ज़ का टुकड़ा

पाया गया जिस पर यह लिखा था : هَذِهِ بَرَاءَةٌ مِنَ النَّارِ لِخَلَادِ بْنِ كَثِيرٍ

या'नी यह ख़ल्लाद बिन कसीर के लिये आग से नजात का परवाना है ।" लोगों ने उन के घर वालों से हज़रते सय्यिदुना ख़ल्लाद बिन कसीर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का अमल पूछा तो उन्होंने ने बताया कि यह हर जुमुआ को हज़ार मरतबा यह दुरूद शरीफ़ اللهم صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ पढ़ा करते थे ।

(القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة الخ، ص २८२)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कसरत के साथ दुरूदे पाक पढ़ने की आदत बनाने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये । सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये मदनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर मदनी माह के इब्तिदाई 10 दिन के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये । दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा रसाइल और वीडियों सीडीज़ तोहफ़े में बांटते रहिये न जाने कब किस का दिल चोट खा जाए और वोह राहे रास्त पर आ जाए और आप का भी बेड़ा पार हो जाए । आप की तरगीब के लिये

एक ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार सुनिये और अमल का ज़ब्बा बेदार कीजिये । चुनान्वे,

शराबी, मुअज़िज़ बन गया

महाराष्ट्र (हिन्द) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्तगी से कब्ल मैं मर्जे इस्यां में इन्तिहाई दरजे तक मुब्तला हो चुका था । दिन भर मजदूरी करने के बा'द जो रक़म हासिल होती रात को उसी से **مَعَاذَ اللَّهِ** शराब ख़रीद कर ख़ूब अय्याशी करता, शोर शराबा करता, गालियां तक बकता वालिदैन् व अहले महल्ला को ख़ूब तंग करता इस के इलावा मैं परले दरजे का जूआरी व बे नमाज़ी भी था । इसी ग़फ़लत में मेरी जिन्दगी के कीमती अय्याम जाएअ होते रहे । आख़िरे कार मेरी किस्मत का सितारा चमका, हुवा यूं कि खुश किस्मती से मेरी मुलाक़ात दा'वते इस्लामी के एक जिम्मेदार इस्लामी भाई से हुई । उन्होंने ने इन्तिहाई शफ़क़त भरे अन्दाज़ में इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझे मदनी काफ़िले में सफ़र करने की तरगीब दिलाई तो मुझ से इन्कार न हो सका और मैं हाथों हाथ तीन दिन के मदनी काफ़िले का मुसाफ़िर बन गया । मदनी काफ़िले में अ़शिक़ाने रसूल की सोहबत मिली और मक्तबतुल मदीना से जारी शुदा रसाइल भी पढ़ने को मिले । जिस की येह बरकत हासिल हुई कि मुझ जैसा पक्का बे नमाज़ी, शराबी व जूआरी ताइब हो कर न सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने वाला बन गया बल्कि सदाए मदीना लगाने और दूसरों को मदनी काफ़िलों का मुसाफ़िर बनाने वाला बन गया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मेरी इनफिरादी कोशिश से अब तक 30 इस्लामी

भाई मदनी काफिलों के मुसाफिर बन चुके हैं और इस वक्त मैं एक मस्जिद में मुअज्जिन हूं और दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की खूब खूब धूमे मचा रहा हूं।

दिल की कालक धुले, दर्दे इस्यां टले

आओ सब चल पड़ें काफिले में चलो

(वसाइले बख्शिश, स. 614)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें रमजानुल मुबारक का एहतिराम करते हुवे सोमो सलात की पाबन्दी के साथ गुनाहों से बचने की तौफीक अता फरमा, अपने वक्त को फुजूलिय्यात में बरबाद करने के बजाए ज़ियादा से ज़ियादा ज़िक्रो दुरूद में मशगूल रहने की तौफीक अता फरमा।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

गीबत की ता'रीफ

किसी (जिन्दा या मुर्दा) शख्स के पोशीदा ऐब को (जिस को वोह दूसरों के सामने ज़ाहिर होना, पसन्द न करता हो) उस की बुराई करने के तौर पर ज़िक्र करना।

(बहारे शरीअत, हिस्सा 16 स. 175)

बयान नम्बर : 34

दिलों की तहारत

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन क़ासिम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नबियों के सुल्तान, रहमते आलमिय्या صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने तहारत निशान है : **لِكُلِّ شَيْءٍ طَهَارَةٌ وَغُسْلٌ** हर चीज़ के लिये तहारत और गुस्ल है **وَطَهَارَةُ قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ مِنَ الصَّدَةِ الصَّلَاةُ عَلَى** और मोमिनों के दिलों को जंग से साफ़ करने का सामान मुझ पर दुरुद पढ़ना है ।”

(القول البديع، الباب الثاني في ثواب الصلاة والسلام على رسول الله، ص ٢٨١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस शख्स को **अब्बाह** तआला ने अक्लो फ़हम की दौलत से नवाज़ रखा है वोह यकीनन इस बात से ब ख़ूबी वाकिफ़ है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्बत अस्ले ईमान है, अगर किसी का सीना महब्बते रसूल से ख़ाली है तो उसे ईमान की दौलत नसीब नहीं क्यूंकि हुब्बे रसूल ही ईमान की कसोटी है । लिहाज़ा जब भी हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ज़ाते तय्यिबा पर दुरूदे पाक पढ़ने की सआदत नसीब हो तो दिल में आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का तसव्वुर बांध कर इश्को महब्बत में डूब कर पढ़ना चाहिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकात ज़रूर हासिल होगी । चुनान्वे,

जिक्रे सरकार के आदाब

बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْهُمَيْنِ फ़रमाते हैं : “जब भी जिक्रे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ किया जाए तो सरकार का तसव्वुर बांध कर किया जाए।” मदरिजुन्नबुव्वत के तकमिला में हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَقُّ फ़रमाते हैं : “जिक्रे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ करते वक़्त अपने आप को बारगाहे मुस्तफ़ा में हाज़िर ख़याल कर। गोया कि तू इन की ज़ाहिरी हयाते तय्यिबा में इन के सामने हाज़िर है और आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बुजुर्गी, ता’ज़ीम, रो’ब और हया की वजह से अदब के साथ दीदार कर रहा है पस यकीनन सरकारे मदीना तुझे देखते हैं और तेरे कलाम को सुनते हैं। क्यूंकि महबूबे किब्रिया अवसाफ़े इलाहिय्या के मज़हर हैं और عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात में से एक येह भी सिफ़त है اَنَا جَلِيْسٌ مَنْ ذَكَرَنِي या’नी मैं उस का हम नशीं हूं जो मुझे याद करे। “लिहाज़ा मदनी ताजदार को भी इस सिफ़ते इज़्मा का मज़हर बनाया गया है।”

(مدارج النبوة، १/२)

चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी अपने याद करने वालों के हम नशीं हैं। मज़ीद फ़रमाते हैं : “ऐ भाई ! मैं तुझे वसियत करता हूं कि हमेशा महबूबे खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की

सूरते मुबारका और सीरते तय्यिबा को मल्हूज रखा कर अगर्चे ब तकल्लुफ ही इस सूरते पाक और सीरते वाला सिफ़ात को पेशे नज़र रखना पड़े। बहुत ही क़लील अर्से में तेरी रूह इस तसव्वुर की बदौलत जाते पाके मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से मानूस हो जाएगी। पस रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते करीम तेरे सामने मौजूद होगी और तू उन का मुशाहदा करेगा और उन से कलाम भी करेगा और शरफ़े ख़िताब से भी लुत्फ़ अन्दोज़ होगा।”

(مدارج النبوة، १/२३)

क्यूं करें बज़्मे शबिस्ताने जिनां की ख़्वाहिश

जल्वए यार जो शम्ए शबे तन्हाई हो

(जौके ना'त, स. 142)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुल्ताने दो जहान, रहमते आलमिय्यान **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** दुरूदे पाक पढ़ने वाले उश्शाक से बे इन्तिहा महब्बत फ़रमाते हैं और वक़तन फ़ वक़तन उन पर बारिशे करम भी बरसाते रहते हैं, कभी तो ब नफ़से नफ़ीस खुद उन के ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर अपने दीदारे पुर बहार से फैज़याब फ़रमाते हैं, तो कभी अपने चाहने वालों को किसी के ज़रीए येह पैग़ाम इरशाद फ़रमाते हैं कि तुम मुझ पर इतनी इतनी मिक्दार में रोज़ाना दुरूदे पाक पढ़ते हो जिस को मैं खुद सुनता

हूं, लिहाजा मेरे इस परेशान हाल उम्मीती की हाजत को पूरा करो। चुनान्वे, इस ज़िम्न में एक दिलचस्प हिकायत सुनिये और झूम जाइये। चुनान्वे,

सरकार عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने दस्तगीरी फरमाई

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

एक दिन अपने तलबा को पढ़ा रहे थे कि एक शैख पुराने इमामे, पुरानी कमीस और पुरानी चादर में मल्बूस तशरीफ़ लाए। हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उन की ता'जीम के लिये खड़े हो गए और उन्हें अपनी जगह पर बिठाया। फिर उन का और उन के बच्चों का हाल दरयाफ़्त किया। उन्होंने ने बताया कि आज रात मेरे घर बच्चा पैदा हुवा है। घर वालों ने मुझ से घी और शहद मांगा है और मेरे पास इतनी रक़म नहीं कि मैं उन्हें येह चीज़ें ला कर दूं। हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं (उन की येह बात सुन कर) परेशानी की हालत में सो गया। मैं ने ख़्वाब में नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत की। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : ग़मगीन क्यूं हो ? ख़लीफ़ा के वज़ीर अली बिन ईसा के पास जाओ और उसे जा कर मेरा सलाम कहना और येह निशानी बताना कि तुम जुमुआ की रात मुझ पर हज़ार मरतबा दुरूद पढ़ने के बा'द सोते हो। इस जुमुआ की रात तुम ने मुझ पर सात सो मरतबा दुरूद पढ़ा था कि

खलीफ़ा का कासिद आया और तुम्हें बुला कर ले गया। फिर वापस आ कर तुम ने मुझ पर दुरूद पढ़ा हत्ता कि तुम ने हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ मुकम्मल कर लिया। उसे कहना कि सो दीनार नौ मौलूद के वालिद को दे दो ताकि येह अपनी ज़रूरत पूरी करें।” (ख़्वाब से बेदार होने के बा’द) हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد उन को साथ ले कर वजीर के पास पहुंच गए। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने वजीर को कहा : इन को तेरी तरफ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भेजा है। वजीर खड़ा हुवा और आप (या’नी अबू बक्र رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को) अपनी जगह पर बिठा कर सारा माजरा दरयाफ़्त किया। आप ने वजीर को पूरा वाकिआ बयान कर दिया। वजीर खुश हुवा और अपने गुलाम को माल की थैली निकालने का हुक्म दिया। फिर उस से सो दीनार निकाल कर नौ मौलूद के वालिद को दे दिये। इस के बा’द सो दीनार और निकाले ताकि हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को दे मगर आप ने लेने से इन्कार कर दिया। वजीर ने कहा : हज़रत इस सच्ची ख़बर की बिशारत देने पर आप मुझ से येह नज़राना ले लें, येह मुआमला मेरे और عَزَّوَجَلَّ के दरमियान एक राज़ था और आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कासिद हैं। फिर वजीर ने मजीद सो दीनार निकाले और आप से कहा : येह इस बिशारत या’नी खुशख़बरी के सबब ले लीजिये

कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मेरे हर जुमुआ की रात दुरूदे पाक पढ़ने का इल्म है। फिर उस ने सो दीनार और

निकाले और कहा : येह आप की उस थकावट के बदले में हैं जो आप को हमारी तरफ आते हुवे बरदाश्त करना पड़ी। फिर वजीर साहिब यके बा'द दीगरे (नौ मोलूद के वालिद के लिये) सो सो दीनार निकालते रहे हत्ता कि हजार दीनार निकाल लिये मगर उस ने कहा : “मैं सिर्फ वोह लूंगा जिन का मुझे रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हुक्म इरशाद फरमाया है।”

(القول البدیع، الباب الرابع فی تبلیغہ السلام علیہ، وردہ وغیر ذلک، ص ۳۲۷)

उन के निसार कोई कैसे ही रंज में हो
जब याद आ गए हैं सब ग़म भुला दिये हैं
हम से फ़कीर भी अब फेरी को उठते होंगे
अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं

(हदाइके बख़्शिश, स. 101)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमारे प्यारे प्यारे आका **سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ**

अपनी गुनाहगार उम्मत पर किस क़दर शफीक़ व मेहरबान हैं कि अगर आप का कोई भी उम्मती किसी परेशानी में हो तो आप उस की मदद फ़रमाते हैं। तो हमें भी उम्मती होने का हक़ अदा करते हुवे आप की ज़ाते करीमा पर **दुरूदे पाक** पढ़ने में कोताही नहीं करनी चाहिये और ज़ियादा से ज़ियादा **दुरूद शरीफ़** पढ़ना चाहिये वरना रोज़े क़ियामत हसरत हमारा मुक़दर होगी। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे आली वकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : **مَا قَعَدَ قَوْمٌ مَّقْعَدًا لَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ وَيُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : يَا'नी जो क़ौम किसी मजलिस में बैठे, न तो **عَزَّ وَجَلَّ** का ज़िक्र करे और न ही नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद शरीफ़ पढ़े** **إِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ حَسْرَةٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَإِنْ دَخَلُوا الْجَنَّةَ لِلثَّوَابِ** तो वोह क़ियामत के दिन जब उस की जज़ा देखेंगे तो उन पर हसरत तारी होगी, अगर्चे जन्नत में दाख़िल हो जाएं ।”

(مسند احمد، مسند ابی هريرة، ۳/۴۸۹، حديث: ۹۹۷۲)

सब से बड़ा बख़ील शख़्स

एक रिवायत के मुताबिक़ हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का नामे मुबारक सुन कर दुरूदे पाक न पढ़ने वाला सब से बड़ा कन्ज़ूस है । चुनान्वे, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : **يَا'नी जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्ज़ूस तरीन शख़्स है ।**

(مسند احمد، مسند حديث الحسين بن علي، ۱/۴۲۹، حديث: ۱۷۳۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो खुश नसीब लोग सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदो सलाम पढ़ना अपने रोज़ो शब का वज़ीफ़ा बना लेते हैं, लोगों को इस की तरगीब

दिलाते हैं, जिन्दगी भर लोगों को सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

की अज़मतो महब्बत के जाम भर भर के पिलाते हैं और इश्के
रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रंग में रंग देते हैं, जब वोह अहले
दुरूद और अहले महब्बत इस दुन्याए फ़ानी से आलमे जावेदानी
की तरफ़ सफ़र करते हैं तो बा'दे विसाल ऐसी अजीब और ईमान
अफ़रोज़ बिशारतें नसीब होती हैं कि देखने वाले उन की किस्मत
पर रश्क करते हैं। किसी की तुर्बते अतहर खुशबू से महक उठती
है तो किसी के जनाजे पर अब्रे रहमत अन्वार की बारिशें बरसाते
हैं और कहीं मलाइकए किराम जनाजे में क़ितार दर क़ितार नज़र
आते हैं। इसी मज़मून की अक्कासी करती हुई एक हिकायत
सुनिये। चुनान्वे,

जनाजे में फ़िरिशतों का नुज़ूल

हज़रते सय्यिदुना सहल तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِيِّ का जब
विसाल हुवा तो एक शोर बर्पा हो गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के
जनाज़े मुबारका में कसीर ता'दाद में लोग शरीक हुवे। शहर में
एक यहूदी भी रहता था जिस की उम्र सत्तर बरस से कुछ ज़ियादा
की थी। उस ने जब शोर सुना तो वोह भी देखने के लिये
निकला। लोग जनाज़े मुबारका को उठाए हुवे जा रहे थे। उस
ने जनाजे का जुलूस देख कर पुकारा : “ऐ लोगो ! जो मैं देख रहा
हूँ क्या तुम भी देख रहे हो ?” लोगों ने पूछा : “तू क्या देख रहा
है ?” उस ने कहा : “मैं देख रहा हूँ कि आस्मान से उतरने
वालों की क़ितार लगी हुई है और वोह (फ़िरिशते) जनाजे से

बरकतें हासिल कर रहे हैं।” यह मन्ज़र देख कर वोह यहूदी मुसलमान हो गया और बहुत अच्छा मुसलमान साबित हुवा।

(الرسالة القشيرية، باب احوالهم عبد الخروج من الدنيا، ص ۳۴۱)

अर्श पर धूमे मचें वोह मोमिने सालेह मिला

फ़र्श से मातम उठे वोह तय्यिबो ताहिर गया

(हदाइके बख़्शिश, स. 54)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** हमें प्यारे आका

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों पर अमल और आप

की जाते अतहर पर ज़ियादा से ज़ियादा **दुरूदे पाक** पढ़ने की

तौफ़ीक़ अता फ़रमा। اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

नूरे ईमान पाने का एक सबब

हृदीसे पाक में है, “जिस शख्स ने गुस्सा ज़ब्त कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह गुस्सा नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता है **अब्बाह** उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा।

(جامع صغير، ص ۵۳۱، حديث: ۸۹۹۷)



बयान नम्बर : 35

जन्नत कुशादा हो जाती है

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّابِ
 फ़रमाते हैं : “इस में कोई शुबा नहीं कि नबिय्ये पाक
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक तमाम आ'माल से अफ़ज़ल है
 और येह उन मलाइका का ज़िक्र है जो अतराफ़े जन्नत में रहते
 हैं। और जब वोह हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जाते
 गिरामी पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो इस की बरकत से जन्नत
 कुशादा हो जाती है।” (الابريز، باب فى الجنة وترتيبها وعددها، ص ۳۳۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

वस्वसा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे ज़ेहन में येह
 वस्वसा पैदा हो सकता है कि हमें सिर्फ़ दुरूदे इब्राहीमी ही
 पढ़ना चाहिये क्यूंकि अह्दादीसे मुबारका में भी इसी के फ़ज़ाइल
 बयान हुवे हैं।

जवाबे वस्वसा : बेशक अह्दादीसे मुबारका में दुरूदे इब्राहीमी
 के फ़ज़ाइल बयान हुवे हैं और वोही अफ़ज़ल है अलबत्ता इस से
 दूसरे दुरूदे पाक पढ़ने की मुमानअत लाज़िम नहीं आती बल्कि
 अह्दादीसे मुबारका में दूसरे दुरूदों के मुतअल्लिक़ भी फ़ज़ाइल
 आए हैं। चुनान्चे,

ऊंट की गवाही

हज़रते सय्यिदुना जैद बिन साबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी हदीसे पाक का मफहूम है कि एक आ'राबी अपने ऊंट की नकील थामे प्यारे आका صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में हाज़िर हुवा और सलाम अर्ज किया : आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया : “सुब्ह सुब्ह कैसे आना हुवा ?” इसी असना में ऊंट बिलबिलाया (या'नी आवाज़ निकाली) फिर एक दूसरा शख्स आया गोया कोई मुहाफ़िज़ हो और अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस आ'राबी ने येह ऊंट चुराया है ।” ऊंट दोबारा ग़म से बिलबिलाया तो रसूले अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ उस की फ़रयाद सुनने लगे, जब ऊंट ख़ामोश हुवा तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने मुहाफ़िज़ की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : “ऊंट ने तेरे झूटे होने की गवाही दी है ।” इस पर वोह शख्स चला गया, फिर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने आ'राबी से इस्तिफ़सार फ़रमाया : तुम ने मेरे पास आने से पहले क्या पढ़ा था ?” उस ने अर्ज की : “मेरे मां-बाप आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर क़ुरबान ! मैं ने येह पढ़ा था :

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ حَتَّى لَا تَبْقَى صَلَوةٌ

ऐ **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ मुहम्मद ﷺ पर बेहद दुरूद भेज ।

اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ حَتَّى لَا تَبْقَى بَرَكةٌ

ऐ **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ मुहम्मद ﷺ को बेशुमार बरकतें अता फ़रमा ।

اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا يَبْقٰى سَلَامٌ

ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मुहम्मद **ﷺ** पर बे इन्तिहा सलामती फ़रमा ।

اَللّٰهُمَّ وَاَرْحَمْ مُحَمَّدًا حَتّٰى لَا يَبْقٰى رَحْمَةٌ

ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मुहम्मद **ﷺ** पर बेहद रहमतें नाज़िल फ़रमा ।

तो आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया :

“**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने इस मुआमले को मुझ पर ज़ाहिर फ़रमा दिया, ऊंट ने उस (मुहाफ़िज़) के गुनाह (झूट) को बयान कर दिया और फ़िरिशतों ने आस्मान के किनारों को ढांप लिया ।”

(معجم كبير، سليمان بن زيد ثابت عن أبيه ٥/ ٤١، حديث: ٤٨٨٧، مفهوماً وملخصاً)

वोही भरते हैं झोलियां सब की, वोह समझते हैं बोलियां सब की
आओ दरबारे मुस्तफ़ा को चलें, ग़म खुशी में वहीं पे ढलते हैं

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा कि उस आ'राबी ने दुरूदे इब्राहीमी के इलावा दुरूदे पाक पढ़ा तो इस की बरकत से **अल्लाह** तआला ने उस की हिफ़ाज़त फ़रमाई, नीज़ मज़कूरा हदीसे पाक से इस दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत भी मा'लूम हुई और ज़िम्नन येह भी पता चला की दुरूदे इब्राहीमी के इलावा दीगर दुरूद शरीफ़ भी पढ़ सकते हैं । हां ! येह ज़रूर है कि दुरूदे इब्राहीमी पढ़ना अफ़ज़ल है जैसा कि मेरे आका

आ'ला हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن**

फरमाते हैं : “सब से अफ़ज़ल दुरूद वोह है जो सब आ'माल से अफ़ज़ल या'नी नमाज़ में मुक़र्रर किया गया है।” आगे चल कर फरमाते हैं : “उठते बैठते, चलते फिरते बा वुज़ू बे वुज़ू हर हाल में दुरूद जारी रखे और इस के लिये बेहतर येह है कि एक सीगए खास का पाबन्द न हो बल्कि वक़तन फ़ वक़तन मुख़्तलिफ़ सीगों से अर्ज़ करता रहे ताकि हुज़ूरे क़ल्ब में फ़र्क़ न हो।”

(फ़तावा रज़विय्या, 6/183)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शूद का वबाल

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू हफ़्स رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ के उस्ताज़ के वालिद फरमाते हैं : मैं ने एक शख़्स को हरम शरीफ़, बैतुल्लाह, अरफ़ा और मिना हर जगह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ते देखा तो पूछा कि : हर जगह के लिये एक अलाहिदा विर्द है मगर तू है कि सिर्फ़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ रहा है, इस की क्या वजह है ? उस ने कहा : मैं अपने वालिद के साथ हज़ करने के लिये ख़ुरासान से निकला। जब हम कूफ़ा पहुंचे तो मेरे वालिद सख़्त बीमार हो गए और इसी बीमारी में फ़ौत हो गए। मैं ने उन का मुंह ढांप दिया, कुछ देर बा'द देखा तो उन का चेहरा गधे की शक्ल में

तब्दील हो गया था, जब मैं ने येह कैफ़ियत देखी तो बहुत परेशान हुवा और इसी हालत में मुझे ऊंघ आ गई, क्या देखता हूं कि एक साहिब मेरे वालिद के पास तशरीफ़ लाए, उन का चेहरा देख कर मुझ से कहने लगे : “क्या इसी वजह से तुम गुमगीन हो ?” फिर फ़रमाया : “तुझे मुबारक हो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने तेरे वालिद की तकलीफ़ दूर कर दी।” इस पर मैं ने वालिद साहिब का चेहरा देखा कि चांद की तरह रोशन था। मैं ने उस हस्ती से पूछा : “आप कौन हैं ?” उन्होंने ने जवाब दिया : “मैं तुम्हारा नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** हूं। येह सुन कर मैं ने दामने अक़दस थाम कर अस्ल हक़ीक़त के बारे में पूछा तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : “तेरा वालिद सूद खाता था और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का हुक्म है कि जो सूद खाएगा उस की शक्ल दुन्या में मरते वक़्त या आख़िरत में गधे की तरह बना देगा लेकिन तेरे वालिद की येह आदत थी कि सोने से पहले हर रात मुझ पर सो मरतबा दुरूद भेजता था। जब येह इस तकलीफ़ में मुब्तला हुवा तो मेरी उम्मत के आ'माल मुझ पर पेश करने वाला फ़िरिश्ता मेरे पास आया और मुझे तेरे वालिद की हालत के बारे में बताया, मैं ने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से इस की सिफ़ारिश की तो मेरी सिफ़ारिश इस के हक़ में मक़बूल हो गई।” वोह शख़्स कहता है : फिर मैं बेदार हो गया, वालिद साहिब का चेहरा देखा तो वाक़ेई वोह चौदहवीं के चांद की तरह चमक रहा

था। मैं ने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा किया। फिर वालिद साहिब की तक्फ़ीन व तदफ़ीन के बा'द कुछ वक़्त क़ब्र के करीब बैठ गया। इतने में ग़ैब से आवाज़ आई कि: तेरे वालिद पर ये इनायत सिर्फ़ रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे पाक** पढ़ने की बदौलत की गई है।" इस के बा'द मैं ने क़सम उठाई कि किसी हालत में भी **दुरूदो सलाम** तर्क न करूंगा।

(القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة..... الخ، ص ६६)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हमें हरगिज़ इस ख़याल में नहीं रहना चाहिये कि जितने गुनाह करने हैं कर लो, ख़्वाह सारी ज़िन्दगी सूद की कमाई खाते रहो, हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** तो रहमतुल्लिल आलमीन हैं आप पर दुरूद पढ़ने के सबब नजात मिल जाएगी और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मुआफ़ फ़रमा देगा।

यक्कीनन हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** रहमतुल्लिल आलमीन, शफ़ीज़ल मुज़निबीन हैं लेकिन **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने हम पर कुछ अहक़ाम नाज़िल फ़रमाए हैं जिन की पासदारी करना हम पर फ़र्ज़ है। सूद क़तई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। इस की हुर्मत का मुन्किर, काफ़िर और जो ह़राम समझ कर इस बीमारी में मुब्तला हो, वोह फ़ासिक और **मर्दूदुशहादत** है। (या'नी उस की गवाही क़बूल नहीं की जाएगी) (बहारे शरीअत, जि. 2 हिस्सा 11, स. 768)

हमें क्या मा'लूम **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का ग़ज़ब किस गुनाह के सबब नाज़िल हो जाए, हमें हर गुनाह से बचते रहना चाहिये। सूदी कारोबार और सूदी लैन दैन की वजह से अगर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** नाराज़ हो गया, उस के प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** रूठ गए और अज़ाब ने आ लिया तो क्या करेंगे ?

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी

हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

सूद की ख़राबियां

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي** ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में पारह 3, सूरतुल बक़रह आयत नम्बर 275 के तहत सूद की हुर्मत और सूद ख़ोरों की शामत बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : सूद को ह़राम फ़रमाने में बहुत हिक़्मतें हैं बा'ज़ इन में से येह हैं : (1) सूद में जो ज़ियादती ली जाती है वोह मुआवज़ए मालिय्या में एक मिक्दारे माल का बिग़ैर बदल व इवज़ के लेना है येह सरीह ना इन्साफी है। (2) सूद का रवाज तिजारतों को ख़राब करता है कि सूदख़वार को बे मेहनत माल का हासिल होना तिजारत की मशक्क़तों और ख़तरों से कहीं ज़ियादा आसान मा'लूम होता है और तिजारतों की कमी इन्सानी मुआशरत को ज़रर पहुंचाती है। (3) सूद के रवाज से बाहमी मवद्दत के सुलूक को नुक्सान पहुंचता है कि जब

आदमी सूद का आदी हुवा तो वोह किसी को कर्जे हसन से इमदाद पहुंचाना गवारा नहीं करता । (4) सूद से इन्सान की तबीअत में दरिन्दों से ज़ियादा बे रहमी पैदा होती है और सूदखोर अपने मदयून (मक्खूज) की तबाही व बरबादी का ख्वाहिश मन्द रहता है इस के इलावा भी सूद में और बड़े बड़े नुकसानात हैं और शरीअत की मुमानअत ऐन हिक्मत है । मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सूदख़वार और इस के कार परदाज़ और सूदी दस्तावेज़ के कातिब और इस के गवाहों पर ला'नत की और फ़रमाया वोह सब गुनाह में बराबर हैं ।

याद रखिये ! सूद का माल दुन्या व आख़िरत में महज़ बाइसे वबाल है और इस का खाना ऐसा ही है जैसे अपनी मां से ज़िना करना । चुनान्वे,

सूद के सत्तर दरवाजे

मक्की मदनी सुल्तान, नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : **الرِّبَا سَبْعُونَ بَابًا أَذْنَاهَا كَالذِّئْبِ يَقَعُ عَلَى أُمِّهِ** : या'नी सूद के सत्तर दरवाजे हैं, इन में से कम तर ऐसा है जेसे कोई अपनी मां से ज़िना करे । (شعب الإيمان، باب في قبض الربي على الأموال، ٣/٣٩٣، حديث: ٥٥٢٠)

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इस हदीसे पाक को नक्ल करने के बा'द लिखते हैं : “तो जो शख्स

सूद का एक पैसा लेना चाहे अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

का इरशाद मानता है तो ज़रा गिरेबान में मुंह डाल कर पहले सोच ले कि इस पैसे का न मिलना क़बूल है या अपनी मां से सत्तर सत्तर बार ज़िना करना ।” मज़ीद फ़रमाते हैं : “सूद लेना हरामे क़तई व कबीरा व अज़ीमा है ।” (फ़तावा रज़विय्या, 17/307)

इस पुर फ़ितन दौर में बा'ज़ अफ़राद सूद के बारे में बहुत कलाम करते हैं और तरह तरह से सूदी मुआमलात में राहें निकालने की कोशिश करते हैं । कभी कहते हैं कि सूद की इतनी सख़्त रिवायात और वईदों की क्या हिक्मत है ? कभी कहते हैं : “अगर सूदी कारोबार बन्द कर देंगे तो बैनल अक्वामी मन्डी में मुक़ाबला कैसे कर सकेंगे ?” कभी कहते हैं : “दूसरी क़ौमों से पीछे रह जाएंगे और कभी इन्तिहाई कम शर्हें सूद की आड़ ले कर लोगों को उकसाते हैं, तरह तरह की बद तरीन राहें खोलने की कोशिश करते हैं ।” मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं : काफ़िरों ने ए'तिराज़ किया था : **إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا** (बेशक बैअ भी तो सूद की मिस्ल है ।) तुम जो ख़रीदो फ़रोख़्त को हलाल और सूद को हराम करते हो इन में क्या फ़र्क़ है ? बैअ में भी तो नफ़अ लेना होता है ! येह ए'तिराज़ नक्ल करने के बा'द आ'ला हज़रत

ने **عَزَّوَجَلَّ** का येह फ़रमान नक्ल किया :

عَزَّوَجَلَّ ने : **يَا'नी** : **وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا** (प ३, البقرة: २७५)

हलाल की बैअ और हराम किया सूद ।” और फिर इरशाद फरमाया : “तुम होते हो कौन ? बन्दे हो सरे बन्दगी ख़म करो । हुक्म सब को दिये जाते हैं हिक्मतें बताने के लिये सब नहीं होते । आज दुन्या भर के मुमालिक में किसी की मजाल है कि क़ानूने मुल्की की किसी दफ़आ (कलम) पर हर्फ़गीरी करे कि येह बेजा है, येह (ऐसा) क्यूं है ? (इसे) यूं न चाहिये, यूं होना चाहिये था । जब झूटी फ़ानी (और) मजाज़ी सल्तनतों के सामने चूने चरा की मजाल नहीं होती तो उस मलिकुल मुलूक, बादशाहे हकीकी, अज़ली, अबदी के हुज़ूर क्यूं और किस लिये, का दम भरना कैसी सख़्त नादानी है !”

(फ़तावा रज़विय्या, 17/359)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें सूद की नुहूसत से बचते हुवे रिज़्के हलाल कमाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और अपने प्यारे हबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते अतहर पर ज़ियादा से ज़ियादा **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा

गुस्सा ईमान को इस तरह ख़राब करता है जिस तरह ऐलवा (या'नी एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शहद को ख़राब कर देता है । (شعب الايمان १/१०، ३/११، حديث: ८२९२)

बयान नम्बर : 36

तमाम मख़्लूक़ को किफ़ायत करने वाला नूर

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ** से रिवायत है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने बे मिसाल है : **مَنْ صَلَّى عَلَى يَوْمِ الْجُمُعَةِ مِائَةَ مَرَّةٍ : جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَعَهُ نُورٌ** जो शख़्स रोज़े जुमुआ मुझ पर सो बार **दुरूदे पाक** पढ़े जब वोह क़ियामत के रोज़ आएगा तो उस के साथ एक ऐसा नूर होगा **لَوْ قَسِمَ ذَلِكَ النُّورُ بَيْنَ الْخَلْقِ كُلِّهِمْ لَوَسَّعَهُمْ** कि अगर वोह नूर पूरी मख़्लूक़ में भी तक्सीम कर दिया जाए तो सब के लिये काफ़ी हो जाए ।

(حلیة الأولیاء، ۸/ ۴۹، حدیث: ۱۱۳۴۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि हम फुज़ूल गुफ़्तगू में मशगूल रहने के बजाए अपना तमाम तर वक़्त सुलताने बहुरो बर, दो जहां के ताजवर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते अतहर पर **दुरूदो सलाम** पढ़ने के लिये मुख़्तस कर दें, हमारे अस्लाफ़े किराम **رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** का तरीक़ा भी येही रहा है कि वोह इस अज़ीम काम के लिये कुछ न कुछ वक़्त मुक़र्रर फ़रमा लिया करते थे, फ़िर सफ़र हो या हज़र चाहे कैसी ही सऊबत व मसरूफ़ियत होती वोह अपने मा'मूल को हरगिज़ तर्क न फ़रमाते जैसा कि

सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली

आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفَى** का येह मा'मूल था कि नमाज़े फ़ज़ के बा'द एक पारह की तिलावत फ़रमाते और फिर एक हिज़्ब (बाब) दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ का पढ़ते। इस में कभी नागा न होता और बा'द नमाज़े जुमुआ बिला नागा **100** बार **दुरूदे रज़विख्या** (**يَا نَبِيَّ اللَّهِ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَالْهَيْدِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَوةٌ وَسَلَامٌ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ**) पढ़ते। हत्ता कि सफ़र में भी जुमुआ होता तो नमाज़े ज़ोहर के बा'द **दुरूदे रज़विख्या** न छोड़ते, चलती हुई ट्रेन में खड़े हो कर पढ़ते। ट्रेन के मुसाफ़िर इस दीवानगी पर हैरत ज़दा होते मगर उन्हें क्या मा'लूम कि :

दीवाने को तहक़ीर से दीवाना न कहना

दीवाना बहुत सोच के दीवाना बना है

(तज़क़िए सदरुशरीआ, स. 33)

क्या खड़े हो कर दुस्खे पाक पढ़ना वाजिब है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी के ज़ेहन में येह वस्वसा पैदा हो सकता है कि सिर्फ़ **दुरूदो सलाम** पढ़ लेने से ही

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म पर अमल हो जाता है तो क्या फिर खड़े

हो कर पढ़ना ज़रूरी है ?

जवाब : जी नहीं ! जिस तरह चाहें दुरूदे पाक पढ़ सकते हैं, बैठ कर पढ़ें या खड़े हो कर या पैदल चलते हुवे या फिर लैट कर मगर लैटने में येह एहतियात रहे कि पाउं समेटे हुवे हों, अलबत्ता खड़े हो कर हाथ बांध कर दुरूदे पाक पढ़ने में ता'जीम का पहलू ज़ियादा है ।

याद रखिये ! किसी मुअज़्ज़मे दीनी की ता'जीम के लिये खड़े होना मसनून व मुस्तहब अमल है चुनान्वे, मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَان अपनी किताब “जाअल हक़” में फ़रमाते हैं : जब कोई दीनी पेशवा आए तो उस की ता'जीम के लिये खड़ा हो जाना सुन्नत है इसी तरह जब दीनी पेशवा सामने खड़ा हो तो उस के लिये खड़ा रहना सुन्नत और बैठा रहना बे अदबी है । मिश्कात शरीफ़ में है कि जब सा'द इब्ने मुआज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुवे तो हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने अन्सार को हुक्म दिया । قَوْمُوا إِلَى سَيِّدِكُمْ या'नी अपने सरदार के लिये खड़े हो जाओ । येह क़ियाम ता'जीमी था न येह कि इन को महज़ मजबूरी की वजह से क़ियाम कराया गया । नीज़ घोड़े से उतारने के लिये एक दो साहिब ही काफ़ी थे (अगर ता'जीमन खड़ा होना जाइज़ न होता तो सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने) सब को क्यूं फ़रमाया कि खड़े हो जाओ, नीज़ घोड़े से उतारने के लिये तो हाज़िरीने मजलिसे पाक में से कोई भी चला जाता, ख़ास अन्सार को क्यूं हुक्म फ़रमाया ? तो मानना पड़ेगा कि येह क़ियाम ता'जीमी ही था ।

अशअतुल्लमआत किताबुल अदब बाबुल कियाम में इस हदीस **قَوْمُوا إِلَى سَيِّدِكُمْ** के तहत मज़कूर है। जमहूर उ-लमा ने उलमाए सालिहीन की ता'जीम करने पर इत्तिफ़ाक़ किया है। इमाम नववी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** ने फ़रमाया कि : “बुजुर्गों की तशरीफ़ आवरी के वक़्त खड़ा होना **मुस्तहब** है इस बारे में अह़ादीसे आई हैं और इस की मुमानअत में सराहतन कोई हदीस नहीं आई, क़निय्या से नक़ल किया कि बैठे हुवे आदमी का किसी आने वाले की ता'जीम के लिये खड़ा हो जाना **मकरूह** नहीं। अलमगीरी किताबुल कराहता बाब मुलाक़ातुल मलूक में है। **تَجَوُّزُ الْخِدْمَةِ بِغَيْرِ اللَّهِ تَعَالَى بِالْقِيَامِ وَأَخَذَ الْيَدَيْنِ وَالْإِنْجَاءِ** ग़ैरे खुदा की अज़मत करना खड़े हो कर, मुसाफ़हा कर के, झुक कर हर तरह जाइज़ है। इस जगह झुकने से मुराद रुकूअ से कम झुकना है। ताहद्दे रुकूअ झुकना तो नाजाइज़ है।

शामी जिल्द अव्वल बाबुल इमामत में है कि अगर कोई शख़्स मस्जिद में सफ़े अव्वल में जमाअत के इन्तिज़ार में बैठा है और कोई अलमि आदमी आ गया, उस के लिये जगह छोड़ देना खुद पीछे हट जाना **मुस्तहब** है बल्कि उस के लिये पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है। येह ता'जीम तो उ-लमाए उम्मत की है लेकिन सिद्दीके अव्वर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने तो ऐन नमाज़ पढ़ाते हुवे जब हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** को तशरीफ़ लाते देखा तो खुद मुक़तदी बन गए और बीच नमाज़ में हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** इमाम हुवे।

(जाअल हक़, स. 204 ता 205 मुलतक़तन व मुलख़ब़सन)

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ सहाबए किराम का अदब तो देखिये कि

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़ की हालत में थे और जब आप को इल्म हुवा
कि सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ला चुके हैं तो आप की
ता'जीम की खातिर पीछे आ कर मुक़्तदी बन गए और हुज़ूर
عَلَيْهِ السَّلَام ने नमाज़ की इमामत फ़रमाई ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَللّٰهُمَّ** भी हमें
अपने महबूब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ता'जीम व तौकीर का हुक्म इरशाद
फ़रमाता है । चुनान्वे, इरशाद होता है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और
وَتَعَزَّزُوا وَتَوَقَّروا ط (प २६, الفتح: १)
रसूल की ता'जीम व तौकीर करो ।

लेकिन फ़ी ज़माना शैतान ने लोगों के ज़ेहनों में नबिय्ये
करीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ता'जीम से मुतअल्लिक़ तरह तरह के
वस्वसे डाल दिये हैं हालांकि इस फ़रमाने खुदा वन्दी पर सहाबए
किराम व अहले बैते अतहार से बढ़ कर अमल करने वाला कौन
हो सकता है ? येह नुफ़ूसे कुदसिय्या तो हर वक़्त हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام
की बारगाह में रहते थे, हलालो हुराम को भी बख़ूबी जानते थे ।
सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब इन के पास तशरीफ़ लाते तो येह
हज़रात आप की ता'जीम में खड़े हो जाया करते । चुनान्वे,

मिशकात शरीफ़ में है कि जब ख़ातूने जन्नत हज़रते
सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत
में हाज़िर होतीं । तो आप عَلَيْهِ السَّلَام उन के लिये खड़े हो जाते और

उन का हाथ पकड़ते, उस पर बोसा देते और अपनी जगह उन को बिठाते। इसी तरह जब हुजूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** हज़रते फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** के पास तशरीफ़ ले जाते तो आप भी खड़ी हो जातीं और हाथ मुबारक को बोसा देतीं और अपनी जगह हुजूर को बिठा लेतीं। (مشكاة، کتاب الآداب، باب المصافحة والمعانقة، ۲/ ۴۱، حدیث: ۴۶۸۹)

मिर्कात शर्हे मिश्कात में है। (इस रिवायत से) मा'लूम हुवा कि फु-ज़ला (या'नी उ-लमा) के लिये कियामे ता'ज़ीमी जाइज़ है।

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिये मुलहिदों की क्या मुरव्वत कीजिये शिर्क ठहरे जिस में ता'ज़ीमे हबीब उस बुरे मज़हब पे ला'नत कीजिये ज़ालिमो ! महबूब का हक़ था येही इश्क़ के बदले अ़दावत कीजिये (हदाइके बख़्शिश, स. 199)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

اَللّٰهُ **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُعِظْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا

مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۝

(الحج: ३२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **اَللّٰهُ** के निशानों की ता'ज़ीम करे तो येह दिलों की परहेज़गारी से है।

हज़रते मुफ़्ती जलालुद्दीन अमजदी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** अपनी किताब “ता'ज़ीमे नबी” सफ़्हा 18 पर इस आयते करीमा का खुलासा बयान करते हुवे फ़रमाते हैं कि : “जिस के दिल में तक्वा

और परहेज़गारी होगी वोह शअइरुल्लाह की ता'ज़ीम करेगा और शअइरुल्लाह के मा'ना हैं **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के दीन की निशानियां और सरकारे अक्दस **عَلَيْهِ السَّلَام** **अल्लाह** तअला के दीन की निशानियों में से अज़ीम तरीन निशानी हैं तो वोह सारी निशानियों में सब से ज़ियादा ता'ज़ीम के मुस्तहिक् हैं और आयते मुबारका में इस बात का वाजेह इशारा है कि जो लोग हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ता'ज़ीम का इन्कार करते हैं वोह अगर्चे ब ज़ाहिर अच्छे नज़र आते हों मगर उन के कुलूब तक्वा व परहेज़गारी से ख़ाली हैं।”

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِي** फ़रमाते हैं : “ता'ज़ीम में कोई पाबन्दी नहीं बल्कि जिस ज़माने में और जिस जगह जो तरीका भी ता'ज़ीम का हो उसी तरह करनी चाहिये बशर्त येह कि शरीअत ने इस को ह़राम न किया हो जैसे कि ता'ज़ीमी सजदा व रुकूअ। (ज़िक्रे मुस्तफ़ा करते वक़्त ता'ज़ीमन खड़ा होना अफ़ज़ल है इस बारे में इरशाद फ़रमाते हैं :) हमारे ज़माने में (ता'ज़ीम की निय्यत से) शाही अहकाम खड़े हो कर भी पड़े जाते हैं लिहाज़ा महबूब का ज़िक्र भी खड़े हो कर होना चाहिये। देखो **”كُلُوا وَاشْرَبُوا”** में मुतलक़न खाने पीने की इजाज़त है कि हर हलाल ग़िज़ा खाओ पियो, तो बिरयानी, ज़र्दा, कौरमा सब ही हलाल हुवा ख़्वाह ख़ैरुल कुरून (या'नी दौरे सहाबा व ताबेईन) में हो या न हो। ऐसे ही **”تَوَقَّؤْا”** का अम्र मुतलक़ है कि हर किस्म की जाइज़ ता'ज़ीम करो। (चाहे) ख़ैरुल कुरून से साबित हो या न हो। (जाअल हक़, स. 207 मुलतक़तन व मुलख़ब़सन)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा गुफ्तगू से येह बात वाजेह हो गई कि शआइरुल्लाह की ता'जीम ब हुक्मे खुदावन्दी जाइज और मुस्तहब अमल है और हुजूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** भी **अल्लाह** तआला की निशानियों में से एक अजीम निशानी हैं तो जब शआइरुल्लाह की ता'जीम जाइज व मुस्तहसुन हुई तो हुजूर **عَلَيْهِ السَّلَام** की ता'जीम बदरजए औला जाइज होगी, जब आप की जाते बा बरकत लाइके ता'जीम है तो आप का जिक्रे मुबारक भी मुअज्जम हुवा । इसी वजह से सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह में खड़े हो कर **दुरूदो सलाम** पढ़ना अफ़ज़ल है ।

रिफ़अते ज़िक्र है तेरा हिस्सा, दोनों अ़ालम में है तेरा चर्चा
मुर्गे फिरदौस पस अज़ हम्दे खुदा, तेरी ही मददो सना करते हैं

(हदाइके बख़्शिश, स. 112)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कसरत के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ने नीज नमाजों और सुन्नतों की अ़ादत बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये । सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये । न जाने कब किस पर करम हो जाए और उस की बिगड़ी बन जाए ! आप की तरगीब के लिये एक **मदनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है । चुनान्वे,

दुरूद की बरकत से सरकार का दीदार

हिन्द (इन्डिया) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि खुश किस्मती से मुझे दा'वते इस्लामी का मदनी

माहोल मयस्सर आ गया और करम बालाए करम कि इस मदनी
माहोल में एहयाए सुन्नत का जज्बा ले कर सफ़र करने वाले
मदनी काफ़िलों में जहां मैं ने फ़र्ज उलूम सीखे वहां पर मीठे
आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अमल का जज्बा
भी नसीब हुवा और मैं ने सर पर सुन्नत के मुताबिक़ जुल्फें और
सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मदनी
माहोल की बरकत से मुझे और मेरे बच्चों की अम्मी को दुरूदे
पाक से इस क़दर महबबत हो गई कि हम कसरत से दुरूदे पाक
पढ़ने के अ़दी बन गए । दुरूदे पाक के फ़ैज़ान से एक रात हमारी
किस्मत का सितारा चमक उठा और हम दोनों को हुजूरे पुरनूर,
शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़्वाब में ज़ियारत हो गई ।
तेरा शुक्र मौला दिया मदनी माहोल न छूटे कभी भी खुदा मदनी माहोल
खुदा के करम से खुदा की अ़ता से न दुश्मन सकेगा छुड़ा मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** हमें अपने प्यारे हबीब
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ता'ज़ीम करते हुवे आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
की ज़ाते तय्यिबा पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़
अ़ता फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



बयान नम्बर : 37

तीन किस्म के बद् बख्त

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्काए मुकर्रमा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है :
 जिस ने माहे रमज़ान को पाया और उस के रोज़े न रखे वोह शख्स शक्की (या'नी बद् बख्त) है ।
 जिस ने अपने वालिदैन् या किसी एक को पाया और उन के साथ अच्छा सुलूक न किया वोह भी शक्की (या'नी बद् बख्त) है ।
 और जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा वोह भी शक्की (या'नी बद् बख्त) है ।”

(مجمع الزوائد، كتاب الصيام، باب فيمن أدرك شهر رمضان فلم يصمه، ٣/ ٣٤٠، حديث: ٤٧٧٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन बड़ा ही बद् बख्त है वोह शख्स कि जिस के सामने हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ज़िक्र हो और वोह आप عَلَيْهِ السَّلَام की जाते अतहर पर दुरूदे पाक न पढ़े और इस की बरकतें हासिल करने से महरूम रहे । जब कि दुरूदे पाक पढ़ने वाला किस क़दर नसीब वाला है कि उस पर

अब्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे इन्तिहा रहमतों का नुज़ूल होता है । चुनान्वे,

निफाक व नार से आजादी

हज़रते सय्यिदुना इमाम सखावी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ** नक्ल फ़रमाते हैं : सरकारे दो आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक भेजा **اَللّٰهُمَّ عَزَّوَجَلَّ** उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है **وَمَنْ صَلَّى عَلَيَّ عَشْرًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ مِائَةً** और जो मुझ पर दस बार दुरूदे पाक भेजे **اَللّٰهُمَّ عَزَّوَجَلَّ** उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है **وَمَنْ صَلَّى عَلَيَّ مِائَةً كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ بَرَاءَةً مِنَ الْيَفَاقِ وَبَرَاءَةً مِنَ النَّارِ** और जो मुझ पर सो बार दुरूदे पाक भेजे **اَللّٰهُمَّ عَزَّوَجَلَّ** उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह बन्दा निफाक और दोज़ख की आग से बरी है **وَأَسْكَنَهُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ الشُّهَدَاءِ** और क़ियामत के दिन **اَللّٰهُمَّ** तआला उस को शहीदों के साथ रखेगा ।” (القول البديع، الباب الثاني في ثواب الصلاة والسلام على رسول الله، ص ۲۳۳)

गर्चे हैं बे हद कुसूर, तुम हो अफुव्वो ग़फ़ूर !

बख़्श दो जुर्मों ख़ता तुम पे करोड़ों दुरूद

अपने ख़तावारों को अपने ही दामन में लो

कौन करे येह भला तुम पे करोड़ों दुरूद

(हदाइके बख़्शाश, स. 266)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

سُبْحَانَ اللَّهِ देखे आप ने कि दुरुदे पाक पढ़ने वाला

अल्लाह عزوجل की बे शुमार रहमतों का हकदार बन जाता है। हमें चाहिये कि हम भी अपने दिल में अज़मते मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को बढ़ाने, सीने में उलफ़ते मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की शम्अ जलाने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत बनाने और कसरते दुरुदे पाक की सआदत पाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तर्बियत के लिये आशिक़ाने रसूल के साथ सफ़र की सआदत हासिल करें **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عزوجل** इस की बरकत से न सिर्फ़ हमारे अक़ाइदो आ'माल दुरुस्त होंगे बल्कि हमारी दुन्या व आख़िरत भी संवर जाएगी। चुनान्चे, तरगीब के लिये एक मदनी बहार गोश गुज़ार की जाती है।

बद अक़ीदगी से तौबा

हैदराबाद (बाबुल इस्लाम, सिंध) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : मुझे बद क़िस्मती से बद मज़हबों की सोहबत नसीब हो गई, इस बुरी सोहबत की बिना पर मेरा ज़ेहन ख़राब हो गया और मैं तीन साल तक **नियाज़ शरीफ़** और **मीलाद शरीफ़** वग़ैरा पर घर में ए'तिराज़ करता रहा, मुझे पहले **दुरुद शरीफ़** से बहुत शग़फ़ (या'नी बेहद दिलचस्पी व रग़बत थी) मगर ग़लत़ सोहबत के सबब **दुरुदे पाक** पढ़ने का ज़ब्बा ही दम तोड़ गया। इत्तिफ़ाक़ से एक बार मैं ने **दुरुद शरीफ़** की फ़ज़ीलत पढ़ी तो वोह ज़ब्बा फिर से बेदार हुवा और मैं ने कसरत

के साथ दुरूदे पाक पढ़ने का मा'मूल बना लिया। एक रात जब दुरूद शरीफ पढ़ते पढ़ते सो गया तो **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मुझे ख़्वाब में

सब्ज़ गुम्बद का दीदार हो गया और बे साख़्ता मेरी ज़बान पर **الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ** जारी हो गया। सुब्ह जब उठा तो मेरे दिल के अन्दर हल चल मची हुई थी, मैं इस सोच में पड़ गया कि आख़िर हक़ का रास्ता कौन सा है? हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से दा'वते इस्लामी वाले आशिक़ाने रसूल का सुन्नतों की तर्बिय्यत का मदनी काफ़िला हमारे घर की क़रीबी मस्जिद में आया तो किसी ने मुझे मदनी काफ़िले में सफ़र की दा'वत दी, मैं चूँकि मुतजब्ज़िब (Confused) था इस लिये तलाशे हक़ के जज़्बे के तहत मदनी काफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। मैं ने सफ़ेद इमामा बांधा हुवा था मगर सब्ज़ इमामे वाले मदनी काफ़िले वालों ने सफ़र के दौरान मुझ पर न किसी किस्म की तन्कीद की न ही तन्ज़ किया बल्कि अजनबिय्यत ही महसूस न होने दी। अमीरे काफ़िला इस्लामी भाई ने मदनी इन्आमात का तआरुफ़ करवाया और इस के मुताबिक़ मा'मूल रखने का मश्वरा दिया। मैं ने मदनी इन्आमात का बग़ैर मुतालआ किया तो चोंक उठा क्यूँकि मैं ने इतने ज़बरदस्त तर्बिय्यती मदनी फूल जिन्दगी में पहली ही बार पढ़े थे। आशिक़ाने रसूल की सोहबत और मदनी इन्आमात की बरकत से मुझ पर रब्बे लम यज़ल **عَزَّوَجَلَّ** का फ़ज़ल हो गया। मैं ने मदनी काफ़िले के तमाम मुसाफ़ि़रों को जम्अ कर के ए'लान किया कि कल तक मैं

बद अक़ीदा था आप सब गवाह हो जाइये कि आज से तौबा करता हूँ और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहने

की नियत करता हूं। इस्लामी भाइयों ने इस पर फ़रहत व मसरत का इज़हार किया। दूसरे दिन 30 रूपे की नुक्ती (बूंदी या'नी एक बेसन की मिठाई जो मोती के दानों की तरह बनी होती है) मंगवा कर मैं ने सरकारे बग़दाद हुज़ूरे गौसे आ'ज़म शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी قُدّس سرّهُ الرّیّانی की नियाज़ दिलवाई और अपने हाथों से तक़सीम की। मैं 35 साल से सांस के मरज़ में मुब्तला था, कोई रात बिग़ैर तकलीफ़ के न गुज़रती थी, नीज़ मेरी सीधी दाढ़ में तकलीफ़ थी जिस के बाइस सहीह तरह खा भी नहीं सकता था।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मदनी काफ़िले की बरकत से दौराने सफ़र मुझे सांस की कोई तकलीफ़ न हुई और मैं सीधी दाढ़ से बिग़ैर किसी तकलीफ़ के खाना भी खाता रहा। मेरा दिल गवाही देता है कि अकाइदे अहले सुन्नत हक़ हैं और मेरा हुस्ने ज़न है कि दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल अब्बाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक़बूल है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने आशिकाने रसूल के सुन्नतों भरे मदनी काफ़िले में सफ़र की कैसी बरकतें हैं बल्कि हकीक़त तो येह है कि उस इस्लामी भाई को दुरूदे पाक की कसरत की बरकत से दा'वते इस्लामी का मदनी काफ़िला भी मिला और उस पर हिदायत का रास्ता भी खुला, येह इस्लामी भाई बद मज़हबों की सोहबत की वजह से सीधे रास्ते से भटक गए थे, हम सभी को चाहिये कि बुरी सोहबत से

हमेशा दूर रहें और आशिकाने रसूल ही की सोहबत अपनाएं ।
क्यूंकि सोहबत जरूर रंग लाती है, अच्छी सोहबत अच्छा और
बुरी सोहबत बुरा बनाती है ।

صُحِبَتِ صَالِحٌ تَرَا صَالِحٌ كُنْدَ صُحِبَتِ طَالِحٌ تَرَا طَالِحٌ كُنْدَ

(या'नी अच्छे की सोहबत तुझे अच्छा बना देगी बुरों की सोहबत तुझे बुरा बना देगी)

अच्छी सोहबत से मुतअल्लिक़ फ़रामीने मुस्तफ़ा

अच्छी सोहबत से मुतअल्लिक़ तीन अहादीसे मुबारका
सुनिये और अच्छे माहोल से वाबस्ता हो जाइये !

(1) अच्छा साथी वोह है कि जब तू खुदा **عَزَّوَجَلَّ** को याद करे तो
वोह तेरी मदद करे और जब तू भूले तो वोह याद दिलाए ।

(جامع صغير، الجزء الثاني، حرف الخاء، ص ۲۴۲، حدیث: ۳۹۹۹)

(2) अच्छा हम नशीं (या'नी अच्छा साथी) वोह है कि उस को
देखने से तुम्हें **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** याद आ जाए और उस का अमल
तुम्हें आखिरत की याद दिलाए । (ایضاً، ص ۲۴۷، حدیث: ۴۰۶۳)

(3) अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़रूके आ'ज़म
رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : ऐसी चीज़ में न पड़ो जो तुम्हारे लिये
मुफ़ीद न हो और दुश्मन से अलग रहो और दोस्त से बचते रहो
मगर जब कि वोह अमीन (या'नी अमानत दार) हो कि अमीन
की बराबरी का कोई नहीं और अमीन वोही है जो **اَللّٰهُ**

عَزَّوَجَلَّ से डरे । और फ़ाजिर के साथ न रहो कि वोह तुम्हें फुजूर

(या'नी नाफरमानी) सिखाएगा और उस के सामने भेद की बात न कहो और अपने काम में उन से मश्वरा लो जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से डरते हैं ।

(کنز العمال، کتاب الصحبة، باب فی آداب الصحبة، ۷۵/۵، الجزء التاسع، حدیث: ۲۵۵۶۵)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी **دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَہ** अपनी किताब “गीबत की तबाहकारियां” में बद मज़हबों की सोहबत से ख़बरदार करते हुवे फ़रमाते हैं : बद मज़हबों की सोहबत ईमान के लिये ज़हरे कातिल है, इन से दोस्ती और तअल्लुकात रखने की अह्दादीसे मुबारका में मुमानअत है । चुनान्वे, जनाबे रहमते अलमिय्यान, मक्की मदनी सुल्तान **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने इब्रत निशान है : “जो किसी बद मज़हब को सलाम करे या उस से बकुशादा पेशानी (या'नी खुश दिली से) मिले या ऐसी बात के साथ उस से पेश आए जिस में उस का दिल खुश हो, उस ने उस चीज़ की तहक़ीर की जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने मुहम्मद **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** पर उतारी ।” (تاریخ بغداد، عبدالرحمن بن نافع، ۲/۱۰، حدیث: ۵۳۷۸)

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने दिल पज़ीर है : “जिस ने किसी बद मज़हब की (ता'जीम व) तौक़ीर की उस ने दीन के ढा देने पर मदद दी ।”

(معجم الاوسط، من اسمه محمد، ۱/۵، حدیث: ۶۷۷۲)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ जिल्द 21 सफ़हा 184 पर फ़रमाते हैं : सुन्नियों को ग़ैर मज़हब वालों से इख़्तिलात (या'नी मैल जोल) नाजाइज़ है। खुसूसन यूं कि वोह (बद मज़हब) अफ़सर हों (और) येह (सुन्नी) मातहूत (हों)। قَالَ اللَّهُ تَعَالَى (या'नी **अल्लाह** तआला फ़रमाता है।)

وَأَمَّا يُسَيِّئُكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٨﴾ (پ ٤، الانعام: ٢٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

बद मज़हबों से मैल जोल मन्झ्र है

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : “तुम उन से दूर रहो और वोह तुम से दूर रहें, कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें और फ़ितने में न डाल दें।” (مقدمه مسلم، ص ٩، حديث: ٤)

बद मज़हब से दीनी या दुन्यावी ता'लीम लेने की मुमानअत करते हुवे मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं :

ग़ैर मज़हब वालियों (या वालों) की सोहबत आग है, ज़ी इल्म

आकिल बालिग़ मर्दों के मज़हब (भी) इस में बिगड़ गए हैं।

इमरान बिन हतान रक्काशी का किस्सा मशहूर है, येह ताबेईन के ज़माने में एक बड़ा मुहद्दिस था, ख़ारिजी मज़हब की औरत (से शादी कर के उस) की सोहबत में (रह कर) **مَعَادُ اللَّهِ** खुद ख़ारिजी हो गया और येह दा'वा किया था कि (उस से शादी कर के) उसे **सुन्नी** करना चाहता है। (यहां वोह नादान लोग इब्रत हासिल करें, जो ब जो'मे फ़ासिद खुद को बहुत “पक्का सुन्नी” तसव्वुर करते और कहते सुनाई देते हैं कि हमें अपने मस्लक से कोई हिला नहीं सकता, हम बहुत ही मज़बूत हैं !) मेरे आका आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** मज़ीद फ़रमाते हैं : जब सोहबत की येह हालत (कि इतना बड़ा मुहद्दिस गुमराह हो गया) तो (बद मज़हब) को उस्ताद बनाना किस दरजा बदतर है कि उस्ताद का असर बहुत अज़ीम और निहायत जल्द होता है, तो ग़ैर मज़हब औरत (या मर्द) की सिपुर्दगी या शागिर्दी में अपने बच्चों को वोही देगा जो आप (खुद ही) दीन से वासिता नहीं रखता और अपने बच्चों के बद दीन हो जाने की परवाह नहीं रखता। (फ़तावा रज़विय्या, 23/692)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **اَللّٰهُ** हमें बुरी सोहबत से महफूज़ रख और मदनी माहोल में इस्तिक्ामत अता फ़रमा और अपने हबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर ज़ियादा से ज़ियादा **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



बयान नम्बर : 38

जियारते सरकार का वजीफ़

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अज़मत निशान है : “जो मोमिन जुमुआ की रात दो रकअत इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरतुल फ़ातिहा के बा'द 25 मरतबा قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ पढ़े, फिर येह दुरूदे पाक صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْأُمِّي हज़ार मरतबा पढ़े तो आने वाले जुमुआ से पहले ख़्वाब में मेरी ज़ियारत करेगा और जिस ने मेरी ज़ियारत की **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा ।”

(القول البديع، الباب الثالث في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص 383)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मुन्दरिजए बाला दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल में शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي नक़ल करते हैं : “जो शख़्स जुमुआ के दिन एक हज़ार बार येह दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा तो वोह सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़्वाब में ज़ियारत करेगा या जन्नत में अपनी मन्ज़िल देख लेगा, अगर पहली बार में मक़सद पूरा न हो, तो दूसरे जुमुआ भी इस को पढ़ ले, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** पांच जुमुओं तक उस को सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की (ख़्वाब में) ज़ियारत हो जाएगी ।”

(तारीख़े मदीना, स. 343)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक

ﷺ की मे'राज, दीदारे क़िब्रिया है और एक आशिके
रसूल की मे'राज दीदारे मुस्तफ़ा है। कौन ऐसा बद नसीब होगा
जिस के दिल में प्यारे आका ﷺ के दीदार की
तमन्ना न हो, यकीनन हर आशिके रसूल की येही आरजू होगी कि
मुझे दीदारे मुस्तफ़ा नसीब हो जाए।

कुछ ऐसा कर दे मेरे किर्दिगार आंखों में

हमेशा नक़्श रहे रूए यार आंखों में

उन्हें न देखा तो किस काम की हैं येह आंखें

कि देखने की है सारी बहार आंखों में

(सामाने बख़्शिश, स. 131)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! ﷺ

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल मवाहिब शाज़ली
ﷺ फ़रमाते हैं : “जो शख़्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम
ﷺ की ज़ियारत करना चाहता है उसे चाहिये कि
हुजूर सय्यिदे अलम ﷺ का कसरत से ज़िक्र
करता रहे और सादात व औलिया से महबूबत रखे वगर्ना ख़्वाब
में (ज़ियारत) का दरवाज़ा उस पर बन्द है, क्यूंकि येह नुफ़ूसे
कुदसिय्या तमाम लोगों के सरदार हैं, येह जिन से नाराज़ होते
हैं ﷻ और उस के प्यारे हबीब ﷺ

भी उन से नाराज़ हो जाते हैं। (افضل الصلوات على سيد السادات، ص 124)

अगर हम भी **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के रसूल की रिज़ा चाहते हैं और हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ियारत के ख़्वाहिश मन्द हैं तो **दुरूदे पाक** को अपने सुब्हो शाम का वज़ीफ़ा बना लेना चाहिये, सच्ची लगन के साथ इस में मगन रहेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** एक न एक दिन ज़रूर हम पर करम होगा और हमें भी ज़ियारत नसीब हो जाएगी ।

मेरे आकाए ने 'मत, सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** मुख़्तलिफ़ अवक़ात में पढ़े जाने वाले वज़ाइफ़ और दुआओं के मदनी गुलदस्ते "**अल वज़ीफ़तुल करीमा**" में हुसूले ज़ियारते मुस्तफ़ा के लिये **दुरूदे पाक** के चन्द मख़्सूस सीगे ज़िक्र करने के बा'द लिखते हैं : (दुरूदे पाक) ख़ालिस ता'ज़ीमे शाने अक़दस के लिये पढ़े, इस निय्यत को भी (दिल में) जगह न दे कि मुझे ज़ियारत अता हो, आगे उन का करम बे हदो इन्तिहा है । मुंह मदीनए तय्यिबा की तरफ़ हो और दिल हुज़ूरे अक़दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तरफ़, दस्त बस्ता पढ़े (और) येह तसव्वुर बांधे कि **रौज़ए अन्वर** के हुज़ूर हाज़िर हूं और यकीन जाने कि हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** उसे देख रहे हैं, उस की आवाज़ सुन रहे हैं, उस के दिल के ख़तरों पर मुत्तलअ हैं ।

(अल वज़ीफ़तुल करीमा, स. 28)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूदे पाक पढ़ने की बरकत से बा'ज अशिकाने रसूल को ख्वाब में हुजूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपने दीदारे पुर बहार से तो मुस्तफीज फरमाते ही हैं मगर कुछ ऐसे भी अशिकाने रसूल होते हैं कि जिन की बे इन्तिहा महब्बत को देख कर दरयाए रहमत जोश में आ जाता है और आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** रौजए अन्वर से बाहर जल्वागर हो कर उन खुश नसीबों को ऐन हालते बेदारी में शरबते दीदार से नवाजते हैं। चुनान्चे,

आ'ला हज़रत क़ शौके दीदार

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** जब दूसरी मरतबा ज़ियारते नबवी के लिये मदीनए तय्यिबा **رَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** हाज़िर हुवे, शौके दीदार में रौज़ा शरीफ़ के मुवाजहा में **दुरूद शरीफ़** पढ़ते रहे, यकीन किया कि ज़रूर सरकारे अबद क़रार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाएंगे, और बिल मुवाजह (रू बरू) ज़ियारत से मुशरफ़ फ़रमाएंगे। लेकिन पहली शब ऐसा न हुवा तो कुछ कबीदा खातिर (ग़मज़दा) हो कर एक ग़ज़ल लिखी जिस का मतलब येह है।

वो सूए लाला ज़ार फिरते हैं

तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं

(हदाइके बख़्शाश, स. 99)

इस ग़ज़ल के मक़्तअ में इसी की तरफ़ इशारा किया, फ़रमाते हैं :

कोई क्यूं पूछे तेरी बात रज़ा !

तुझ से शैदा हज़ार फिरते हैं

(हदाइके बख़्शिश, स. 100)

येह ग़ज़ल मुवाजहा में अर्ज कर के इन्तिज़ार में मुअद्ब बैठे हुवे थे कि आखिरे कार राहतुल आशिकीन मुरादुल मुश्ताकीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अपने आशिके हकीकी के हाले ज़ार पर खास करम फ़रमाया, इन्तिज़ार की घड़ियां ख़त्म हुई और किस्मत अंगड़ाई ले कर उठ बैठी....निकाबे रुख़ उठ गया। खुश नसीब आशिक ने ऐन बेदारी में अपने महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का चश्माने सर से दीदार कर लिया। (हयाते आ'ला हज़रत, स. 192)

अब कहाँ जाएगा नक्शा तेरा मेरे दिल से

तह में रखा है इसे दिल ने गुमाने न दिया

(सामाने बख़्शिश, स. 60)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

की ज़ियारत के लिये जितने भी दुरूदे पाक के सींगे हैं जिस पर चाहें अमल करें, लेकिन इस निय्यत से पढ़ना कि मैं दुरूदे पाक पढ़ूंगा तो सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाएंगे, मुनासिब नहीं है। बेहतर येही है कि अमले खास को हुज़ूरे अक्दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** की ता'जीम और हुसूले सवाब की निय्यत से किया जाए आगे उन के करम की कोई इन्तिहा नहीं अगर वोह चाहेंगे तो शरबते दीदार से ज़रूर मुस्तफ़ीज़ फ़रमाएंगे।

अगर बिल फ़र्ज़ ज़ियारत में ताख़ीर हो भी जाए या फिर किसी को ज़ियारत होती ही नहीं तो इस में भी दिल बरदाश्ता होने की ज़रूरत नहीं, बल्कि इसी शौक व लगन के साथ हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाहे आली में **दुरूदो सलाम** के गजरे निछावर करते रहना चाहिये, ताख़ीर में भी ज़रूर कोई हिक्मत पोशीदा होती है। ताख़ीर की वजह से दिल बरदाश्ता होने वाले इस्लामी भाई इस वाक़िअ से दर्स हासिल करें।

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار** फ़रमाते हैं : मैं मुतवातिर चौदह (14) साल तक हज़ की सआदते उज़मा से सरफ़राज़ होता रहा और हर साल एक दरवेश को का'बए मुअज़्ज़मा **رَأَاهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** का दरवाज़ा पकड़े देखा। जब वोह **لَا يَبْكُ** कहता तो ग़ैब से आवाज़ सुनाई देती **لَا يَبْكُ** मैं ने चौदहवें (14) साल उस शख्स से पूछा : ऐ दरवेश ! तू बहरा तो नहीं ? उस ने जवाब दिया : मैं सब कुछ सुन रहा हूँ। मैं ने कहा : फिर येह तकलीफ़ क्यूं उठाता है ? उस ने कहा : या शैख़ ! मैं हल्फ़िया बयान करता हूँ कि अगर बजाए चौदह साल के चौदह हज़ार साल मेरी उम्र हो और बजाए साल भर के, हर रोज़ हज़ार बार येह जवाब **لَا يَبْكُ** सुनाई दे तो फिर भी इस दरवाज़े से सर न उठाऊंगा। आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं कि अभी हम मसरूफ़े गुफ़्तगू थे कि अचानक आस्मान से एक काग़ज़ उस के सीने पर गिरा। उस ने वोह काग़ज़ मेरी तरफ़ बढ़ाया, मैं ने पढ़ा तो उस में लिखा था : “ऐ मालिक (**رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ**) ! तू मेरे बन्दे को मुझ

से जुदा करता है कि मैं ने इस के चौदह साल के हज़ क़बूल नहीं किये ? ऐसा नहीं बल्कि इस मुद्दत में आने वाले तमाम हाजियों के हज़ भी इस की पुकार ही की बरकत से क़बूल किये हैं ताकि कोई मेरी बारगाह से महरूम न जाए ।”

(अशिकाने रसूल की 130 हिकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें, स. 96)

जल्वए यार इधर भी कोई फेरा तेरा
हसरतें आठ पहर तकती हैं रस्ता तेरा

(ज़ौके ना'त, स. 15)

इलाही मुन्तज़िर हूं वोह ख़िरामे नाज़ फ़रमाएं
बिछा रखा है फ़र्श आंखों ने कमख़्वाबे बसारत का

(ज़ौक ना'त, स. 39)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी के ज़ेहन में येह सुवाल पैदा हो सकता है कि हमें पता किस तरह चलेगा कि हम ने ख़्वाब में सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की ज़ियारत की है। इस का जवाब येह है कि ख़्वाब में पता चलने की तीन सूरतें हैं। (1) जिस शख़्सियत की ख़्वाब में आप ज़ियारत कर रहे हैं उन के बारे में दिल ही में इल्का होता है कि येह सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। (2) कोई दूसरा तआरुफ़ करवा देता है कि येह मदनी आका صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم हैं। (3) खुद सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ब नफ़से नफ़ीस अपना तआरुफ़ करा देते हैं।

याद रखिये ! जिस ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा उस ने आप ही की ज़ियारत की, क्योंकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सूरते मुबारका में शैतान नहीं आ सकता । जैसा कि

सरकारे अली वकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : مَنْ رَأَىٰ فِي الْمَنَامِ فَقَدْ رَأَىٰ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَا يَمَثُلُ فِي صُورَتِي : या'नी जिस ने मुझे ख़्वाब में देखा उस ने मुझे ही देखा क्योंकि शैतान मेरी सूरत इख़्तियार नहीं कर सकता ।

(بخاری، کتاب الادب، من سمي باسماء الانبياء، ۵۴/۳، حدیث: ۶۱۹۷)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

“या'नी जिस ने मुझे ख़्वाब में देखा तो वोह अ़न करीब मुझे बेदारी में भी देखेगा ।”

(بخاری، کتاب التعبير، باب من رأى النبی فی المنام، ۴۰۶/۴، حدیث: ۶۹۹۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीदार की कई सूरतें होती हैं, हर एक ज़ा़इर (या'नी ज़ियारत करने वाला) अपनी अपनी ईमानी हैसियत के मुताबिक़ ज़ियारत करता है, हज़रते सय्यिदी शैख़ मुहम्मद इस्माईल हक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَوْفِي तफ़्सीरे रूहुल बयान में सूरतुनन्ज्म की तफ़्सीर के तहत फ़रमाते हैं : “जिस शख़्स ने ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत की और कोई नापसन्दीदा बात नहीं थी (या'नी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नाराज़ नहीं थे) तो वोह हमेशा उम्दा

हाल में रहेगा। अगर वीरान जगह में दीदार किया तो वोह वीराना सब्ज़ा ज़ार में बदल जाएगा, अगर मज़लूम कौम की सर ज़मीन में देखा तो उन मज़लूमों की मदद की जाएगी। अगर मग़मूम (ग़मज़दा) ने ज़ियारत की तो उस का ग़म जाता रहेगा अगर मक़रूज़ था तो **अल्लाह** तबारक व तआला उस के क़र्ज़ को अदा फ़रमाएगा, अगर मग़लूब था तो उस की मदद की जाएगी, अगर गाइब था तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** सहीह व सलामत उसे घर लौटा देगा। अगर तंगदस्त था तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस के रिज़्क में कुशादगी अता फ़रमाएगा, अगर मरीज़ था तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उसे शिफ़ा अता फ़रमाएगा। (روح البيان، प २८، النجم، تحت الآية: ८، १/१९/२३)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें कसरत के साथ दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और इस की बरकत से हमें सरकारे नामदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के दीदारे पुर बहार से मुस्तफ़ीज़ फ़रमा।

तू ही बन्दों पे करता है लुत्फ़ो अता, है तुझी पे भरोसा तुझी से दुआ मुझे जल्वाए पाके रसूल दिखा, तुझे अपने ही इज़्जो ज़ला की क़सम

(हदाइके बख़्शिश, स. 81)

امین بجاه النبی الامین صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



बयान नम्बर : 39

अहले महब्बत क्व दुरूद में खुद सुनता हूं

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने बा क़रीना है : “**يَا نَبِيَّ اَسْمَعْ صَلَوةَ اَهْلِ مَحَبَّتِي وَاعْرِفْهُمْ**” अहले महब्बत का दुरूद मैं खुद सुनता हूं और उन्हें पहचानता हूं **وَتُعَرِّضُ عَلَى صَلَوةٍ غَيْرِهِمْ عَرَضًا** जब कि दूसरों का दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है।” (مطالع المسرات شرح دلائل الخيرات، ص 159)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि आकाए दो जहान, रहमते आलमिय्यान **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते बा बरकात पर बे हद दुरूद और लाखों सलाम पढ़ा करें, यकीनन सिद्को इख़लास के साथ पढ़ा हुवा **दुरूद शरीफ़** हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** न सिर्फ़ समाअत फ़रमाते हैं बल्कि अपने उन सच्चे अ़शिकों को जवाबे सलाम भी अ़ता फ़रमाते हैं। जैसा कि

रौज़ए अक्दस से जवाबे सलाम

हज़रते शैख़ अबू नस्र अब्दुल वाहिद सूफ़ी कर्खी

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوَي फ़रमाते हैं : “मैं हज़ से फ़ारिग़ हो कर मदीनाए

मुनव्वरा रौज़ए अन्वर पर हाज़िर हुवा, हुज़रा शरीफ़ा के पास बैठा

हुवा था कि इतने में हज़रते शैख़ अबू बक्र दियारे बिक्री वहां हाज़िर हुवे और (हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के मुवाजहा शरीफ़ के सामने खड़े हो कर अर्ज किया : **اَلْسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ** तो मैं ने और तमाम हाज़िरीन ने सुना कि रौज़ए शरीफ़ा के अन्दर से आवाज़ आई : **وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا اَبَا بَكْرٍ** ऐ अबू बक्र तुझ पर सलामती हो ।

(الحاوی للفتاوی، کتاب البعث، تنویر الحלק فی امکان رؤیة النبی والملك ۳/۱۲)

वोह सलामत रहा क़ियामत में
पढ़ लिये दिल से जिस ने चार सलाम
इस जवाबे सलाम के सदक़े
ता क़ियामत हों बे शुमार सलाम

(जौके ना'त, स. 119)

बल्कि बा 'ज़ खुश नसीबों पर तो इस क़दर करमे खास फ़रमाते हैं कि उन्हें ऐन बेदारी के आलम में दस्त बोसी का शरफ़ अता फ़रमाते हैं । चुनान्चे, अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي अपनी किताब नसीमुर्रियाज़ फ़ी शर्हे शिफ़ाइल काज़ी इयाज़ में फ़रमाते हैं : “हज़रते शैख़ अहमद रिफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي का मा'मूल था कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हर साल हाज़ियों के ज़रीए बारगाहे रिसालत मआब में अपना सलाम भिजवाया करते थे । लेकिन जब ब जाते खुद इन्हें मदीनए तय्यिबा رَادَّاهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की हाज़िरी का शरफ़ नसीब हुवा । तो

रौज़ए अन्वर के सामने खड़े हो कर चन्द अशआर पेश किये ।

चुनान्वे, फ़रमाते हैं :

فِي حَالَةِ الْبُعْدِ رُوحِي كُنْتُ أَرْسَلُهَا
تُقَلُّ الْأَرْضُ عَنِّي فَهِيَ نَائِي

तर्जमा : दूरी की हालत में अपनी रूह को अपना नाइब बना कर भेजा करता था ताकि वोह मेरी तरफ़ से इस अर्जे मुक़द्दस को बोसा दे ।

وَهَذِهِ نَوْبَةُ الْأَشْبَاحِ قَدْ حَضَرَتْ
فَأَمْدُ دَيْدِيكَ لِكِي تَحْطِي بِهَا شَفَتِي

तर्जमा : और अब जिस्म की बारी है जो कि हाज़िरे दरबार है । पस या रसूल अपना दस्ते मुबारक बढ़ाइये ताकि मेरे होंटों को सआदत मन्दी नसीब हो ।

कहा जाता है कि रौज़ए अन्वर से दस्ते मुबारक ज़ाहिर हुवा और शैख़ अहमद रिफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي ने उसे चूम लिया ।

(نسیم الرياض، القسم الثانی، الباب الثال فی تعظیم امره، فصل ومن اعظامه الخ ۵۴۳/۴)

तेरे रौज़े की जालियों के पास साथ रहमो करम की ले कर आस
कितने दुख्यारे रोज़ आ आ के शाहे जीशां सलाम कहते हैं

(जौके ना'त, स. 585)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

हाजिरिये बारगाह के आदाब

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ किस क़दर खुश बख़्त हैं वोह लोग जिन्हें

मदीनए मुनव्वरा رَاَدَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَ تَعْظِيمًا में रौज़ए रसूल के रू बरू सलाम पेश करने की सआदत नसीब होती है। **अल्लाह** तबारक व तआला हमारी ज़िन्दगी में भी वोह मुबारक लम्हात लाए और हम भी सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दरबारे गोहर बार में हाज़िर हो कर बसद एहतिराम सलाम अर्ज़ करें। सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي रौज़ए रसूल पर हाज़िरी के आदाब बयान करते हुवे फ़रमाते हैं। हाजिरिये मस्जिदे (नबवी على صاحبها الصلوة والسلام) से पहले तमाम ज़रूरिय्यात से जिन का लगाव दिल बटने का बाइस हो, निहायत जल्द फ़ारिग़ हो इन के सिवा किसी बेकार बात में मशगूल न हो मअन वुजू व मिस्वाक करो और गुस्ल बेहतर, सफ़ेद पाकीज़ा कपड़े पहनो और नए बेहतर, सुर्मा और खुशबू लगाओ और मुश्क अफ़ज़ल। अब फ़ौरन आस्तानए अक़्दस की तरफ़ निहायत खुशूअ व खुजूअ से मुतवज्जेह हो, रोना न आए तो रोने का मुंह बनाओ और दिल को बज़ोर रोने पर लाओ और अपनी संग दिली से रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ इल्तिजा करो। अब दरे मस्जिद पर हाज़िर हो, सलातो सलाम अर्ज़ कर के थोड़ा ठहरो जैसे सरकार से हाज़िरी की इजाज़त मांगते हो, बिस्मिल्लाह कह कर सीधा पाउं पहले रख कर हमा तन अदब हो कर दाख़िल हो। इस वक़्त जो

अदबो ता 'जीम फ़र्ज है हर मुसलमान का दिल जानता है आंख, कान, ज़बान, हाथ, पाउं (और) दिल सब, ख़याले ग़ैर से पाक करो, मस्जिदे अक्वदस के नक्शो निगार न देखो। अगर कोई ऐसा सामने आए जिस से सलाम कलाम ज़रूर हो तो जहां तक बने कतरा जाओ, वरना ज़रूरत से ज़ियादा न बढ़ो फिर भी दिल सरकार ही की तरफ़ हो।” (बहारे शरीअत, 1/1223)

मज़ीद फ़रमाते हैं : “(कि जब रौज़ए अन्वर के क़रीब पहुंचे तो) अब अदब व शौक में डूबे हुवे गर्दन झुकाए, आंखें नीची किये, आंसू बहाते, लरज़ते कांपते, गुनाहों की नदामत से पसीना पसीना होते, सरकारे नामदार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के फ़ज़लो करम की उम्मीद रखते, आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के क़दमैने शरीफ़ैन की तरफ़ से सुन्हरी जालियों के रू बरू मुवाजहा शरीफ़ में हाज़िर हों कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपने मज़ारे पुर अन्वार में रू ब क़िब्ला जल्वा अफ़रोज़ हैं, मुबारक क़दमों की तरफ़ से आप हाज़िर होंगे तो सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** की निगाहे बे कस पनाह बराहे रास्त आप की तरफ़ होगी और येह बात बे हृद जौक अफ़ज़ा होने के साथ साथ आप के लिये सआदते दारैन का सबब भी है।”

(बहारे शरीअत, 1/1224 मुलख़ब़सन)

क़िब्ले को पीठ किये कम अज़ कम चार हाथ (या'नी दो गज़) दूर नमाज़ की तरह हाथ बांध कर सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

के चेहरा अन्वर की तरफ़ रुख़ कर के खड़े हों कि “फ़तावा आलमगीर” वगैरा में येही अदब लिखा है कि **يَقِفُ كَمَا يَقِفُ فِي الصَّلَاةِ**

या’नी सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के दरबार में इस तरह खड़ा हो जिस तरह नमाज़ में खड़ा होता है। **याद रखें !** सरकार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** अपने मज़ारे पुर अन्वार में ऐन हयाते ज़ाहिरी की तरह ज़िन्दा हैं और आप को भी देख रहे हैं बल्कि आप के दिल में जो खयालात आ रहे हैं उन पर भी मुत्तलअ हैं। **ख़बरदार !** जाली मुबारक को बोसा देने या हाथ लगाने से बचें कि येह ख़िलाफ़े अदब है कि हमारे हाथ इस काबिल ही नहीं कि **जाली मुबारक** को छू सके, लिहाज़ा चार हाथ (या’नी दो गज़) दूर ही रहें, येह क्या कम शरफ़ है कि सरकार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने आप को अपने **मवाजहे अक्दस** के करीब बुलाया और सरकार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की **निगाहे करम** अब खुसूसियत के साथ आप की तरफ़ है। (बहारे शरीअत, 1/1224-1225 मुख़ब़सन)

अब अदब और शौक के साथ दर्दभरी आवाज़ में मगर आवाज़ इतनी बुलन्द और सख़्त न हो कि सारे आ’माल ही ज़ाएअ हो जाएं, न बिल्कुल ही पस्त कि येह भी सुन्नत के ख़िलाफ़ है। बल्कि मो’तदिल आवाज़ में इन अल्फ़ाज़ के साथ सलाम अर्ज़ करें :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ ،
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ
خَلْقِ اللّٰهِ ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيعَ الْمُذْنِبِينَ ، اَلسَّلَامُ
عَلَيْكَ وَعَلَى الْكَ وَاصْحَابِكَ وَأُمَّتِكَ أَجْمَعِينَ ،

(या'नी) ऐ नबी ﷺ आप पर सलाम और

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत और बरकतें । ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के
रसूल ﷺ आप पर सलाम । ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ**
की तमाम मख्लूक से बेहतर, आप पर सलाम । ऐ गुनाहगारों की
शफ़ाअत करने वाले आप पर सलाम । आप पर, आप की आल
व अस्हाब पर और आप की तमाम उम्मत पर सलाम ।

महफूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 193)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इमाम क़स्तलानी **قُدِّسَ سِرُّهُ التُّورَانِي** नक़ल फ़रमाते हैं : “जो
कोई हुजूरे अकरम, नूरे मुजस्सम **ﷺ** की क़ब्रे
मुअज़्ज़म के रू बरू खड़ा हो कर येह आयते शरीफ़ा पढ़े :
(51: २२, الاحزاب: ५६) **إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ** फिर सत्तर मरतबा येह अर्ज़
करे : **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّد** फिरिशता उस के जवाब में यूं कहता
है : “ऐ फुलां ! तुझ पर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत हो ।” और
उस की कोई हाज़त बाकी नहीं रहती ।

(المواهب اللدنية، المقصد العاشر، الفصل الثاني في زيارة قبره الشريف الخ، १/३: ६)

जहां तक ज़बान साथ दे, दिल ज़मई हो मुख़्तलिफ़
अलकाब के साथ सलाम अर्ज़ करते रहें, अगर अलकाब याद न
हों तो **الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ** की तक़रार करते रहें, जिन जिन

लोगों ने आप को सलाम के लिये कहा है उन का भी सलाम अर्ज करें। यहां खूब दुआएं मांगें और बार बार इस तरह शफ़ाअत की भीक मांगें : **يَا'नी يَا رَسُولَ اللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मैं आप की शफ़ाअत का तलबगार हूं।

(बहारे शरीअत, 1/1225-1226 मुलख़ब़सन)

सरकार عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई

मदीनए मुनव्वरा सि. 1405 हि. की हाज़िरी में शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** को आप के एक पीर भाई मर्हूम हाजी इस्माईल ने एक वाक़िआ सुनाया कि एक पचासी साला बुढ़िया हज़ के लिये आई थी, मदीनए मुनव्वरा में सुन्हरी जालियों के सामने सलातो सलाम के लिये हाज़िर हुई और अपने टूटे फूटे अल्फ़ाज़ में सलातो सलाम अर्ज करना शुरूअ किया नागाह एक ख़ातून पर नज़र पड़ी जो एक किताब में से देख देख कर बड़े ही उम्दा अल्फ़ाब के साथ सलातो सलाम अर्ज कर रही थी, येह देख कर बे चारी अनपढ़ बुढ़िया का दिल डूबने लगा, अर्ज किया : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मैं तो पढ़ी लिखी हूं नहीं जो आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के शायाने शान

अल्फ़ाब के साथ सलाम अर्ज करूं, आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

की अज़मतो शान वाकेई बहुत बुलन्दो बाला है । आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** तो उन्हीं का सलाम क़बूल फ़रमाते होंगे जो बेहतरीन अन्दाज़ में सलाम पेश करते होंगे, ज़ाहिर है मुझ अनपढ़ का सलाम आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को कहां पसन्द आएगा । दिल भर आया, रो धो कर चुप हो रही, रात को जब सोई तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, क्या देखती है कि सिरहाने उम्मत के वाली, सरकारे आली **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** तशरीफ़ लाए हैं, लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : “मायूस क्यों होती हो ? हम ने तुम्हारा सलाम सब से पहले ही क़बूल फ़रमा लिया है !!!”

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **اَبْلَاح** **عَزَّوَجَلَّ** हमें रौज़ए रसूल की बा अदब हाज़िरी, सुन्हरी जालियों के रू बरू सलातो सलाम पढ़ने की सआदत और जल्वए महबूब में ईमान व अफ़ियत के साथ शहादत की मौत नसीब फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शुमातत की ता'रीफ़

दूसरों की तकलीफ़ और मुसीबतों पर खुशी का इज़हार करने को शुमातत कहते हैं । (حدیثہ ندیہ ، ۱ / ۱۳۱)

बयान नम्बर : 40

इश्तिकामत के साथ थोड़ा अमल भी बेहतर है

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहल्वी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي** फ़रमाते हैं : मोमिने सादिक् और मुहिब्बे मुश्ताक़ पर लाज़िम है कि दुरूद शरीफ़ की कसरत करे और दूसरे आ'माल पर इसे मुक़द्दम (या'नी बढ़ कर) जानने में कमी न करे। जिस क़दर अ़दद मख़्सूस कर सके, करे और फिर उस मुक़र्रर अ़दद को रोज़ाना का विर्द बनाए (तारीख़े मदीना स. 328) क्यूंकि बेहतरीन अमल वोह है जो हमेशा किया जाए अगर्चे थोड़ा ही क्यूं न हो। अल्लामा अब्दुररुफ़ मनावी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي** फैज़ुल क़दीर में फ़रमाते हैं : **يَا'नी थोड़ा अमल जो हमेशागी के साथ हो, اَبْلَاَهُ عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक उस अमल से बेहतर है जो कसीर हो लेकिन हमेशा न हो।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदो सलाम पढ़ने को अपने सुब्हो शाम का वज़ीफ़ा बना लेना चाहिये, जब भी मौक़अ मिले उठते बैठते चलते फिरते दुरूदे पाक ही पढ़ते रहें कि येह हमारे अस्लाफ़े किराम **رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام** का भी महबूब अमल है चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं :

“मैं इस बात को पसन्द करता हूँ कि आदमी अपने खुतबे और अपने हर मतलूब से पहले **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى رَسُوْلِكَ** की हम्दो सना करे और हर हाल में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ता रहे।”

(سعادة الدارين، الباب الثالث فيما ورد عن الانبياء والعلماء في فضل الصلاة عليه، ص ١٠٧، ملخصاً)

वस्वसा : प्यारे इस्लामी भाइयो ! किसी के ज़ेहन में येह वस्वसा आ सकता है कि मैं तो सारा दिन काम काज में मसरूफ़ रहता हूँ तो मैं कसरत के साथ **दुरूदे पाक** किस तरह पढ़ सकता हूँ ?

जवाबे वस्वसा : कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ने वालों की फ़ेहरिस्त में खुद को शामिल करने के लिये न तो कारोबार बन्द करने की हाज़त है और न ही दीगर मुआमलात रोकने की ज़रूरत, बल्कि इलमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने जो आ'दाद ज़िक्र फ़रमाए उन में से किसी भी अ़दद के मुताबिक़ **दुरूदे पाक** पढ़ने का मा'मूल बना लिया जाए तो हम भी कसरत के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ने वालों की फ़ेहरिस्त में शामिल हो सकते हैं। फिर येह भी ज़रूरी नहीं कि ज़ियादा अल्फ़ज़ वाला तवील **दुरूदे पाक** ही पढ़ा जाए। अगर किसी ने “صَلَّى اللّٰهُ عَلَى مُحَمَّدٍ” पढ़ने का मा'मूल बना लिया

तो भी कसरत में शुमार होगा और इस **दुरूद शरीफ़** की फ़ज़ीलत

के भी क्या कहने कि : “जो कोई येह दुरूदे पाक एक बार पढ़ता है **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رَسُوْلِكَ** उस पर रहमत के सत्तर दरवाजे खोल देता है।”

(القول البديع، الباب الثاني في ثواب الصلاة والسلام على رسول الله، ص २८८)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبُ! صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लिहाजा अगर मजकूरा दुरूदे पाक (या'नी “**صَلَّيْ اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد**” 313 बार पढ़ने की आदत बना ली जाए तो **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** कसरत के साथ दुरूदे पाक पढ़ने वालों में शामिल हो जाएंगे और मदनी इन्आम नम्बर 5 : “क्या आज आप ने कम अज़ कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लिये ?” के आमिल भी बन जाएंगे। अगर यक्सूई के साथ दो जानू क़िब्ला रू सब्ज़ गुम्बद का तसव्वुर बांध कर 313 बार दुरूदे पाक पढ़ना मयस्सर हो तो बेहतर, वरना जब भी घर से दुकान, ओफिस या कहीं जाने के लिये निकलें तो तमाम रास्ते भर दुरूदे पाक पढ़ने का मा'मूल रखिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** आते जाते बा आसानी 313 बार दुरूदे पाक पढ़ने में कामयाब हो जाएंगे।

बे अ़दद और बे अ़दद तस्लीम बे शुमार और बे शुमार दुरूद बैठते उठते, जागते सोते हो इलाही मेरा शिआर दुरूद

(जौके ना'त, स. 87)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبُ! صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बा'ज़ मुतअख़िबरीन मशाइख़े शाज़लिय्या फ़रमाते हैं :

“जब किसी को औलियाए कामिलीन और मुर्शिदे बा शरीअत न

मिल सके तो वोह बकसरत दुरूद शरीफ पढ़े। इस से उस के बातिन में (एक ऐसा) नूरे अजीम पैदा होगा जो मुर्शिदे कामिल का काम देगा और (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ) उस को जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बिला वासिता फ़ैज़ पहुंचेगा।

(रहमतों की बरसात, स. 170)

इ-लमाए किराम फ़रमाते हैं : ईमान की हिफ़ाज़त का एक ज़रीआ किसी मुर्शिदे कामिल से मुरीद होना भी है। **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है।

يَوْمَ نَدْعُو أَكْلًا أَنْ لَيْسَ بِأَمَامِهِمْ

(प ५, बनी اسرائील: ८१)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन हम हर जमाअत को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे।

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن “नूरुल इरफ़ान” में इस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : “इस से मा’लूम हुवा कि दुन्या में किसी सालेह को अपना इमाम बना लेना चाहिये शरीअत में तक्लीद कर के और तरीक़त में बैअत कर के, ताकि ह़शर अच्छों के साथ हो। (मज़ीद फ़रमाते हैं :) इस आयते करीमा में तक्लीद, बैअत और मुरीदी सब का सुबूत है।”

प्यारे इस्लामी भाइयो ! किसी को पीर इस लिये बनाया जाता है ताकि उमूरे आख़िरत में बेहतरी आए, उस की राहनुमाई और बातिनी तवज्जोह की बरकत से मुरीद **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी वाले कामों से बचते हुवे रिज़ाए रब्बुल अनाम के मदनी काम के मुताबिक़ अपने शबो

रोज़ गुज़ार सकें। लेकिन अफ़सोस ! मौजूदा ज़माने में बेशतर लोगों ने पीरी मुरीदी जैसे अहम मन्सब को हुसूले दुन्या का ज़रीआ बना रखा है। बे शुमार बद अक्कीदा और गुमराह लोग भी तसव्वुफ़ का ज़ाहिरी लुबादा ओढ़ कर लोगों के दीनो ईमान को बरबाद कर रहे हैं। और इन्ही ग़लत़ कार लोगों को बुन्याद बना कर पीरी मुरीदी के मुख़ालिफ़ीन इस पाकीज़ा रिश्ते से लोगों को बद गुमान कर रहे हैं। दौरे हाज़िर में कामिल व नाक़िस पीर का इस्तियाज़ (फ़र्क़) इन्तिहाई मुश्किल है।

पीरे कामिल की शराइत

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي मुर्शिदे कामिल के लिये चन्द शराइत व अवसाफ़ की वज़ाहत करते हुवे फ़रमाते हैं : “रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नाइब जिस को मुर्शिद बनाया जाए, उस के लिये येह शर्त है कि वोह अ़ालिम हो। लेकिन हर अ़ालिम भी मुर्शिदे कामिल नहीं हो सकता। इस काम के लाइक़ वोही शख़्स हो सकता है जिस में येह चन्द मख़सूस सिफ़ात मौजूद हो।

(1) जो दुन्या की महब्बत और दुन्यवी इज़्ज़त व मर्तबे की चाहत से मुंह मोड़ चुका हो। (2) ऐसे कामिल मुर्शिद से बैअत कर चुका हो जिस का सिलसिला हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام तक पहुंचता हो। (3) हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अहकामात की ता'मील का मज़हर (या'नी अहकामाते इलाहिय्या की बजा आवरी

के साथ साथ सुनने नबविय्या की पैरवी करने और कराने की भी रोशन नज़ीर) हो । (4) वोह शख्स थोड़ा खाना खाता हो । (5) थोड़ी नींद करता हो । (6) ज़ियादा नमाज़ें पढ़ता हो । (7) ज़ियादा रोज़े रखता हो । (8) उस की तबीअत में तमाम अच्छे अख़लाक़ मसलन सब्रो शुक्र, तवक्कुल व क़नाअत, अमानत व सदाक़त, इन्क़िसारी व फ़रमां बरदारी और इसी किस्म के दीगर फ़ज़ाइल उस की सीरत व किरदार का जुच्च होना चाहिये । उस शख्स ने नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के अन्वार से ऐसा नूर और रोशनी हासिल की हो जिस से तमाम बुरी ख़स्लतें मसलन बुख़ल व हसद, कीना व जलन, दुन्या से बड़ी उम्मीदें बांधना, गुस्सा और सरकशी वगैरा इस रोशनी में ख़त्म हो गई हों । इल्म के सिलसिले में किसी का मोहताज न हो, सिवाए उस मख़सूस इल्म के जो हमें पैग़म्बरे इस्लाम **عَلَيْهِ السَّلَام** से मिलता है । येह मज़कूरा अवसाफ़ कामिल मुर्शिदों या पीराने तरीक़त की कुछ निशानियां हैं । जो रसूले खुदा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की नाइबी के लाइक़ हैं । ऐसे मुर्शिदों की पैरवी करना ही सहीह तरीक़त है ।”

मज़ीद फ़रमाते हैं : “ऐसे पीर बड़ी मुश्किल से मिलते हैं । अगर येह दौलत किसी को नसीब हुई कि ऐसा कामिल मुर्शिद मिल गया और वोह मुर्शिद उसे अपने मुरीदों में शामिल भी कर ले तो उस मुरीद के लिये लाज़िम है कि वोह अपने मुर्शिद का ज़ाहिरी व बातिनी अदब करे ।” (मजमूआ रसाइले ग़ज़ाली, स. 167)

येह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का खास करम है कि वोह हर दौर में अपने प्यारे महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की उम्मत की इस्लाह के लिये अपने औलियाए किराम **رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام** ज़रूर पैदा फ़रमाता है। जो अपनी मोमिनाना हिक्मत व फ़िरासत के ज़रीए लोगों को येह ज़ेहन देने की कोशिश फ़रमाते हैं कि **मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सेंकड़ों साल पहले सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي** जिन अवसाफ़ के हामिल पीर को कमयाब फ़रमा रहे हैं। **أَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** फ़ी ज़माना येह तमाम अवसाफ़ **शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** की ज़ाते मुबारका में ब दरजए अतम व अकमल पाए जाते हैं। जिन के तक्वा व परहेज़गारी की बरकात की एक मिसाल दा 'वते इस्लामी का मदनी माहोल हमारे सामने है कि आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** की निगाहे विलायत और हिक्मतों भरी **मदनी तर्बिय्यत** ने दुनियाभर में लाखों मुसलमानों बिलखुसूस नौजवानों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। कितने ही बे नमाज़ी आप की निगाहे फ़ैज़ से नमाज़ी बन गए। मां-बाप से नाजैबा रविय्या इख़्तियार करने वाले बा अदब बन गए, गाने बाजे सुनने वाले मदनी मुज़ाकरात और सुन्नतों भरे बयानात सुनने वाले बन गए, फ़ोह्श गोई करने वाले ना'ते मुस्तफ़ा पढ़ने वाले बन गए, माल की महब्बत में जीने मरने वालों को फ़िक़रे आख़िरत की मदनी

सोच नसीब हो गई, तफ़रीही मक़ामात पर जा कर अपना वक़्त बरबाद करने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाआत में अक्वल ता आख़िर शिर्कत करने वाले बन गए। लिहाज़ा आप भी शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** की गुलामी में आने, अपने मक़सदे हयात को पाने और सलातो सलाम की आदत बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये और इस के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत कीजिये। और इजतिमाअ के इख़िताम पर पढ़े जाने वाले सलातो सलाम की बरकतें लूटिये कि **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** इस के ज़रीए भी लोगों की इस्लाह हो जाती है। आप की तरगीब के लिये एक ईमान अफ़रोज़ **मदनी बहार** पेश की जाती है। चुनान्वे,

तौबा का राज़

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के मुक़ीम इस्लामी भाई के मक़तूब का खुलासा है : मदनी माहोल से वाबस्ता होने से क़ब्बल हमारे घर के तमाम अफ़राद दुन्या की महब्बत, फ़ेशन परस्ती की नुहूसत और नमाज़ों में सुस्ती का शिकार थे। वालिदैन् को हमा वक़्त हमारी दुन्या व मुस्तक़्बल की फ़िक्क़ दामन गीर थी कि बस किसी तरह हमारी अवलाद का मुस्तक़्बल रोशन हो जाए। अल ग़रज़ हमारे घर का माहोल गुनाहों से भरपूर था। हर वक़्त घर में फ़िल्मों डिरामों, गाने बाजों का शोर बरपा रहता, सुन्नतों भरा माहोल न होने की वजह से मैं अपनी आख़िरत से यक्सर ग़ाफ़िल था। मेरी क़िस्मत का सितारा इस तरह चमका कि एक मरतबा मैं

मग़रिब की नमाज़ पढ़ने मस्जिद में चला गया। नमाज़ के बा'द एक बा इमामा आशिके रसूल ने खड़े हो कर नमाज़ियों को क़रीब होने के लिये कहा। उस इस्लामी भाई का अन्दाज़ इतना दिल नशीन था कि मैं बे इख़्तियार उस के क़रीब जा कर बैठ गया। उन्होंने ने मुख़्तसर सा बयान किया जो मुझे बहुत अच्छा लगा। बयान के बा'द उस इस्लामी भाई ने निहायत मुशफ़िक़ाना अन्दाज़ में मुझ से मुलाक़ात की और कुछ देर बैठने के लिये कहा, मैं बैठ गया। उन्होंने ने मुझे नेकी की दा'वत पेश की और दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा मदनी माहोल के बारे में बताया फिर आख़िर में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ की पुर खुलूस दा'वत पेश की। मैं ने हामी भर ली और मैं पहली मरतबा हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शरीक हुवा। मुझे क्या मा'लूम था कि चन्द लम्हों बा'द मेरी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा। बयान के बा'द रिक्कत अंगेज़ ज़िक्रो दुआ का सिलसिला हुवा और फिर सलातो सलाम के लिये सारे इस्लामी भाई खड़े हो गए। सलातो सलाम की पुर सोज़ आवाज़ कानों के रास्ते से दिल की पहनाइयों में उतर गई। सलातो सलाम पढ़ने का अन्दाज़ इस क़दर अच्छा लगा कि मैं अब हर जुमा'रात इजतिमाअ में शरीक होने लगा और मेरे कान सलातो सलाम की पुर सोज़ सदाएं सुनने के मुन्तज़िर रहते। कुछ ही अर्से में मदनी माहोल से वाबस्ता हो गया। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** तादमे तहरीर हल्का सत्ह पर मदनी इन्आमात व ता'वीज़ाते अत्तारिय्या की ख़िदमत सर अन्जाम दे रहा हूं।

गुनहगारो ! आओ सियाह कारो ! आओ
गुनाहों को देगा छुड़ा मदनी माहोल
पिला कर मए इश्क देगा बना येह
तुम्हें आशिके मुस्तफ़ा मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 603)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें अपने प्यारे हबीब
صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़
अता फ़रमा और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में
इस्तिक़ामत अता फ़रमा ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

कांटा निकलने का तरीका

अगर जिस्म में कहीं कांटा पैवस्त हो गया हो और
न निकलता हो तो अन्डे की सफ़ेदी में थोड़ी सी फटकरी
मिला कर उस जगह बान्ध दीजिये । **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** थोड़ी देर
में निकल आएगा ।

(घरेलू इलाज, स. 98)



बयान नम्बर : 41

दुख्खाले मस्जिद के वक्त मुझ पर सलाम भेजो

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है :
 शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 का फ़रमाने बे मिसाल है : जब तुम मस्जिद में दाख़िल हुवा करो
 तो मेरी ज़ात पर सलाम भेजा करो और यूँ कह लिया करो
 اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ या'नी ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मेरे लिये
 अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे । और जब मस्जिद से बाहर
 निकलो तो उस वक्त भी मुझ पर सलाम पेश कर लिया करो और
 यूँ कहा करो اللَّهُمَّ اغْصِنِي مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ या'नी ऐ **अल्लाह**
عَزَّوَجَلَّ मुझे शैतान मर्दूद के शर से बचा ।

(القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص ٣١٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में हाज़िरी
 की सआदत नसीब हो तो दाख़िल होते वक्त और मस्जिद से
 बाहर निकलते वक्त **सरकारे** दो अ़लम, नूरे मुजस्सम
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ाते मोहतरम पर **दुरुदो सलाम** पढ़
 लिया करें, अगर हम थोड़ी सी तवज्जोह करें और ज़बान को
 थोड़ी देर हरकत दें तो सवाब के ढेरों ख़ज़ाने के साथ साथ इस का

एक फ़ाइदा येह भी होगा कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** हमारा दुरूदे पाक ब नफ़से नफ़ीस समाअत फ़रमाएंगे क्यूंकि मसाजिद में हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** मौजूद होते हैं। जैसा कि

सरकार मसाजिद में मौजूद होते हैं

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَقَّان** अपनी मशहूरे ज़माना तस्नीफ़ जाअल हक़ में मिर्कात शर्हे मिश्कात के हवाले से हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي** का कौल नक़ल फ़रमाते हैं : **يَا'नी** जब तुम मस्जिदों में दाख़िल हुवा करो तो उस वक़्त **सरवरे काइनात**, शाहे मौजूदात **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की बारगाहे अक़दस में सलाम अर्ज़ कर लिया करो **فَإِنَّهُ يَحْضُرُ فِي الْمَسَاجِدِ** क्यूंकि मस्जिदों में आप **عَلَيْهِ السَّلَام** मौजूद होते हैं।” (जाअल हक़, स. 126)

हज़रते सय्यिदुना अलक़मा बिन कैस **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** से मरवी है कि आप फ़रमाते हैं : “जब तुम मस्जिद में दाख़िल हुवा करो तो यूं कह लिया करो **صَلَّى اللّٰهُ وَمَلَائِكَتُهُ عَلَى مُحَمَّدٍ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ**। (القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص ३१५)

इसी तरह हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** का भी येही मा'मूल था कि आप जब मस्जिद में दाख़िल होते

और मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाते तो इन अल्फ़ाज़ के साथ
 सलाम अर्ज़ करते : **السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ** :

(الشفاء الباب الرابع في حكم الصلاة عليه الخ، فصل في المواطن التي يستحب فيها الصلاة والسلام على النبي، الجزء الثاني، ص ٦٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना बा'ज़ लोग
 निदा व पुकार के सीगों (मसलन या रसूलल्लाह, या हबीबल्लाह)
 के साथ **दुरुदो सलाम** पढ़ने से मन्ज़ूर करते हैं हालांकि बयान
 कर्दा रिवायत में सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना अलक़मा
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सुल्ताने दो जहां, रहमते आलमिय्यान
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर हर्फ़े निदा (या'नी पुकार के सीगे) के
 साथ **दुरुद** भेजने और **السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ** (या'नी ऐ नबी आप
 पर सलाम हो) कहने की ता'लीम इरशाद फ़रमाई है जिस से
 येह बात साबित होती है कि जिस तरह दीगर सीगों के साथ
दुरुद शरीफ़ पढ़ना जाइज़ है इसी तरह अगर हम आप
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को “या रसूलल्लाह”, “या हबीबल्लाह”
 जैसे निदा के अल्फ़ाज़ से मुख़ातब करते हुवे **दुरुदो सलाम**
 पढ़ें तो येह भी न सिर्फ़ जाइज़ है बल्कि सहाबा व ताबेईन और
 बुजुर्गाने दीन **رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْكَمِيلِينَ** से साबित भी है। चुनान्वे,

वशीला पेश करना सहाबा का तरीका है

एक शख्स अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमान
बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास किसी हाज़त के लिये आता

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

रहा मगर आप उस की तरफ और उस की हाजत की तरफ कोई तवज्जोह न फ़रमाते वोह शख्स एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना उ़समान बिन हुनैफ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मिला और उन से इस बात का तज़क़िरा किया कि **अमीरुल मोअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उ़समान बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मेरी तरफ़ तवज्जोह नहीं फ़रमाते इस पर हज़रते सय्यिदुना उ़समान बिन हुनैफ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस शख्स से फ़रमाया, जाओ वुजू करो और मस्जिद में जा कर दो रकअत नमाज़ अदा करो फिर यूं दुआ मांगो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ وَاَتُوْجِّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) نَبِيِّ الرَّحْمَةِ
 “يَا مُحَمَّدُ” اِنِّىْ اَتُوْجِّهُ بِكَ اِلَى رَبِّىْ فَتَقْضِ لِّىْ حَاجَتِىْ

“या’नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तेरे रहमत वाले नबी, मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से तेरी तरफ़ मुतवज्जेह होता हूं, ऐ मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं आप के वसीले से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ अपनी हाजत के लिये मुतवज्जेह होता हूं और दुआ करता हूं ताकि मेरी वोह हाजत पूरी हो ।”

इस (दुआ) के बा’द अपनी हाजत का ज़िक्र करो फिर उन के पास जा कर अपनी ज़रूरत पेश करो । वोह शख्स चला गया और जिस तरह हज़रते सय्यिदुना उ़समान बिन हुनैफ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा था इसी तरह किया फिर **अमीरुल मोअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उ़समान बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दरवाजे पर हाज़िर हुवा तो दरबान ने आ कर उस का हाथ पकड़ा और उसे हज़रते

सय्यिदुना उसमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सामने पेश कर दिया ।

हज़रते उसमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उसे अपने साथ फ़र्श पर बिठाया और फ़रमाया अपनी हाज़त बयान करो, उस ने अपनी हाज़त बयान कर दी, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने न सिर्फ़ उस की हाज़त पूरी की बल्कि उस से येह भी इरशाद फ़रमाया कि जब भी किसी चीज़ की ज़रूरत पड़े हमारे पास आ जाना । फिर वोही शख़्स हज़रते सय्यिदुना उसमान बिन हुनैफ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास आया और कहा **عَزَّوَجَلَّ** **اَبْلَاهُ** (या'नी **अब्लाह** आप को बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए) पहले तो हज़रते उसमान बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मेरी तरफ़ तवज्जोह ही नहीं फ़रमाते थे मगर अब जब आप ने उन से (मेरे मुतअल्लिक़) गुफ़्तगू की तो उन्होंने मेरी हाज़त पूरी फ़रमा दी, इस पर हज़रते उसमान बिन हुनैफ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस को बताया कि (तुम्हारे बारे में) न तो मैं ने उन से कोई बात की और न ही उन्होंने ने मुझ से कोई बात की, बल्कि मैं ने तो तुम्हें वोह बात बताई है जो मैं ने खुद नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़बानी सुनी थी कि जब एक नाबीना शख़्स बारगाहे रिसालत में आया और अपनी बीनाई के ख़त्म होने की शिकायत की तो हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : सब्र कर । उस शख़्स ने अर्ज की या रसूलल्लाह (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मेरे पास कोई अस्बाब नहीं और मुझे शदीद

दुश्वारी पेश आती है । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस शख़्स से

फरमाया : जाओ लौटा लाओ और वुजू करो फिर मस्जिद में जा कर दो रकअत नमाज़े नफ़ल अदा करो फिर हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उसे यह दुआ पढ़ने को कहा जो मैं ने तुम्हें बताई है। हम अभी मह्वे गुफ़्तगू थे कि वोह नाबीना शख़्स (जब दोबारा) हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह में हाज़िर हुवा तो यूं महसूस हुवा कि उसे कोई तकलीफ़ ही न थी।

(मेजम क़ैर, मा असन्द عثمان بن حنيف, ३१/ ९, حديث: ८३१०)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! निदा के सीगे के साथ सलाम पढ़ना तो ऐसा है कि इस के बिगैर नमाज़ ही नहीं होती क्यूंकि हर शख़्स नमाज़ के अन्दर तशह्हुद में **اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهُ** पढ़ता है अगर इस में से एक लफ़्ज़ भी छूट जाए तो नमाज़ नहीं होती। क्यूंकि येह अल्फ़ाज़ तशह्हुद का जुज़ हैं और तशह्हुद का एक एक लफ़्ज़ पढ़ना वाजिब है। चुनान्चे,

सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْی** बहारे शरीअत में फ़रमाते हैं : दोनों का'दों में पूरा तशह्हुद पढ़ना, यूं ही जितने का'दे करने पड़े सब में पूरा तशह्हुद वाजिब है एक लफ़्ज़ भी अगर छोड़ेगा, तर्के वाजिब होगा।" (और अगर जान बूझ कर

वाजिब तर्क किया तो नमाज़ नहीं होगी।) (बहारे शरीअत, 1/518)

निदा (या'नी पुकार) के सीगों के साथ नबिय्ये करीम

ﷺ को पुकारना और दुरूदो सलाम पढ़ना सहाबए किराम और बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ الْمُبِين का मा'मूल रहा है। चुनान्वे,

सहाबी ने पुकारा “या रसूलल्लाह”

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, आप फ़रमाया करते : “कि जब मैं मस्जिद में दाख़िल होता हूँ तो اللَّهُ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ज़रूर कहता हूँ।”

(القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص ३६०)

इसी तरह मुहम्मद बिन सीरीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपने ज़माने के लोगों का मा'मूल बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : “जब लोग मस्जिद में दाख़िल हुवा करते तो السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ كُفَّاهَا كَرْتَهُ يَ” (القول البديع، ايضاً)

हज़रते हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ : के जवाज़ में कोई शक नहीं है।” (रहमतों की बरसात, स. 335)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

याद रहे! जब भी शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना ﷺ पर दुरूदो सलाम पढ़ने की सआदत नसीब हो तो आप عَلَيْهِ السَّلَام को इस तरह से न

पुकारा जाए जैसे हम आपस में एक दूसरे का नाम ले कर पुकारते हैं बल्कि आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को अच्छे अल्फ़ाबत के साथ याद करना चाहिये कि इस में अदब का पहलू ज़ियादा पाया जाता है चुनान्चे, **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** हमें रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को मुखातब करने के आदाब सिखाते हुवे पारह 18 सूरतुनूर की आयत नम्बर 63 में इरशाद फ़रमाता है :

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ
بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ
بَعْضًا (پ ۱۸، النور: ۶۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : रसूल
के पुकारने को आपस में ऐसा न
ठहरा लो जैसा तुम में एक, दूसरे
को पुकारता है ।

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي** ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : “जब (कोई) रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को निदा करे तो अदब व तकरीम और तौकीर व ता’ज़ीम के साथ आप के मुअज़्ज़म अल्फ़ाब से नर्म आवाज़ के साथ मुतवाज़ेअना व मुन्कसिराना लहजे में “या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह, या हबीबल्लाह” कह कर मुखातब करे ।”
गैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

(हदाइके बख़्शिश, स. 199)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

साहिबे “तम्बीहुल अनाम” हज़रते अब्दुल जलील

मगरिबी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** ने दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल पर जो किताब लिखी है। उस के मुक़द्दमे में फ़रमाते हैं : “मैं ने इस के बे शुमार बरकात देखे और बारहा सरकार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ियारत नसीब हुई। एक बार ख़्वाब में देखा कि माहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मेरे ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ़ लाए हैं, चेहरए अन्वर की ताबानी से पूरा घर जगमगा रहा है। मैं ने तीन मरतबा **الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ** कहने के बा’द अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मैं आप के जवार में हूं और आप की शफ़ाअत का उम्मीदवार हूं।” नीज़ मैं ने देखा कि मेरा हमसाया जो कि फ़ौत हो चुका था मुझ से कह रहा है : “तू हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के उन खुद्दाम में से है जो उन की मदद् सराई करने वाले हैं।” मैं ने उस से कहा कि तुझे कैसे मा’लूम हुवा ? इस पर उस ने कहा : “हां **اَبُو بَكْرٍ** की क़सम ! तेरा ज़िक़्र आस्मानों में हो रहा था।” और मैं ने देखा कि सरकार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** हमारी गुफ़्तगू सुन कर मुस्कुरा रहे हैं। इतने में मेरी आंख खुल गई और मैं निहायत हश्शाश बश्शाश था।

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيماورد من لطائف المرائي والحكايات..... الخ، اللطيفة الثالثة والتسعون، ص ١٥١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

ऐे हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें अपने प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफीक अता फ़रमा और हमें दुरूदे पाक की बरकात से मुस्तफीज फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने सिह्रहत निशान है हर बीमारी की दवा है, जब दवा बीमारी तक पहुंचा दी जाती तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म से मरीज अच्छा हो जाता है ।

(मुसलम, व १२१०, हदीथ: २२०२)



बयान नम्बर : 42

मसाइब व आलाम का ख़ातिमा

शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
का फ़रमाने बा क़रीना है : जिसे कोई सख़्त हाज़त दरपेश हो तो
उसे चाहिये कि मुझ पर कसरत से **दुरूद शरीफ़** पढ़े । क्यूँकि
येह मसाइब व आलाम को दूर करता है और रिज़्क में इज़ाफ़ा
करता है । (بستان الواعظین وریاض السامعین لابن جوزی، ص ۳۰۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम जब भी नबिय्ये रहमत,
शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जाते बा बरकत पर **दुरूदे**
पाक पढ़ें तो इस निय्यत से न पढ़ें कि मेरी येह मुशिकल हल हो
जाए, मुझे इस परेशानी से नजात मिल जाए या मुझे येह फ़ाइदा
हासिल हो, बल्कि आदाबे दुरूद को मल्हूजे ख़ातिर रखते हुवे
गुम्बदे ख़जरा का तसव्वुर बांध कर, निहायत ज़ौको शौक के साथ
पढ़ना चाहिये, अगर बिलफ़र्ज कोई मुशिकल है भी तो **दुरूदे**
पाक पढ़ कर रब तअ़ाला की बारगाह में अज़िज़ी व ज़ारी के
साथ दुआ करें إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ तमाम मुशिकलात व मसाइब दूर हो
जाएंगे । क्यूँकि **दुरूदे पाक** एक ऐसा वज़ीफ़ा है जो आफ़ात व
बलय्यात दूर करने के लिये काफ़ी है । चुनान्वे,

जहाज़ डूबने से महफूज़ रहा

हज़रते अल्लामा फ़ाकहानी قَدِيسَ سِرّاً التُّورَانِي ने “अल फ़जरुल
मुनीर” में एक बुजुर्ग शैख़ मूसा ज़रीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَدِيرُ का वाक़िअ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा वते इस्लामी)

बयान किया है। वोह फ़रमाते हैं कि मैं एक काफ़िले के साथ बहरी जहाज़ में सफ़र कर रहा था कि अचानक जहाज़ तूफ़ान की ज़द में आ गया येह तूफ़ान क़हरे खुदावन्दी बन कर जहाज़ को हिलाने लगा, हम यकीन कर बैठे कि चन्द लम्हों बा'द जहाज़ डूब जाएगा और हम सब लुक़्मए अजल बन जाएंगे, क्यूं कि मल्लाहों ने भी येह समझ लिया था कि इतने तुन्दो तेज़ तूफ़ान से कोई किस्मत वाला जहाज़ ही बचता है। इसी आलम में मुझ पर नौद का ग़लबा हुवा और चन्द लम्हों के लिये मुझ पर गुनूदगी त़ारी हो गई, इसी असना में क्या देखता हूं कि मेरे ख़्वाब में रहमते आलमिय्यान, मक्की मदनी सुल्तान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** तशरीफ़ ले आए और **दुरूदे तुनज्जीना** पढ़ कर मुझ से इरशाद फ़रमाया : “तुम और तुम्हारे साथी एक हजार बार येह दुरूद पढ़ लो।”

शैख़ साहिब **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : “जब मैं बेदार हुवा तो मैं ने अपने तमाम दोस्तों को जम्अ किया और हम ने वुजू कर के इस **दुरूदे पाक** का विर्द शुरूअ कर दिया।” अभी हम ने तीन सो बार ही येह **दुरूदे पाक** पढ़ा था कि तूफ़ान का जोर कम होने लगा और आहिस्ता आहिस्ता तूफ़ान रूक गया, समन्दर की सतह पर अम्न हो गया और इस **दुरूदे पाक** की बरकत से तमाम जहाज़ वालों को नजात मिल गई।”

(القول البديع، الباب الخامس في الصلاة عليه في اوقات مخصوصة، ص ٤١٥، ملخصاً ومفهوماً)

दुख्खे तुनज्जीना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَاةً تُنَجِّنَا بِهَا مِنْ
جَمِيعِ الْاَمْوَالِ وَالْاَفَاتِ وَتَقْضِيْ لَنَا بِهَا جَمِيعَ
الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيعِ السَّيِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا
بِهَا اَعْلٰى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصٰى الْغَايَاتِ
مِنْ جَمِيعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيَاةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ
اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सआदतुद्दारैन में हैं एक मरतबा दरबारे रिसालत में एक शख्स हाजिर हुवा और **फ़क्रो फ़ाक़ा** और तंगिये मआश की शिकायत की तो महबूबे रब्बे जुल जलाल, पैकरे हुस्नो जमाल **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया :

اِذَا دَخَلْتَ مَنْزِلَكَ فَسَلِّمْ اِنْ كَانَ فِيْهِ اَحَدٌ اَوْ لَمْ يَكُنْ فِيْهِ اَحَدٌ

या'नी जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो **السَّلَامُ عَلَیْكُمْ** कह लिया करो चाहे घर में कोई हो या न हो। फिर मुझ पर सलाम कहा करो और एक मरतबा **قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ** पढ़ लिया करो, उस शख्स ने ऐसा ही किया तो **عَزَّوَجَلَّ** ने उस का रिज़्क कुशादा फ़रमा दिया हत्ता कि उस के हमसायों और रिश्तेदारों को भी इस रिज़्क से हिस्सा

पहुंचा। (سعادة الدارين، الباب الثاني فيماورد في فضل الصلاة والتسليم..... الخ، حرف الجيم، ص ۸۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने दुरूदे पाक

किस क़दर बाइसे बरकत है कि एक शख्स जो पहले तंगिये मुआश के सबब फ़क्रो फ़ाका की ज़िन्दगी बसर कर रहा था लेकिन जब उस ने हबीबे मुकर्रम, नबिय्ये मुअज़्ज़म **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदो सलाम को अपने रोज़ो शब का वज़ीफ़ा बना लिया तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने उसे इस क़दर अता फ़रमाया कि उस ने अपने हमसायों और क़राबत दारों की भी मदद की ।

फ़ी ज़माना अगर हम अपने गिर्दो नवाह में नज़र दौड़ाएं तो हर दूसरा शख्स तंगदस्ती व बे रोज़गारी का रोना रोता नज़र आता है । अगर हम भी सुब्हो शाम ब कमाले खुशूअ व खुजूअ दिल को सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तरफ़ मुतवज्जेह कर के आप की ज़ाते गिरामी पर दुरूदो सलाम के गजरे निछावर करते रहें तो **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से न सिर्फ़ सरकारे दो आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महबबत हमारे दिलों में जा गुज़ीं होगी बल्कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हमारे रिज़्के हलाल में बरकत भी अता फ़रमा देगा । इसी ज़िम्न में एक आशिके रसूल का ईमान अफ़रोज़ वाकिआ सुनिये और झूम झूम कर सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** के दरबारे गोहर बार में बसद एहतिराम दुरूदो सलाम का नज़राना पेश कीजिये । चुनान्वे,

बलख़ का सौदागर

शहरे बलख़ में एक सौदागर रहता था । उस के दो बेटे थे ।

सौदागर का इन्तिक़ाल हो गया । उस ने तर्के में माल व ज़र के

इलावा हुज़ूर सरापा नूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के तीन मूए मुबारक भी छोड़े। दोनों बेटों में तर्का तक्सीम हुवा। दुन्यवी माल तो आधा आधा बांट लिया गया मगर **मूए मुबारक** की तक्सीम में येह मस्अला खड़ा हो गया कि इन को कैसे तक्सीम करें ? चुनान्चे, बड़े लड़के ने येह तजवीज़ पेश की, कि दोनों एक एक बाल रख लें और बक़िय्या एक को क़त़अ़ (cut) कर के आधा आधा बांट लिया जाए। छोटा लड़का जो कि निहायत ही आशिके रसूल था, येह तजवीज़ सुन कर कांप गया और उस ने कहा : “मैं हरगिज़ हरगिज़ ऐसी बे अदबी की ज़ुरअत नहीं कर सकता। मेरा दिल सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के बाल मुबारक के दो हिस्से करने की इजाज़त नहीं देता।” येह सुन कर बड़े भाई ने बिगड़ कर कहा : “अगर तुझे बालों की अज़मत का इतना ही एहसास है तो यूं कर कि तीनों बाल तू रख ले और सारा मालो दौलत मुझे दे दे।” छोटे भाई ने इस फैसले को क़बूल करते हुवे तीनों मुक़द्दस बाल ले कर सारा माल ब खुशी बड़े भाई के हवाले कर दिया। अब छोटे भाई ने अपना येह मा'मूल बना लिया कि तीनों **मुबारक बालों** को सामने रख कर हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** की बारगाहे बे कस पनाह में **दुरूदे पाक** के फूल पेश किया करता। इस की बरकत से **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने उस के मुख़्तसर से कारोबार में उसे तरक्की अता फ़रमाई और वोह मालदार हो गया। दूसरी तरफ़ बड़े भाई को दुन्यवी माल में ख़सारे पर ख़सारा आने लगा हत्ता कि वोह कंगाल हो गया। दरिं असना छोटे भाई का इन्तिक़ाल हो गया।

किसी नेक आदमी ने उस छोटे भाई और सरकारे मदीना

ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ

फ़रमा रहे हैं : “जाओ ! लोगों से कह दो कि अगर उन्हें कोई हाज़त दरपेश हो तो मेरे इस आशिक़ की क़ब्र की ज़ियारत करें और **اللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** से अपनी हाज़तें त़लब करें।”

उस नेक आदमी ने अपना ख़्वाब लोगों पर ज़ाहिर किया और हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** का पैग़ाम सुनाया। फिर क्या था, लोग निहायत अदबो तकरीम के साथ जूक़ दर जूक़ उस आशिक़े रसूल के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत के लिये आने लगे। साहिबे मज़ार **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** की बरकतों से लोगों के मुआमलात हल होने लगे। लोग इस मज़ार का काफ़ी अदब करते थे यहां तक कि अगर कोई सुवार मज़ार के पास से गुज़रता तो अदबन सुवारी से नीचे उतर आता।

(القول البديع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة والسلام علی رسول اللّٰه، ص ۲۷۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है कि शैताने लईन

किसी के ज़ेहन में येह वस्वसा डाले कि सरकार **ﷺ**

के पर्दे ज़ाहिरी को तो चौदह सो साल गुज़र गए हैं, मगर आज

तक लोगों के पास आप के बाल मुबारक मौजूद हैं, येह कैसे

मुमकिन हो सकता है और फिर दुन्या के कोने कोने में लोग दा'वा

करते हैं कि हमारे पास नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल मुबारक हैं तो इस बात का क्या सुबूत है कि येह वाकेई हुजूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के मूए मुबारक हैं ?

जवाबन अर्ज़ है कि जब सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक तराशे जाते थे तो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उन्हें हासिल करने की खातिर परवाना वार टूट पड़ते और जिसे कुछ मिल जाता वोह उसे दुन्या की हर चीज़ से अज़ीज़ तर समझता और ब हिफ़ाज़ते तमाम संभाल कर रखता । फिर रफ़्ता रफ़्ता सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان नेकी की दा'वत अ़ाम करने की ग़रज़ से दुन्या के चप्पे चप्पे में फैलते गए, और इस तरह दूसरी अश्या के साथ साथ मूए मुबारक भी दुन्या के कौने कौने में पहुंचे और येह बात तो बच्चा बच्चा जानता है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अजसामे त़ाहिरा को ज़मीन नहीं खा सकती जैसा कि ह़दीसे पाक में आता है :

إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ

أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ

या'नी बेशक **अल्लाह** ने

अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मुबारक

जिस्मों का खाना ज़मीन पर ह़राम कर दिया है ।

(ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب فى فضل الجمعة ٩/٢، حديث: ١٠٨٥)

ज़ाहिर है कि जब जिस्मे पाक सलामत है तो बाल मुबारक भी तो जिस्म शरीफ़ का ही हिस्सा हैं, वोह कैसे ख़त्म

हो सकते हैं ? बल्कि मुशाहदा तो येही है कि एक बाल मुबारक से कई कई शाखें निकलती हैं और इस तरह नूरानी बालों का गुच्छा बन जाता है, गोया हमारे आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का रुवां रुवां हयात है, और जिस्मे अतहर से ज़ाहिरी तौर पर निस्बत क़तअ़ हो जाने के बा वुजूद भी ज़िन्दा रहता है, और उस की नश्व नुमा भी जारी रहती है, चुनान्चे, यूँ मुबारक बालों की नश्व नुमा भी होती रही और येह बाल मुबारक सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** से होते हुवे उन की अवलाद तक पहुंचे, फिर अवलाद दर अवलाद मुन्तक़िल होते हुवे आज दुन्या के कोने कोने में बेशुमार अहले महब्बत के पास मौजूद हैं ।

और रहा येह शुबा कि इस का क्या सुबूत है कि येह मूए मुबारक शहनशाहे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ही के हैं ? इस का जवाब येह है कि तबरूकात के सिलसिले में येह आम काइदा है कि जो चीज़ मुसलमानों में किसी निस्बत की वजह से मुतबर्क मशहूर हो जाए वोह मुतबर्क ही है । मसलन कोई साहिब बतौरे “सय्यिद” मशहूर हैं तो उन की ता’जीम की जाएगी । उन के हस्बो नसब की टोह में पड़ना कोई ज़रूरी नहीं, अगर बिलफ़र्ज किसी ने **مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ** अपने आप को झूट मूट “सय्यिद” मशहूर कर भी दिया है तो येह अगर्चे सख़्त गुनाह है मगर हमें चूँकि पता नहीं, इस लिये हम पर इस “निस्बत” की ता’जीम करना लाज़िम है । इसी तरह किसी भी तबरूक के बारे में ख़्वाह

किसी बाल के बारे में ही कोई झूट बोले और **نَعُوْذُ بِاللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** उसे

सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की तरफ़ मन्सूब करे, तो येह उस शख्स का अपना बुरा फे'ल है, मगर हमें चूँकि हकीकते हाल का इल्म नहीं है इस लिये हम निस्बत की ता'जीम करेंगे और **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** सवाब भी पाएंगे ।

बयान कर्दा गुफ्तगू से हमें येह बात मा'लूम हुई कि अदब व ता'जीमे रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के बाब में बात बात पर दलील तलब करना बहुत बड़े ख़सारे का सबब बन सकता है ।

हज़रते सय्यिदुना काज़ी अयाज़ **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ** अपनी शोहरए आफ़ाक़ तस्नीफ़ “शिफ़ा शरीफ़” में तहरीर फ़रमाते हैं : “सुल्ताने मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ता'जीम व तौकीर में येह भी है कि सरकार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के मुबारक सामान, मुक़द्दस मकानात या कोई और शै जो जिस्मे पाक से छू भी गई हो और जिस चीज़ के बारे में येह मशहूर हो गया हो कि येह सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की है उन सब की ता'जीम करना ।”

(الشفاء، الباب الثالث فی تعظیم امره الخ، فصل ومن اعظامه الخ، ५१/२)

हज़रते अल्लामा मुल्ला अली क़ारी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی** शर्हे

शिफ़ा में इसी इबारत के तहत फ़रमाते हैं : “जो भी चीज़ सुल्ताने

मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तरफ़ मन्सूब हो और मशहूर हो उस की ता'जीम की जाए ।”

(شرح الشفاء، الباب الثالث فى تعظيم امره الخ، فصل ومن اعظامه الخ، १/२)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **اَللّٰهُ** हमें सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से मन्सूब हर मुतबर्कि चीज़ का अदबो एहतिराम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर बकसरत दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा

इमामुल मुख़्लिसीन, सय्यिदुल मुर्सलीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने क़बूलिय्यत निशान है :
اَخْلَصْ دِيْنَكَ يَكْفِكَ الْعَمَلُ الْقَلِيْلُ अपने दीन में मुख़्लिस हो जाओ थोड़ा अमल भी काफी होगा ।”

(مستدرک، ५/२३५، حدیث: ८११४)



गुनाहों की मुआफ़ी का ज़रीआ

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने फ़रमाया : “जिस ने मुझ पर एक मरतबा **दुरूदे पाक** पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा उस के दस गुनाह मिटा देगा और उस के दस दरजात बुलन्द फ़रमाएगा ।”

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الرقائق، باب الادعية، ٢٠ / ١٣٠، حديث: ٩٠١، بتغير)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन दुरूद शरीफ़ पढ़ना निहायत ही बेहतरीन अमल है। हमें भी दुरूद शरीफ़ की कसरत करनी चाहिये। बिलखुसूस जब सरकार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का नामे नामी, इस्मे गिरामी लें या सुनें तो उस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ने में हरगिज़ सुस्ती नहीं करनी चाहिये। चुनान्चे,

सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عليه رحمه الله تعالى फ़रमाते हैं : ज़िन्दगी में एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है और हर जल्सए ज़िक्र में (एक बार) दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब, ख़्वाह खुद नामे अक़्दस ले या दूसरे से सुने और अगर एक मजलिस में सो बार ज़िक्र आए तो हर बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये, अगर नामे अक़्दस लिया या सुना

और दुरूद शरीफ उस वक्त न पढ़ा तो किसी दूसरे वक्त में इस के बदले का पढ़ ले। (बहारे शरीअत, 1/533)

याद रखिये ! जब भी हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का मुबारक नाम लें या सुनें तो हमें भी आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते बा बरकात पर दुरूदो सलाम के गजरे निछावर करते रहना चाहिये। और जो लोग दुरूदे पाक पढ़ने में सुस्ती करते हैं या बिल्कुल ही नहीं पढ़ते वोह इस हिकायत से दर्सें इब्रत हासिल करें चुनान्वे,

शफ़ाअत की नवीद

एक आदमी हुजूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ता था, एक रात ख़्वाब में ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उस की तरफ़ तवज्जोह न फ़रमाई, उस ने अर्ज़ की : “ऐ **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** क्या आप मुझ से नाराज़ हैं?” फ़रमाया : “नहीं।” उस शख़्स ने पूछा : “फिर आप मेरी तरफ़ तवज्जोह क्यूं नहीं फ़रमाते?” फ़रमाया : “इस लिये कि मैं तुझे नहीं पहचानता।” उस शख़्स ने अर्ज़ की : “हुजूर ! आप मुझे कैसे नहीं पहचानते मैं तो आप की उम्मत का एक फ़र्द हूं। और उ-लमा फ़रमाते हैं कि आप अपने उम्मतियों को इस से भी ज़ियादा पहचानते हैं जैसे कोई बाप अपने बेटे को पहचानता है।” आप ने फ़रमाया : “उ-लमा ने सच कहा, मगर

तू मुझे दुरूद शरीफ़ के ज़रीए याद नहीं करता और मैं अपनी उम्मत के लोगों को दुरूदे पाक पढ़ने की वजह से पहचानता हूँ, जितना वोह मुझ पर दुरूद पढ़ते हैं मैं उन्हें इस क़दर ही पहचानता हूँ।” जब वोह शख़्स बेदार हुवा तो उस ने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया कि वोह हुज़ूर सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर रोज़ाना एक सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा, अब उस शख़्स ने रोज़ाना सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ना अपना मा’मूल बना लिया। कुछ मुद्दत बा’द फिर हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام के दीदार से मुशर्रफ़ हुवा, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : “मैं अब तुझे पहचानता हूँ और मैं तेरी शफ़ाअत भी करूंगा।” (مکاشفة القلوب، ص ۷۹ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

एक हकीम का क़ौल है कि बदन की सलामती कम खाने में, रूढ़ की सलामती गुनाहों की कमी में और दीन (या’नी ईमान) की सलामती हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेजने में है। (مکاشفة القلوب، ص ۳۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अपने ईमान की हिफ़ाज़त व सलामती के लिये सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ने को अपने सुब्हो शाम का वज़ीफ़ा बना लेना चाहिये क्यूंकि मोमिन की सब से कीमती शै उस का ईमान होती है। हमें हर वक़्त अपने ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र होनी चाहिये, जिसे अपने ईमान की फ़िक्र न हो तो मौत के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का ख़तरा है। चुनान्चे,

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ का इरशाद है कि उ-लमाए किराम फ़रमाते हैं : “जिस को सल्वे ईमान का ख़ौफ़ न हो नज़्ब के वक़्त उस का ईमान सल्व हो जाने का शदीद ख़तरा है ।”

(मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, हिस्सा चहारुम, स. 390)

औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام ईमान छिन जाने के ख़ौफ़ से लर्ज़ा व तरसां रहा करते थे । चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं एक दफ़आ हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي के पास हाज़िर हुवा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सारी रात रोते रहे ।” मैं ने दरयाफ़्त किया : “क्या आप गुनाहों के ख़ौफ़ से रो रहे हैं ?” तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक तिन्का उठाया और फ़रमाया : “गुनाह तो **اَللّٰهُ** की बारगाह में इस तिन्के से भी कम हैसियत रखते हैं, मुझे तो इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं ईमान की दौलत न छिन जाए ।”

(मिन्हाजुल आबिदीन, स. 155)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे अस्लाफ़े किराम को ईमान छिन जाने का किस क़दर ख़ौफ़ था मगर अफ़सोस कि आज कल हमारे मुआशरे में फ़िल्मो डिरामों, फ़िल्मी गानों, अख़्तारी मज़मूनों, जिन्सी व रूमानी नाविलों, इश्क़िया व फ़िस्किया अफ़सानों, बच्चों की बेहूदा कहानियों, तरह तरह के बेतुके हफ़तरों (साप्ताहिकों), हया सोज़ माहनामों (**monthly**) और मुख़रिबे

अख़्लाक़ डाइजिस्टों और मुज़ाहिyyा चुटकुलों की केसिटों वगैरा के ज़रीए **कुफ़्रिय्या कलिमात** आम होते जा रहे हैं और हमारी ग़ालिब अकसरिय्यत इस इल्म से नाआशना है **जब कि कुफ़्रिय्या कलिमात** के मुतअल्लिक़ इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है। चुनान्वे,

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** फ़तावा रज़विyyा जिल्द **23** सफ़्हा **624** पर फ़रमाते हैं : “मुह्रमाते बातिनिyyा (या'नी बातिनी ममनूआत मसलन) तकब्बुर व रिया व उज़ब (या'नी खुद पसन्दी) व ह़सद वगैरहा और इन के मुआलजात (या'नी इलाज) का इल्म भी हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है।” मज़ीद सफ़्हा **626** पर फ़तावा शामी के हवाले से फ़रमाते हैं : “ह़राम अल्फ़ाज़ और कुफ़्रिय्या कलिमात के मुतअल्लिक़ इल्म सीखना फ़र्ज़ है, इस ज़माने में येह सब से ज़रूरी उमूर हैं।”

(درمختار وردالمحتار، مطلب فی فرض الکفاية وفرض العین، ۱۰/۴۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुफ़ का लुग़वी मा'ना है : “किसी शै को छुपाना।”

(السُّفَرَات، ص ۷۱۳) और इस्तिलाह में किसी एक ज़रूरते दीनी के इन्कार को भी **कुफ़** कहते हैं अगर्चे बाकी तमाम ज़रूरिय्याते दीन की तस्दीक़ करता हो। (माखूज़ अज़ बहारे शरीअत, 1, स. 92)

जैसे कोई शख़्स अगर तमाम ज़रूरिय्याते दीन को तस्लीम

करता हो मगर नमाज़ की फ़र्जियत या ख़त्मे नबुव्वत का मुन्किर हो वोह काफ़िर है। कि नमाज़ को फ़र्ज मानना और सरकारे मदीना ﷺ को आख़िरी नबी मानना दोनों बातें ज़रूरिय्याते दीन में से हैं।

ज़रूरिय्याते दीन की ता'रीफ़

ज़रूरिय्याते दीन : इस्लाम के वोह अहक़ाम हैं, जिन को हर ख़ासो अ़म जानते हों, जैसे **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** की वहदानिय्यत (या'नी उस का एक होना), अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَام** की नबुव्वत, नमाज़, रोज़े, हज़, जन्नत, दोज़ख़, क़ियामत में उठाया जाना, हिसाबो किताब लेना वगैरहा। मसलन येह अक़ीदा रखना (भी ज़रूरिय्याते दीन में से है) कि हुज़ूर रहूमतुल्लिल आलमीन **ﷺ** ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं हुज़ूरे अकरम **ﷺ** के बा'द कोई नया नबी नहीं हो सकता। अ़वाम से मुराद वोह मुसलमान हैं जो उ-लमा के तबके में शुमार न किये जाते हों मगर उ-लमा की सोहबत में बैठने वाले हों और इल्मी मसाइल का ज़ौक़ रखते हों। (बहारे शरीअत, हिस्सा 1, स. 92 मुलख़ब्रसन)

लम्हए फ़िक्रिय्या

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना ईमान की हिफ़ाज़त का ज़ेहन काफ़ी कम हो गया है, ज़बान की लगाम बहुत ही ढीली है, अकसरिय्यत का हाल येह है कि बस जो मुंह में आता है बके चले जाते हैं, फ़िल्मों, डिरामों, नाविलों, डाइजिस्टों, स्कूलों

की लाइब्रेरी की किताबों और अख़बारों में भी बसा अवकात तरह तरह के कुफ़्रियात होते हैं। बिलखुसूस गानों में तो बे तहाशा कुफ़्रियात बके जाते हैं जिन्हें हम गुनगुनाते फिरते हैं और इस तरफ़ किसी की तवज्जोह भी नहीं जाती। इस किस्म के चन्द अशआर बतौरै मिसाल पेश किये जाते हैं जो कि सरीह कुफ़्र हैं :

(1) सीप का मोती है तू, या आस्मां की धूल है

तू है कुदरत का करिश्मा, या खुदा की भूल है

इस शे'र में **عَزَّوَجَلَّ** **اَللّٰهُ** को भूलने वाला माना गया है जो कि सरीह कुफ़्र है **عَزَّوَجَلَّ** **اَلलّٰهُ** भूलने से पाक है। चुनान्वे, पारह 16 सूए ताहा आयत नम्बर 52 में इरशाद होता है :

لَا يُضِلُّ رَبِّي وَلَا يَلُتِي

तर्जमए कन्जुल ईमान : मेरा रब

(प १८, ५२: ५२)

न बहके न भूले।

(2) तुझ को दी सूरत परी सी दिल नहीं तुझ को दिया

मिलता खुदा तो पूछता येह जुल्म तू ने क्यूं किया ?

इस शे'र में दो सरीह कुफ़्रियात हैं : (1) **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** को **مَعَادُ اللّٰهِ** **عَزَّوَجَلَّ** ज़ालिम कहा गया है (2) **اَلलّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** पर ए'तिराज़ किया गया है।

(3) ओ मेरे रब्बा रब्बा रे रब्बा येह क्या ग़ज़ब किया

जिस को बनाना था लड़की उसे लड़का बना दिया

इस कुफ़्रियात से भरपूर शे'र में **اَلलّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** पर ए'तिराज़ और उस की तौहीन है।

मुझे दे दे ईमान पर इस्तिक्कामत
पए सय्यिदे मोह्तशम या इलाही !

(वसाइले बख्शिश, स. 82)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! कतई कुफ़्र
पर मन्नी एक भी शे'र जिस ने दिलचस्पी के साथ पढ़ा, सुना या
गाया वोह कुफ़्र में जा पड़ा और इस्लाम से ख़ारिज हो कर **काफ़िर**
व मुर्तद हो गया, उस के तमाम नेक आ'माल अकारत हो गए
या'नी पिछली सारी नमाज़ें, रोज़े, हज़ वगैरा तमाम नेकियां ज़ाएअ
हो गईं। शादी शुदा था तो निकाह भी टूट गया अगर किसी का
मुरीद था तो बैअत भी ख़त्म हो गई। उस पर फ़र्ज़ है कि इस शे'र
में जो **कुफ़्र** है उस से फ़ौरन तौबा करे और कलिमा पढ़ कर नए
सिरे से मुसलमान हो। **मुरीद** होना चाहे तो अब नए सिरे से किसी
भी जामेए शराइत पीर का मुरीद हो, अगर साबिका बीवी को
रखना चाहे तो दोबारा नए महर के साथ उस से **निकाह** करे।

जिस को येह शक हो कि आया (क्या) मैं ने इस तरह
का शे'र दिलचस्पी के साथ गाया, सुना, या पढ़ा है या नहीं
मुझे तो बस यूं ही फ़िल्मी गाने सुनने और गुनगुनाने की
आदत है तो ऐसा शख्स भी **एहतिyातन** तौबा करे के नए
सिरे से मुसलमान हो जाए, नीज़ **तजदीदे बैअत** और **तजदीदे**
निकाह कर ले कि इसी में दोनों जहां की भलाई है।

(कुफ़्रिया कलिमात, सफ़हा 524-525)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन एक मुसलमान के

लिये सब से अहम और अजीज तरीन मताअ उस का ईमान है और सब से ज़ियादा उसी की हिफ़ाज़त की ज़रूरत है। शैतान हमारा सब से बड़ा दुश्मन है और उस का सब से शदीद हम्ला इसी ईमान पर होता है। मुसलमानों के ईमान की हिफ़ाज़त के जज़्बे के पेशे नज़र शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** ने इस नाजुक मौजूअ पर क़लम उठाया और महनते शाक्का के बा'द कसीर किताबों के मवाद को पेशे नज़र रख कर अपनी आदते मुबारका के मुताबिक़ निहायत आसान अल्फ़ाज़ व पैराये में **“कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब”** के नाम से एक बे नज़ीर किताब तालीफ़ फ़रमाई, **عَزَّوَجَلَّ** के फ़ज़्लो करम से इस किताब को अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** ने इस क़दर जांफ़िशानी (या'नी जान तोड़ महनत) और एह्तियात के साथ तहरीर फ़रमाया है कि बिला मुबालगा उर्दू ज़बान में ईमानिय्यात और कुफ़्रिय्यात के मौजूअ पर इस से ज़ियादा जामेअ, मुफ़ीद और अहम किताब आज तक देखने में नहीं आई लिहाज़ा ज़रूरत इस अम्र की है कि हम में से हर इस्लामी भाई बार बार इस किताब का बग़ैर मुतालआ

करता रहे और इस में बयान कर्दा अहकामात की रोशनी में ज़बान

को न सिर्फ कुफ़्रिय्या बल्कि फुज़ूल बातों से भी खुद को बचाए और ज़ियादा से ज़ियादा ज़िक्रो दुरूद में रतबुल्लिसान रहने की कोशिशों में मसरूफ़ रहे ।

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें अपने दीनो ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहने और हुज़ूरे पाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महबूबत में झूम झूम कर कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा । **اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

सांप बिच्छू से पनाह का आशान वज़ीफ़ा

बारगाहे रिसालत में एक शख्स ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** कल शाम मुझे एक बिच्छू ने डंक मार दिया । फ़रमाया : काश ! अगर तुम शाम को **اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ** (या'नी मैं **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक के शर से पनाह लेता हूँ) कह लिया होता तो तुम्हें कोई चीज़ तकलीफ़ न पहुंचाती । (**مسلم** ج १، १२५३، حدیث: ०९/ १८)



चेहरए अन्वर पर खुशी के आसार

हज़रते सय्यिदुना अबू तलहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि :
 एक दिन रहमतुल्लिल आलमीन, शफ़ीज़ल मुज़निबीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ लाए और हालत येह थी कि खुशी के
 आसार आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चेहरए वद्दोहा से इयां थे,
 फ़रमाया : जिब्रईल मेरे पास हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवे कि
 आप का रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ऐ मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क्या
 तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का जो भी
 उम्मत आप पर एक बार **दुरूदे पाक** भेजे तो मैं उस पर दस बार
 रहमत भेजूं और अगर वोह आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर एक बार
 सलाम भेजे तो मैं उस पर दस बार सलाम भेजूं ।

(مشكاة، کتاب الصلاة ، باب الصلاة على النبي وفضلها، ۱/ ۱۸۹، حدیث: ۹۲۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने **अब्बाह**
عَزَّوَجَلَّ हम पर किस क़दर मेहरबान है कि हम अगर उस के प्यारे
 हबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर एक बार **दुरूदे पाक** भेजें तो वोह
 हम पर दस बार अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाता है, अगर **अब्बाह**
عَزَّوَجَلَّ किसी शख्स पर एक बार रहमत नाज़िल फ़रमा दे तो उस की
 बिगड़ी संवर जाए जैसा कि

एक रहमत का आलम

हज़रते सय्यिदुना इब्ने शाफ़ेअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :
अगर तू ने तमाम ज़िन्दगी इबादत व रियाज़त में गुज़ारी हो
और अगर **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ ने तुझ पर सिर्फ़ एक बार रहमत भेज
दी तो वोह एक बार की रहमत तेरी तमाम उम्र की इबादात से बढ़
जाएगी । क्योंकि तू अपनी हैसियत के मुताबिक़ दुरूद भेजता है
और वोह अपनी रबूबियत के ए'तिबार से रहमत भेजता है । येह
तो एक बार **नुज़ूले रहमत** का हाल है तो एक के बदले दस बार
रहमत भेजने का आलम क्या होगा ? (مطالع السمرات (مترجم)، ص ८८، ملخصاً)

अगर किसी अक्लमन्द से सुवाल किया जाए कि तमाम
मख़्लूक की नेकियां तेरे नामए आ'माल में लिख दी जाएं तुझे येह
पसन्द है या येह कि **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर एक बार नज़रे
रहमत फ़रमाए ? यकीनन वोह **اللَّهُ** तबारक व तआला की
रहमत के मुकाबले में किसी चीज़ को भी पसन्द नहीं करेगा ।

गुनहगार तलबगारे अप्पवो रहमत है

अज़ाब सहने का किस में है होसला या रब !

नहीं है नामए अत्तार में कोई नेकी

फ़क़त है तेरी ही रहमत का आसरा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी नुज़ूले रहमत और

हुसूले सवाब की निय्यत से सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ाते पाक पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ते

रहना चाहिये और फिर **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** अपने फज़लो करम से जो सवाब अता फ़रमाए तो ख़ैर ख़्वाही करते हुवे उस का सवाब अपने मर्हूम की अरवाह को ईसाल करना चाहिये कि इस की बरकत से हमें तो इस का सवाब मिलेगा ही साथ ही साथ येह दुरूदे **पाक** हमारे मर्हूम अइज़्ज़ा व अक़रिबा की बख़्शिश व मग़फ़िरत का ज़रीआ भी बन जाएगा । चुनान्चे, इसी ज़िम्न में एक हिकायत सुनिये और रहमते खुदावन्दी **عَزَّوَجَلَّ** पर झूम उठिये ।

ईशाले सवाब की बरकत

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** के पास एक औरत हाज़िर हुई और कहने लगी मेरी एक जवान बेटी थी वोह फ़ौत हो गई, मैं चाहती हूं कि उसे ख़्वाब में देख लूं, मैं आप के पास इस लिये आई हूं ताकि आप कोई ऐसी दुआ बता दें जिस से मैं उसे देख सकूं, आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने उसे एक अमल बताया, उस औरत ने रात में वोह अमल किया और सो गई, ख़्वाब में अपनी बेटी को इस हाल में देखा कि उस ने जहन्नम के तारकोल का लिबास पहन रखा था, हाथों में ज़न्जीरें और पाउं में बेड़ियां थीं । उस ने आ कर हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** को येह ख़्वाब सुनाया, आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** बहुत मग़मूम हुवे ।

कुछ अर्से बा'द आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने उस नौजवान लड़की को जन्नत में देखा, उस के सर पर ताज था, वोह आप से कहने लगी : ऐ हसन (**عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي**) आप मुझे पहचानते हैं ? मैं उसी औरत की बेटी हूं जो आप के पास आई थी और मेरी तबाह

हालत आप को बताई थी। आप ने उस से पूछा : तेरी हालत में येह इन्क़िलाब किस तरह आया ? लड़की ने कहा : एक दिन क़ब्रिस्तान के करीब से एक सालेह शख़्स गुज़रा और उस ने हुज़ूर पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते गिरामी पर दुरूदे पाक पढ़ कर मुर्दों को इस का सवाब ईसाल कर दिया, उस वक़्त क़ब्रिस्तान में पांच सो मुर्दों को अज़ाब हो रहा था, उस के दुरूदे पाक की बरकत से **अल्लाह** तआला ने हम से अज़ाब दूर कर दिया और हम सब को दाख़िले जन्नत फ़रमा दिया।

(मकाश्फ़े القلوب، ص १८ ملخصاً ومفهوماً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि एक शख़्स ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदे पाक पढ़ कर मुर्दों को ईसाले सवाब किया तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने इस की बरकत से उन्हें अज़ाबे क़ब्र से नजात अता फ़रमा दी। इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि हम अपने नेक आ'माल का सवाब किसी दूसरे को पहुंचा सकते हैं। जैसा कि

हर नेक अमल का सवाब ईसाल कीजिये

सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْنِي** फ़रमाते हैं :

ईसाले सवाब या'नी कुरआने मजीद या दुरूद शरीफ़ या

कलिमए तय्यिबा या किसी नेक अमल का सवाब दूसरे को पहुंचाना जाइज है। इबादते मालिय्या या बदनिय्या, फ़र्ज व नफ़ल सब का सवाब दूसरों को पहुंचाया जा सकता है क्योंकि जिन्दों के ईसाले सवाब से मुर्दों को फ़ाइदा पहुंचता है।” (बहारे शरीअत, 3/642)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَان** फ़रमाते हैं : “बदनी इबादत (या’नी नमाज़ व रोज़ा) में नियाबत जाइज नहीं या’नी कोई शख़्स किसी की तरफ़ से फ़र्ज नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ न होगी, हां नमाज़ का सवाब बख़्शा जा सकता है। जैसा कि मिशकात शरीफ़ में है कि हज़रते अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने किसी से फ़रमाया : **مَنْ يَضْمِنُ لِي مِنْكُمْ أَنْ يُصَلِّيَ فِي مَسْجِدِ الْعَشَارِ رَكْعَتَيْنِ وَيَقُولَ هَذِهِ لِيْ هُوَيْرَةٌ** या’नी तुम में से कौन मुझे इस बात की ज़मानत देता है कि वोह मस्जिदे अश्शार में दो रकअत नमाज़ पढ़ कर इस का सवाब अबू हुरैरा को ईसाल कर दे। इस रिवायत से दो बातें मा’लूम हुई : पहली येह कि इबादते बदनी या’नी नमाज़ भी किसी के ईसाले सवाब की निय्यत से अदा करना जाइज है और दूसरी येह कि ज़बान से ईसाले सवाब करना कि खुदाया इस का सवाब फुलां को पहुंचे, बहुत बेहतर है। रही इबादते माली, या माली व बदनी का मजमूआ जैसे ज़कात और हज़, तो इस में अगर कोई शख़्स किसी से कह दे कि तुम मेरी तरफ़ से ज़कात दे दो तो दे सकता है। और इसी तरह अगर साहिबे माल शख़्स में हज़ करने की कुव्वत न रहे तो दूसरे से हज़्जे बदल करवा सकता है। लेकिन हर इबादत का सवाब पहुंचता ज़रूर है। (जाअल हक़, स. 213)

सदरुशरीआ, मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيّ फ़रमाते हैं : “जिन्दों के ईसाले सवाब से मुर्दों को फ़ाइदा पहुंचता है। जैसा कि

उम्मे सा'द का कुंवां

हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदा का जब इन्तिक़ाल हुवा तो उन्होंने ने हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में अर्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) सा'द की मां का इन्तिक़ाल हो गया, कौन सा सदक़ा अफ़ज़ल है ? इरशाद फ़रमाया : पानी। उन्होंने ने कुंवां खोदा और कहा कि येह सा'द की मां के लिये है। (या'नी सा'द की मां के ईसाले सवाब के लिये है) मा'लूम हुवा कि जिन्दों के आ'माल से मुर्दों को सवाब मिलता और फ़ाइदा पहुंचता है। (बहारे शरीअत, 3/642)

इसी तरह मुफ़स्सिरे शहीर मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيّ ने अपनी किताब जाअल हक़ में दुर्रे मुख़्तार के हवाले से एक हदीसे पाक नक्ल फ़रमाई जिस से अपने नेक अमल का सवाब दूसरे को पहुंचाने का सुबूत मिलता है। चुनान्वे, हदीसे पाक में है।

مَنْ قَرَأَ الْإِخْلَاصَ أَحَدَ عَشَرَ مَرَّةً जो शख़्स ग्यारह बार सूरए इख़्लास पढ़े ثُمَّ وَهَبَ أَجْرَهَا لِلْأَمْوَاتِ फिर इस का सवाब मुर्दों को बख़्श दे اُعْطِيَ مِنَ الْأَجْرِ بَعْدُ الْأَمْوَاتِ तो उस को तमाम मुर्दों की ता'दाद के बराबर सवाब मिलेगा। फ़तावा शामी के हवाले से मज़ीद फ़रमाते हैं : “जिस से जितना मुमकिन हो कुरआने पाक पढ़े, सूरए

फ़ातिहा, सूरए बकरह की इब्तिदाई आयात और आयतुल कुरसी और **أَمَّنَ الرَّسُولُ** और सूरए यासीन, सूरए मुल्क और सूरए तकासुर और सूरए इख़्लास तीन बार, सात बार, ग्यारह या बारह मरतबा पढ़े, फिर कहे कि या **عَزَّوَجَلَّ** मैं ने जो कुछ पढ़ा इस का **सवाब** फुलां फुलां को पहुंचा दे ।”

(जाअल हक़, स. 215 मुलख़ब्रसन व मफ़हूमन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायात से हमारे यहां मुरव्वजा फ़ातिहा का पूरा तरीका, या'नी मुख़्तलिफ़ जगहों से कुरआने पाक पढ़ना, इस का सवाब अरवाहे मुस्लिमीन को पहुंचाना और इन के लिये **दुआए मग़फ़िरत** करना साबित हुवा । मुफ़्ती साहिब फ़तावा अज़ीज़िया के हवाले से मज़ीद फ़रमाते हैं : “जिस खाने पर हज़रते हसनैने करीमैने **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** की नियाज़ दी जाए उस पर कुल और फ़ातिहा और दुरूदे पाक पढ़ना बाइसे बरकत है और इस का खाना बहुत अच्छा है ।”

फ़िरिशते भी ईसाले सवाब करते हैं

बल्कि ईसाले सवाब तो ऐसा बेहतरीन अमल है जिसे **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म पर उस के फ़िरिशते भी करते हैं चुनान्वे,

शुअबुल ईमान में हज़रते सय्यिदुना अनस **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से

रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

का फ़रमाने अज़मत निशान है : **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** अपने हर मोमिन बन्दे पर दो फ़िरिश्ते **मुक़र्रर** फ़रमाता है जो उस का अमल लिखने पर मा'मूर हैं। जब वोह बन्दए मोमिन इस दुन्या से चला जाता है तो येह **किरामन कातिबीन** अर्ज़ करते हैं कि ऐ रब (**عَزَّوَجَلَّ**) हमारा काम ख़त्म हो गया, वोह शख़्स दारे आ'माल (या'नी दुन्या) से निकल गया, इजाज़त दे कि हम आस्मान पर आएँ और तेरी इबादत करें। रब **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है कि मेरे आस्मान भरे हैं इबादत करने वालों से, कुछ हाज़त नहीं तुम्हारी। अर्ज़ करते हैं : इलाही (**عَزَّوَجَلَّ**) हमें ज़मीन में जगह दे। इरशाद होता है : मेरी ज़मीनें भरी हैं इबादत करने वालों से, तुम्हारी कुछ हाज़त नहीं। अर्ज़ करते हैं : इलाही (**عَزَّوَجَلَّ**) फिर हम कहां जाएँ ? इरशाद होता है : “मेरे बन्दे की क़ब्र के सिरहाने खड़े हो कर तस्बीहो तहमीद और तक्बीरो तहलील करते रहो और इसे क़ियामत तक मेरे बन्दे के लिये लिखते रहो।”

(شعب الإيمان، فصل في ذكر ما في الأوجاع والأمراض..... الخ، ١٨٤/٧، حديث: ٩٩٣١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें अपने प्यारे हबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और इस की बरकत से फ़ौत शुदा मुसलमानों की क़ब्रों को रोशन व मुनव्वर फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



बयान नम्बर : 45

बरकत से ख़ाली कलाम

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने खुशबूदार है : **كُلُّ كَلَامٍ لَا يَذْكُرُ اللَّهُ فِيهِ فَيُبْدَأُ بِهِ وَيُصَلِّيُ عَلَى فِيهِ فَهُوَ أَقْطَعُ أَكْثَعُ، مُمْحَوِّقٌ مِنْ كُلِّ بَرَكَةٍ** : या'नी जिस कलाम की इब्तिदा में **अल्लाह** तआला का ज़िक्र और मुझ पर **दुरूद शरीफ़** न पढ़ा जाए वोह अधूरा और नामुकम्मल और बरकत से ख़ाली होता है ।”

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، ۱۰۴/۲، الجزء الثالث، حدیث: ۱۲۶۱۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी हुसूले बरकत के लिये उठते बैठते, चलते फिरते, हर जाइज़ व नेक काम के शुरूअ में (जब कि कोई मानेए शरई न हो) **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** और **दुरूद शरीफ़** पढ़ते रहना चाहिये । क्यूंकि बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ने से हमें येह फ़ाइदा हासिल होगा कि हमारा वोह काम शैतान के असर से **महफूज़** रहेगा और इस में बरकत भी होगी । चुनान्वे,

खाने में बे बरकती का सबब

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : हम ताजदारे रिसालत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

की ख़िदमते सरापा रहमत में हाज़िर थे। खाना पेश किया गया, इब्तिदा में इतनी बरकत हम ने किसी खाने में नहीं देखी मगर आखिर में बड़ी बे बरकती देखी। हम ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ऐसा क्यूं हुवा ? इरशाद फ़रमाया : “हम सब ने खाना खाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ी थी। फिर एक शख्स बिगैर बिस्मिल्लाह पढ़े खाने को बैठ गया, उस के साथ शैतान ने खाना खा लिया।”

(شرح السنة، كتاب الاطعمه، باب التسمية على الاكل والحمد في آخره ٦٢/٦، حديث: ٢٨١٨)

याद रखिये ! खाने या पीने से क़ब्ल **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़ लेने से जहां आखिरत का अज़ीम सवाब है वहीं दुन्या में भी इस का फ़ाइदा है कि अगर खाने या पीने की चीज़ में कोई मुज़िर (या'नी नुक़सान देह) अजज़ा शामिल हों भी तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** वोह नुक़सान नहीं देंगे, इसी ज़िम्न में एक हिकायत सुनिये और झूम उठिये। चुनान्चे,

जह्रै क़तिल बे असर हो गया

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने मक़ामे “हीरा” में जब अपने लश्कर के साथ पड़ाव किया तो लोगों ने अर्ज़ की : या सय्यिदी ! हमें अन्देशा है कि कहीं येह अज़मी लोग आप को ज़हर न दे दें लिहाज़ा मोहतात रहियेगा।

आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : “लाओ, मैं देख लूं कि अज़मिय्यों

का ज़हर कैसा होता है ?” लोगों ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को दिया तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने “बिस्मिल्लाह” पढ़ कर खा लिया ।

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बाल बराबर भी ज़रर (या'नी नुक़सान) न पहुंचा और “कल्बी” की रिवायत में येह है कि एक ईसाई पादरी जिस का नाम अब्दुल मसीह था । एक ऐसा ज़हर ले कर आया कि उस के खा लेने से एक घन्टे के बा'द मौत यक़ीनी होती है । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस से ज़हर मांग कर उस के सामने ही بِسْمِ اللَّهِ وَبِاللَّهِ رَبِّ الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ دَاءٌ पढ़ा और ज़हर खा गए । येह मन्ज़र देख कर अब्दुल मसीह ने अपनी क़ौम से कहा : “ऐ मेरी क़ौम ! इन्तिहाई हैरतनाक बात है कि येह इतना ख़तरनाक ज़हर खा कर भी ज़िन्दा हैं ? अब बेहतर येही है कि इन से सुल्ह कर ली जाए, वरना इन की फ़तह यक़ीनी है ।”

(حجة الله على العلمين، المطلب الثالث، من كرامات خالد بن الوليد، ٢١ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकत से ख़तरनाक ज़हर ने हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर कोई असर न किया । हमें भी हर काम की इब्तिदा **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ** के ज़िक्र से करनी चाहिये और जब भी फ़ारिग़ वक़्त मिले तो ज़िक्रुल्लाह में मशगूल रहने के साथ साथ नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जाते बा बरकात पर

कसरत के साथ दुरूदे पाक भी पढ़ना चाहिये । क्यूंकि कुरआने

पाक में भी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने जा बजा अपने पाक नाम के साथ अपने महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का मुबारक नाम भी जिक्र फ़रमाया है। जैसा कि खुद अपनी ज़ात पर **ईमान** लाने के साथ अपने हबीब पर ईमान लाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया, तो कहीं अपनी इताअत के साथ अपने रसूल की **इताअत** को भी लाज़िम फ़रमाया और कहीं अपनी और अपने हबीब की नाफ़रमानी करने वाले को मुस्तहिक्के अज़ाबे नार क़रार दिया। इसी तरह मुतअद्दिद मक़ामात पर अपने नाम के साथ अपने महबूब के नाम को जुदा नहीं फ़रमाया तो हमें भी चाहिये कि **जिब्रुल्लाह** के साथ साथ **जिब्रे रसूल** से भी अपनी ज़बानें तर रखा करें **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** रहमतों और बरकतों का ढेरों ख़ज़ाना हमारे हाथ आएगा।

की तफ़्शीर **وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ**

हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي** **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में आयए मुबारका **وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ** (और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा जिक्र बुलन्द कर दिया।) के तहत फ़रमाते हैं : हदीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** से इस आयत को दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्होंने ने कहा : **अल्लाह**

तआला फ़रमाता है कि आप के जिक्र की **बुलन्दी** येह है कि जब

मेरा जिक्र किया जाए मेरे साथ आप का भी जिक्र किया जाए ।

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “इस से मुराद येह है कि अज़ान में, तक्बीर में, तशहहुद में, मिम्बरों पर, खुतबों में (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जिक्र के साथ उस के रसूल को भी याद रखा जाए)। अगर कोई **अल्लाह** तअ़ाला की इबादत करे हर बात में उस की तस्दीक़ करे और सय्यिदे अ़लम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिसालत की गवाही न दे तो येह सब बेकार है और वोह (शख़्स) काफ़िर ही रहेगा ।

इसी तरह हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद महदी फ़ासी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي मतालिउल मसर्रात में अ़ल्लामा फ़ाकहानी قُدِّسَ سِرُّهُ التُّورَان से मन्कूल एक कौल बयान फ़रमाते हैं : “हर मुसन्निफ़, दर्स देने वाले, ख़तीब, शादी करने वाले और निकाह पढ़ाने वाले के लिये और तमाम अहम उमूर से पहले मुस्तहब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना के साथ साथ बारगाहे रिसालत में हदिय्यए مطالع المسرات مترجم، ص १२ ملخصاً وملتقطاً दुरूदो सलाम भी पेश करे ।”

मज़ीद फ़रमाते हैं : “शबे अस्सा के दुल्हा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक भेजने में **अल्लाह** तअ़ाला का भी जिक्र है और रसूले अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का जिक्र भी है जब कि **अल्लाह** तअ़ाला का जिक्र करने में नबिय्ये पाक का जिक्र नहीं

है, अगर कोई हमेशा ज़िक्रे इलाही करता रहे तो इस की बरकत

से गुनाहों से बच जाता है और उसे ऐसी नूरानिय्यत हासिल होती है जो उस के तमाम बुरे अवसाफ़ को ख़त्म कर देती है और ज़िक्रे इलाही की हैबत व जलालत के सबब तबीअत में जो गर्मी पैदा हो जाती है हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ने की बरकत से तबीअत की येह ह़रारत दूर हो जाती और नफ़्स को कुव्वत हासिल होती है ।

(مطالع المسرات ص ८۰ ملخصاً وملتقطاً)

ज़िक्रे ख़ुदा जो उन से जुदा चाहो नजदियो !

वल्लाह ! ज़िक्रे हक़ नहीं कुंजी सक़र की है

(हदाइके बख़्शिश, स. 207)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा गुफ़्तगू से मा'लूम हुवा कि जब भी **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया जाए तो साथ ही उस के प्यारे महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक भी पढ़ना चाहिये, हो सकता है कि हमारा पढ़ा हुवा दुरूदे पाक कल बरोजे क़ियामत हमारी बख़्शिश व मग़फ़िरत का ज़रीआ बन जाए । चुनान्चे,

लो वोह आया मेश हामी

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है : “क़ियामत के दिन हज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह

عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अर्श के क़रीब वसीअ मैदान में ठहरे हुवे होंगे, आप पर दो सब्ज़ कपड़े होंगे, अपनी अवलाद में से हर उस शख़्स को

देख रहे होंगे जो जन्नत में जा रहा होगा और अपनी अवलाद में से उसे भी देख रहे होंगे जो दोज़ख़ में जा रहा होगा। इसी असना में आदम عَلَيْهِ السَّلَام सरकारे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक उम्मती को दोज़ख़ में जाता हुवा देखेंगे। सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पुकारेंगे : “या अहमद ! या अहमद !” तो हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहेंगे : लब्बैक या अबल बशर ! हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام कहेंगे : “आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह उम्मती दोज़ख़ में जा रहा है।” येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बड़ी चुस्ती के साथ तेज़ तेज़ (क़दमों से) फ़िरिश्तों के पीछे चलेंगे और कहेंगे : “ऐ मेरे रब के फ़िरिश्तो ! ठहरो।” वोह अर्ज करेंगे : “हम मुक़रर कर्दा फ़िरिशते हैं, जिस काम का हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है उस की नाफ़रमानी नहीं करते, हम वोही करते हैं जिस का हमें हुक्म मिला है।” जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अफ़सुर्दा होंगे तो अपनी दाढ़ी मुबारक को बाएं हाथ से पकड़ेंगे और अर्श की तरफ़ हाथ से इशारा करते हुवे कहेंगे : “ऐ मेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** ! क्या तू ने मुझ से वा’दा नहीं फ़रमाया है कि तू मुझे मेरी उम्मत के बारे में रुस्वा न फ़रमाएगा।” अर्श से निदा आएगी : “ऐ फ़िरिश्तो ! मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत करो और इसे लौटा दो।”

फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم अपनी झोली से सफ़ेद काग़ज़ निकालेंगे और उसे मीज़ान के दाएं पलड़े में डाल कर कहेंगे :

“बिस्मिल्लाह” । पस वोह नेकियों वाला पलड़ा बुराइयों वाले पलड़े से भारी हो जाएगा । आवाज़ आएगी : खुश बख़्त है, सआदत याफ़ता हो गया है और इस का मीज़ान भारी हो गया है । इसे जन्नत में ले जाओ । वोह बन्दा कहेगा : “ऐ मेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** के फ़िरिश्तो ! ठहरो, मैं इस बन्दे से बात तो कर लूँ जो अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** के हुज़ूर बड़ी करामत रखता है ।” फिर वोह अर्ज़ करेगा : “मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों, आप का **चेहरा अन्वर** कितना हसीन है और आप की शक़ल कितनी ख़ूब सूरत है, आप ने मेरी लगज़िशों को मुआफ़ फ़रमाया और मेरे आंसूओं पर रहम फ़रमाया (आप कौन हैं?) ।” तो हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इरशाद फ़रमाएंगे **أَنَا نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ وَهَذِهِ صَلَاتُكَ الَّتِي كُنْتَ تُصَلِّي عَلَى وَقَدْ وَفَّيْتُكَ أَخَوَجَ مَا تَكُونُ إِلَيْهَا** या’नी मैं तेरा नबी मुहम्मद **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** हूँ और येह तेरा वोह दुरूद है जो तू मुझ पर भेजता था और मैं ने तेरी वोह तमाम हाजात पूरी कर दीं जिन का तू मोहताज था ।”

(मोसूए ابن ابی الدنيا، فی حسن الظن بالله، १/१، حدیث: ८९)

इस हिकायात की अक्कासी करते हुवे मेरे आका आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** फ़रमाते हैं :

उन की आवाज़ पे कर उठूं मैं बे साख़्ता शोर
और तड़प कर येह कहूं अब मुझे परवा क्या है ?

लो वोह आया मेरा हामी मेरा ग़म ख़्वारे उमम !

आ गई जां तने बे जां में येह आना क्या है ?

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा’वते इस्लामी)

फिर मुझे दामने अक्दस में छुपा लें सरवर
और फ़रमाएं “हटो इस पे तकाज़ा क्या है?”

छोड़ कर मुझ को फिरिश्ते कहें महकूम हैं हम
हुक्मे वाला की न ता'मील हो ज़ोहरा क्या है?
सदक़े इस रहम के, इस सायए दामन पे निसार
अपने बन्दे को मुसीबत से बचाया क्या है!

(हदाइके बख़्शिश, स. 173)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें हुज़ूर **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**
पर कसरत के साथ दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा
और रोज़े क़ियामत हमें सरकार **عَلِیْهِ السَّلَام** की शफ़ाअत से बहरा
मन्द फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़

हज़रते सय्यिदुना अनस **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** से रिवायत
है कि आका **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया कि “जो
इल्म की तलाश में निकलता है वोह वापस लौटने तक
अल्लाह तआला की राह में होता है।”

(ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، ۲۹۴/۳، حدیث: ۲۶۵۶)



बयान नम्बर : 46

ना मुकम्मल दुरूद

रसूले सकलैन, सुल्ताने कौनैन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **يَا'नी मुझ पर कटा हुआ (ना मुकम्मल) दुरूदे पाक न पढ़ा करो, सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** ने अर्ज की وَمَا الصَّلَاةُ الْبُتْرَاءُ** या रसूलल्लाह ! यह कटा हुआ दुरूदे पाक क्या है ? सुल्ताने दो जहान, रहमते आलमिय्यान **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **تَقُولُونَ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَتَمْسِكُونَ** कटा हुआ दुरूद यह है कि तुम (मेरी आल पर दुरूद न पढ़ो और सिर्फ़) **اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ** तक पढ़ कर रुक जाओ । (फिर फ़रमाया :) “इस के बजाए यूं पढ़ा करो **اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ**”

(الصواعق المحرقة، الباب الحادى عشر، الفصل الاول فى الآيات الواردة فيهم، ص ۱۴۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से मा'लूम हुआ कि जब भी नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदे पाक पढ़ने की सआदत नसीब हो तो साथ ही साथ आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** की आले पाक पर भी दुरूदे पाक पढ़ लेना चाहिये और वैसे भी महब्बत इस बात की मुतकाज़ी है कि

महबूब से निस्वत रखने वाली हर शै से महबूब की जाए ।

खयाल रहे कि हर मुसलमान को जानो माल, इज़्ज़तो आबरू, मां-बाप, अवलाद हत्ता कि काइनात की हर शै से ज़ियादा हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते गिरामी महबूब होनी चाहिये जिस पर हमारी सदाक़त व तक्मीले ईमानी का मदार है । लिहाज़ा जब सब से ज़ियादा क़ाबिले महबूब और लाइके अक़ीदत सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ात ठहरी तो आप के अहले बैते अत़हार से महबूब भी हमारे लिये हमारे अपने क़राबत दारों से बढ़ कर अहम्मियत की हामिल होनी चाहिये और क्यूं न हो कि कुरआने पाक के साथ येही तो वोह दूसरी चीज़ है जिसे मज़बूती से थामने का सरकार **عَلَيْهِ السَّلَام** ने हमें दर्स दिया है । चुनान्वे,

दो बड़ी और अहम चीज़ें

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने हिदायत निशान है : **أَنَا تَارِكٌ فِيكُمْ الثَّقَلَيْنِ** मैं तुम्हारे दरमियान दो बड़ी अहम चीज़ें छोड़ रहा हूं, **فِيهِ الْهُدَى وَالنُّورُ** इन में से एक तो किताबुल्लाह या'नी कुरआने पाक है, जिस में हिदायत भी है और नूर भी **فَخُذُوا بِكِتَابِ اللَّهِ وَاسْتَمْسِكُوا بِهِ** पस तुम किताबुल्लाह को मज़बूती से थामे रखो । **وَأَهْلُ بَيْتِي** और दूसरी चीज़ मेरे

अहले बैत और फिर तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया :

या'नी मैं اَذْكُرُكُمْ اللّٰهُ فِيْ اَهْلِ بَيْتِيْ، اَذْكُرُكُمْ اللّٰهُ فِيْ اَهْلِ بَيْتِيْ، اَذْكُرُكُمْ اللّٰهُ فِيْ اَهْلِ بَيْتِيْ

तुम को अपने अहले बैत के मुतअल्लिक **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ से डराता हूँ।" (مسلم، کتاب فضائل الصحابه، باب من فضائل ابی بکر الصديق، ص ۱۳۱۲)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद

यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं :

“(सक़लैन से मुराद) दो भारी भरकम चीज़ें या नफ़ीस तरीन

चीज़ें जो मताए इमान में सब से ज़ियादा कीमती हैं, (इन में से

पहली कुरआने मजीद है) या'नी कुरआने मजीद में अ़काइदो

आ'माल की हिदायत है और येह दुन्या में दिल का नूर है कियामत

में पुल सिरात का नूर (मजीद फ़रमाते हैं) اِسْتِمْسَاك के मा'ना हैं

मज़बूती से थामना कि छूट न जाए कुरआने करीम को ऐसी

मज़बूती से थामो कि ज़िन्दगी इस के साये में गुज़रे (और) मौत

इस के साए में आए ।

ख़याल रहे कि किताबुल्लाह में सुन्नते रसूलुल्लाह भी

दाख़िल है कि वोह किताबुल्लाह की शर्ह और इस पर अमल

कराने वाली है सुन्नत के बिगैर किताबुल्लाह पर अमल नामुमकिन

है लिहाज़ा येह नहीं कहा जा सकता कि सिर्फ़ कुरआन काफ़ी है ।

हदीस की ज़रूरत नहीं बल्कि फ़िक़ह भी किताबुल्लाह की ही शर्ह

या हाशिया है (और दूसरी चीज़ “मेरे अहले बैत है” इस की

शर्ह में फ़रमाते हैं) या'नी मेरी अवलाद, मेरी अज़वाज जनाबे

अली वगैराहुम इन की इताअत और इन से महब्वत करो । (हदीसे

पाक के इस जुज़ “मैं तुम को अपने अहले बैत के मुतअल्लिक

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** से डराता हूँ” की शर्ह में फ़रमाते हैं :) इन की

नाफ़रमानी, बेअदबी भूल कर भी न करना वरना दीन खो बैठोगे
ख़याल रहे कि हज़राते सहाबा और अहले बैत की लड़ाइयां,
झगड़े अ़दावत व बुग़ज़ के न थे बल्कि इख़्तिलाफ़े राए के थे ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान कर्दा हदीसे पाक में नस्ले इन्सानी की हिदायत व
रहनुमाई के लिये सय्यिदुल मुर्सलीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन
صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिन दो चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया है इन में
एक कुरआने पाक और दूसरी अहले बैते अत़हार, तो जो मुसलमान
कुरआने पाक पढ़ कर इस के **हलालो हराम** पर अमल करे और
साथ ही साथ अहले बैत की महब्बत को भी अपने दिल में बसा
ले तो वोह **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** कभी गुमराह न हो सकेगा । ग़रज़ येह कि
कुरआने पाक की अज़मत के साथ साथ अहले बैत की ता’ज़ीम
व तकरीम, उल्फ़तो महब्बत और उन की गुलामी भी एक मुसलमान
के लिये निहायत ज़रूरी है । अगर कोई इन दोनों में से किसी एक
चीज़ मसलन कुरआने पाक को तो मर्कज़े हिदायत माने मगर उस
के दिल में **अहले बैत** की अक़ीदत नहीं तो ऐसा शख़्स राहयाब
नहीं, यूंही अगर कोई कुरआने पाक को छोड़ कर सिर्फ़ अहले बैत
ही को मम्बए हक़ व सदाक़त जाने तो उस के लिये भी नजात की
कोई सूरत नहीं । हक़ीक़ी मा’नों में वोही आशिक़ाने रसूल दुन्या
व आख़िरत में कामयाबी से हमकिनार हैं जो कुरआने पाक को भी
राहे नजात मानते हैं और अहले बैत की महब्बत को भी अपनी
रहनुमाई के लिये मशअले राह जानते हैं ।

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुजूर
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की

(हदाइके बख्शिश, स. 153)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
तीन बातों की ता'लीम

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात, अलिय्युल
मुर्तजा शरे खुदा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم से रिवायत है कि नबिय्ये
करीम, रऊफुरहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَام का फ़रमाने दिल नशीन है :
أَيُّهَا أَزْوَاجُكُمْ عَلَى ثَلَاثِ خِصَالٍ يَا'नी अपने बच्चों को तीन चीज़ें
सिखाओ, حُبِّ نَبِيِّكُمْ وَحُبِّ أَهْلِ بَيْتِهِ وَقِرَاءَةُ الْقُرْآنِ अपने नबी की महब्बत,
अहले बैत की महब्बत और कुरआने पाक पढ़ना ।”

(الصواعق المحرقة، المقصد الثاني فيما تضمنته تلك الآية من طلب محبة آلِه، ص 142)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िक्र कर्दा रिवायत से ब
खूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
अपने अहले बैत से किस क़दर महब्बत फ़रमाते हैं कि सहाबए
किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को इस बात की ता'लीम इरशाद फ़रमा रहे हैं कि
तुम तो मुझ से और मेरे अहले बैत से महब्बत करते ही हो अपनी
आने वाली नस्लों के दिलों में भी मेरी और मेरे अहले बैत की
महब्बत रासिख़ कर देना ताकि उन का शुमार भी नजात याफ़्ता
लोगों में हो जाए । चुनान्वे,

सफीनए नूह

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : عَلَيْهِ السَّلَام **عَلَيْهِ السَّلَام** मेरे अहले बैत की मिसाल नूह की कश्ती की तरह है **مَنْ رَكِبَهَا نَجَا** जो इस में सुवार हुवा उस ने नजात पाई **وَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا هَلَكَ** और जो रह गया वोह ग़र्क़ हुवा ।”
(الصواعق المحرقة، المقصد الخامس، الفصل الثاني في سرد احاديث وارادة في اهل البيت، ص ١٨٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुरआने पाक में मुख़लिफ़ अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ السَّلَام के बारे में आया कि उन्होंने ने तौहीदे बारी तअ़ाला, अहकामे खुदावन्दी और अपनी रिसालत व नबुव्वत की तब्लीग़ फ़रमाई और साथ ही येह भी फ़रमा दिया कि इस तब्लीग़ो इशाअ़त पर हम तुम से किसी मुआवजे और बदले का मुतालबा नहीं करते, इस नेक काम का सिला और सवाब तो हमारा रब **عَزَّوَجَلَّ** ही अ़ता फ़रमाएगा चुनान्वे, हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने जब अपनी क़ौम को अज़ाबे इलाही से डराते हुवे अहकामे खुदावन्दी के मुआमले में अपनी इताअ़त का दर्स दिया तो इरशाद फ़रमाया :

**وَيَقُولُوا لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَا ط
إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ**

(प १२, हूद: २९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ क़ौम मैं तुम से कुछ इस पर (या'नी तब्लीगे रिसालत पर) माल नहीं मांगता ।

इसी तरह जब हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम को अहकामे खुदावन्दी और इबादते इलाही की तरफ़ राग़िब करने और मा 'सिय्यत से बचने के लिये नेकी की दा'वत पेश की तो फ़रमाया :

يَقُومُوا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا

إِنْ أَجْرِي إِلَّا عَلَى الْيَمِينِ

فَطَرَنِي ^ط (प १२, हूद: ५१)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ क़ौम

मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं

मांगता मेरी मज़दूरी तो उसी के

ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया ।

मगर कुरबान जाइये सरकारे दो आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कि आप की बारगाह में तो लोगों ने तब्सीगे दीन के एहसाने अज़ीम के पेशे नज़र कसीर मालो ज़र पेश भी कर दिया मगर आप ने उसे ठुकराते हुवे अपने अहले बैत से महब्बत का मुतालबा किया । चुनान्चे,

अहले बैत से महब्बत का मुतालबा

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मदीनए तय्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुवे और अन्सार ने देखा कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़िम्मे मसारिफ़ बहुत हैं और माल कुछ भी नहीं है तो उन्होंने ने आपस में मश्वरा किया और हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के हुकूक व एहसानात याद कर के हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में पेश करने के लिये बहुत सा माल जम्अ किया और उस को ले कर ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुवे और अर्ज की,

कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बदौलत हमें हिदायत हुई, हम ने गुमराही से नजात पाई, हम देखते हैं, कि हुज़ूर के मसारिफ़ बहुत ज़ियादा, इस लिये हम येह माल खुदामे आस्ताना की खिदमत में नज़्र के लिये लाए हैं, क़बूल फ़रमा कर हमारी इज़्ज़त अफ़ज़ाई की जाए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا

إِلَّا السَّوْدَةَ فِي الْقُرْبَىٰ ۖ

(२५प, الشورى: २३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं इस पर (या'नी तब्लीगे रिसालत और इरशाद व हिदायत) पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत (तुम पर लाज़िम है)।

गोया उन्हें येह बावर करा दिया गया कि इस तब्लीग़ व इशाअते दीन पर अगर तुम से कुछ मतलूब है तो महज़ येह कि मेरे अहले बैत की महब्बत को लाज़िम कर लो और उन का इश्क़ अपने दिल में बसा कर उन के दामने करम से वाबस्ता हो जाओ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि इस आयते करीमा में **اَعْلَانُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से किस प्यारे अन्दाज़ में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कलिमा पढ़ाने, लोगों को दौलते ईमान अता फ़रमाने, उन्हें ज़लालत व गुमराही के अन्धेरो से निकाल कर रुशदो हीदायत की रोशनी में लाने और कुफ़्रो शिर्क की तलातुम खैज़ मौजों में डूबने वालों को दीनो ईमान की कश्ती में सुवार कर के उन्हें कनारे लगाने का सिला सिर्फ़ महब्बते अहले बैत की सूरत में तलब किया जा रहा है।

अगर कोई शख्स क़बूले इस्लाम के बा'द सारी जिन्दगी सौमो सलात का पाबन्द रहे, हज़ व ज़कात के फ़रीज़े को भी ब हुस्नो ख़ूबी अदा करता रहे और सारी सारी रात इबादत में गुज़ार दे लेकिन उस के दिल में महब्बते रसूल और महब्बते अहले बैत नहीं है तो उस का ईमान क़ाबिले क़बूल नहीं। इस बात की वज़ाहत करते हुवे सरकारे नामदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इरशाद फ़रमाते हैं : **لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ نَفْسِهِ** : कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस को उस की जान से ज़ियादा महबूब न हो जाऊँ **وَتَكُونُ عِزَّتِي أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ عِزَّتِهِ** और मेरी अवलाद उस को अपनी अवलाद से प्यारी न हो।

(شعب الايمان، فصل في براءة نبينا الخ، ٢/ ١٨٩، حديث: ١٥٠٥)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से रिवायत है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **أَحِبُّوا اللَّهَ لِمَا يُغْدِرُكُمْ مِنْ نِعْمِهِ** का फ़रमाने बा करीना है : **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** तुम **أَبْلَاح** से महब्बत रखो क्यूंकि वोह तुम्हें अपनी ने'मतों में से खिलाता है **وَأَحِبُّوا اللَّهَ وَآحِبُّوا أَهْلَ بَيْتِي بِحُبِّي** और **أَبْلَاح** से महब्बत की वजह से मुझ से महब्बत करो और मेरी महब्बत की वजह से मेरी अहले बैत से महब्बत रखो।

(ترمذی، کتاب المناقب باب مناقب اهل بیت النبی، ٥/ ٢٣٢، حديث: ٣٨١٢)

बागे जन्नत के हैं बहर मद्ह ख़्वाने अहले बैत

तुम को मुज़दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत

किस ज़बां से हो बयान इज़ज़ो शाने अहले बैत

मद्ह गोए मुस्तफ़ा है मद्ह ख़्वाने अहले बैत

इन की पाकी का खुदाए पाक करता है बयान
आयए ततहीर से ज़ाहिर है शाने अहले बैत
इन के घर में बे इजाज़त जिब्रईल आते नहीं
क़द्र वाले जानते हैं क़द्रो शाने अहले बैत

(जौके ना'त, स. 71)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** हमें हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने के साथ साथ आप
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अहले बैत से उल्फ़तो महबूबत रखने की
तौफ़ीक़ अता फ़रमा । **أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

फ़रमाने मुस्तफ़ा

“जिस के बाल हों वोह इन का एहतिराम करे ।”
(अबुदाउद, १०३/६, १०३/६) या'नी इन्हें धोए, तेल लगाए
और कंघी करे । (أَشْعَةُ اللَّمَعَاتِ، १/३)



बयान नम्बर : 47

दस दरजात की बुलन्दी

इमामुल अ़बिदीन, सुलतानुस्साजिदीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है : “जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **اَعُوْذُ بِكَ** उस के लिये दस नेकियां लिख देता है, दस गुनाह मुअ़फ़ फ़रमा देता है और उस के दस दरजात बुलन्द फ़रमा देता है और येह दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर है ।”

(التّرجيب والترهيب، كتاب الذّكرو الدّعاء، التّرجيب فى اكثار الصّلاة على النّبي، ٣٢٢/٢، حدیث: ٢٥٧٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हमारा रब हम पर किस क़दर मेहरबान है कि अगर हम उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ें तो वोह करीम रब **اَعُوْذُ بِكَ** इस के बदले हमारे नामए आ'माल में दस नेकियां लिख देता है, दस गुनाह मुअ़फ़ फ़रमाता है। सिर्फ़ येही नहीं बल्कि हमारा पढ़ा हुवा दुरूदे पाक हमारे दरजात की बुलन्दी का सबब भी बनता है। लिहाज़ा उठते बैठते, चलते फिरते ज़ियादा से ज़ियादा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ज़ाते तय्यिबा पर दुरूदे पाक पढ़ते रहना चाहिये ताकि हमारे गुनाहों की मुअ़फ़ी का सामान हो सके। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अनस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है

कि शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने बा करीना है : “जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े
 اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और
 बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये
 जाएंगे ।” (افضل الصلوات على سيد السادات، الصلاة الحادية عشرة، ص १५)

صَلُّوا عَلَى خَيْرِ الْأَنَامِ مُحَمَّدٍ إِنَّ الصَّلَاةَ عَلَيْهِ نُورٌ يَعْقِدُ

या'नी : मख़लूक में सब से बेहतर जात हज़रते
 सय्यिदुना मुहम्मद **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदे पाक पढ़ो,
 बेशक उन पर दुरूदे पाक पढ़ना ऐसा नूर है जो ज़ामिन है ।
 या'नी बख़्शिश की गोरन्टी है ।

مَنْ كَانَ صَلَّى قَاعِدًا يُغْفِرُ لَهُ قَبْلَ الْقِيَامِ وَلِلْمَتَابِ يُجَدِّدُ

या'नी : जो बैठने की हालत में दुरूदे पाक पढ़े, खड़े
 होने से पहले उसे बख़्श दिया जाता है । और तौबा करने वाले को
 गुनाहों से पाक कर दिया जाता है ।

وَكَذَلِكَ إِنْ صَلَّى عَلَيْهِ قَائِمًا يُغْفِرُ لَهُ قَبْلَ الْقُعُودِ وَيُرْسَدُ

और ऐसे ही अगर खड़े हो कर दुरूदे पाक पढ़े तो बैठने
 से पहले बख़्श दिया जाता है और उस के लिये हिदायत के चराग़
 रोशन हो जाते हैं । (हिकायतें और नसीहतें, स. 24)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दुरूदे पाक न लिखने का वबाल

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़करिया رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मेरे एक दोस्त ने मुझे येह वाकिअ सुनाया है कि बसरा में एक आदमी हदीसे पाक लिखा करता था और क़स्दन काग़ज़ की बचत के लिये हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नामे मुबारक के आगे दुरूदे पाक लिखना छोड़ देता था। उस के दाएं हाथ में आकिला की बीमारी लग गई। उस का हाथ गल गया और इसी बीमारी के दर्द में मर गया।”

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيما ورد من لطائف المرائي والحكايات الخ، اللطيفة الثالثة والسبعون، ص ١٤٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ज़िक्रे ख़ैर करते हुवे दुरूदे पाक न लिखने वाले को एक मूज़ी मरज़ लाहिक् हुवा और इसी बीमारी के सबब उस की मौत वाक़ेअ हो गई। हमें भी इस वाकिए से दर्से इब्रत हासिल करनी चाहिये और आज के बा’द अपनी येह आदत बना लेनी चाहिये कि जब भी हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का नामे मुबारक लिखें या सुनें तो आप की ज़ाते तय्यिबा पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करें إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से तमाम तकालीफ़ और बीमारियां दूर हो जाएंगी। जैसा कि

गले की तकलीफ़ दूर हो गई

मुहद्दिसे आ’ज़म पाकिस्तान हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सरदार अहमद कादिरि रज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُوفَى एक

सच्चे अशिके रसूल थे । एक मरतबा आप बयान के लिये नारोवाल (पंजाब) तशरीफ ले गए । जब आप ने बयान का आगाज खुतबए मस्नूना से किया तो गले की तकलीफ की वजह से यूं मा'लूम होता था कि आज बयान मुश्किल होगा मगर अरबी खुतबे के बा'द आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फरमाया : “हमारे पास एक नुस्खा है जो हर मरज का इलाज और بِإِذْنِهِ تَعَالَى शिफा है ।” यह कह कर आप ने बुलन्द आवाज से दुरूदे पाक पढ़ना शुरू अफरमा दिया । दुरूद शरीफ का पढ़ना था कि आप की आवाज साफ हो गई । गले की तकलीफ जाती रही इस के बा'द आप ने साढ़े तीन घन्टे वज्द आफरीन बयान और नाक़ाबिले फ़रामोश ख़िताब फ़रमाया, आप इस क़दर जोश से बयान फ़रमा रहे थे कि इस से क़ब्ल ऐसा जोश कम देखने में आया । येह सब दुरूदे पाक की बरकत से है । (हयाते मुहद्दिसे आ'ज़म, स. 153 मुलतक़तन)

हर दर्द की दवा है सल्ले अला मुहम्मद

ता'वीजे हर बला है सल्ले अला मुहम्मद

जो मर्जे ला दवा है येह घोल कर पिला दो

क्या नुस्ख़ए शिफा है सल्ले अला मुहम्मद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दुसरे ताज की बरकत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السُّبْحَانِ

ने दुरूदे पाक के मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ ज़िक्र फ़रमाए और इन के फ़वाइद व समरात से हमें आगाह किया, इसी तरह रिवायात में

दुरूदे ताज के फ़ज़ाइल भी बयान फ़रमाए हैं इन में से आठ मदनी फूल हुसूले बरकत के लिये सुनिये और कसरत के साथ दुरूदे पाक पढ़ने की आदत बनाइये :

﴿1﴾ जो शख्स उरूजे माह (या'नी चांद की पहली से चौदहवीं तक) शबे जुमुआ में बा'द नमाजे इशा बा वुजू, पाक कपड़े पहन कर, खुशबू लगा कर, एक सो सत्तर बार दुरूदे ताज पढ़ कर सोए, ग्यारह⁽¹¹⁾ शब मुतवातिर इसी तरह करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हुजूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ियारत से मुशरफ़ होगा ।

﴿2﴾ सहरो आसेब, जिन्नो शैतान के दफ़अ के लिये और चैचक के लिये ग्यारह⁽¹¹⁾ बार पढ़ कर दम कर ले **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाइदा होगा ।

﴿3﴾ क़ल्ब की सफ़ाई के लिये हर रोज़ बा'द नमाजे सुब्ह साठ⁽⁶⁰⁾ और बा'द नमाजे अस्स तीन⁽³⁾ बार और बा'द नमाजे इशा तीन⁽³⁾ बार विर्द रखे ।

﴿4﴾ दुश्मनों, ज़ालिमों, ह़ासिदों और ह़ाकिमों के शर से महफूज़ रहने के लिये और ग़म व गुर्बत दूर होने के लिये चालीस⁽⁴⁰⁾ शब मुतवातिर बा'द नमाजे इशा इक्तालीस⁽⁴¹⁾ बार पढ़े ।

﴿5﴾ रोज़ी में बरकत के लिये सात⁽⁷⁾ बार बा'द नमाजे फ़ज़्र हमेशा विर्द रखे ।

﴿6﴾ अक्मीमा (या'नी बांझ औरत) के लिये इक्कीस⁽²¹⁾ खुर्मों (छूहारों) पर सात⁽⁷⁾ सात⁽⁷⁾ बार दम कर के एक खुर्मा (छूहारा)

रोज़ खिला दे और बा'दे हैज़, तुहर (या'नी पाकी के अय्याम) में हमबिस्तर हो ब फज़ले खुदा **عَزَّوَجَلَّ** नेक फ़रज़न्द पैदा हो ।

﴿7﴾ अगर हामिला पर ख़लल (या'नी तकलीफ़) हो तो सात⁽⁷⁾ दिन बराबर सात⁽⁷⁾ मरतबा पानी पर दम कर के पिलाए ।

﴿8﴾ वासिते मुवासिलते त़ालिबो मतलूब (या'नी जाइज़ महब्बत मसलन मियां बीवी में महब्बत) और हर मक्सूद के लिये आधी रात के बा'द बा वुज़ू चालीस⁽⁴⁰⁾ बार सिद्को यकीन के साथ पढ़े **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मतलूबे दिली हासिल होगा ।

(आ'माले रज़ा, स. 22)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कसरत के साथ दुरूदे पाक पढ़ने की आदत बनाने, सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न होने के लिये दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हरदम वाबस्ता रहिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बरकतें और सआदतें ही सआदतें पाएंगे । मुआशरे के कई बिगड़े हुवे अफ़राद दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** राहे रास्त पर आ चुके हैं और कितने ही ऐसे हैं जो दुरूदो सलाम के आशिक बन कर हमा वक़्त सरकारे अ़ली व़कार **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर हदिय्यए दुरूदो सलाम निछावर करते रहते हैं, आप की तरगीब के लिये ऐसी ही एक सलातो सलाम की आशिका की ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार गोश गुज़ार की जाती है ।

सलातो सलाम की आशिका

बाबुल मदीना (कराची) के अलाके रंछोड़ लाइन के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि मेरी हकीकी बहन (उम्र तक़रीबन 22 साल) ग़ालिबन सि.1994 ई. में दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता हो गई। इस मदनी तहरीक के पाकीज़ा माहोल की बरकत से इन की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। पंज वक्ता नमाज़ पाबन्दी से पढ़ने लगीं, T.V पर फ़िल्में डिरामे देखना छोड़ दिये, घरवाले अगर T.V चलाते तो येह दूसरे कमरे में चली जातीं। सि. 1995 ई. में एक दिन अचानक इन की तबीअत ख़राब हो गई, इलाज करवाया मगर जूँ जूँ दवा की मरज़ बढ़ता गया, हत्ता कि इस क़दर कमज़ोर हो गई कि बिगैर सहारे के बैठ भी नहीं सकती थीं। वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से प्यारे आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ा करतीं। जुमुआ के दिन जब आशिक़ाने रसूल की मसाजिद से बा'द नमाज़े जुमुआ पढ़े जाने वाले सलातो सलाम...

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

शम्फू बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

(हदाइके बख़्शिश, स. 295)

की मदह भरी सदाएं उन के कानों तक पहुंचतीं तो उन पर सुरूर की कैफ़ियत तारी हो जाती। वोह शदीद तकलीफ़ व कमज़ोरी के बा वुजूद खिड़की का सहारा ले कर पर्दे की एह्तियात

के साथ अदबन खड़ी हो जातीं और सलातो सलाम की सदाओं में गुम हो जातीं। उन की आंखों से आंसू जारी हो जाते हूँ कि बारहा रोते रोते हिचकियां बन्ध जातीं और जब तक मुख्तलिफ़ मसाजिद से सलातो सलाम की आवाजें आना बन्द न होतीं वोह इसी तरह जौको शौक और रिक्कत के साथ सलातो सलाम में हाज़िर रहतीं। घर वाले उन की बीमारी की वजह से तरस खा कर बैठने का मश्वरा देते तो रोते हुवे उन्हें मन्अ कर देतीं। उन की ज़बान पर वक्तन फ़वक्तन बिस्मिल्लाह, कलिमए तथ्यिबा और दुरूदे पाक का विर्द जारी रहता।

15 रमज़ानुल मुबारक सि.1415 हि. को उन्होंने ने बड़ी बहन से पानी मांगा, पानी पीने से क़ब्ल दूपट्टा सर पर रखा, बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ी और फिर पानी पी कर एक दम लैट गई। बहन ने संभालने की कोशिश की तो देखा कि उन की रूह कफ़से उन्सूरी से परवाज़ कर चुकी थी। अर्सए दराज़ तक बीमार रहने के बाइस मेरी बहन सूख कर कांटा बन चुकी थी। चेहरे की हड्डियां निकल आई थीं, फुन्सियां भी हो गई थीं और रंगत सियाही माइल हो चुकी थी। मगर जब उन्हें बा'दे वफ़ात गुस्ल दे कर कफ़न पहनाया गया तो हम ने देखा कि हैरत अंगेज़ तौर पर मेरी बहन का चेहरा पुर गोश्त और रोशन हो गया और चेहरे की तमाम फुन्सियां भी हैरत अंगेज़ तौर पर साफ़ हो चुकी थीं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह सब दुरूदे पाक पढ़ने की बरकतें हैं।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

पर कसरत के साथ दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा
और हमें वक्ते नज़्ज़ ज़ल्वए महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** में ईमान
व आफ़ियत की मौत नसीब फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा

नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने
इरशाद फ़रमाया : बेशक बन्दा हुस्ने अख़लाक़ के ज़रीए
दिन में रोज़ा रखने और रात में क़ियाम करने वालों के
दरजे को पा लेता है । और अगर बन्दा (सख़्ती करने
वाला) लिखा जाए तो वोह अपने ही घर वालों के लिये
हलाक़त होता है । (मेजम الاوسط، ३१९/२، حدیث: १२८३)



बयान नम्बर : 48

एक गुनहगार की बख्शिश का सबब

हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْ نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की कौम में एक शख्स इन्तिहाई गुनहगार था उस ने अपनी सारी ज़िन्दगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानियों में बसर की, जब वोह मर गया तो बनी इस्राईल ने उसे यूंही बे गोरो कफ़न गन्दगी के ढेर पर डाल दिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वही भेजी कि हमारा एक दोस्त फ़ौत हो गया है और लोगों ने उसे गन्दगी पर फेंक दिया। तुम उस को उठाओ और इज़्ज़तो एह्तिराम के साथ उस की तजहीज़ो तकफ़ीन करो और उस का जनाज़ा पढ़ा दो। येह सुन कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उस जगह पहुंचे तो देखा कि वोह तो एक गुनहगार शख्स था, आप को हैरत तो बहुत हुई लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ता'मील करते हुवे आप عَلَيْهِ السَّلَام ने निहायत ए'जाज़ व इकराम के साथ उस शख्स की तजहीज़ो तकफ़ीन की और नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर दफ़ना दिया। बा'द में आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दरबारे इलाही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में अर्ज़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह शख्स तो बड़ा मुजरिम व ख़ताकार था, ऐसे ए'जाज़ का हक़दार कैसे हो गया ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : ऐ मूसा ! था तो येह वाक़ेई बहुत गुनहगार और सख़्त

सज़ा का हक़दार मगर इस की येह आदत थी कि जब कभी तौरेत खोलता : وَنَظَرَ إِلَى اسْمِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَهُ وَوَضَعَهُ عَلَى عَيْنَيْهِ وَصَلَّى عَلَيْهِ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

और मुहम्मदे अरबी **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के नामे पाक को देखता तो फर्ते महबूबत से उस नामे पाक को चुमता, उसे आंखों से लगाता और आप की ज़ाते तय्यिबा पर **दुरूदे पाक** के फूल निछावर करता था, فَشَكَرْتُ ذٰلِكَ لَهُ وَغَفَرْتُ ذُنُوْبَهُ وَرَوَّجْتُهُ سَبْعِيْنَ حَوْرًا (इसी अमल की वजह से) इसे कद्रो मन्जिलत अता की, इस के गुनाहों को मुआफ़ कर दिया और **सत्तर हूरें** इस के निकाह में दीं ।”

(حلیۃ الاولیاء، وهب بن منبه، ۴/۵، حدیث: ۴۶۹۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि जो शख्स इन्तिहाई गुनहगार और लोगों की नज़र में हकीर था, **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने अपने प्यारे हबीब हज़रते मुहम्मद **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के नामे नामी इस्मे गिरामी की ता'जीम व तौकीर करने, इस को चूम कर आंखों से लगाने और आप की ज़ाते अक़दस पर **दुरूदे पाक** पढ़ने की बरकत से उस के तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमा दिये और उस का येह अमल **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** को इस क़दर पसन्द आया कि उसे मक़बूले बारगाह बना लिया । हमें भी चाहिये कि जब भी हुज़ूरे पाक **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का मुबारक नाम पढ़ें या सुनें तो ता'जीम की निय्यत से अंगूठे चुम कर आंखो से लगाएं और आप की ज़ाते पाक पर **दुरूदे पाक** पढ़ें **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की मइय्यत (साथ) में दाख़िले जन्नत होंगे । चुनान्चे,

अज्ञान के वक्त अंगूठे चूमने का सवाब

फ़तावा शामी में है कि जब मुअज़्ज़िन **أَشْهَدُ أَنْ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ** कहे तो मुस्तहब है कि सुनने वाला कहे **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ** और जब दूसरी मरतबा येह कलिमात सुने तो यूं कहे और **أَنْفَرْتُ عَيْنِي بِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ اللَّهُمَّ مَتِّعْنِي بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ** और अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाए ऐसा करने वाले को नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपने साथ जन्नत में ले जाएंगे ।

अल्लामा शामी **قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِيُّ** किताबुल फिरदौस के हवाले से मज़ीद फ़रमाते हैं : **مَنْ قَبَّلَ ظُفْرِي إِنْهَامِهِ عِنْدَ سَمَاعِ أَشْهَدُ أَنْ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ فِي الْأَذَانِ** : या'नी जो शख्स अज्ञान में **أَشْهَدُ أَنْ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ** सुन कर अपने अंगूठों के नाखुनों को चूम लिया करेगा **أَنَا قَائِدُهُ وَمُدْخِلُهُ فِي صُفُوفِ الْجَنَّةِ** मैं ऐसे शख्स की कियादत करूंगा और उसे जन्नत की सफ़ों में दाखिल करूंगा ।”

(درمختاروردالمختار، کتاب الصلاة، مطلب فی کراهة تکرار الجماعة فی المسجد، ۸۴/۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

सरकार के अस्माए मुबारक

याद रखिये ! यूं तो हुजूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुतअद्दिद अस्माए गिरामी हैं । बा'ज

मुहद्दिसीने किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام फरमाते हैं : “जिस तरह **अल्लाह**

तबारक व तअ़ाला के **निनानवे** (सिफ़ाती) नाम हैं इसी तरह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी **निनानवे** (सिफ़ाती) नामों से नवाज़ा है। इब्ने अरबी (मालिकी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَرِی**) ने अरिदतुल अहवज़ी में नक़ल किया है कि **अल्लाह** तअ़ाला के हज़ार नाम हैं और नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के भी हज़ार नाम हैं इब्ने फ़ारस से मन्कूल है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्माए शरीफ़ा दो हज़ार से ज़ा़द हैं। इन में से हर एक नाम आप की सीरत व किरदार के किसी न किसी पहलू को उजागर करता है। येह भी ज़ेह्न नशीन रहे कि जिस तरह **अल्लाह** رَبُّلْ اِجْزَاتِ جَلَّ جَلَالُهُ के बेशुमार नाम हैं मगर ज़ाती नाम सिर्फ़ एक है या'नी “**अल्लाह**”, इसी तरह हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्मा (नामों) की ता'दाद भी हज़ारों में है और हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** के भी कसीर नाम होने के बावजूद आप का ज़ाती नाम एक ही है और वोह “**मुहम्मद**” है। येह वोह नाम है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रोज़े अव्वल ही से आप के लिये चुन लिया था। (مطالع المسرات مترجم، ص ۱۹۳، ملقط مفهوماً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्मे मुहम्मद

صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर प्यारा है कि इस के सुनते ही फ़र्ते

ता'ज़ीम से अहले महब्बत झूम उठते हैं और आशिक़ाने रसूल की

ज़बान पर बे साख़्ता **दुरूदो सलाम** जारी हो जाता है और येह सब ता'जीम व तौकीर क्यूं न हो कि मुहम्मद तो कहते ही उसे हैं जो काबिले सदसताइश व ता'रीफ़ हो क्यूंकि लफ़्ज़े मुहम्मद “हम्द” से मुश्तक़ (या'नी बना) है और हम्द के मा'ना मद्हो सना बयान करने के हैं तो इस तरह लफ़्ज़े मुहम्मद का मा'ना हुवा वोह ज़ात जिस की ता'रीफ़ व तौसीफ़ बयान की जाए। इमाम राग़िब अस्फ़हानी **قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي** इस्मे मुहम्मद के बारे में फ़रमाते हैं : **وَمُحَمَّدٌ إِذَا كَثُرَتْ خِصَالُهُ الْمَحْمُودَةُ** मुहम्मद उस ज़ात को कहा जाता है जिस में काबिले ता'रीफ़ ख़स्लतें बहुत कसरत से पाई जाएं।”

(المفردات، ص २५१)

आंखों का तारा नामे मुहम्मद
दिल का उजाला नामे मुहम्मद
हैं यूं तो कसरत से नाम लेकिन
सब से है प्यारा नामे मुहम्मद

(क़बालए बख़्शिश, स. 73)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! प्यारे आका, मक्की मदनी

मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ात की तरह आप का नाम भी हर ऐब व नक्स और ख़ामी से पाक है। और येह नाम **اَللّٰهُ** को भी बेहद महबूब है। चुनान्वे,

सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना

मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** फ़रमाते हैं :

“हबीबे मुकर्रम, नबिय्ये मुअज्जम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के इसमें पाक मुहम्मद व अहमद हैं और ज़ाहिर येही है कि येह दोनों नाम खुद **अल्लाह** तआला ने अपने महबूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के लिये मुन्तख़ब फ़रमाए, अगर येह दोनों नाम खुदा तआला के नज़दीक बहुत प्यारे न होते तो अपने महबूब के लिये पसन्द न फ़रमाया होता ।” (बहारे शरीअत, 3/601)

अगर हम भी इस मुअज्जज़ व मुकर्रम नाम से बरकत हासिल करने के लिये अपने बेटों का नाम **मुहम्मद** रखें तो येह मुबारक नाम हमारी बख़्शिश व मग़फ़िरत का ज़रीआ बन सकता है और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से हमें जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा । चुनान्चे,

नामे मुहम्मद की बरकत

सरकारे नामदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, जनाबे अहमदे मुख़्तार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने खुशबूदार है : **يَا'नी** जिस के यहां बच्चे की विलादत हो और वोह मुझ से महबूबत और मेरे नाम से बरकत हासिल करने के लिये अपने लड़के का नाम **मुहम्मद** रख दे **كَانَ هُوَ وَمَوْلُوْدُهُ فِي الْجَنَّةِ** तो वोह और उस का बेटा दोनों जन्नत के हक़दार क़रार पाएंगे । (السيرة الحلبية، باب تسميته محمداً واحمداً، १/ १२१)

एक और हदीसे कुदसी में है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने बा क़रीना है : **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** फ़रमाता है : **يَا'नी** **وَعَزَّتِي وَجَلَالِي لَا أُعَذِّبُ أَحَدًا تُسَمِّي بِاسْمِكَ فِي النَّارِ**

ऐ महबूब ! मुझे अपनी इज़्जत जलाल की क़सम ! मैं किसी ऐसे बन्दे को दोख़ का अज़ाब नहीं दूंगा जिस ने अपना नाम तेरे नाम पर रखा होगा ।” (ایضاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुहम्मद नाम रखो तो इस की ता'जीम भी करो

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेर ख़ुदा **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم** फ़रमाते हैं : ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अलीशान है : **اِذَا سَمِیْتُمُ الْوَلَدَ مُحَمَّدًا فَاکْرِمُوْهُ** : या'नी जब तुम किसी बच्चे का नाम मुहम्मद रखो तो फिर उस की इज़्जत करो, **وَاَوْسَعُوْا لَهُ فِی الْمَجْلِیْسِ وَلَا تُقْبِحُوْا لَهُ وَجْهًا** और मजलिस में उस के लिये जगह कुशादा करो और उस के चेहरे की बुराई बयान मत करो ।” (अहकामे शरीअत, स. 72)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

याद रखिये ! जिन के नाम मुहम्मद व अहमद या किसी मुक़द्दस हस्ती के नाम पर रखे जाएं तो उन का अदब भी हम पर लाज़िम है । लेकिन फ़ी ज़माना हमारे मुआशरे में नाम तो अच्छे अच्छे रखे जाते हैं लेकिन बद किस्मती से इन मुबारक अस्मा (नामों) का एहतिराम बिल्कुल नहीं किया जाता और इन्हें बिगाड़ कर अजीबो ग़रीब नामों से पुकारा जाता है हालांकि हमारे अस्लाफ़े किराम **رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** की येह आदते करीमा थी कि मुक़द्दस नामों का हत्तल इम्कान अदबो एहतिराम बजा लाया करते । चुनान्चे,

बे वुजू नामे मुहम्मद न लेने वाले बुजुर्ग

मशहूर बादशाह, सुल्तान महमूद गज़नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي

एक ज़बरदस्त आलिमे दीन और सौमो सलात के पाबन्द थे और बाकाइदगी के साथ कुरआने पाक की तिलावत किया करते। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपनी सारी ज़िन्दगी ऐन दीने इस्लाम के मुताबिक गुज़ारी और परचमे इस्लाम की सर बुलन्दी और ए'लाए कलिमतुल्लाह के लिये बहुत सी जंगें लड़ीं और फ़तहयाब हुवे। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ शुजाअत व बहादुरी के साथ साथ इश्के रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अज़ीम मन्सब पर भी फ़ाइज़ थे। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के फ़रमां बरदार गुलाम अयाज़ का एक बेटा था जिस का नाम मुहम्मद था। हज़रते महमूद गज़नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي जब भी उस लड़के को बुलाते तो उस के नाम से पुकारते, एक दिन आप ने ख़िलाफ़े मा'मूल उसे ऐ इब्ने अयाज़ ! कह कर मुख़ातब किया। अयाज़ को गुमान हुवा कि शायद बादशाह आज नाराज़ हैं इस लिये मेरे बेटे को नाम से नहीं पुकारा, वोह आप के दरबार में हज़िर हुवा और अर्ज़ की : हुज़ूर ! मेरे बेटे से आज कोई ख़ता सरज़द हो गई जो आप ने उस का नाम छोड़ कर इब्ने अयाज़ कह कर पुकारा ? आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : "मैं इस्मे मुहम्मद की ता'ज़ीम की ख़ातिर तुम्हारे बेटे का नाम बे वुजू नहीं लेता चूँकि उस वक़्त मैं बे वुजू था इस लिये लफ़्ज़े मुहम्मद बिला वुजू लबों पर लाना मुनासिब न समझा !"

लो झूम के नाम मुहम्मद का, इस नाम से राहत होती है
इस नाम के सद्के बटते हैं, इस नाम से बरकत होती है
अपने तो **नियाज़ी** अपने हैं, गैरों ने भी हम से प्यार किया
सब नामे नबी का सद्का है, अपनी जो येह इज़्ज़त होती है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे **ALLAH** **عَزَّوَجَلَّ** हमें हुज़ूरे पाक
صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'जीम करने और आप की जाते पाक पर
कसरत के साथ **दुरूदो सलाम** पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा

जब तुम में से कोई किसी ऐसे शख्स को देखे जिसे
उस पर जिस्म और माल की फ़ज़ीलत हासिल हो तो उसे
चाहिये कि वोह अपने से कमतर पर भी नज़र डाल ले।

(شعب الایمان، ۳/۴، حدیث: ۴۵۷۴)



बयान नम्बर : 49

वोही अक्वल वोही आखिर

हज़रते अल्लामा अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي शर्हशिफ़ा में एक हदीसे पाक नक़ल फ़रमाते हैं, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे नामदार, दो आलम के मालिको मुख्तार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने खुशबूदार है : “एक बार जिब्रीले अमीन ने हाज़िर हो कर मुझे यूँ सलाम किया : **السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ظَاهِرُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَاطِنُ** : ऐ जिब्रील ! येह सिफ़ात तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की हैं कि उसी को लाइक़ हैं मुझ सी मख़्लूक़ की क्यूँ कर हो सकती हैं ?” जिब्रीले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अर्ज की : “**अब्बाह** तबारक व तअ़ाला ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इन सिफ़ात से फ़ज़ीलत दी और तमाम अम्बिया व मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام पर आप को खुसूसियत बख़्शी, अपने नाम और वस्फ़ से आप के अस्मा व अवसाफ़ मुश्तक़ फ़रमाए, **سَمَّاكَ بِالْأَوَّلِ لِأَنَّكَ أَوَّلُ الْأَنْبِيَاءِ خَلْقًا** आप को सिफ़ते अव्वल से इस लिये मौसूफ़ फ़रमाया कि आप पैदाइश में सब अम्बिया से मुक़द्दम हैं, **وَسَمَّاكَ بِالْآخِرِ لِأَنَّكَ آخِرُ الْأَنْبِيَاءِ فِي الْعَصْرِ** और आखिर इस लिये रखा कि आप पैग़म्बरों में ज़माने के ए’तिबार से मुअख़्ख़र हैं ।”

आप बातिन इस वजह से हैं कि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नामे पाक के साथ आप का नामे नामी सुन्हरे नूर से अर्श पर हज़रते

सय्यिदुना आदम सफ़ियुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की पैदाइश से दो हजार बरस पहले हमेशा हमेशा के लिये लिख दिया फिर मुझे आप की जाते बा बरकत पर दुरूद भेजने का हुक्म दिया तो मैं दो हजार साल तक दुरूद भेजता रहा, हत्ता कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने आप को मबरुस फ़रमाया ।”

(شرح الشفاء الباب الثالث، فصل في تشريف الله تعالى باسماءه..... الخ، ١/ ٥١)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب ! صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में सय्यिदुल मलाइका हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने सय्यिदुल अम्बिया वल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सिफ़ते अव्वल व आख़िर के साथ मुत्तसिफ़ किया और आप पर सलाम भेजा है । इस से येह बात मा'लूम हुई कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अव्वल भी हैं आख़िर भी, ज़ाहिर भी हैं बातिन भी हैं । हमें चाहिये कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहरबार में हदिय्यए दुरूदो सलाम पेश करें तो आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की सिफ़ाते तय्यिबा के साथ दुरूदो सलाम अर्ज किया करें ।

मुहक्कि अलल इतलाक़ हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي मदारिजुनुबुव्वत में इस आयए मुबारका هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ (वोही अव्वल, वोही आख़िर, वोही ज़ाहिर, वोही बातिन है ।) के तहूत फ़रमाते हैं :

“येह कलिमाते ए'जाज़ **اَللّٰهُ** तआला के अस्माए हुस्ना में

हम्दो सना पर भी मुश्तमिल हैं क्यूंकि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने अपनी किब्रियाई के जिक्रो बयान में इरशाद फ़रमाए और हुजूरे अकरम सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ना'त व सिफ़त को भी शामिल हैं क्यूंकि **अल्लाह** तबारक व तआला ने इन सिफ़ात के साथ आप की तौसीफ़ फ़रमाई बा वुजूद येह कि येह अस्मा, अस्माए इलाही भी हैं। **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने इन सिफ़ात को अपने हबीबे करीम **عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ** का नामे पाक करार दे कर आप के हुल्यए मुबारक, हुस्नो जमाल और कमाले ख़िसाल का आईना दार बनाया। अगर्चे हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के तमाम अस्मा से मुत्तसिफ़ हैं इस के बा वुजूद खुसूसियत के साथ इन में से कुछ सिफ़ात को बतौरे ख़ास शुमार किया। इन ही में से अव्वल, आख़िर, ज़ाहिर, बातिन भी हैं।”

मज़ीद फ़रमाते हैं : “अब रहा येह सुवाल कि हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** का इस्मे सिफ़त अव्वल कैसे है ? तो येह अव्वलियत इसी बिना पर है कि आप की तख़्लीक़ मौजूदात में सब से अव्वल है।” चुनान्वे,

सिफ़ते अव्वल की वुजूहात

हदीस शरीफ़ में है : **أَوَّلُ مَا خَلَقَ اللَّهُ نُورِي** या'नी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने सब से पहले मेरे नूर को वुजूद बख़्शा।”

दूसरी वजह येह कि आप मर्तबए नबुव्वत में भी अव्वल हैं। चुनान्वे, हदीसे पाक में है **كُنْتُ نَبِيًّا وَإِنَّ آدَمَ لَمُنْجِدِلٌ** या'नी मैं उस वक़्त भी नबी था जब आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** अपने ख़मीर में ही थे।”

आप के अव्वलुल खल्क होने की तीसरी वजह यह है कि आप ही रोज़े मीसाक सारे जहान से पहले जवाब देने वाले थे जब हक़ तअ़ाला ने फ़रमाया : **أَسْأَلُكُمْ** (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं ?) तो सब ने कहा **نَآوَابِلُ** (हां क्यूं नहीं)''

और आप ही सब से पहले ईमान लाने वाले हैं और रोज़े महशर बाबे शफ़ाअत सब से पहले आप ही के लिये खुलेगा और जन्नत में भी सब से पहले आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ही जाएंगे ।

सिफ़ते आख़िर की वुजूहात

हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** को सिफ़ते आख़िर के साथ इस लिये मौसूफ़ फ़रमाया गया कि सबक़त व अव्वलिय्यत (या'नी पहले आने) के बा वुजूद बिअूसत व रिसालत में आप आख़िर हैं । चुनान्वे, **अब्बाह** **وَلَكِنْ رَسُولُ اللَّهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ** : हां **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है : **هَآ** हां **अब्बाह** के रसूल हैं और सब नबियों के पिछले ।''

दूसरी वजह यह है कि तमाम आस्मानी किताबों में आप की किताब या'नी कुरआने करीम आख़िरी और तमाम दीनों में आप का दीन आख़िरी है । चुनान्वे, इरशाद फ़रमाया : **نَحْنُ الْآخِرُونَ السَّابِقُونَ** या'नी तमाम सबक़तों के बा वुजूद बिअूसत में हम आख़िरी हैं ।''

फिर आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के ज़ाहिरो बातिन होने की वजह बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : “आप का ज़ाहिर होना इस वजह से है कि आप ही के अन्वार व तजल्लिय्यात ने पूरे आफ़ाक़ को घेर रखा है जिस से सारा जहां रोशन है और आप की सिफ़ते

बातिन से मुराद आप ﷺ के वोह असरार हैं जिन की हकीकत का इदराक मुमकिन नहीं। (मदारिजुनुबुव्वत, 1/2)

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हज़रते अल्लामा मौलाना इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ शबे मे'राज का तज़क़िरा करते हुवे सरकार ﷺ की इन सिफ़ाते हमीदा के बारे में कुछ यूं फ़रमाते हैं :

नमाज़े अक्सा में था येही सिर्र, इयां हो मा'ना अव्वल आख़िर
कि दस्त बस्ता हैं पीछे हाज़िर, जो सल्लनत आगे कर गए थे

(हदाइके बख़्शाश, स. 232)

वोही है अव्वल वोही है आख़िर, वोही है बातिन वोही है ज़ाहिर
उसी के जल्वे उसी से मिलने, उसी से उस की तरफ़ गए थे

(हदाइके बख़्शाश, स. 236)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! ﷺ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام हत्ता कि हज़रते सय्यिदुना आदम बल्कि सारी मख़्लूक और तमाम काइनात से पहले अपने हबीब और तबीबों के तबीब ﷺ के नूर को अपनी कुदरते कामिला से पैदा फ़रमाया जैसा कि हदीसे जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ है :
يا'नी ऐ जाबिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब से पहले तेरे नबी के नूर को पैदा फ़रमाया ।"

(كشف الخفاء، حرف الهمزة مع الواو، 1/237)

वोह जो न थे तो कुछ न था

याद रखिये ! जब ख़ालिके अर्दो समावात **عَزَّوَجَلَّ** ने काइनात बसाने का इरादा फ़रमाया तो उस ने अपने हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के नूर की तख़लीक़ फ़रमाई, उस वक़्त न जिन्न थे न इन्सान, न लौह थी न क़लम, न ज़न्नत व दोज़ख़, न हूर व मलक थे, न ज़मीन व फ़लक और न ही येह महरो माह वुजूद में आए थे । उस वक़्त **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने अपने महबूब के नूर से लौहो क़लम, और अर्श व कुरसी पैदा फ़रमाए फिर इस नूरे पाक से आस्मानो ज़मीन और ज़न्नत व दोज़ख़ को बनाया, गरज़ येह कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते पाक ही मक़सदे तख़लीक़े काइनात है जैसा कि हदीसे कुदसी का मफ़हूम है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से रिवायत है : **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह **عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** को वही भेजी : ऐ ईसा ! मुहम्मद **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर ईमान ला ! और तेरी उम्मत में से जो लोग उस का ज़माना पाएं उन्हें भी हुक्म करना कि उस पर ईमान लाएं **فَلَوْلَا مُحَمَّدٌ مَا خَلَقْتُ آدَمَ وَلَوْلَا مُحَمَّدٌ مَا خَلَقْتُ الْجَنَّةَ وَلَا النَّارَ** या'नी अगर मुहम्मदे अरबी **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते गिरामी न होती तो मैं न आदम को पैदा करता, न ही ज़न्नत व दोज़ख़ बनाता । जब मैं ने अर्श को पानी पर बनाया तो वोह उस वक़्त जुम्बिश कर रहा था मैं ने उस पर **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ** लिख दिया, पस वोह ठहर गया ।

(الخصائص الكبرى، باب خصوصيته بكتابة اسمه الشريف الخ، ١/ ١٤)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

बयान कर्दा गुफ्तगू से येह बात वाजेह हो गई कि दुन्या की तमाम अश्या को वुजूद की दौलत आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ही के तवस्सुल से मिली है, आप ही अस्ले काइनात और मम्बए मौजूदात हैं और खुदा तआला के बा'द आप ही की जाते बा बरकात बुजुर्ग व बरतर है।

يَا صَاحِبَ الْجَمَالِ وَيَا سَيِّدَ الْبَشَرِ
مِنْ وَجْهِكَ الْمُنِيرِ لَقَدْ نُورَ الْقَمَرِ
لَا يُمْكِنُ الثَّنَاءُ كَمَا كَانَ حَقُّهُ
بَعْدَ أَنْ خُدا بُزُرْكَ تُؤْنِي قِصَّةَ مُخْتَصِرِ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सब से औला व आ'ला हमारा नबी

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي** ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में आयते करीमा **وَرَفَعَ بَعْضُهُمْ دَرَجَاتٍ ط** (और कोई वोह है जिसे सब पर दरजों बुलन्द किया) के तहत फ़रमाते हैं : “आयते करीमा में हुजूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की इस रिफ़अते मर्तबत का बयान फ़रमाया गया और नामे मुबारक की तसरीह न की गई इस से भी हुजूरे अक्दस **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के उलुव्वे शान का इज़हार मक्सूद है कि जाते वाला की येह शान है कि जब तमाम अम्बिया पर **फ़ज़ीलत** का बयान

किया जाए तो सिवाए जाते अक्दस के येह वस्फ़ किसी पर

सादिक ही न आए और कोई इश्तिबाह राह न पा सके, हुजूर
 عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के वोह ख़साइसो कमालात जिन में आप तमाम
 अम्बिया पर फ़ाइक़ व अफ़ज़ल हैं और आप का कोई शरीक नहीं
 बे शुमार हैं कि कुरआने करीम में येह इरशाद हुवा : “दरजों
 बुलन्द किया” इन दरजों की कोई शुमार कुरआने करीम में ज़िक्र
 नहीं फ़रमाई तो अब कौन ह़द लगा सकता है? इन बे शुमार ख़साइस
 में से बा’ज का इजमाली व मुख़्तसर बयान येह है कि आप की
 रिसालत आम्मा है तमाम काइनात आप की उम्मत है। **अल्लाह**
 तआला ने फ़रमाया : وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا
 में फ़रमाया لِيَكُونَ لِّلْعَالَمِينَ نَذِيرًا मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में इरशाद
 हुवा : أُرْسِلْتُ إِلَى الْعَالَمِينَ كَافَّةً और आप पर नबुव्वत ख़त्म की गई।
 कुरआने पाक में आप को **ख़ातमुन्नबिय्यीन** फ़रमाया। ह़दीस
 शरीफ़ में इरशाद हुवा خُتِمَ بِى النَّبِيُّونَ आयाते बय्यिनात व मो’जिज़ाते
 बाहिरात में आप को तमाम अम्बिया पर **अफ़ज़ल** फ़रमाया गया,
 आप की उम्मत को तमाम उम्मतों पर अफ़ज़ल किया गया,
 शफ़ाअते कुब्रा आप को मरह़मत हुई, कुर्बे ख़ास शबे मे’राज
 आप को मिला, इल्मी व अमली कमालात में आप को सब से
 आ’ला किया और इस के इलावा बे इन्तिहा ख़साइस आप को
 अता हुवे।

(خزائن العرفان، ३، البقرة، تحت الآية २०३)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा’वते इस्लामी)

ऐे हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें हुजूरे पाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते अक़दस पर कसरत के साथ दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और अपने हबीबे करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के वसीले से हमें दुन्या व आख़िरत में सुख़रूई अता फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़

जो अपने गुस्से को दूर कर ले तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस से अपना अज़ाब दूर फ़रमा लेता है और जो अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त कर ले तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस की पर्दा पोशी फ़रमा देता है । (معجم الاوسط، ३/१२४، حدیث: १३२०)



क़ियामत की वहशतों से नजात पाने वाला

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : **يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْجَاكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ أَهْوَالِهَا وَمَوَاطِنِهَا** : या'नी ऐ लोगो ! क़ियामत के दिन उस की वहशतों और दुश्वार गुज़ार घाटियों से नजात पाने वाला तुम में से वोह शख्स होगा, **أَكْثَرُكُمْ عَلَى صَلَاةٍ فِي دَارِ الدُّنْيَا** जो दुन्या में मुझ पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ता होगा ।”

(کنز العمال، کتاب الانکار، باب السادس فی الصلاة علیه وعلى آله..... الخ، ۱/۲۵۴، حدیث: ۲۲۲۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़े क़ियामत नफ़सी नफ़सी का अलम होगा और ऐसे कड़े वक़्त में वोह शख्स जिस ने दुन्या में हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ात पर **दुरूदे पाक** पढ़ा होगा वोह क़ियामत की उन सख़्तियों और तकालीफ़ से **महफूज़** रहेगा । लिहाज़ा हमें भी हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में इश्को महब्बत में झूम झूम कर **दुरूदो सलाम** पढ़ते रहना चाहिये और अपनी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुवे अपनी क़ब्रों हशर की तय्यारी में मशगूल हो जाना चाहिये ।

याद रखिये ! येह दुन्या चन्द रोज़ा है इस की राहत व मुसीबत सब फ़ना होने वाली है, यहां की दोस्ती और दुश्मनी सब ख़त्म होने वाली है, दुन्या से चले जाने के बा'द बड़े से बड़ा रफ़ीक़ व शफ़ीक़ भी हमारे काम आने वाला नहीं, मरने के बा'द अगर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** अपने फ़ज़्लो रहमत और अपने प्यारे हबीब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की शफ़ाअत के सदके में हमारी बख़्शाश फ़रमा दे तो हमारा बेड़ा पार, वरना क़ब्रो ह़शर का मुआमला इन्तिहाई सख़्त है ।

क़ब्र जन्नत का बाग़

हमारी नजात इसी सूरत में है कि हम दुन्या में रहते हुवे क़ब्रो ह़शर की तय्यारी में मशगूल हो जाएं । याद रखें जिस खुश नसीब ने अपनी ज़िन्दगी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** और उस के रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के अहकामात की बजा आवरी में बसर की होगी जब मुन्कर नकीर क़ब्र में उस से सुवालात करेंगे : **مَنْ رَبُّكَ؟** “तेरा रब कौन है ?” तो उसे जवाब में साबित क़दमी नसीब होगी कहेगा : **رَبِّىَ اللّٰهُ** “मेरा रब **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** है ।” सुवाल होगा : **دِينِىَ الْاِسْلَام** “मेरा दीन क्या है ” तो वोह कहेगा : **مَا دِينُكَ؟** “मेरा दीन इस्लाम है ।”

फिर नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का रूख़े अन्वर दिखा कर आप

के बारे में इस्तिफ़सार होगा : **مَا كُنْتُ تَقُولُ فِى هٰذَا الرَّجُلِ** , इस हस्ती के

बारे में तू क्या कहा करता था ?” आप ﷺ का चेहरा ए अन्वर देख कर दिल खुशी से झूम जाएगा और बे साख़्ता पुकार उठेगा هُوَ رَسُولُ اللَّهِ येह तो अब्बाह के रसूल हैं, येही तो मेरे आका ﷺ हैं जिन के जिक्रे खैर पर मैं झूम जाता था और क्यूं न हो कि इन का जिक्र तो मेरे दिल का सुरूर और मेरी आंखों का नूर था और जब इन का नामे नामी इस्मे गिरामी सुनता तो अक़ीदत से अंगूठे चूमता और दुरूदे पाक पढ़ा करता था, येही तो मेरे मीठे मीठे आका ﷺ हैं कि जिन की याद मेरे लिये सरमायए हयात थी ।

तुम्हारी याद को कैसे न ज़िन्दगी समझूं

येही तो एक सहारा है ज़िन्दगी के लिये

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रहमते आलम

मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

फिर जब सरकार ﷺ अपना जल्वाए नूर बार दिखा कर तशरीफ़ ले जाने लगेंगे तो कोई बर्द नही कि वोह आशिके सादिक आप के क़दमों से ऐसे लिपट जाए गोया अर्ज़ गुज़ार हो :

दिल भी प्यासा नज़र भी है प्यासी क्या है ऐसी भी जाने की जल्दी ठहरो, ठहरो ! ज़रा जाने आलम ! हम ने जी भर के देखा नहीं है

यक़ीनन ऐसे में एक आशिके रसूल की येही तमन्ना व ख़्वाहिश होगी कि ऐ काश ! ता क़ियामे क़ियामत मेरी क़ब्र मेरे मीठे मीठे आका ﷺ के हसीन जल्वों से मुनव्वर रहे ।

ख़ैर आख़िरी सुवाल का जवाब देने के बा'द जहन्नम की खिड़की खुलेगी और मअन (या'नी फ़ौरन ही) बन्द हो जाएगी और जन्नत की खिड़की खुल जाएगी फिर उस से कहा जाएगा, अगर तू ने दुरुस्त जवाबात न दिये होते तो तेरे लिये वोह दोज़ख़ की खिड़की होती । अब (तेरे लिये) जन्नती कफ़न होगा, जन्नती बिछौना होगा, क़ब्र ता हद्दे नज़र वसीअ होगी और मजे ही मजे होंगे ।

क़ब्र में गर न मुहम्मद के नज़ारे होंगे
हशर तक कैसे मैं फिर तन्हा रहूंगा या रब !

क़ब्र महबूब के जल्वों से बसा दे मालिक
तेरा क्या जाएगा मैं शाद रहूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 90)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह इन्आमो इकराम तो उस खुश नसीब के लिये हैं जिस ने अपनी ज़िन्दगी कुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारी होगी । लिहाज़ा हमें भी शरई उसूलों के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी बसर करनी चाहिये । अगर हमारे बुरे आ'माल की वजह से **अल्लाह** रब्बुल अ़लमीन جَلَّ جَلَالُهُ नाराज़ हो गया और उस के प्यारे महबूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रूठ गए और गुनाहों के सबब مَعَادُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ईमान बरबाद हो गया तो हमारा क्या बनेगा ? मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात क्यंकर दे पाएंगे ?

जहन्नम का गढा

याद रखिये ! मज़कूरा तीन सुवालात उस बद नसीब शख्स से भी किये जाएंगे कि जिस ने अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की नाफ़रमानी में बसर की होगी । फ़िरिश्ते निहायत सख़्त लहजे में उस से सुवाल करेंगे : **“مَرْبُّكَ؟”** “तेरा रब कौन है ?” आह ! सारी ज़िन्दगी तो रब **عَزَّوَجَلَّ** को याद किया न था ! जवाब नहीं बन पड़ रहा होगा और जो बद नसीब गुनाहों की वजह से ईमान बरबाद कर बैठा उस की ज़बान से बे साख़्ता निकल जाएगा : **“هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لَا أَدْرِي”** “अफ़्सोस ! अफ़्सोस ! मुझे कुछ नहीं मा’लूम ।” फिर पूछा जाएगा : **“مَا دِينُكَ؟”** “तेरा दीन क्या है ?” जिस बद नसीब ने सिर्फ़ और सिर्फ़ दुनिया ही बसाई थी, दुनिया ही के इम्तिहान में पास होने की फ़िक्र अपनाई थी । क़ब्र के इम्तिहान की तय्यारी की तरफ़ कभी ज़ेहन ही न गया था, बस सिर्फ़ दुनिया की रंगीनियों ही में खोया हुआ था उसे कुछ समझ नहीं आ रही होगी और ज़बान से निकल रहा होगा, **“هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لَا أَدْرِي”** “अफ़्सोस ! अफ़्सोस ! मुझे कुछ नहीं मा’लूम ।” फिर उसे भी वोही हसीनो जमील नूर बरसाता जल्वा दिखाया जाएगा और सुवाल होगा : **“مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ”** “इन के बारे में तू क्या कहता था ?” उस वक़्त पहचान कैसे होगी ? दाढ़ी से तो उन्सिय्यत थी ही नहीं, अंग्रेज़ी बाल ही अच्छे लगते थे, अग़यार का तरीक़ा ही अज़ीज़ था, ज़िन्दगी भर दाढ़ी मुन्डाने का मा’मूल रहा था, येह तो दाढ़ी शरीफ़ वाली शख्सिय्यत है और कभी ज़िन्दगी में इमामे का सोचा

भी नहीं था येह तशरीफ़ लाने वाले बुजुर्ग तो सर पर इमामा शरीफ़ सजाए हुवे ख़मदार मुअम्बरी जुल्फ़ों वाले हैं। मुझे तो फ़नकारों और गुलूकारों की पहचान थी न जाने येह कौन साहिब हैं? आह ! जिस का ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा उस के मुंह से निकलेगा :
 “هَيْهَاتْ هَيْهَاتْ لَا أَدْرِي” अफ़सोस ! अफ़सोस ! मुझे कुछ नहीं मा'लूम ।”
 इतने में जन्नत की खिड़की खुलेगी और फ़ौरन बन्द हो जाएगी फिर जहन्म की खिड़की खुलेगी और कहा जाएगा अगर तू ने दुरुस्त जवाब दिये होते तो तेरे लिये वोह जन्नत की खिड़की थी। येह सुन कर उसे हसरत बालाए हसरत होगी, कफ़न को आग के कफ़न से तब्दील कर दिया जाएगा, आग का बिछोना क़ब्र में बिछा दिया जाएगा, सांप और बिच्छू लिपट जाएंगे।

डंक मच्छ का भी मुझ से तो सहा जाता नहीं

क़ब्र में बिच्छू के डंक कैसे सहूंगा या रब !

घुप अन्धेरा ही क्या वदहशत का बसेरा होगा

क़ब्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रब !

गर कफ़न फाड़ के सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा

हाए बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 90)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इम्तिहान शर पर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! क़ब्रों दहशत का

मुआमला निहायत सख़्त है, इस इम्तिहान में वोही कामयाब होगा जिस ने दुनिया में इस की तय्यारी की होगी। हमारे स्कूल या कॉलेज

के इम्तिहानात करीब आते हैं तो हम इस की तय्यारियों में बहुत ज़ियादा मशगूल हो जाते हैं। हमारे जेहनों पर रात दिन बस एक येही धुन सुवार होती है कि इम्तिहान सर पर है इम्तिहान सर पर है। इम्तिहान के लिये मेहनत भी करते हैं, पास होने के लिये दुआएं भी करते हैं। अवरादो वज़ाइफ़ भी पढ़ते हैं तक़ीबन हर एक की ख़्वाहिश होती है कि किसी तरह मैं इम्तिहान में अच्छे नम्बरों से पास हो जाऊं। एक इम्तिहान वोह भी है जो क़ब्र में होने वाला है। ऐ काश ! क़ब्र के इम्तिहान की तय्यारी हमें नसीब हो जाती। आज अगर इमकानी (IMPORTANT) सुवालात मिल जाएं तो तालिबे इल्म उस पर सारी सारी रात सर खपाते हैं, अगर नींद कुशा गोलियां खानी पड़ जाएं तो वोह भी खाते हैं। हैरत की बात येह है कि हम सिर्फ़ इमकानी (IMPORTANT) सुवालात पर बहुत ज़ियादा मेहनत करते हैं, ऐ काश सद करोड़ काश हमें इस बात का एहसास भी हो जाता कि क़ब्र के सुवालात इमकानी नहीं बल्कि यकीनी हैं जो हमें **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने पेशगी ही बता दिये हैं। मगर अफ़सोस ! क़ब्र के सुवालात व जवाबात की तरफ़ हमारी कोई तवज्जोह ही नहीं। आज हम दुन्या में आ कर दुन्या की रंगीनियों में कुछ इस तरह गुम हो गए कि हमें इस बात का बिल्कुल एहसास तक न रहा कि हमें मरना भी पड़ेगा। खुदारा होश कीजिये और क़ब्र के इम्तिहान की तय्यारी में मशगूल हो जाइये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

नक्ल करने वाला ही कामयाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह सभी जानते हैं कि दुन्या के इम्तिहान में नक्ल करना जुर्म है मगर क़ब्रो आखिरत का इम्तिहान भी क्या ख़ूब है कि इस में नक्ल करना ज़रूरी है। और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने हमें ऐसा पाकीज़ा नुमूना अता फ़रमा दिया है कि जो मुसलमान इस की जितनी ज़ियादा से ज़ियादा नक्ल करेगा उतना ही वोह कामयाबी के आ'ला मरातिब पर फ़ाइज़ होता जाएगा। चुनान्चे, खुदाए रहमान **عَزَّوَجَلَّ** इस मुक़द्दस नुमूने का बयान अपनी पाक किताब कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है। चुनान्चे, पारह 21 सूरतुल अहज़ाब में इरशादे बारी तआला है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ
أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (प २१, अहज़ाब: २१)
तर्जमए कन्ज़ुल इमान : बेशक
तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर
है।

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَاهِي** ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : “उन का अच्छी तरह इत्तिबाअ करो और दीने इलाही की मदद करो और रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का साथ न छोड़ो और मसाइब पर सब्र करो और रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सुन्नतों पर चलो येह बेहतर है।”

शहा ! ऐसा ज़ब्बा पाऊं कि मैं ख़ूब सीख जाऊं
तेरी सुन्नतें सिखाना मदनी मदीने वाले

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह जब निकल कर
चले तुम गले लगाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख्शिश, स. 287)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें हुजूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
के उस्वए हसना पर अमल करते हुवे क़ब्र के इम्तिहान की
तय्यारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और सरकार **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام**
से महबूबत रखते हुवे आप की ज़ाते तय्यिबा पर ज़ियादा से
ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा

रहमान **عَزَّوَجَلَّ** की इबादत करो, भूकों को खाना
खिलाओ और सलाम आम करो सलामती के साथ जन्नत
में दाख़िल हो जाओगे । (ترمذی، الحديث: १८००، ص १८६)



रहमत के सत्तर दरवाजे

हज़रते सय्यिदुना अबुल मुज़फ़्फ़र मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़य्याम समरकन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मैं एक रोज़ रास्ता भूल गया, अचानक एक साहिब नज़र आए और उन्होंने ने कहा : “मेरे साथ आओ ।” मैं उन के साथ हो लिया । मुझे गुमान हुआ कि येह हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام हैं । मेरे इस्तिफ़्सार पर उन्होंने अपना नाम ख़िज़्र बताया, उन के साथ एक और बुजुर्ग भी थे, मैं ने उन का नाम दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : “येह इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام हैं ।” मैं ने अर्ज़ की : “**اَعَزَّوَجَلَّ** आप पर रहमत फ़रमाए, क्या आप दोनों हज़रात ने सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत की है ?” उन्होंने ने फ़रमाया : “हां !” मैं ने अर्ज़ की : “सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुना हुआ (कोई) इरशादे पाक बताइये ताकि मैं आप से रिवायत कर सकूं ।” उन्होंने ने फ़रमाया कि : “हम ने रसूले खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह फ़रमाते सुना कि जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े उस का दिल निफ़ाक़ से इसी तरह पाक किया जाता है जिस तरह पानी से कपड़ा पाक किया जाता है । नीज़ जो शख़्स صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّد पढ़ता है तो वोह अपने ऊपर रहमत के **70** दरवाजे खोल लेता है ।”

(القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة والسلام..... الخ، ص ۲۷۷، ملقطاً وملخصاً)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبُ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ पढ़ने

की आदत बनाइये और अपने ऊपर रहमतों के खूब खूब दरवाजे खुलवाइये । बयान कर्दा रिवायत में हज़राते ख़िज़्र व इल्यास (عَلَيْهِمَا السَّلَام) का ज़िक्र खैर है । रहमतों के नुज़ूल और बरकतों के हुसूल की उम्मीद पर इन हज़रात के बारे में ईमान अफ़रोज़ मा'लूमात के लिये मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत से अर्ज़ व इरशाद सुनिये और अपना ईमान ताज़ा कीजिये ।

हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं

अर्ज़ : हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं या नहीं ?

इरशाद : जमहूर (या'नी अकसर) का मज़हब येही है और सहीह भी येही है कि वोह नबी हैं, जिन्दा हैं ।

(عمدة القارى، كتاب العلم، باب ما ذكر فى نهاب موسى فى البحر..... الخ، ٢/٨٤، ٨٥، تحت الحديث (٧٣)

मजीद फ़रमाते हैं चार नबी जिन्दा हैं कि उन को (वफ़ात की सूरत में) वा'दए इलाहिय्या अभी आया ही नहीं, यूं तो हर नबी जिन्दा है (जैसा कि हदीसे पाक में आता है)

إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللَّهِ حَيٌّ يُرْزَقُ

अल्लाह عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने ह़राम किया है ज़मीन पर कि अम्बिया

के जिस्मों को ख़राब करे, तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नबी जिन्दा हैं रोज़ी

दिये जाते हैं ।" (ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ذكر وفاته ودفنه، ٢/٢٩١، حديث: ١٦٣٧)

अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर एक आन को महज़ तस्दीके वा'दए

इलाहिय्या के लिये मौत तारी होती है बा'द इस के फिर उन को

हयाते हकीकी हिस्सी दुन्यवी (या'नी दुन्या जैसी जिन्दगी) अता

होती है। खैर इन चारों में दो आस्मान पर हैं और दो ज़मीन पर।

ख़िज़्र व इल्यास (عَلَيْهِمَا السَّلَام) ज़मीन पर हैं और इदरीस व ईसा (عَلَيْهِمَا السَّلَام) आस्मान पर। (मल्फूज़ात स. 483 ता 484)

ज़मीन वाले दो नबी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़मीन पर जो दो नबी अभी हयात हैं या'नी ख़िज़्र व इल्यास عَلَيْهِمَا السَّلَام इन के बारे में आता है कि हर साल हज़ में येह दोनों हज़रात जम्अ होते हैं, हज़ करते हैं, ख़त्मे हज़ पर ज़म ज़म शरीफ़ का पानी पीते हैं कि वोह पानी साल भर के त़आम व शराब (या'नी खाने-पीने) से इन को किफ़ायत करता है। (मल्फूज़ात स. 505)

हज़रते सय्यिदुना इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام के लिये **अल्लाह** तआला ने तमाम पहाड़ों और हैवानात को मुसख़्ख़र फ़रमा दिया और आप को सत्तर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की ताक़त बख़्श दी। ग़ज़ब व जलाल और कुव्वत व ताक़त में हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का हम पल्ला बना दिया। रिवायात में आया है कि हज़रते सय्यिदुना इल्यास और हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِمَا السَّلَام हर साल के रोज़े बैतुल मुक़द्दस में अदा करते हैं और हर साल हज़ के लिये मक्कए मुकर्रमा जाया करते हैं और साल के बाकी दिनों में हज़रते सय्यिदुना इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام तो जंगलों और मैदानों में ग़श्त फ़रमाते रहते हैं और हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام दरयाओं और समन्दरों की सैर फ़रमाते रहते हैं और येह दोनों हज़रात आख़िरी ज़माने में वफ़ात पाएंगे।

(अज़ाइबुल कुरआन मअ ग़राइबुल कुरआन, स. 293)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

आश्मान वाले दो नबी

इसी तरह दो अम्बियाए किराम आस्मानों में ज़िन्दा हैं इन पर भी वा'दए इलाही के मुताबिक अभी तक मौत तारी नहीं हुई। इन में से एक हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام हैं। आप का अस्ल नाम “अख़नूख़” है। आप के वालिद हज़रते शीस बिन आदम عَلَيْهِمَا السَّلَام हैं। सब से पहले क़लम से लिखने वाले आप ही हैं। कपड़ों के सीने और सिले हुवे कपड़े पहनने की इब्तिदा भी आप ही से हुई। इस से पहले लोग जानवरों की खालें पहनते थे। सब से पहले हथियार बनाने वाले, तराजू और पैमाने काइम करने वाले और इल्मे नुजूम व हिसाब में नज़र फ़रमाने वाले भी आप ही हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप पर तीस सहीफ़े नाज़िल फ़रमाए। और आप **अल्लाह** तआला की किताबों का ब कसरत दर्स दिया करते थे। इस लिये आप का लक़ब “इदरीस” हो गया और आप का येह लक़ब इस क़दर मशहूर हुवा कि बहुत से लोगों को आप का अस्ली नाम मा'लूम ही नहीं।

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام ने एक दिन मलकुल मौत से फ़रमाया कि मैं मौत का मज़ा चख़ना चाहता हूं, तुम मेरी रूह कब्ज़ कर के दिखाओ। मलकुल मौत ने हुक्म की ता'मील करते हुवे रूह कब्ज़ की और उसी वक़्त आप की तरफ़ लौटा दी और

आप जिन्दा हो गए। फिर आप ने फ़रमाया कि अब मुझे जहन्नम दिखाओ ताकि ख़ौफ़े इलाही ज़ियादा हो। चुनान्चे, ऐसा ही किया गया, जहन्नम को देख कर आप ने दारोग़ जहन्नम से फ़रमाया कि दरवाज़ा खोलो मैं इस दरवाज़े से गुज़रना चाहता हूँ, चुनान्चे, ऐसा ही किया गया और आप उस पर से गुज़रे। फिर आप ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मुझे जन्नत दिखाओ, वोह आप को जन्नत में ले गए। आप दरवाज़ों को खुलवा कर जन्नत में दाख़िल हुवे। थोड़ी देर इन्तिज़ार के बा'द मलकुल मौत ने कहा कि अब आप अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलिये। तो आप ने फ़रमाया कि अब मैं यहां से कहीं नहीं जाऊंगा। **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया कि **كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ** तो मौत का मज़ा मैं चख ही चुका हूँ और **अल्लाह** तआला ने येह भी फ़रमाया है कि **وَأَن تَمُوتُوا وَأَن تَحْيَا** हर शख्स को जहन्नम पर गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका। अब मैं जन्नत में पहुंच गया और जन्नत में पहुंचने वालों के लिये खुदावन्दे कुहूस ने येह फ़रमाया कि **وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرِجِينَ** जन्नत में दाख़िल होने वाले जन्नत से निकाले नहीं जाएंगे। अब मुझे जन्नत से चलने के लिये क्यूं कहते हो? **अल्लाह** तआला ने मलकुल मौत को वही भेजी कि हज़रते इदरीस

عَلَيْهِ السَّلَام

ने जो कुछ किया मेरे इज़्ज से किया और वोह मेरे ही

इज़्ज़ से जन्नत में दाख़िल हुवे । लिहाज़ा तुम उन्हें छोड़ दो ।

वोह जन्नत ही में रहेंगे । चुनान्वे, हज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام आस्मानों के ऊपर जन्नत में हैं और ज़िन्दा हैं ।

(ख़ात्तन العرفان، प १६, मरिम, تحت الآية: ५८)

और दूसरे नबी आस्मानों में हैं वोह हज़रते ईसा رُحْمُْلَلّٰہ हैं, उन्हें भी अभी तक मौत नहीं आई । عَلٰی نَبِیْنَا وَعَلٰیہِ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को बनी इस्राईल के पास नबी बना कर भेजा तो आप ने उन्हें दीने खुदावन्दी की दा'वत दी ।

जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने यहूदियों के सामने अपनी नबुव्वत का ए'लान फ़रमाया तो चूँकि यहूदी तौरैत में पढ़ चुके थे कि ईसा عَلَيْهِ السَّلَام उन के दीन को मन्सूख़ कर देंगे । इस लिये यहूदी आप के दुश्मन हो गए । जब आप عَلَيْهِ السَّلَام ने येह महसूस फ़रमा लिया कि यहूदी अपने कुफ़्र पर अड़े रहेंगे और वोह मुझे क़त्ल कर देंगे तो एक दिन आप ने लोगों को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ या'नी कौन मेरे मददगार होते हैं **अल्लाह** के दीन की तरफ़ । आप के चन्द ह्वारियों ने येह कहा कि या'नी हम खुदा के दीन के मददगार हैं । हम **अल्लाह** पर ईमान लाए और आप गवाह हो जाएं कि हम मुसलमान हैं ।

बाकी तमाम यहूदी अपने कुफ़र पर जमे रहे यहां तक कि जोशे अ़दावत में उन्होंने ने आप के क़त्ल का मन्सूबा बना लिया और एक शख़्स जिस का नाम त़य़ानूस था उसे आप के मकान में आप को क़त्ल कर देने के लिये भेजा। उसी वक़्त **अल्लाह** तआला ने हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को एक बदली के साथ भेजा और उस बदली ने आप عَلَيْهِ السَّلَام को आस्मान की तरफ़ उठा लिया और इस तरह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी عَلَيْهِ السَّلَام को उन शरीरों के शर से महफूज़ फ़रमा लिया।

(अज़ाइबुल कुरआन स.73, मुलख़ब़सन व मुल्तक़तन)

तीन अहम अ़कीदे

शहज़ादए आ'ला हज़रत, हुज्जतुल इस्लाम हज़रते मौलाना हामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ हज़रते सय्यिदुना ईसा रुहूल्लाह عَلَى نَبِيّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के मुतअल्लिक़ तीन अहम अ़काइद और इन के अहक़ाम बयान फ़रमाते हैं :

पहला अ़कीदा :

येह है कि न वोह क़त्ल किये गए न सूली दिये गए बल्कि उन के रब جَلَّ جَلَالُهُ ने उन्हें मक़्रे यहूदे अ़नूद (सरकश) से साफ़ सलामत बचा कर आस्मान पर उठा लिया और उन की सूरत दूसरे पर डाल दी कि यहूदे मुलाअ़ना ने उन के धोके में उसे सूली दी येह हम मुसलमानों का अ़कीदए क़तइय्या य़कीनिय्या ईमानिय्या (है) या'नी ज़रूरियाते दीन से है जिस का मुन्किर य़कीनन

काफ़िर (है।)

(फ़तावा हामिदिय्या, स. 140)

इस की दलीले क़तई रब्बुल इज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهُ का इरशाद है।

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ

عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ

وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ

شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا

فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ

مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ وَمَا

قَتَلُوهُ يَقِينًا ۚ بَلْ رَافَعَهُ اللَّهُ

إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

(پ ۶، النساء: ۱۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन

के इस कहने पर कि हम ने मसीह

ईसा बिन मरयम **अल्लाह** के रसूल

को शहीद किया, और है यह कि

उन्होंने ने न उसे क़त्ल किया और न

उसे सूली दी बल्कि उन के लिये उस

की शबीह का एक बना दिया गया,

और वोह जो उस के बारे में इख़िलाफ़

कर रहे हैं ज़रूर उस की तरफ़ से शुबे

में पड़े हुवे हैं, उन्हें उस की कुछ भी

ख़बर नहीं, मगर येही गुमान की पैरवी,

और बेशक उन्होंने ने उस को क़त्ल

नहीं किया, बल्कि **अल्लाह** ने उसे

अपनी तरफ़ उठा लिया और

अल्लाह ग़ालिब हिक़मत वाला है।

दूसरा अक्कीदा :

इस जनाबे रिफ़अत कुबाब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का कुर्बे क़ियामत

आस्मान से उतरना दुन्या में दोबारा तशरीफ़ फ़रमा हो कर उस

अहद के मुताबिक़ जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम अम्बियाए क़िराम

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से लिया दिने मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

की मदद करना, येह मस्अला भी ज़रूरिय्याते मज़हबे अहले

सुन्नत व जमाअत से है जिस का मुन्किर गुमराह ख़ासिर बद

मजहब फ़ाजिर (है) इस की दलील अहादीसे मुतवातिरा व
इजमाए अहले हक़ है। (फ़तावा हामिदिय्या, स. 142)

तीसरा अक़ीदा :

हज़रते सय्यिदुना रुहुल्लाह ﷺ की हयात !

इस के दो मा'ना हैं एक येह कि वोह अब ज़िन्दा हैं येह
भी मसाइल किस्मे सानी (या'नी ज़रूरिय्याते मजहबे अहले
सुन्नत व जमाअत) से है जिस में ख़िलाफ़ न करे मगर गुमराह
कि अहले सुन्नत के नज़दीक तमाम अम्बियाए किराम
ﷺ ब हयाते हक़ीकी ज़िन्दा हैं, इन की मौत सिर्फ़
तस्दीके वा'दए इलाहिyyा के लिये एक आन को होती है फिर
हमेशा हयाते हक़ीकी अबदी है अइम्माए किराम ने इस मस्अले
को मुहक्क़ फ़रमा दिया है।

दूसरे येह कि अब तक इन पर मौत त़ारी न हुई ज़िन्दा ही
आस्मान पर उठा लिये गए और बा'दे नुज़ूल दुन्या में सालहा
साल तशरीफ़ रख कर इतमामे नुस्स्ते इस्लाम वफ़ात पाएंगे।

(फ़तावा हामिदिय्या, स. 177)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वक़्त हज़रते सय्यिदुना
ईसा ﷺ आस्मानों पर ज़िन्दा हैं, कुर्बे क़ियामत आप हुज़ूर
ﷺ के उम्मत की बन कर तशरीफ़ लाएंगे जैसा कि
सय्यिदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि हज़रते ईसा
मेरी उम्मत पर ख़लीफ़ा हो कर नाज़िल होंगे।

क़ियामत की निशानियां

याद रखिये ! हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के नुज़ूल फ़रमाने से पहले क़ियामत की कुछ निशानियां भी ज़ाहिर होंगी। चुनान्चे, **सदरुशशरीआ**, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ फ़रमाते हैं : “दुन्या के फ़ना होने से पहले चन्द निशानियां ज़ाहिर होंगी। **इल्म** उठ जाएगा। **जहल** की कसरत होगी। ज़िना की ज़ियादती होगी, दीन पर काइम रहना इतना दुश्वार होगा जैसे मुठ्ठी में अंगारा लेना, ज़कात देना लोगों पर गिरा होगा कि इस को तावान समझेंगे। **मर्द** अपनी औरत का मुतीअ होगा। मां-बाप की नाफ़रमानी करेगा। **गाने बाजों** की कसरत होगी।

दज्जाल ज़ाहिर होगा कि चालीस दिन में हरमैने तय्यिबैन के सिवा तमाम रूए ज़मीन का ग़श्त करेगा। उस का फ़ितना बहुत शदीद होगा, खुदाई का दा'वा करेगा। जो उस पर ईमान लाएगा उसे अपनी **जन्नत** में डालेगा और जो इन्कार करेगा उसे **जहन्नम** में दाख़िल करेगा। बहुत से शो'बदे दिखाएगा और हकीक़त में येह सब जादू के करिश्मे होंगे जिन को वाक़िइय्यत से कुछ तअल्लुक नहीं।

फिर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से जामेअ मस्जिद दिमश्क के शर्की मनारे पर नुज़ूल फ़रमाएंगे, लईन दज्जाल हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की सांस की खुशबू से पिघलना शुरूअ होगा, जैसे पानी में नमक घुलता है आप उस की पीठ में नेज़ा मारेंगे, उस से वोह **वासिले जहन्नम** होगा।

आप **عَلَيْهِ السَّلَام** के ज़माने में हर तरफ़ अमन काइम होगा, बुग़्जो अ़दावत उखुव्वत व महब्बत में बदल जाएगी, कुफ़्र व ज़लालत की तारीकियां ख़त्म हो जाएंगी और हर तरफ़ परचमे इस्लाम लहराता नज़र आएगा। आप निकाह करेंगे, अवलाद भी होगी फिर आप वफ़ात फ़रमाएंगे। बा'दे वफ़ात आप रौज़ए रसूल में मदफून् होंगे।

इन के इलावा भी और बहुत सी अ़लामात हैं। जब येह निशानियां पूरी हो जाएंगी तो मुसलमानों की बग़लों के नीचे से एक **ख़ुशबूदार** हवा गुज़रेगी जिस से तमाम मुसलमानों की वफ़ात हो जाएगी, इस के बा'द फिर **चालीस बरस** का ज़माना ऐसा गुज़रेगा कि इस में किसी के अवलाद न होगी, या'नी चालीस बरस से कम उम्र का कोई न रहेगा और दुन्या में काफ़िर ही काफ़िर होंगे।

फिर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हज़रते इस्राफ़ील **عَلَيْهِ السَّلَام** को सूर फूंकने का हुक्म इरशाद फ़रमाएगा, शुरूअ शुरूअ इस की आवाज़ बहुत बारीक होगी और रफ़ता रफ़ता बहुत बुलन्द हो जाएगी, लोग कान लगा कर इस की आवाज़ सुनेंगे और बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे और मर जाएंगे, आस्मान, ज़मीन, पहाड़, यहां तक कि सूर और इस्राफ़ील और तमाम मलाइका फ़ना हो जाएंगे, उस वक़्त सिवाए **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के कोई न होगा, वोह फ़रमाएगा : **لَمِنَ السُّلْكِ الْيَوْمَ** : आज किस की बादशाहत है ? कोई जवान देने वाला न होगा, फिर खुद ही फ़रमाएगा : **لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ** या'नी सिर्फ़ **اَللّٰهُ** वाहिदे क़हहार की सल्तनत है।

फिर जब **अल्लाह** तअला चाहेगा, इसाफील को जिन्दा फरमाएगा और सूर को पैदा कर के दोबारा फूंकने का हुक्म देगा, सूर फूंकते ही तमाम अव्वलीन व आखिरीन, मलाइका व इन्सो जिन्न और तमाम **हैवानात** मौजूद हो जाएंगे। सब से पहले हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** क़ब्रे मुबारक से यूं बर आमद होंगे कि दहने हाथ में सय्यिदुना **सिद्दीके अक्बर** **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का हाथ, बाएं हाथ में सय्यिदुना **फारूके आ'ज़म** **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का हाथ होगा, फिर मक्कए मुअज़्ज़मा व मदीनए तय्यिबा के मक़ाबिर में जितने मुसलमान दफ़न हैं, सब को अपने हमराह ले कर मैदाने ह़श्र में तशरीफ़ ले जाएंगे। (बहारे शरीअत, 1/116 ता 129 मुलतक़तन)

क़ियामत के दिन लोग अपनी अपनी क़ब्रों से बरहना बदन उठेंगे कोई पैदल होगा, कोई सुवार, जब कि काफ़िर मुंह के बल चलते हुवे मैदाने ह़श्र को जाएंगे और किसी को फ़िरिश्ते घसीट कर ले जाएंगे। **पचास हज़ार** साल का दिन होगा, तांबे की दहकती हुई ज़मीन होगी। सूरज एक मील के फ़ासिले पर रह कर आग बरसा रहा होगा, हर एक अपने पसीने में नहा रहा होगा, शिद्दते प्यास से ज़बानें सूख कर कांटा हो जाएंगी। नफ़सी नफ़सी का अलम होगा, और इस कड़े वक़्त में कोई पुरसाने हाल न होगा। इस परेशानी से नजात के लिये **अहले मह़शर** सिफ़ारिशी तलाश करेंगे जो उन्हें इस मुसीबत से नजात दिलाए। चुनान्वे, लोग गिरते पड़ते हज़राते अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَام** की बारगाह में हाज़िर होंगे और अपनी सिफ़ारिश के लिये दरख़्वास्त करेंगे लेकिन

(यके बा'द दीगरे) तमाम अम्बिया येही कहेंगे कि किसी और के पास जाओ । यहां तक कि लोग हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आएंगे आप عَلَيْهِ السَّلَام भी येही जवाब देंगे तो लोग अर्ज करेंगे : हम किस के पास जाएं ? आप عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमाएंगे तुम मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास जाओ, वोही तुम्हारी शफ़ाअत फ़रमाएंगे ।

अब लोग ठोकरें खाते, रोते चिल्लाते शफ़ीउल मुज़निबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर हो कर शफ़ाअत के लिये अर्ज करेंगे । हुज़ूर फ़रमाएंगे शफ़ाअत के लिये मैं ही हूं । फिर आप बारगाहे इलाही में सजदा करेंगे तो इरशाद होगा : ऐ मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपना सर उठाओ और कहो तुम्हारी सुनी जाएगी, जो मांगोगे मिलेगा और शफ़ाअत करो तुम्हारी शफ़ाअत क़बूल की जाएगी । अब शफ़ाअत का सिलसिला शुरूअ होगा, हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अपनी गुनहगार उम्मत की शफ़ाअत फ़रमा कर उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे ।

(मुलख़बस अज़ बहारे शरीअत)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदीने के ताजदार, शफ़ीए रोजे शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत पाने का एक ज़रीआ आप عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ाते बा बरकत पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ना भी है । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है

कि नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया :

يَا'नी जिस ने मुझ पर दस मरतबा
सुब्ह और दस मरतबा शाम **दुरूदे पाक** पढ़ा, أَذْرَكَهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ
उसे रोज़े क़ियामत मेरी शफ़ाअत नसीब होगी ।”

(مجمع الزوائد، كتاب الانكار، باب مايقول اذا اصبغ واذا امسى، ١٠/١٦٣، حديث: ١٧٠٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
की ज़ाते तय्यिबा पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीक़
अता फ़रमा और रोज़े महशर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत
से बहरा मन्द फ़रमा । أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुश्तफ़ा

जब तुम हसद करो तो ज़ियादती न करो, जब
तुम्हें बद गुमानी पैदा हो तो उस पर यकीन न करो और
जब तुम्हें (किसी काम के बारे में) बद शुगूनी पैदा हो तो
उसे कर गुज़रो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करो ।

(الكامل في ضعفاء الرجال، عبدالرحمن بن سعد، ٥/٥٠٩)



बयान नम्बर : 52

सत्तर हजार फ़िरिश्तों का नुज़ूल

हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया :

हर सुब्ह सत्तर हजार फ़िरिश्तों का नुज़ूल होता है यहां तक कि वोह क़ब्रे अन्वर को घेर लेते हैं । يَضْرِبُونَ بِأَجْنِحَتِهِمُ الْقَبْرَ وَيُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ अपने परों को रौज़ए रसूल से मस कर के नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ते रहते हैं शाम होते ही येह फ़िरिश्ते वापस चले जाते हैं और मज़ीद सत्तर हजार फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं जो क़ब्रे अन्वर को घेर लेते हैं يَضْرِبُونَ بِأَجْنِحَتِهِمْ فَيُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ वोह भी अपने परों को उस से मस कर के नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ते रहते हैं (यूं ही) सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते रात और सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते दिन को होते हैं । यहां तक कि क़ियामत के दिन जब सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्रे अनवर खुलेगी तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सत्तर हज़ार फ़िरिश्तों के झुरमट में बाहर तशरीफ़ लाएंगे जो अपने पर फैलाएं दौड़ते होंगे ।

(जलाउल अफ़हाम, स. 60)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा 'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के मा'सूम

फ़िरिश्ते सरकारे दो आलम, शाहे बनी आदम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की क़ब्रे अन्वर पर सुब्हो शाम हाज़िर होते हैं और ब हुक्मे खुदावन्दी आकाए दो जहां, शहनशाहे कौनो मकां **عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** पर **दुरूदो सलाम** के गजरे निछावर करते रहते हैं। फ़िरिश्ते वोही करते हैं जिस काम का उन्हें बारगाहे इलाही से हुक्म होता है। यूं तो हज़रते सय्यिदुना आदम **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** को सजदा करना और नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर **दुरूदे पाक** पढ़ना दोनों ही इमतिशाले अग्रे इलाही (या'नी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म की ता'मील) है लेकिन सरकार **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** पर **दुरूदो सलाम** पढ़ना हज़रते आदम **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** को सजदा करने से भी अफ़ज़ल है। चुनान्वे,

तीन अहम निक्कत

हज़रते सय्यिदुना अबू हफ़्स उमर बिन अली हम्बली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِي** फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त ने मुहम्मदे अरबी **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर बजाते खुद **दुरूदे पाक** भेजा, मलाइका और तमाम मुसलमानों को इस का हुक्म इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** की जाते पाक पर **दुरूदे पाक** पढ़ना (तीन वुजूहात की बिना पर) हज़रते सय्यिदुना आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** को सजदा करने से भी अफ़ज़ल है।

(1) या'नी आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा करना फ़िरिश्तों को अदब सिखाने के लिये था, जब कि हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام وَأَمَرَهُم بِالصَّلَاةِ عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَقَرُّبًا पर दुरूद पढ़ना कुर्ब हासिल करने के लिये है।

(2) या'नी فَالصَّلَاةُ عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَائِمَةٌ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ पर दुरूदे पाक पढ़ना ता क़ियामत जारी व सारी रहेगा, وَسُجُودُ الْمَلَائِكَةِ لِأَدَمَ لَمْ يَكُنْ إِلَّا مَرَّةً وَاحِدَةً, जब कि आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा करने के लिये सिर्फ़ एक ही बार हुक्म दिया गया, فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ إِنَّمَا أُمِرُوا بِالسُّجُودِ لِأَدَمَ لِأَجْلِ أَنْ نُورَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَبْهَةِ آدَمَ (3) या'नी फ़िरिश्तों को सजदे का हुक्म इस लिये भी दिया गया कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पेशानी में नूरे मुहम्मदी मौजूद था।

(اللباب في علوم الكتاب، ۳، البقرة، تحت الآية: ۲۵۳، ۳۰/۲)

पेशानिये आदम में नूरे मुहम्मद

याद रखिये ! फ़िरिश्ते हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ाते तथ्यबा पर उस वक़्त से दुरूदो सलाम पढ़ने में मशगूल हैं कि जब आप عَلَيْهِ السَّلَام नूर की सूरत में हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पेशानी में जल्वा फ़रमा थे। फ़िरिश्ते सफ़ दर सफ़ हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पुश्ते मुबारक के पीछे खड़े हो कर नूरे मुहम्मदी की ज़ियारत किया करते। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में अर्ज़ की : “या **عَزَّوَجَلَّ** येह फ़िरिश्ते मेरी पुश्त के पीछे सफ़ बांध कर क्यूं खड़े रहते हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “ऐ

आदम ! येह फ़िरिशते मेरे हबीब, ख़ातिमुल अम्बिया, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नूर की ज़ियारत करते हैं, जिसे मैं तेरी पुश्त से पैदा फ़रमाऊंगा।” हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : “या इलाही عَزَّوَجَلَّ इस मुबारक नूर को मेरी पेशानी में रख दे ताकि येह फ़िरिशते मेरे सामने रहें।” तो اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ने उस नूर को आप عَلَيْهِ السَّلَام की पेशानी में रख दिया। फ़िरिशते हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام के सामने खड़े हो जाते और नूरे मुहम्मदी पर **दुरूदो सलाम** के नज़राने पेश करते रहते। हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : “या इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं भी इस मुबारक नूर की ज़ियारत करना चाहता हूं, लिहाज़ा इसे मेरी पेशानी से निकाल कर किसी ऐसी जगह रख दे जहां मैं इस की ज़ियारत कर सकूं।” तो اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ने नूरे मुहम्मदी हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की अंगुशते शहादत में मुन्तक़िल फ़रमा दिया।

(हिकायतें और नसीहतें, स. 469)

जाने आलम की दुन्या में जलवागरी

फिर येह मुबारक नूर अस्लाबे तय्यिबा से अरहामे त़हिरा में मुन्तक़िल होता हुवा हज़रते सय्यिदुना आमिना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के बतने अतहर में ज़ाहिर हुवा और बारह रबीउल अव्वल शरीफ़ बरोज़ पीर सुब्हे सादिक की ज़ियाबार सुहानी घड़ी में अज़ली सअदतों और अबदी मसररतों का नूर बन कर चमका।

न क्यूं आज जश्ने विलादत मनाएं नज़र रब की रहमत के आसार आए
अदद हम को बारह क्यूं हो न प्यारा कि बारह थी तारीख़ जब यार आए

(वसाइले बख़्शिश, स. 478)

जिस वक़्त सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए
मुनव्वरा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की विलादत हुई तो सआदत की
बारिशें होने लगीं। जुल्मत व तारीकियां छट गईं और सारा जहान
नुज़हतो नूर से मा'मूर हो गया। मलाइका आपस में मुबारकियां
देने लगे और हर आस्मान में एक सुतून ज़बर जद का काइम
किया गया और विलादते बा सआदत की बदौलत नूर अफ़्शां कर
दिया गया।

(ख़साइसुल कुब्रा (मुतर्जम), स. 152)

मोमिनो वक़्ते अदब है आमदे महबूबे रब है

जाए आदाबो तरब है आमदे शाहे अरब है

गुंचे चटके फूल महके शाख़े गुल पर मुर्ग़ चहके

रोता है शैतां येह कह के आमदे शाहे अरब है

बज रहे शादयाने, बुत लगे कलिमा सुनाने

हर ज़बां पे हैं तराने आमदे शाहे अरब है

(क़बालए बख़्शिश, स. 184)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰی مُحَمَّد

हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की विलादते बा सआदत की खुश

ख़बरी सुन कर (आप के) दादा “अब्दुल मुत्तलिब” खुश खुश

हरमे का'बा से अपने घर आए और वालिहाना जोशे महबूबत में

अपने पोते को कलेजे से लगा लिया। फिर का'बे में ले जा कर खैरो बरकत की दुआ मांगी और “मुहम्मद” नाम रखा।

(شرح الزرقاني، ولادته ... الخ، १/ २३२) आप ﷺ के चचा अबू लहब की लौंडी “सुवैबा” खुशी में दौड़ती हुई गई और “अबू लहब” को भतीजा पैदा होने की खुशखबरी दी तो उस ने इस खुशी में शहादत की उंगली के इशारे से “सुवैबा” को आजाद कर दिया जिस का समरा अबू लहब को येह मिला कि उस की मौत के बा'द उस के घर वालों ने उस को ख़ाब में देखा और हाल पूछ तो उस ने अपनी उंगली उठा कर येह कहा कि तुम लोगों से जुदा होने के बा'द मुझे कुछ ख़ैर (भलाई) नहीं मिली बजुज़ इस के कि “सुवैबा” को आजाद करने के सबब से इस उंगली के ज़रीए कुछ पानी पिला दिया जाता हूं।

(بخاری، کتاب النکاح، باب وأمهاتکم اللاتى ارضعنکم، ३/ ६३२، حدیث: ५१०१، شرح الزرقانی، ذکر رضاعه ﷺ، الخ، १/ २५९)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मादरी ज़बान की हिफ़ज़त का अनोखा अन्दाज़

शुरफ़ाए अरब की आदत थी कि वोह अपने बच्चों को दूध पिलाने के लिये गिर्दों नावाह देहातों में भेज देते थे, देहात की साफ़ सुथरी आबो हवा में बच्चों की तन्दुरुस्ती और जिस्मानी सिद्दहत भी अच्छी हो जाती थी और वोह ख़ालिस और फ़सीह अरबी ज़बान भी सीख जाते थे क्यूंकि शहर की ज़बान बाहर के आदमियों के मैल जौल से ख़ालिस और फ़सीहो बलीग़ ज़बान नहीं रहा करती।

मो' जिजाते नबवी

हज़रते सय्यिदतुना हलीमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का बयान है कि मैं “बनी सा'द” की औरतों के हमराह दूध पीने वाले बच्चों की तलाश में मक्का को चली। उस साल अरब में बहुत सख्त काल पड़ा हुआ था, मेरी गोद में एक बच्चा था, मगर फ़क्रो फ़ाका की वजह से मेरी छातियों में इतना दूध न था जो उस को काफ़ी हो सके। रात भर वोह बच्चा भूक से तड़पता और रोता बिलबिलाता रहता था और हम उस की दिलजूई और दिलदारी के लिये तमाम रात बैठ कर गुज़ारते थे। एक ऊंटनी भी हमारे पास थी। मगर उस के भी दूध न था। **मक्काए मुकर्मा** के सफ़र में जिस ख़च्चर पर मैं सुवार थी वोह भी इस क़दर लागर था कि काफ़िले वालों के साथ न चल सकता था, मेरे हमराही भी उस से तंग आ चुके थे। बड़ी मुश्किलों से येह सफ़र तै हुवा (और येह काफ़िला मक्का में पहुंच गया और क़बीलए बनी सा'द की औरतों ने दूध पिलाने के लिये घर घर जा कर बच्चों की तलाश शुरू कर दी और इन तमाम औरतों को दूध पिलाने के लिये बच्चे मिल गए लेकिन हज़रते हलीमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को दूध पिलाने के लिये कोई बच्चा न मिल सका तलाशे बिसयार के बा'द बिल आख़िर) हज़रते हलीमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की सोई हुई किस्मत बेदार हो गई और सरवरे काइनात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इन की आगोश में आ गए। अपने ख़ैमे में ला कर जब दूध पिलाने बैठीं तो **बाराने रहमत** की तरह बरकाते नबुव्वत का जुहूर शुरू हो गया, खुदा की शान देखिये कि

हज़रते हलीमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के मुबारक पिस्तान में इस क़दर दूध उतरा कि रहमते आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भी और इन के रज़ाई भाई ने भी ख़ूब शिकम सैर हो कर दूध पिया, और दोनों आराम से सो गए, इधर ऊंटनी को देखा तो उस के थन दूध से भर गए थे। हज़रते हलीमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के शोहर ने उस का दूध दोहा। और मियां बीवी दोनों ने ख़ूब सैर हो कर दूध पिया और दोनों शिकम सैर हो कर रात भर सुख और चैन की नींद सोए।

हज़रते हलीमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का शोहर हुज़ूर रहमते आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की येह बरकतें देख कर हैरान रह गया, और कहने लगा कि हलीमा ! तुम बड़ा ही मुबारक बच्चा लाई हो। हज़रते हलीमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने कहा कि वाक़ेई मुझे भी येही उम्मीद है कि येह निहायत ही बा बरकत बच्चा है और खुदा की रहमत बन कर हम को मिला है और मुझे येही तवक्कोअ है कि अब हमारा घर ख़ैरो बरकत से भर जाएगा।

हज़रते हलीमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि इस के बा'द हम रहमते आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अपनी गोद में ले कर मक्कए मुकर्रमा से अपने गाऊं की तरफ़ रवाना हुवे तो मेरा वोही ख़च्चर अब इस क़दर तेज़ चलने लगा कि कीसी की सुवारी उस की गर्द को भी नहीं पहुंचती थी, काफ़िले की औरतें हैरान हो कर मुझ से कहने लगीं कि ऐ हलीमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا क्या येह वोही ख़च्चर है जिस पर तुम सुवार हो कर आई थीं या कोई दूसरा तेज़ रफ़्तार ख़च्चर तुम ने ख़रीद लिया है ? अल ग़रज़ हम अपने घर

पहुँचे वहां सख्त कहूँ पड़ा हुआ था तमाम जानवरों के थन में दूध खुशक हो चुका था, लेकिन मेरे घर में क़दम रखते ही मेरी बकरियों के थन दूध से भर गए, अब रोज़ाना मेरी बकरियां जब चरागाह से घर वापस आतीं तो उन के थन दूध से भरे होते हालांकि पूरी बस्ती में और किसी को अपने जानवरों का एक क़तरा दूध नहीं मिलता था मेरे क़बीले वालों ने अपने चरवाहों से कहा कि तुम लोग भी अपने जानवरों को उसी जगह चराओ जहां हलीमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के जानवर चरते हैं। चुनान्चे, सब लोग उसी चरागाह में अपने मवैशी चराने लगे जहां मेरी बकरियां चरती थीं, मगर यहां तो चरागाह और जंगल का कोई अमल दख़ल ही नहीं था येह तो रहमते अलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बरकाते नबुव्वत का फ़ैज़ था जिस को मैं और मेरे शोहर के सिवा मेरी क़ौम का कोई शख़्स नहीं समझ सकता था।

अल ग़रज़ इसी तरह हर दम हर क़दम पर हम बराबर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बरकतों का मुशाहदा करते रहे यहां तक कि दो साल पूरे हो गए और मैं ने आप का दूध छुड़ा दिया। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की तन्दुरुस्ती और नशो नुमा का हाल दूसरे बच्चों से इतना अच्छा था कि दो साल में आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ख़ूब अच्छे बड़े मा'लूम होने लगे, अब हम दस्तूर के मुताबिक़ रहमते अलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को इन की वालिदा के पास लाए और उन्होंने ने हस्बे तौफीक़ हम को इन्आमो इकराम से नवाजा।

गो काइदे के मुताबिक अब हमें रहमते आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को अपने पास रखने का कोई हक नहीं था, मगर आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की बरकाते नबुव्वत की वजह से एक लम्हे के लिये भी हम को आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की जुदाई गवारा नहीं थी। अजीब इत्तिफ़ाक़ कि उस साल **मक्काए मुअज़्ज़मा** में वबाई बीमारी फैली हुई थी। चुनान्चे, हम ने उस वबाई बीमारी का बहाना कर के हज़रते बीबी आमिना **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** को रिज़ामन्द कर लिया और फिर हम रहमते आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को वापस अपने घर लाए और फिर हमारा मकान रहमतों और बरकतों की कान बन गया और आप हमारे पास निहायत खुश व खुर्रम हो कर रहने लगे। (सीरते मुस्त्फ़ा, स. 73 ता 77 मुल्तक़तन)

नूर का खिलौना

बचपन के हालात के बारे में हज़रते हलीमा **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** का बयान है कि आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का गहवारा या'नी झूला फ़िरिश्तों के हिलाने से हिलता था और आप बचपन में चांद की तरफ़ उंगली उठा कर इशारा फ़रमाते थे तो चांद आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** की उंगली के इशारों पर हरकत करता था।

(सीरते मुस्त्फ़ा, स. 81)

**चांद झुक जाता जिधर उंगली उठाते महद में
क्या ही चलता था इशारों पर खिलौना नूर का**

(हदाइके बख़्शिश, स. 249)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जामेअ मो'जिजात सरकार की जात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने तमाम अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَام** को बहुत से मो'जिजात अता फरमाए । हजरते सय्यिदुना मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को अपना कलीम बनाया और एक ऐसा असा अता फरमाया जिस ने जादूगरों के बड़े बड़े अज्दहों को खत्म कर दिया और जब आप ने उस मुबारक असा को पथ्थर पर मारा तो उस से पानी के बारह चश्मे निकल पड़े, यूं ही हजरते सय्यिदुना दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** के लिये लोहे को नर्म कर दिया, इसी तरह हजरते सय्यिदुना सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** के लिये जिन्नो इन्स, चरन्दो परन्द और हवा को मुसख़्खर फरमा दिया, हजरते सय्यिदुना ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को शीर ख़्वारी में कुव्वते गोयाई अता फरमाई । इस के इलावा मुर्दे को जिन्दा करने, बर्स वालों और पैदाइशी अन्धों को शिफा देने का मो'जिजा अता फरमाया, अल गरज मुख़्तलिफ़ अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَام** को मुख़्तलिफ़ मो'जिजात अता फरमाए और सय्यिदुल मुर्सलीन, खातमुन्नबिय्यीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को इन तमाम मो'जिजात का जामेअ बना कर भेजा जैसा कि किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है ।

हुस्ने यूसुफ़, दमे ईसा, यदे बैजा दारी

आंचा ख़ूबां हमा दारन्द, तू तन्हा दारी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा 'वते इस्लामी)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**

की सच्ची महबूबत अता फ़रमा, आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की महबूबत में तड़पने वाला दिल और आप के इश्क़ में रोने वाली आंखें अता फ़रमा, हमें सारी ज़िन्दगी अपने प्यारे हबीब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अमल करते हुवे गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हमारी बे हिसाब बख़्शिश व मग़फ़िरत फ़रमा ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

चांद से भी ज़ियादा ख़ूब २०

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** फ़रमाते हैं : “एक मरतबा मैं ने रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को चांदनी रात में देखा, मैं कभी चांद की तरफ़ देखता और कभी आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** के चेहरए अन्वर को देखता तो मुझे आप का चेहरा चांद से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत नज़र आता था ।”

(الشّمس المحمّدية، باب ما جاء فی خلق رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیہ وسلم، ص ۲۴، حدیث: ۹)



बयान नम्बर : 53

सहाबा पर ता'न, हुजूर को ना पशन्द है

हुजूरते अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدْسُ سِرُّهُ التُّورَانِي सआदतुद्दरैन में अबू अली क़हतान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की एक हिकायत बयान फ़रमाते हैं, मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं कर्ख़ की जामेअ मस्जिद शरक़िय्या में दाख़िल हुवा, मैं ने सय्यिदुल मुर्सलीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को देखा, आप के हमराह दो आदमी और भी थे जिन्हें मैं नहीं जानता था मैं ने हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ किया मगर आप ने कोई जवाब न दिया, मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं आप पर शबो रोज़ इतनी इतनी मरतबा दुरूदो सलाम भेजता हूं और आप ने मुझे जवाबे सलाम से महरूम फ़रमा दिया ?” रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “ तुम मुझ पर तो दुरूद भेजते हो और मेरे सहाबा पर ता'न व तश्नीअ करते हो ।” मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ मैं आप के दस्ते अक़्दस पर तौबा करता हूं आइन्दा ऐसा नहीं करूंगा ।” फिर सरकार عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने (सलाम के जवाब में इरशाद) फ़रमाया : **وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ**

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيما ورد من لطائف الرائي والحكايات..... الخ، المطبعة الخامسة والعشرون بعد المائة، ص ۱۲۳)

बहरे सिद्दीको उमर उसमां अली कीजिये रहमत ऐ नानाए हुसैन
सब सहाबा का वसीला सय्यिदा कीजिये रहमत ऐ नानाए हुसैन

(वसाइले बख्शिश, स. 168)

राहे हिदायत के दरख्शन्दा सितारे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हिकायत से
मा'लूम हुवा कि हमें नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ
से महब्बत रखते हुवे आप की ज़ाते पाक पर दुरूद शरीफ़ की
कसरत के साथ साथ आप के तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से
भी महब्बत रखनी चाहिये और इन की सीरत व किरदार पर
अमल करते हुवे अपनी ज़िन्दगी बसर करनी चाहिये क्यूंकि येही
राहे हिदायत के वोह दरख्शन्दा सितारे हैं जिन के बारे में मदीने
के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने
आलीशान है : أَصْحَابِي كَالنُّجُومِ فَإِيَّاهُمْ أَقْتَدِيتُمْ اهْتَدَيْتُمْ
या'नी मेरे अस्हाब सितारों
की मानिन्द हैं, तुम इन में से जिस की भी इक्तिदा करोगे हिदायत
पा जाओगे । (مشكاة، كتاب المناقب، باب مناقب الصحابة، ٢/ ١٢/ ٢٠، حديث: ١٠١٤)

लिहाजा हमें भी तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से
महब्बत करनी चाहिये ऐसा न हो कि किसी एक सहाबिये रसूल से
तो बे पनाह इश्को महब्बत का दम भरते नज़र आएँ और बाक़ी
अस्हाबे रसूल के लिये दिल में अदावत भरी हो और यूँ हम इस
बुग़ज़ के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
की ला'नत के मुस्तहिक़ करार पा जाएँ जैसा कि

ला'नते खुदावन्दी का मुस्तहिक्

हज़रते उवैम बिन साइदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे खुशबूदार है : **اِنَّ اللّٰهَ اخْتَارَنِيْ وَاخْتَارَ لِيْ اَصْحَابًا** : **عَزَّوَجَلَّ** ने मुझे पसन्द फ़रमाया और मेरे लिये मेरे अस्थाब को पसन्द फ़रमाया **فَجَعَلَ لِيْ مِنْهُمْ زُرَّاءَ وَزُرَّاءَ وَانْصَارًا وَاصْهَارًا** मुआविन और रिश्तेदार बनाए **فَمَنْ سَبَّهُمْ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ** पस जो इन्हें गाली देगा, उस पर **عَزَّوَجَلَّ** उस के फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है **لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ صَرْفًا وَلَا عَدْلًا** रोजे कियामत **عَزَّوَجَلَّ** न उस का कोई फ़र्ज क़बूल फ़रमाएगा न नफ़ल । (الصواعق المحرقة، ص २)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़िल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हबीबे मुकर्रम, नबिय्ये मुअज़्ज़म صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे मुअज़्ज़म है : मेरे सहाबा के बारे में **عَزَّوَجَلَّ** से डरते रहो **لَا تَتَّخِذُوهُمْ عَرَضًا مِّنْ بَعْدِي** मेरे बा'द इन्हें (अपनी तोहमतों और बुरी बातों का) निशाना मत बनाना **فَمَنْ أَحْبَبَهُمْ فَيُحِبِّيْهِمْ** पस जिस ने इन से महब्बत की तो उस ने मुझ से महब्बत की वजह से ऐसा किया **وَمَنْ أَبْغَضَهُمْ فَيُبْغِضِيْ أَبْغَضَهُمْ** और जिस ने इन से बुग़्ज रखा तो उस ने (दर हकीकत) मुझ से बुग़्ज की वजह से ऐसा किया **وَمَنْ آذَاهُمْ فَقَدْ آذَانِيْ** और जिस ने इन्हें अज़िय्यत दी उस ने

मुझे अजिय्यत दी और وَمَنْ أَذَانِي فَقَدْ أَذَى اللَّهِ जिस ने मुझे अजिय्यत दी उस ने **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** को अजिय्यत दी और जिस ने **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** को ईजा दी अन्करीब **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** उस की पकड़ फरमाएगा ।”

(مشكاة، کتاب المناقب، باب مناقب الصحابة، ٢/ ١٢/ ٢، حديث: ٢٠١٢)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** से बुग़्ज रखने वाले ब हुक्मे हदीस **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** और फिरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत के हक़दार हैं और जो इन से महब्बत रखने वाले हैं वोह न सिर्फ **اَلलّٰهُ** और उस के रसूल के महबूब हैं बल्कि ऐसे खुश बख़्तों को बरोजे जज़ा अहमदे मुजतबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का कुर्बे खास भी नसीब होगा । चुनान्चे,

सरकार का कुर्ब पाने वाला खुश नसीब

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से रिवायत है कि नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फरमाया : “जो शख्स मेरे सहाबा, अजवाज और अहले बैत से अक्कीदत रखता है और इन में से किसी पर ता'न नहीं करता और इन की महब्बत पर दुन्या से इन्तिकाल करता है वोह क़ियामत के दिन मेरे साथ मेरे दरजे में होगा ।”

(الرياض النضرة، الباب الاول، ذكر ما جاء في الحديث على حبهم والاحسان اليهم الخ، ١/ ٢٢)

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **مَنْ أَحْسَنَ الْقَوْلَ فِي أَصْحَابِي فَقَدْ بَرَّيَ مِنَ الْبِفَاقِ** जिस ने मेरे अस्हाब के मुतअल्लिक अच्छी बात कही तो वोह निफ़ाक़ से बरी हो गया **وَمَنْ أَسَاءَ الْقَوْلَ فِي أَصْحَابِي كَانَ مُخَالِفًا لِسُنَّتِي** जिस ने मेरे अस्हाब के मुतअल्लिक बुरी बात कही तो वोह मेरे तरीके से हट गया और उस का ठिकाना आग है और क्या ही बुरी जगह है पलटने की ।”

(الرياض النضرة، الباب الاول، ذكر ملجاء في الحث على جبههم والاحسان اليهم..... الخ، ٢٢/١)

अब्बाह عَزَّوَجَلَّ के दोस्त

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे बा करीना है : “मेरे इन चारों सहाबा अबू बक्र, उमर, उषमान और अली (رَضَوَانُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) से महबबत करने वाले **अब्बाह عَزَّوَجَلَّ** के दोस्त हैं और इन से बुग़ज़ और नफ़रत करने वाले **अब्बाह عَزَّوَجَلَّ** के दुश्मन हैं ।”

(الرياض النضرة، الباب الرابع فيما جاء مختصا بالاربعة الخلفاء، ٢٨/١)

आल से अस्हाब से काइम रहे
ता अबद निस्बत ऐ नानाए हुसैन

(वसाइले बख़्शिश, स. 167)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिले अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

गुस्ताख़े सहाबा का इब्रतनाक अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन तमीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ फ़रमाते हैं : मुझे हज़रते सय्यिदुना अबुल हसीब बशीर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बताया कि मैं तिजारत किया करता था और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से काफ़ी मालदार था । मुझे हर तरह की आसाइशें मयस्सर थीं और मैं अकसर ईरान के शहरों में रहा करता था । एक मरतबा मेरे एक मजदूर ने मुझे ख़बर दी की फुलां मुसाफ़िर ख़ाने में एक शख़्स मर गया है, वहां उस का कोई भी वारिस नहीं, अब उस की लाश बे गोरो कफ़न पड़ी है । जब मैं मुसाफ़िर ख़ाने पहुंचा तो वहां एक शख़्स को मुर्दा हालत में पाया, मैं ने एक चादर उस पर डाल दी, उस के साथियों ने मुझे बताया कि येह शख़्स बहुत इबादत गुज़ार और नेक था लेकिन आज इसे कफ़न भी मयस्सर नहीं और हमारे पास इतनी रक़म नहीं कि इस की तजहीज़ व तक्फ़ीन कर सकें । मैं ने येह सुना तो उजरत दे कर एक शख़्स को कफ़न लेने के लिये और एक को क़ब्र खोदने के लिये भेजा और हम उस के लिये कच्ची ईंटें तय्यार करने लगे अभी हम लोग इन्हीं कामों में मशगूल थे कि यका यक वोह मुर्दा उठ बैठा ! ईंटें उस के पेट से गिर गई फिर वोह बड़ी भयानक आवाज़ में चीख़ने लगा : हाए आग, हाए हलाकत, हाए बरबादी ! हाए आग, हाए हलाकत, हाए बरबादी ! जब उस के साथियों ने येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देखा तो दूर हट गए । मैं उस के क़रीब गया और उस का बाजू पकड़ कर हिलाया और उस से पूछा तू कौन है और तेरा क्या मुआमला है ?

वोह कहने लगा : बद किस्मती से मुझे ऐसे बुरे लोगों की सोहबत मिली जो हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर व फ़ारूके आ'जम (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) को गालियां दिया करते थे। इन की सोहबते बद की वजह से मैं भी इन के साथ मिल कर शैख़ने करीमैन (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) को गालियां दिया करता और उन से नफ़रत करता था।

सय्यिदुना अबुल हसीब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْلطِيف़ फ़रमाते हैं : मैं ने उस की येह बात सुन कर इस्तिग़फ़ार पढ़ा और कहा : ऐ बद बख़्त ! फिर तो तुझे सख़्त सज़ा मिलनी चाहिये (फिर मैं ने उस से पूछा :) तू मरने के बा'द जिन्दा कैसे हो गया ?" तो उस ने जवाब दिया "मेरे नेक आ'माल ने मुझे कोई फ़ाइदा न दिया। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की गुस्ताख़ी की वजह से मुझे मरने के बा'द घसीट कर जहन्नम की तरफ़ ले जाया गया और वहां मुझे मेरा ठिकाना दिखाया गया, वहां की आग बहुत भड़क रही थी।

फिर मुझ से कहा गया अ़नक़रीब तुझे दोबारा जिन्दा किया जाएगा ताकि तू अपने बद अ़कीदा साथियों को अपने दर्दनाक अन्जाम की ख़बर दे और उन्हें बताए कि जो कोई **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से दुश्मनी रखता है उस का आख़िरत में कैसा दर्दनाक अन्जाम होता है, जब तू उन को अपने बारे में बता देगा तो फिर दोबारा तुझे तेरे अस्ली ठिकाने (या'नी जहन्नम) में डाल दिया जाएगा।

येह ख़बर देने के लिये मुझे दोबारा जिन्दा किया गया है ताकि मेरी इस हालत से गुस्ताख़ाने सहाबा इब्रत हासिल करें और अपनी गुस्ताख़ियों से बाज़ आ जाएं वरना जो कोई उन हज़रात

की शान में गुस्ताखी करेगा उस का अन्जाम भी मेरी तरह होगा। इतना कहने के बा'द वोह शख्स दोबारा मुर्दा हालत में हो गया। उस की येह इब्रतनाक बातें मेरे इलावा दूर खड़े दीगर लोगों ने भी सुनीं, इतने में मज़दूर कफ़न खरीद लाया, मैं ने वोह कफ़न लिया और कहा : मैं ऐसे बद नसीब शख्स की हरगिज़ तजहीज़ व तक्फ़ीन नहीं करूंगा जो शैख़ैने करीमैने (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) का गुस्ताख़ हो, तुम अपने साथी को संभालो, मैं इस के पास ठहरना भी गवारा नहीं करता।

इस के बा'द मैं वहां से वापस चला आया, बा'द में मुझे बताया गया कि उस के बद अक़ीदा साथियों ने ही उसे गुस्ल व कफ़न दिया और इन्ही चन्द लोगों ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, इन के इलावा किसी ने भी नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत करना गवारा न किया। (उयूनुल हिकायत (मुतर्जम) 1, 248)

महफूज़ सदा रखना शहा बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 193)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

तो वोह नुफ़ूसे कुदसिय्या हैं कि उन्हें हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सोहबत व मइय्यत (साथ रहने) की बदौलत ऐसी अज़मत व शराफ़त नसीब हुई जो किसी भी ग़ैरे सहाबी को हासिल नहीं इन के बुलन्दो बाला मरातिब का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि किसी ग़ैरे सहाबी की बड़ी से बड़ी नेकी इन की किसी छोटी सी

नेकी के बराबर भी हरगिज़ नहीं हो सकती, क्योंकि येह तै शुदा अम्र है कि सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** को जो शरफे सहाबिय्यत हासिल है इस का मुक़ाबला ग़ैरे सहाबी उम्मत की को मिलने वाली कोई भी फ़ज़ीलत नहीं कर सकती । चुनान्वे,

सरवरे दो आलम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **لَا تُسُبُّوا أَصْحَابِي فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ انْفَقَ مِثْلَ أَحَدٍ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مَدَّ أَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيفُهُ** : या'नी मेरे किसी सहाबी को गाली न दो, अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़ैरात करे तो भी वोह इन (सहाबा) के एक या निस्फ़ मुद (पैमाने) को नहीं पहुंचेगा ।”

(بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو کنتم مثخذ اخلیل، ۵۲۲/۲، حدیث: ۳۶۷۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** की शान में गुस्ताखी और बे अदबी से महफूज़ रख और तमाम सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** की सच्ची महब्बत अता फ़रमा, और हमें हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**, उन की आल व अस्हाब पर दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



बयान नम्बर : 54

तीन बातों की वसियत

हज़रते अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدْسُ سِرُّهُ التُّورَانِي ने सअदतुद्दरैन में एक रिवायत नक्ल की, कि हज़रते अबू ज़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे तीन बातों की) वसियत फ़रमाई : कि मैं सफ़र व हज़र में नमाज़े चाश्त पढ़ता रहूँ أَنْ أُصَلِّيَهَا فِي السَّفَرِ وَالْحَضَرِ يَعْنِي صَلَاةَ الضُّحَى और सोने से पहले वित्र और नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ कर सोया करूं ।

(سعادة الدارين، الباب الثاني فيماورد في فضل الصلاة والتسليم..... الخ، حرف الهمزة، ص ٨٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत में हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने प्यारे सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को तीन बातों की वसियत फ़रमाई

- (1) सफ़र व हज़र में नमाज़े चाश्त की अदाएगी करते रहना
- (2) सोने से पहले वित्र पढ़ कर सोना और
- (3) नबिय्ये पाक की ज़ाते बा बरकात पर दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहना ।

लिहाजा हमें चाहिये कि फर्ज नमाजों के साथ साथ नफ़ली इबादात की आदत बनाते हुवे हुजूर عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में कसरत से दुरूदो सलाम के नज़राने भी पेश करते रहा करें।

नमाजे चाश्त की फज़ीलत व अहमियत

बयान कर्दा रिवायत में हुजूर عَلَيْهِ السَّلَام ने नमाजे चाश्त पढ़ने की तरगीब दिलाई है, नमाजे चाश्त के बारे में सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “नमाजे चाश्त मुस्तहब है, कम अज़ कम दो और ज़ियादा से ज़ियादा चाश्त की बारह रकअतें हैं। और अफ़ज़ल बारह (रकअत) हैं कि हदीसे (पाक) में है (कि) जिस ने चाश्त की बारह रकअतें पढ़ीं, **अब्बाह** तअ़ाला उस के लिये जन्नत में सोने का महल बनाएगा।”

(ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی صلاة الضحی، ۴/۲، حدیث: ۴۷۲)

मज़ीद फ़रमाते हैं : “इस का वक़्त आफ़ताब बुलन्द होने से ज़वाल या'नी निस्फुन्नहारे शरई तक है और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े पढ़े।” (बहारे शरीअत, 1/676)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाजे चाश्त की आदत अपनाने के लिये शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمْ الْعَالِیَہ के अता कर्दा मदनी इन्आमात पर अमल करते रहें اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आप دَامَتْ بَرَکَاتُهُمْ الْعَالِیَہ ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां

करने और गुनाहों से बचने के तरीकों पर मुश्तमिल शरीअत व तरीकत का बेहतरीन मजमूआ (इस्लामी भाइयों के लिये)

“72 मदनी इन्आमात” की सूरत में अता फ़रमाया जिस में एक मदनी इन्आम येह भी है : “क्या आज आप ने नमाज़े तहज्जुद, इश्राक़ व चाश्त और अब्बाबीन अदा फ़रमाई ?” लिहाज़ा अगर हम फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी करते हुवे नवाफ़िल का भी एहतिमाम करें तो इस तरह बज़ाहिर एक मदनी इन्आम पर और दर हकीकत सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के फ़रमान पर अमल हो जाएगा ।

नमाज़े फ़ज़्र के बा'द ज़िक्क़ुल्लाह की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़े फ़ज़्र बा जमाअत अदा करने के बा'द ज़िक्रो दुरूद में मशगूल रहें कि इस वक़्त ज़िक्रो अज़कार की बड़ी फ़ज़ीलत है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर्सलीन, रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “तुलूए शम्स तक बैठ कर **اَللّٰهُمَّ** का ज़िक्र और उस की बड़ाई बयान करना और उस की हम्दो सना करना और तस्बीहो तहलील करना मुझे अवलादे इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام से दो या दो से ज़ियादा गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्द है ।”

(مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابى امامة الباهلى ، ٢٨١/٨، حديث: ٢٢٢٥٦، ملقطاً)

और जूँही तुलूए आफ़ताब हो नमाज़े चाश्त की अदाएगी के लिये खड़े हो जाएं और बारगाहे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** से मिलने वाले इन्आमो इकराम के हक़दार बन जाएं । जैसा कि

हज़रते सय्यिदुना मुअज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : **مَنْ قَعَدَ فِي مُصَلَّاهُ حِينَ يُصَلِّيُ الصُّبْحَ حَتَّى يُسَبِّحَ الصُّحَى لَا يَقُولُ إِلَّا خَيْرًا** जो शख्स फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ कर अपनी जगह बैठा रहे फिर चाश्त की नमाज़ पढ़े, और अच्छी बात के सिवा कुछ न कहे **غُفِرَتْ لَهُ خَطَايَاهُ وَإِنْ كَانَتْ أَكْثَرَ مِنْ زَبَدِ الْبَحْرِ** उस के तमाम गुनाह मुअज़ कर दिये जाते हैं, अगरचें समन्दर के झाग से ज़ियादा हों।”

(مسند احمد، مسند المكيين، حديث معاذ بن انس الجهني، ٣١٠/٥، حديث: ١٥٦٢٣)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते हुवे सुना कि : “जो नमाज़े फ़ज़्र अदा करने के बा’द अपनी जगह बैठा रहे और कोई दुन्यवी बात न करे और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक्र करता रहे फिर चाश्त की चार रकअतें अदा करे तो गुनाहों से ऐसा **पाक व साफ़** हो जाएगा जैसा उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था कि उस पर कोई गुनाह न था।

(مسند أبي يعلى، مسند عائشه، ٩/٢، حديث: ٢٣٣٨)

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ देखा आप ने नमाज़े चाश्त पढ़ने की कैसी बरकतें हैं कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** उस शख्स को गुनाहों से इस तरह **पाक व साफ़** फ़रमा देता है कि गोया वोह आज ही अपनी मां की

कोख से पैदा हुवा हो । एक और हृदीसे पाक के मफ़हूम के मुताबिक़ **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** ने इन्सानी जिस्म में तीन सो साठ जोड़ पैदा फ़रमाए हैं और हर जोड़ का सदका देना हम पर लाज़िम है जिस का तरीक़ा हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** ने हमें बयान फ़रमा दिया । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया :
 “तुम्हारे हर जोड़ पर **सदका** है और हर तस्बीह या’नी **سُبْحَنَ اللّٰهُ** कहना **सदका** है और हर तहमीद या’नी **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** कहना **सदका** है और हर तहलील या’नी **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ** कहना **सदका** है और हर तक्वीर या’नी **اَللّٰهُ اَكْبَرُ** कहना **सदका** है और अच्छी बात का हुक्म देना **सदका** है और बुरी बात से रोकना **सदका** है और चाशत की दो रकअतें इन सब को किफ़ायत करती हैं ।

(مسلم، کتاب صلوٰۃ المسافرین وقصرها، باب استحباب صلوٰۃ الضحی..... الخ، ص ۳۲۳، حدیث: ۸۲۰۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना बहुत से लोग बेरोज़गारी का शिकार नज़र आते हैं और जो साहिबे रोज़गार हैं वोह तंगदस्ती की वजह से तरह तरह की आफ़तों में गिरिफ़्तार हैं । अगर हम **नमाज़े चाशत** पढ़ने की आदत बना लें तो दीगर फ़वाइद के साथ साथ **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हमारे रिज़्के हलाल में भी बहुत बरकत होगी क्यूंकि हुसूले रिज़्क और तंगदस्ती को दूर करने के लिये **नमाज़े चाशत** पढ़ना बेहद मुफ़ीद और मुजर्ब है । चुनान्चे,

तंगदस्ती दूर करने का नुस्खा

मशाइखे किराम **رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمُ** फ़रमाते हैं कि, दो चीज़ें कभी जम्अ नहीं हो सकती मुफ़्लसी और चाशत की नमाज़, (या'नी जो कोई चाशत की नमाज़ का पाबन्द होगा, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कभी मुफ़्लस न होगा।)

इसी तरह हज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बलख़ी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं हम ने पांच चीज़ों की ख़्वाहिश की तो वोह हम को पांच चीज़ों में दस्तयाब हुई (इस में से एक येह भी है) कि जब हम ने रोज़ी में बरकत त़लब की तो वोह हम को नमाज़े चाशत पढ़ने में मयस्सर आई (या'नी इस के ज़रीए रिज़क़ में बरकत पाई)।

(نزّهة المجالس، باب فضل الصلوات ليلا ونهاراً ومتعلقاتها، 1/161)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को दूसरी वसियत येह फ़रमाई की “सोने से पहले वित्र पढ़ कर सोया करो।”

सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं : “वित्र वाजिब है अगर सहवन या क़स्दन न पढ़ा तो क़ज़ा वाजिब है।” (बहारे शरीअत, 1/653) मज़ीद फ़रमाते हैं : “जो शख़्स जागने पर ए'तिमाद रखता हो उस को आख़िर रात में वित्र पढ़ना मुस्तहब है, वरना सोने से क़ब्ल (ही) पढ़ ले।”

(बहारे शरीअत, 1/453)

वित्र को रात के आखिरी हिस्से तक मुअख़्ख़र करना भी अफ़ज़ल है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने खुशबूदार है : “जिसे अन्देशा हो कि पिछली रात में न उठेगा वोह (रात के) अव्वल (वक़्त) में पढ़ ले और जिसे उम्मीद हो कि पिछले (पहर) को उठेगा वोह **पिछली रात** में पढ़े कि आख़िर शब की नमाज़ मशहूद है (या’नी इस में मलाइकए रहमत हाज़िर होते हैं) और येह अफ़ज़ल है।”

(مسلم کتاب صلاة المسافرين، باب من خاف ان لا يقوم من آخر الليل، ص ۳۷۸، حدیث: ۷۵۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को तीसरी वसियत येह फ़रमाई कि “सोने से क़ब्ल मुझ पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ते रहना” हमें भी चाहिये कि सोने से पहले अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ कर अपने दिन का इख़िताम ज़िक्रो दुरूद पर कर लिया करें कि इस की बड़ी बरकतें हैं। चुनान्चे,

रात को सोते वक़्त के अवशद

मुफ़स्सरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : “अगर सोते वक़्त आयतुल

कुर्सी पढ़ ले तो रात भर वोह मकान चोरी, आग और नागहानी आफ़ात से महफूज़ रहेगा और पढ़ने वाला बद ख़्वाबी और जिन्नात के ख़लल से बचा रहेगा। हर नमाज़ के बा'द आयतुल कुर्सी पढ़ने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** खातिमा बिल ख़ैर होगा।”

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 130)

जो शख्स सोते वक़्त पांचवां कलिमा और **قُلْ يَٰٓأَيُّهَا الْكَافِرُونَ** एक एक दफ़्आ पढ़ कर सोया करे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मरते वक़्त कलिमा नसीब होगा मगर चाहिये येह कि इस के बा'द कोई दुन्यावी बात न करे अगर बात करनी पड़ जाए तो दोबारा इस को पढ़ ले।

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 130)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपने मा'मूलात से फ़राग़त के बा'द सोने से पहले **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक्र और नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ज़ाते गिरामी पर **दुरूदो सलाम** पढ़ कर सोया करें इस की बरकत से न सिर्फ़ सरकारे नामदार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ज़ियारत नसीब होती है बल्कि हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** ऐसे खुश नसीब को शफ़ाअत की नवीद भी सुनाते हैं। चुनान्वे,

शफ़ाअत का मुज़द्दा मिल गया

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : हमारा एक पड़ोसी था जो बादशाह की खिदमत करता था **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की याद से ग़ाफ़िल और फ़ितना व फ़साद फैलाने में मशहूर था। एक रात मैं ने उसे ख़्वाब में देखा कि

उस का हाथ रसूलुल्लाह ﷺ के हाथ में है। मैं ने अर्ज की : या रसूलुल्लाह ﷺ यह बुरा शख्स तो उन लोगों में से है जो **अल्लाह** عزوجل से मुंह मोड़े हुवे हैं फिर आप ﷺ ने अपना दस्ते मुबारक इस के हाथ में क्यूं दिया ? सरकार ﷺ ने फ़रमाया : “मुझे इस का इल्म है और सुनो ! मैं **अल्लाह** عزوجل की बारगाह में इस की सिफ़ारिश करने जा रहा हूं।” मैं ने अर्ज की : या रसूलुल्लाह ﷺ यह इस मक़ाम पर किस वसीले से पहुंचा ? फ़रमाया : “मुझ पर कसरत से **दुरूदो सलाम** पढ़ने की वजह से, बेशक येह शख्स हर रात सोते वक़्त मुझ पर हज़ार मरतबा **दुरूदो सलाम** भेजा करता है और मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** عزوجل इस के हक़ में मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमाएगा।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वाहिद عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَاجِد का बयान है कि जब सुबह के वक़्त मैं मस्जिद में दाख़िल हुवा तो क्या देखता हूं कि वोही नौजवान रोता हुवा मस्जिद में दाख़िल हुवा। मैं उस वक़्त अपने दोस्तों के सामने जो कुछ उस के मुतअल्लिक़ ख़्वाब में देखा था बयान कर रहा था, वोह सलाम कर के सामने बैठ गया और बोला : ऐ अब्दल वाहिद ! मैं आप के हाथ पर ताइब होना चाहता हूं, मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने तुम्हारे पास भेजा है। जब उस ने तौबा कर ली तो मैं ने उस ख़्वाब के बारे में दरयाफ़्त किया तो उस ने कहा कि मेरे पास रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए थे आप ने मेरा हाथ

पकड़ कर फ़रमाया : “मैं अपने रब के हां तुम्हारी शफ़ाअत करूंगा उस दुरूदो सलाम के सबब जो तुम मुझ पर भेजते हो।”

लिहाजा हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने सिफ़ारिश के बा'द फ़रमाया : सुब्ह सवेरे अब्दुल वाहिद के पास जाना और उस के हाथ पर तौबा करना और इस पर मजबूती से काइम रहना।

(سعادة الدارين، الباب الرابع فيماورد من لطائف المراثي والحكايات الخ، اللطيفة التسعون، ص ١٥٠ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ हमें नमाज़े पंज गाना बा जमाअत पढ़ने के साथ साथ नफ़ली इबादात करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के उस्वए हसना पर अमल करते हुवे आप की महब्बत में झूम झूम कर दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ



सायण अर्श पाने वाले तीन खुश नसीब

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने रहमत निशान है : **ثَلَاثَةُ يَوْمٍ الْقِيَامَةِ تَحْتَ عَرْشِ اللَّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ** : क़ियामत के रोज़ **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के अर्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख्स **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के अर्श के साए में होंगे ।” अर्ज की गई : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** वोह कौन लोग होंगे ? इरशाद फ़रमाया : (1) **مَنْ فَرَّجَ عَنْ مَكْرُوبٍ أُمَّتِي** वोह शख्स जो मेरे किसी उम्मीती की परेशानी दूर कर दे । (2) **وَمَنْ أَحْيَا سُنَّتِي** मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला । (3) **وَمَنْ أَكْثَرَ الصَّلَاةَ عَلَيَّ** और मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला । (बस्तान الواعظين لابن الجوزي، ص २६०, २६१)

(البدورالسافرة فى امور الآخرة للسيوطى، باب الأعمال الموجبة... الخ، ص १३१، حديث: ३६६)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले बरकत, तरक्किये मा'रिफ़त और मीठे मीठे आक़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की कुर्बत हासिल करने के लिये दुरूदो सलाम बेहतरीन ज़रीआ है, अगर कोई खुश नसीब ज़िन्दगी भर अपने मोहसिन आक़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदो सलाम के फूल निछावर करता रहे

तो रोज़े क़ियामत उसे न सिर्फ़ **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के अर्श का साया

नसीब होगा बल्कि वोह मक्की मदनी सरकार, शफीए रोजे शुमार
 صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत का हक़दार भी बन जाएगा लिहाज़ा
 हमें भी दिन रात अपने प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की
 बारगाह में ख़ूब ख़ूब दुरूदो सलाम के नज़राने पेश करते रहना
 चाहिये कि इस के फ़ज़ाइल व समरात बेहिसाब हैं। चुनान्वे, इस
 ज़िम्न में चन्द अह्दादीसे मुबारका सुनिये और दुरूदे पाक की
 आदत बना लीजिये।

दिन रात के गुनाहों की मुआफ़ी

اَللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
 इरशाद फ़रमाते हैं : “जिस ने दिन और रात में मेरी तरफ़ शौक़
 व महबूबत की वजह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा
 اَللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि वोह उस के उस दिन और रात के
 गुनाह बख़्श दे।”

(التّٰرغیب والتّٰرہیب، کتاب الذّکر والدّعاء، باب التّٰرغیب فی اکثار الصّلاة علی النّبی، ۲/ ۳۲۶، حدیث: ۲۵۹۲)

ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत
 निशान है : مَنْ صَلَّی عَلَیَّ فِیْ یَوْمٍ خَمْسِیْنَ مَرَّةً صَافِحَتُهُ یَوْمَ الْقِیَامَةِ जो दिन
 भर में मुझ पर पचास मरतबा दुरूद पढ़ेगा क़ियामत के दिन मैं
 उस से मुसाफ़हा करूंगा।”

(القول البدیع، الباب الثّانی فی ثواب الصّلاة والسلام علی رسول اللّٰہ، ص ۲۸۲)

गमों ने तुम को जो घेरा है तो दुरूद पढो

ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया : “जिसे कोई सख्त हाजत दरपेश हो तो उसे चाहिये कि मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ पढे। क्योंकि येह मसाइबो आलाम को दूर कर देता है, और रोजी में बरकत और हाजात को पूरा करता है।”

(بستان الواعظین وریاض السامعین، ص ۴۰۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आप भी मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूदो सलाम की आदत बनाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता हो जाइये क्योंकि अच्छी सोहबत की बरकत से हमें न सिर्फ कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने का जज़्बा नसीब होगा बल्कि मीठे मीठे ग़म ख़्वार आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की सआदत भी हासिल होगी, कहा जाता है कि “ख़रबूजे को देख कर ख़रबूजा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोहबत में रह कर गुलाबी हो जाता है” इसी तरह दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर

आशिकाने रसूल की सोहबत में रहने वाला **عَزَّوَجَلَّ** और

उस के रसूल ﷺ की मेहरबानी से बे वक़अत पथ्थर भी अनमोल हीरा बन जाता, ख़ूब जगमगाता और ऐसी शान से पैके अजल को लब्बैक कहता है कि देखने, सुनने वाला (इस पर रश्क करता और) जीने के बजाए ऐसी मौत की आरजू करने लगता है। चुनान्चे, इसी ज़िम्न में एक मदनी बहार सुनिये और झूम उठिये।

वक़ते आख़िर अवशद की तक्शर

चकवाल (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के तहरीरी बयान का खुलासा है : मेरे तायाजान हाजी मुहम्मद नसीम अत्तारी जिन्होंने मेरी परवरिश की, अमीरे अहले सुन्नत **وَامَتْ بِرُكَاثُهُمُ الْعَالِيَةِ** से बे इन्तिहा महब्बत करते थे। और मदीनए मुनव्वरा **(زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا)** से तो उन की महब्बत का येह आलम था कि उन्होंने ने अपनी मुलाजमत के इख़िताम पर मिलने वाली तमाम रक़म सफ़रे हज़ व ज़ियारते मदीना में ख़र्च कर दी। जब मैं दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता हुवा तो मेरे सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ देख कर बहुत खुश होते और कहते कि आप को देख कर तो मदीने की याद आ जाती है। फैज़ाने सुन्नत का दर्स सुनते तो बे इख़्तियार रोने लगते। इन्तिकाल से एक हफ़्ते पहले मस्जिद में नमाज़ियों से कहने लगे कि “हो सकता है अगले हफ़्ते मुलाक़ात न हो।” ज़िन्दगी के आख़िरी

तीन दिन मैं ने उन्हें तीन विर्द कसरत से करते देखा (1) इस्तिगफ़ार

(2) कलिमा शरीफ़ (3) الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ उन्होंने ने

अपनी ज़िन्दगी की आखिरी रात मुझे जगाया और कहा कि वुजू

कर के आओ और मुझे सूरए यासीन सुनाओ, मैं ने हुक्म की

ता'मील की, सूरए यासीन सुन कर फ़रमाने लगे मुझे बहुत सुकून

हासिल हुवा है। 17 रमज़ानुल मुबारक सि.1426 हि. ब मुताबिक़

नवम्बर सि.2005 ई. को मैं ने एक जगह काम से जाना था। मैं

ने इजाज़त मांगी तो फ़रमाने लगे मत जाओ शायद फिर वापस

आना पड़े, जब सुब्ह हुई तो उन की आंखें छत पर टिकी हुई थीं

और पूरा जिस्म यहां तक कि बिस्तर भी पसीने से तरबतर था।

पांच मिनट तक उन पर बे होशी त़ारी रही फिर होश में आए और

कहने लगे “वक़्त बहुत कम है।” हम ने सोचा कि त़बीअत

ज़ियादा ख़राब है शायद इस लिये ऐसी बातें कर रहे हैं लिहाज़ा

हम उन्हें फ़ौरन अस्पताल ले गए, वहां पहुंच कर उन्होंने ने अस्पताल

में मौजूद लोगों को इकठ्ठा कर लिया और उन्हें कहा कि तुम भी

कलिमा पढ़ों मैं भी पढ़ता हूं। कुछ लोगों ने मज़ाक़ उड़ाना शुरूअ

कर दिया कि बाबा जी मरने का कह रहे हैं लेकिन लगता नहीं कि

येह मरेंगे, इस के बा'द तायाजान ने येह अल्फ़ाज़ कहे : “या

اَللّٰهُمَّ عَزَّوَجَلَّ एक बार फिर मदीने ले जा।” और फिर

कलिमा शरीफ़ और दुरूदो सलाम पढ़ते हुवे उन्होंने ने अपनी

जान जाने आफ़रीन के सिपुर्द कर दी। (إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ)

कुछ दिनों बा'द मुझ गुनहगार व बदकार को ख़्वाब में प्यारे आका **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ज़ियारत की सआदत नसीब हुई, आप के साथ मैं ने अपने तायाजान को भी देखा वोह फ़रमा रहे थे कि हाजी मुश्ताक **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق** भी यहीं तशरीफ़ फ़रमा होते हैं ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छी सोहबत अपना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज मुआशरे के नागुफ़्ता बेह हालात में गुनाहों का जोरदार सैलाब जिसे देखो बहाए लिये जा रहा है, ऐसे में **दा'वते इस्लामी** का मदनी माहोल किसी ने'मते उज़्मा से कम नहीं, इस से हर दम वाबस्ता रहिये **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से नेकियां करने, गुनाहों से बचने, **दुरूदो सलाम** की आदत बनाने और सुन्नतों पर अमल करने का ज़ेहन बनेगा । यकीनन जो शख़्स अच्छी सोहबत की बरकत से हुज़ूर जाने आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की इताअत व फ़रमां बरदारी करता रहे और अपनी सारी ज़िन्दगी आप की सुन्नतों की पैरवी में बसर करता रहे तो **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस खुश नसीब को जन्नत में आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का पड़ोस अता फ़रमाएगा । जैसा कि

सुन्नत पर अमल का शिला

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, नौशए बज़्मे जन्नत

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जिस ने मेरी

सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।”

(तारिख मदीने دمشق لابن عساکر، انس بن مالک، ۳۲۳/۹)

याद रखिये ! हुजुरे अक्दस **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** की सीरते मुबारका और आप की सुन्नते मुक़द्दसा की इत्तिबाअ और पैरवी हर मुसलमान पर वाजिब व लाज़िम है । रब्बुल इज़्ज़त **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ
فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ
وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ①

(प ३, अल عمران: ३१)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : (ऐ रसूल) फ़रमा दीजिये कि अगर तुम लोग **अल्लाह** से महब्बत करते हो तो मेरी इत्तिबाअ करो **अल्लाह** तुम को अपना महबूब बना लेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा और **अल्लाह** बहुत ज़ियादा बख़्शने वाला और रहम फ़रमाने वाला है ।

इसी लिये आस्माने उम्मत के चमकते दमकते सितारे, हिदायत के चांद तारे, रसूलुल्लाह के प्यारे सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** आप की हर हर सुन्नते करीमा की इत्तिबाअ को अपनी ज़िन्दगी के हर दम क़दम पर अपने लिये लाज़िमुल ईमान और वाजिबुल अमल समझते थे और बाल बराबर भी कभी किसी मुअ़ामले में अपने प्यारे रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** की मुक़द्दस सुन्नतों से इन्हीराफ़ या तर्क गवारा नहीं करते थे ।

इसी इश्के कामिल के तुफैल सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** को दुनिया में इख्तियार व इक्तिदार और आखिरत में इज्जत व वकार मिला। येह उन के इश्क का कमाल था कि मुश्किल से मुश्किल घड़ी, और कठिन से कठिन वक्त में भी उन्हें इत्तिबाए रसूल से मुंह फेरना गवारा न था। वोह हर मरहले में अपने महबूब आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का नक्शे पा ढूंडते और इसी को मशअले राह बना कर जादह पैमा रहते।

लहद में इश्के रुखे शह का दाग ले के चले

अन्धेरी रात सुनी थी चराग ले के चले

(हदाइके बख्शाश, स. 369)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **عَزَّوَجَلَّ** ने इन्सानों को ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीका बताया और दो रास्ते दिखाए, एक रास्ता **जन्नत** की तरफ़ जाता है और दूसरे की इन्तिहा **जहन्नम** है और **عَزَّوَجَلَّ** ने हमें सीधे रास्ते पर चलने और अच्छे तरीके पर ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की इताअत व फ़रमांबरदारी का पाबन्द बनाया और हुजूर सरापा नूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के किरदार को बेहतरीन नुमूनए अमल बताया। चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ

أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (प १०१, अहज़ाब: २१)

तर्जमए कन्जुल ईमान: बेशक तुम्हें

रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।

पेशकश: मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : “इन का अच्छी तरह इत्तिबाअ करो और दीने इलाही की मदद करो और रसूले करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का साथ न छोड़ो और रसूले करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों पर चलो येह बेहतर है।”

हज़रते जुनैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का कौल है कि कोई शख्स भी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तक उस की तौफ़ीक़ के बिग़ैर नहीं पहुंचा और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तक पहुंचने का रास्ता मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इक्तिदा व इत्तिबाअ है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इत्तिबाअ यकीनन हमारी ज़िन्दगी के हर गोशे में हमारे लिये मशअले राह है। जहां सुन्नत पर अमल करने में सवाब मिलता है वहीं इस के कसीर दुन्यवी फ़वाइद भी हैं। खाने से पहले दोनों हाथ पहुंचों तक धो लेना सुन्नत है, मुंह का अगला हिस्सा धोना और कुल्ली भी कर लेना चाहिये। चूंकि हाथों से जुदा जुदा काम किये जाते हैं और वोह मुख़लिफ़ चीज़ों से मस होते हैं लिहाज़ा उन पर मैल कुचेल और कई तरह के जरासीम लग जाते हैं। खाने से पहले हाथ धो लेने से इन की सफ़ाई हो जाती और इस सुन्नत की बरकत के सबब हमें कई बीमारियों से तहफ़ुज़ भी हासिल हो जाता है। खाने से पहले धोए हुवे हाथ न पोंछे जाएं कि तोलिया वग़ैरा के जरासीम हाथों में लग सकते हैं।

ड्राइवर की पुर अस्शर मौत

कहा जाता है कि एक ट्रक ड्राइवर ने होटल में खाना खाया और खाने के फ़ौरन बा'द तड़प तड़प कर मर गया। दूसरे कई लोगों ने भी उस होटल में खाना खाया मगर उन्हें कुछ भी न हुआ। तहकीक़ शुरूअ हुई, किसी ने बताया कि ड्राइवर ने खाने से क़ब्ल (पहले) होटल के करीब ट्रक के टायर चेक किये थे, फिर हाथ धोए बिग़ैर उस ने खाना खाया था। चुनान्चे, ट्रक के टायरों को चेक किया गया तो इन्किशाफ़ हुआ कि पहिये के नीचे एक ज़हरीला सांप कुचला गया था जिस का ज़हर टायर पर फैल गया और वोह ड्राइवर के हाथों पर लग गया, हाथ न धोने के सबब खाने के साथ वोह ज़हर पेट में चला गया जो कि ड्राइवर की फ़ौरी मौत का सबब बना !!!

अल्लाह की रहमत से सुन्नत में शराफ़त है
सरकार की सुन्नत में हम सब की हिफ़ाज़त है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** हमें हुज़ूर जाने अलम
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महबूबत में आप
दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और आप की
सुन्नतों पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



भूली हुई चीज़ याद आ जाएगी

शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, साहिबे जूदो नवाल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने बा कमाल है :
إِذَا نَسِيتُمْ شَيْئًا فَصَلُّوا عَلَيَّ تَذَكُّرُوهُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ जब तुम किसी चीज़ को भूल जाओ तो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ो वोह चीज़ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें याद आ जाएगी ।”
 (जलाउल अफ़हाम, स. 238)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हदीसे पाक से मा'लूम हुवा कि दुरूदे पाक ऐसा बेहतरीन वज़ीफ़ा है कि इस की बरकत से भूली हुई चीज़ें याद आ जाती हैं । हमें भी हुजुरे पाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते तय्यिबा पर ज़ियादा से ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ने की आदत बना लेनी चाहिये इस का फ़ाइदा येह होगा कि अगर किसी को निस्यान (भूलने) का मरज़ हुवा भी तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से दूर हो जाएगा । जैसा कि

हाफ़िज़ा मजबूत करने वाला दुल्ह

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ **419** सफ़हात पर मुश्तमिल “मदनी पंज सूरह” के सफ़हा **169** पर है : “अगर किसी शख्स को निस्यान या'नी

भूल जाने की बीमारी हो तो वोह मग़रिब और इशा के दरमियान इस दुरूदे पाक को कसरत से पढ़े **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हाफ़िज़ा क़वी हो जाएगा ।”

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ ﷺ النَّبِيِّ

الْكَامِلِ وَعَلَى آلِهِ كَمَا لَا نِهَآيَةَ لِّكَمَالِكَ وَعَدَدُ كَمَالِهِ

دुरूदे पाक की किस क़दर बरकतें हैं कि इस से हाफ़िज़ा क़वी होने के साथ दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां भी हासिल होती हैं । वोह इस्लामी भाई जो दीनी या दुन्यवी किसी भी शो'बे से मुन्सलिक हैं चाहे असातिज़ा हों या तलबा अगर उन्हें कमज़ोरिये हाफ़िज़ा की शिकायत है तो वोह खुलूस व महबूबत के साथ सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दुरूदे पाक पढ़ने को रोज़ो शब का वज़ीफ़ा बना लें **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ढेरों फ़वाइद के साथ साथ उन की याद दाश्त में भी इज़ाफ़ा होगा ।

कुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ाने के पांच मढ़नी फूल

बिला शुबा अस्बाक़ को याद करने में हाफ़िज़ा बुन्यादी अहम्मियत रखता है बल्कि इस की कमज़ोरी को इल्म के लिये आफ़त क़रार दिया गया है जैसा कि मशहूर है **“أَفَّةُ الْعِلْمِ النَّسْيَانُ”** या'नी भूल जाना इल्म के लिये आफ़त है ।” लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपनी कुव्वते हाफ़िज़ा को मज़बूत से मज़बूत तर करने की कोशिश करें । इस जिम्न में दर्जे ज़ैल उमूर पेशे नज़र रखना बेहद मुफ़ीद साबित होगा :

(1) सब से पहले **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में अपने हाफ़िज़े की मज़बूती के लिये दुआ करें कि दुआ मोमिन का हथियार है। यह दुआ इस तरह भी की जा सकती है, (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) पढ़ कर रब **عَزَّوَجَلَّ** की हम्द बयान करने और रहमते अलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूदे पाक** पढ़ने के बा'द यूँ अर्ज़ करें :
 ऐ मेरे मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** तेरा आजिज़ बन्दा तेरी बारगाह में हाज़िर है, या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मैं तेरे दीन का इल्म हासिल करना चाहता हूँ लेकिन मेरी याद दाश्त मेरा साथ नहीं देती, ऐ हर शै पर कादिर रब **عَزَّوَجَلَّ** तू अपनी कुदरते कामिला से मेरे कमज़ोर हाफ़िज़े को क़वी फ़रमा दे और मुझे भूल जाने की बीमारी से नजात दे दे।

(2) अगर हो सके तो हर वक़्त बा वुजू रहने की कोशिश करें। इस का एक फ़ाइदा तो यह होगा कि हमें सुन्नत पर अमल का सवाब मिलेगा जब कि दूसरा फ़ाइदा यह हासिल होगा कि हमें खुद ए'तिमादी की दौलत नसीब होगी और एहसासे कमतरी हमें छूने भी न पाएगा जो कि हाफ़िज़े के लिये शदीद नुक़सान देह है।

(3) अपनी सिहहत का खास तौर पर ख़याल रखें। कहीं ऐसा न हो कि हर वक़्त पढ़ते रहने की बिना पर इतने कमज़ोर हो जाएं की इधर ज़रा सी सर्द हवा चली तो उधर जुकाम और बुख़ार ने आन घेरा, और न ही इतना वज़्ज बढ़ा लें कि नींद और सुस्ती

से दामन छुड़ाना दुश्वार हो जाए। इस के इलावा खाने पीने में भी एहतियात ज़रूरी है कि चिकनाई वाली, खट्टी और बलगम पैदा करने वाली अश्या से दूर रहें कि येह हाफ़िजे को शदीद नुक़सान पहुंचाती हैं। बलगम के इलाज के लिये मौसिम की मुनासबत से रोज़ाना या वक्फ़े वक्फ़े से मुठ्ठी भर किश्मिश (सोगी) खाना बेहद मुफ़ीद है जैसा कि **शैख़े तरीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** फ़रमाते हैं : “**बलगम** और जुकाम के इलाज के सिलसिलें में जो फ़ाइदा किश्मिश ने दिया किसी दवा ने भी नहीं दिया।” (मदनी मुज़ाकरा : केसिट नम्बर 124)

(4) फुज़ूल गुफ़्तगू से परहेज़ करते हुवे ज़बान का **कुफ़्ले मदीना** लगाएं इस का फ़ाइदा येह होगा कि ज़बान जितनी कम इस्ति'माल होगी ज़ेहन की तवानाई उतनी ज़ियादा महफूज़ रहेगी और येह तवानाई सबक़ याद करने के वक़्त हमारे काम आएगी।

(5) निगाहें नीची रखने की सुन्नत पर अमल करते हुवे आंखों का **कुफ़्ले मदीना** लगाएं, ग़ैर ज़रूरी और गुनाहों भरे खयालात से भी बचते रहिये। इस का भी येही फ़ाइदा होगा कि हमारे ज़ेहन की तवानाई महफूज़ रहेगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

याद रखिये ! कुव्वते हाफिज़ा काइम रखने और ज़ेहनी सुकून हासिल करने की गरज़ से मुनासिब मिक्दार में कुछ घन्टे की नींद भी इन्तिहाई ज़रूरी है। कहीं ऐसा न हो कि पहले पहल तो पढ़ाई के जोश में नींद को फ़रामोश कर बैठें लेकिन चन्द दिनों के बा'द थकावट का एहसास आप के दिलो दिमाग़ को ऐसा घेरे कि थोड़ी सी देर पढ़ने के बा'द ज़ेहन पर गुनूदगी छाने लगे और आप नींद की आगोश में जा पड़ें।

नींद के (मज़कूरा बाला इलाज के) बा'द मुकम्मल तौर पर ताज़ा दम होने के लिये हुसूले सवाब की निय्यत से बा वुजू सोने की आदत बनाएं और सोने से पहले तस्बीहे फ़ातिमा **33** मरतबा **سُبْحَانَ اللَّهِ**, **33** मरतबा **الْحَمْدُ لِلَّهِ** (या'नी **33** मरतबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** और **34** मरतबा **اللَّهُ أَكْبَرُ** पढ़ लें)

अगर आराम करने के बा'द भी पढ़ाई के दौरान नींद का ग़लबा होने की शिकायत हो तो रोज़ाना लीमूं मिले एक गिलास पानी में एक चम्मच शहद मिला कर पी लेना बेहद मुफ़ीद है। शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** फ़रमाते हैं कि ख़िलाफ़े मा'मूल नींद का आना जिगर की कमज़ोरी पर दाल (दलालत करता) है और इस का इलाज येह है कि लीमूं वाले पानी में शहद का एक चम्मच नहार मुंह इस्ति'माल करें **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाइदा होगा।

(मदनी मुज़ाकरा : केसिट नम्बर **124**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

इल्म को महफूज़ रखने का तरीका

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन की बात सुन कर इसे याद रखने का बेहतरीन तरीका येह भी है कि इसे लिख कर दोहरा लेने के बा'द वक़्तन फ़ वक़्तन किसी दूसरे इस्लामी भाई को ज़बानी सुना कर महफूज़ तरीन बना लीजिये कि एक दूसरे को सुना कर याद करना सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** की सुन्नत भी है । जैसा कि

हज़रते सय्यिदुना अनस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : “हम लोग रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के इरशादात सुनते थे । फिर जब मदनी आका **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मजलिस से तशरीफ़ ले जाते तो हम आपस में (आप **عَلَيْهِ السَّلَام** की ज़बाने अक्दस से निकलने वाले इरशादात का) बित्तरतीब (बारी बारी) दौर करते । जब हम वहां से उठते तो हृदीसें हमें इस तरह याद होतीं कि गोया हमारे दिलों में बो दी गई हैं ।”

(مجمع الزوائد، كتاب العلم، باب في مدارس العلم ومذاكرته، ٣٩٤/١، حديث: ٧٣٤، ملخصاً)

हज़रते सय्यिदुना मुआविय्या **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** अपना आंखों देखा हाल बयान करते हैं कि सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** फ़र्ज़ नमाज़ों के बा'द मस्जिदे नबवी में बैठ कर हृदीसे पाक का मुज़ाकरा किया करते (या'नी एक दूसरे को सुनाया करते थे) ।

(مستدرک، کتاب العلم، ٢٨٥/١، حديث: ٣٢٦، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

कमजोरिये हाफिजे का सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हाफिजे की कमजोरी का एक सबब हमारी गुनाहों भरी ज़िन्दगी भी है। कहा जाता है **النَّسِيَانُ مِنَ الْوَعْيَانِ** (या'नी निस्यान इस्यान के बाइस हुवा करता है।) अगर हम अपनी ज़िन्दगी गुनाहों में बसर करते रहे तो इस की नूहुसत की वजह से जहां **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की नाराज़ी मौल लेनी पड़ेगी वहीं **कमजोरिये हाफिज़ा** का नुक्सान भी उठाना पड़ेगा। लिहाज़ा ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुवे जल्द ही गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा कीजिये और ज़िक्रो दुरूद की कसरत से रब को राज़ी कर लीजिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़रूर करम हो जाएगा।

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي** फ़रमाते हैं : अगर तुम जल्द तौबा करोगे तो उम्मीद है कि अज़क़रीब गुनाहों पर इसरार करने के **मरज़** का तुम्हारे दिल से क़ल्अ क़म्अ (या'नी ख़ातिमा) हो जाए और गुनाहों की नूहुसत का बोझ तुम्हारी गर्दन से उतर जाए और गुनाहों की वजह से जो क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) पैदा होती है इस से हरगिज़ बेख़ौफ़ न हो। बल्कि हर वक़्त अपने दिल पर निगाह रखो, क्यूंकि बा'ज़ सालिहीन **رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن** ने फ़रमाया है : “बेशक गुनाह करने से **दिल सियाह** (काला) हो जाता है, और दिल की सियाही की अ़लामत येह होती है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती, ताअत (या'नी इबादत) के लिये मौक़अ नहीं मिलता, नसीहत से कोई फ़ाइदा नहीं होता (या'नी नसीहत व बयान सुन कर दिल पर असर नहीं होता)। ऐ अज़ीज़ ! किसी गुनाह को मा'मूली ख़याल

न कर और कबीरा गुनाहों पर इसरार करने के बा वुजूद अपने आप को ताइब (या'नी तौबा करने वाला) गुमान न कर ।”

(गीबत की तबाह कारियां, स. 429)

मैं कर के तौबा पलट कर गुनाह करता हूं
हकीकी तौबा का कर दे शरफ़ अता या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स.93)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़तावा रज़विyyा जिल्द 26 सफ़्हा : 605 पर हमारे लिये निस्नान से महफूज़ रहने का मुजर्रब अमल इरशाद फ़रमाते हैं : “दफ़्ए निस्नान (भूलने की बीमारी से नजात) के लिये 17 बार सूरए الْمَنْشَرُ हर शब (रात) सोते वक़्त पढ़ कर सीने पर दम करना और सुब्ह 17 बार पानी पर दम कर के क़दरे पीना और चीनी की रिकाबी (प्लेट) पर येह हुरूफ़ اَهْظَمْ فَش लिख कर पिलाना नाफ़ेअ (फ़ाइदा मन्द) है। और चालीस रोज़ सफ़ेद चीनी (के बरतन) पर मुश्क व जा'फ़रान व गुलाब से लिख कर आबे ताज़ा से महव (या'नी धो) कर पियें। (फिर) तस्मिय्या (या'नी بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ने) के बा'द (पढ़ें)”

(फ़तावा रज़विyyा, 26/606)

हैरत अंगेज़ कुव्वते हाफ़िज़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये कि
कुव्वते हाफ़िज़ा को बढ़ाने का मज़कूरा तरीक़ा तो आ'ला

हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने बतौर ख़ास हम इस्यां के मरीज़ों के लिये तजवीज़ फ़रमाया है क्यूंकि खुद इन की **कुव्वते हाफ़िज़ा** का तो येह आलम था कि बड़े बड़े उक़ला आप के हाफ़िज़े का लोहा मानते थे । चुनान्वे,

हज़रते अबू हामिद सय्यिद मुहम्मद मुहद्दिसे कछौछवी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيزِ** फ़रमाते हैं : “तकमीले जवाब के लिये **जुज़इय्याते फ़िक्ह** की तलाशी में जो लोग थक जाते वोह आ’ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की ख़िदमत में अर्ज़ करते और हवाला जात त़लब करते तो (याद दाश्त की बुन्याद पर) उसी वक़्त आप फ़रमा देते कि “**रहुल मोहूतार**” ज़िल्द फुलां के फुलां सफ़हा पर फुलां सतर में इन अल्फ़ाज़ के साथ जुज़इय्या मौजूद है । “**दुर्रे मुख़्तार**” के फुलां सफ़हे पर फुलां सतर में इबारत येह है । “**आलमगीरी**” में ब कैद जिल्द व सफ़हा व सतर येह अल्फ़ाज़ मौजूद है । “**हिन्दिय्या**” में “**ख़ैरिय्या**” में “**मब्सूत**” में एक एक किताब फ़िक्ह की अस्ल इबारत मअ सफ़हा व सतर बता देते और जब किताबों में देखा जाता तो वोही सफ़हा व सतर व इबारत पाते जो ज़बाने आ’ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया था । इस को हम ज़ियादा से ज़ियादा येही कह सकते हैं कि **ख़ुदादाद कुव्वते हाफ़िज़ा** से चौदह सो साल की किताबें हिफ़ज़ थीं ।”

(हयाते आ’ला हज़रत, स.1/210 मुलख़ब्रसन)

शिर्फ़ एक माह में हिफ़ज़े कु़रआन

हज़रते जनाब सय्यिद अय्यूब अली साहिब **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का बयान है कि एक रोज़ आ’ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने इरशाद

फरमाया : “बा’ज नावाकिफ़ हज़रात मेरे नाम के आगे हाफ़िज़ लिख दिया करते हैं, हालांकि मैं इस लक़ब का अहल नहीं हूँ।”

सय्यिद अय्यूब अली साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “आ’ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उसी रोज़ से दौर शुरूअ कर दिया जिस का वक़्त ग़ालिबन ईशा का वुजू फ़रमाने के बा’द से जमाअत काइम होने तक मख़सूस था। रोज़ाना एक पारह याद फ़रमा लिया करते थे, यहां तक कि तीसवें रोज़ तीसवां पारह याद फ़रमा लिया।” एक मौक़अ पर फ़रमाया : “بِحَمْدِ اللهِ मैं ने कलामे पाक बित्तरतीब ब कोशिश याद कर लिया और येह इस लिये कि उन बन्दगाने खुदा का (जो मेरे नाम के आगे हाफ़िज़ लिख दिया करते हैं) कहना ग़लत साबित न हो।”

(हयाते आ’ला हज़रत, स.1/208 मुलतक़तन व मुलख़ब़सन)

इल्म का चश्मा हुवा है मोजिज़न तहरीर में

जब क़लम तू ने उठाया ऐ इमाम अहमद रज़ा

हश्र तक जारी रहेगा फ़ैज़ मुर्शिद आप का

फ़ैज़ का दरया बहाया ऐ इमाम अहमद रज़ा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे ﷺ हमें हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और दुरूदे पाक की बरकत से हमें कुव्वते हाफ़िज़ा की दौलत से मालामाल फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



बयान नम्बर : 57

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नज़रे रहमत

नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत है : बेशक जो मुझ पर दुरूद पढ़ेगा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाएगा और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** जिस की तरफ़ नज़रे रहमत से देखेगा उसे कभी अज़ाब में मुब्तला नहीं फ़रमाएगा ।
(افضل الصلوة، ص १९८)

सुसुर रहता है कैफ़े दवाम रहता है

लबों पे मेरे दुरूदो सलाम रहता है

बरी हैं नारे जहन्नम से वोह खुदा की क़सम !

कि जिन को ज़िक्रे मुहम्मद से काम रहता है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने जो शख्स नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ता है **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस खुश नसीब पर रहमत की नज़र फ़रमाता है और उसे अज़ाब से महफूज़ रखता है लिहाज़ा हमें भी हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ते रहना चाहिये कि इस की बरकत से हमें बे शुमार फ़वाइद हासिल होते हैं । जैसा कि

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अरबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरशाद फ़रमाते

हैं : “हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ने का फ़ाइदा खुद पढ़ने वाले को होता है क्यूंकि

येह बात अच्छे अक्कीदे, ख़ालिस निय्यत, इज़हारे महब्बत, हमेशा फ़रमां बरदार रहने और सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के वासितए मुबारका को मोहतरम जानने पर रहनुमाई करती है।”

(المواهب اللدنية، المقصد السابع، الفصل الثانی فی حکم الصلاة علیه والتسليم..... الخ، ٦/٢، ٥٠)

याद रखिये ! जब भी हुज़ूर जाने अलाम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का ज़िक्रे ख़ैर सुनें या पढ़ें तो दुरूदो सलाम इकठ्ठे पढ़ना चाहिये कि इस से **اَبَّاااا** **عَزَّوَجَلَّ** के इरशाद **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا** (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालों उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो)” पर अमल भी हो जाएगा और दुरूदे पाक की बरकात के साथ साथ सलाम भेजने के फ़वाइदो समरात भी हासिल होंगे। सिर्फ़ दुरूद या सिर्फ़ सलाम पर इक्तिफ़ा नहीं करना चाहिये कि ऐसा करना मकरूह है।

उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इस बात की सराहत करते हुवे फ़रमाते हैं : “दुरूदो सलाम को तर्क करना या इन में से किसी एक पर इक्तिफ़ा करना मकरूह है।” बा’जू के नज़दीक यहां मकरूह से मुराद ख़िलाफ़े औला (या’नी वोह अमल जिस का न करना बेहतर) है जो कि मकरूह नहीं। क्यूंकि दुरूदो सलाम पढ़ना बाइसे अज़्र है और दोनों के तर्क करने या किसी एक के तर्क करने से हासिल होने वाला अज़्रो सवाब नहीं मिलता और येह औला व अफ़ज़ल शै का तर्क है। लिहाज़ा हमें इख़्तिफ़ा से बचते हुवे दुरूद और सलाम दोनों ही पढ़ लेने चाहियें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी हुजूर

ﷺ पर दुरुदो सलाम पढ़ने की सआदत नसीब हो तो आप ﷺ पर दुरुद भेजने के ज़िम्न में आप की आल व अस्हाब पर भी दुरुदे पाक पढ़ लेना चाहिये कि ग़ैरे नबी पर ब तबर्इय्यत दुरुद पढ़ना बिल इजमाअ (या'नी बिल इत्तिफ़ाक़) जाइज़ है। इस बारे में दारुल इफ़ता का फ़तवा मुलाहज़ा हो।

ग़ैरे नबी पर दुरुद भेजने से मुतअल्लिक़ फ़तवा

क्या फ़रमाते हैं उ-लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरण मतीन इस मस्अले में कि ग़ैरे नबी पर सलाम पढ़ना कैसा है ?

साइल : मुहम्मद शौकत कादिरि अत्तारी (सरजानी टाउन)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْجَوَابُ بِعَوْنِ الرَّحْمَنِ الْوَهَّابِ اللَّهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

अम्बिया ﷺ और फ़िरिश्तों के इलावा किसी और के नाम के साथ ﷺ इस्तिक़लालन या इब्तिदाअन लिखना या बोलना शरण दुरुस्त नहीं है। उ-लमा ने इसे अम्बियाए किराम ﷺ के साथ ख़ास लिखा है। चुनान्वे, सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका मुफ़ती अमजद अली आ'ज़मी ﷺ फ़रमाते हैं : “किसी के नाम के साथ ﷺ कहना, यह अम्बिया व

मलाइका ﷺ के साथ ख़ास है। मसलन मूसा ﷺ,

जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام । नबी और फिरिश्ते के सिवा किसी दूसरे के नाम के साथ यूं न कहा जाए ।” (बहारे शरीअत, 3/465)

अलबत्ता इन की तबइय्यत में गैरे नबी पर दुर्दो सलाम भेजा गया हो तो इस के जाइज होने में कोई शक नहीं । चुनान्चे, फ़कीहे मिल्लत हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती जलालुद्दीन अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي लिखते हैं : “येह मस्अला मुख़लिफ़ फ़ीह है । जमहूर उ-लमा का मज़हब येह कि इस्तिक्लालन व इब्तिदाअन नहीं जाइज और इत्तिबाअन जाइज है या’नी इमामे हुसैन عَلَيْهِ السَّلَام कहना जाइज नहीं है और इमामे हुसैन عَلَيْهِ السَّلَام जाइज है । (फ़तावा फैजुरसूल, 1/267)

हज़रते अल्लामा मुहद्दिस बदरुद्दीन ऐनी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ लिखते हैं :

”وَقَالَ أَبُو حَنِيفَةَ وَأَصْحَابُهُ وَمَالِكٌ وَالشَّافِعِيُّ وَالْأَكْثَرُونَ أَنَّهُ لَا يُصَلِّي عَلَى غَيْرِ الْأَنْبِيَاءِ عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ اسْتِقْلَالًا، فَلَا يُقَالُ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى آلِ أَبِي بَكْرٍ أَوْ عَلَى آلِ عُمَرَ أَوْ غَيْرِهِمَا وَلَكِنْ يُصَلِّي عَلَيْهِمْ تَبَعًا“
(عمدة القارى، كتاب الزكاة، باب صلاة الامام ودعائه لصاحب الصدقة وقوله ٥٥٦/١)

मशहूर शाफेई बुजुर्ग हज़रते इमाम मुहिय्युद्दीन नववी

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي लिखते हैं :

لَا يُصَلِّ عَلَى غَيْرِ الْأَنْبِيَاءِ إِلَّا تَبَعًا لِأَنَّ الصَّلَاةَ فِي لِسَانِ
السَّلَفِ مَخْصُوصَةٌ بِالْأَنْبِيَاءِ صَلَوَاتُ اللَّهِ وَسَلَامُهُ عَلَيْهِمْ كَمَا أَنَّ قَوْلَنَا
”عَزَّوَجَلَّ“ مَخْصُوصٌ بِاللَّهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى فَكَمَا لَا يُقَالُ مُحَمَّدٌ
عَزَّوَجَلَّ وَإِنْ كَانَ عَزِيزًا جَلِيلًا لَا يُقَالُ أَبُو بَكْرٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَإِنْ صَحَّ الْمَعْنَى (إِلَى أَنْ قَالَ) وَاتَّفَقُوا عَلَى أَنَّهُ يَجُوزُ أَنْ يُجْعَلَ غَيْرُ
الْأَنْبِيَاءِ تَبَعًا لَهُمْ فِي ذَلِكَ فَيُقَالُ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ
مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ وَاتَّبَاعِهِ لِأَنَّ السَّلَفَ لَمْ يَنْعُوا مِنْهُ وَقَدْ أَمَرْنَا
بِهِ فِي التَّشْهِدِ وَغَيْرِهِ قَالَ الشَّيْخُ أَبُو مُحَمَّدٍ الْجَوِينِيُّ مِنْ أَئِمَّةِ أَصْحَابِنَا
السَّلَامُ فِي مَعْنَى الصَّلَاةِ وَلَا يُفْرَدُ بِهِ غَيْرُ الْأَنْبِيَاءِ لِأَنَّ اللَّهَ تَعَالَى
قَرَنَ بَيْنَهُمَا وَلَا يُفْرَدُ بِهِ غَائِبٌ وَلَا يُقَالُ قَالَ فَلَا تُعَلِّمُهُ السَّلَامُ“

(شرح مسلم للنووي، باب الدعاء لمن أتى بصدقته، ١/٨٥، الجزء السابع)

इन दोनों इबारतों का खुलासा यह है कि इमाम अबू
हनीफ़ा, इन के अस्थाब, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और अकसर
उ-लमा का क़ौल यह है कि ग़ैरे नबी पर इस्तिक़लालन सलात
नहीं पढ़ी जाएगी, अलबत्ता तबअन पढ़ी जा सकती है। या'नी
यूं नहीं कहा जाएगा : اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى أَبِي بَكْرٍ अलबत्ता यूं कहा जा
सकता है اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَبِي بَكْرٍ इस के जवाज़ और अदमे
जवाज़ की दलील सलफ़े सालिहीन का अमल है, और जवाज़े

बित्तबअ की दलील तशहहद वगैरा दीगर मक़ामात भी हैं जहां बित्तबअ पढ़ने का हुक्म है। इमामुल हरमैन हज़रते इमाम जुवैनी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया कि सलाम भी इस हुक्म में सलात के मा'ना में है।

सय्यिदी आ'ला हज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अश्शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** इरशाद फ़रमाते हैं : सलातो सलाम बिल इस्तिक़लाल अम्बिया व मलाइका **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के सिवा किसी के लिये रवा नहीं, हां ब तबइय्यत जाइज़ जैसे **اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ** और सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के लिये **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** कहा जाए, औलिया व उ-लमा को **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ** या **قَدْ سَتِ اسْرَارُهُمْ** और अगर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** कहे जब भी कोई मुज़ायका नहीं।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/390)

وَاللَّهُ أَعْلَمُ وَرَسُولُهُ عَزَّ وَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ

अल जवाब सहीह

अब्दुल मुज़निब अबुल हसन फुज़ैल रज़ा अल अत्तारी **عفا عنه الباری**

कतबा

मुहम्मद हस्सान रज़ा अल अत्तारियुल मदनी

20 मुहर्रमुल हराम सि. 1432 हि. 27 दिसम्बर सि. 2010 ई.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूद शरीफ पढ़ना एक अज़ीम इबादत है। बुजुर्गाने दीन ने इस को पढ़ने की जो हिकमतें बयान फ़रमाई हैं उस का खुलासा येह है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** जुम्ला मख़्लूक़ात में सब से ज़ियादा करीम व रहीम, शफ़ीक़ व अज़ीम हैं। आप के मोमिनों पर सब से ज़ियादा एहसानात हैं इस लिये मोहसिने आ'ज़म के एहसान के शुक्रिय्या में हम पर दुरूद पढ़ना मुक़रर किया गया है। इस लिये हमें भी चाहिये कि बकसरत **दुरूदे पाक** पढ़ा करें **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से **اَللّٰهُ** की रहमत व सलामती हमारा मुक़द्दर बनेगी। जैसा कि

रब ए़ज़्ज़ल का सलाम

सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : “जिब्रईल (عليه السلام) ने मुझ से अज़ की, कि रब तआला फ़रमाता है : ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा उम्मत तुम पर एक बार दुरूद भेजे, मैं उस पर दस रहमतें नाज़िल करूंगा और आप की उम्मत में से जो कोई एक सलाम भेजे, मैं उस पर दस सलाम भेजूंगा।” (مشكاة، کتاب الصلاة، باب الصلاة على النبي وفضلها، ۱/۸۹، حديث: ۹۲۸)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عليه رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** फ़रमाते हैं : “रब (ए़ज़्ज़ल) के सलाम भेजने से मुराद तो ब ज़रीअए मलाइका उसे सलाम कहलवाना है या आफ़तों और मुसीबतों से सलामत रखना।” (मिरआत, 2/102)

अब्बाह तआला का अपने बन्दों पर सलाम भेजना दीगर अहादीसे मुबारका से भी साबित है, जैसा कि

हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रहूमतुल्लिल आलमीन **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह में हज़रते जिब्रईले अमीन **عَلَيْهِ السَّلَام** अर्ज गुज़ार हुवे : “या रसूलल्लाह (**صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**) येह ख़दीजा (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا**) हैं जो एक बरतन ले कर आ रही हैं जिस में सालन और खाने पीने की चीजें हैं। जब येह आप के पास आ जाएं तो इन्हें इन के रब **عَزَّوَجَلَّ** का और मेरा सलाम कहिये।”

(بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب تزویج النبی خدیجة وفضلها، ۲/۵۶۰، حدیث: ۳۸۲۰)

हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** से मरवी है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जब शबे क़द्र आती है तो सिद्रतुल मुन्ताहा में रहने वाले फ़िरिश्ते अपने साथ चार झन्डे ले कर उतरते हैं। हज़रते जिब्रईल (**عَلَيْهِ السَّلَام**) भी इन के साथ होते हैं। इन में से एक झन्डा मेरे दफ़्न की जगह पर, एक तूरे सीना पर, एक मस्जिदे ह़राम पर और एक बैतुल मुक़द्दस पर नस्ब करते हैं, फिर वोह हर मोमिन और मोमिना के घर दाख़िल हो कर उन्हें कहते हैं : “ऐ मोमिन मर्द और औरत ! **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें सलाम भेजता है।”

(تفسیر قرطبی، ۳۰، القدر، تحت الآیة: ۵، ۹۴/۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की

रहमत और उस की सलामती पाने के लिये **दुरूदे पाक** एक बेहतरीन वज़ीफ़ा है इस की बरकतें दुन्या में तो हासिल होती रहती हैं मरने के बा'द भी येह हमारे लिये ज़रीअए नजात बन सकता है, जैसा कि

कसरते दुख्ख ने हलाकत से बचा लिया

हज़रते सय्यिदुना शैख़ हुसैन बिन अहमद कव्वाज़ बिस्तामी **قُدَسَ سِرُّهُ الْتَّوَرَانِي** ने फ़रमाया : मैं ने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से येह दुआ की : “या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मैं ख़्वाब में अबू सालेह मुअज़्ज़िन को देखना चहता हूं।” चुनान्चे, मेरी दुआ क़बूल हुई और मैं ने ख़्वाब में उन्हें अच्छी हालत में देख कर पूछा : “ऐ अबू सालेह मुझे अपने यहां के हालात की ख़बर दीजिये।” तो फ़रमाया : “ऐ अबल हसन ! अगर सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते गिरामी पर **दुरूदे पाक** की कसरत न की होती तो मैं हलाक हो गया होता।” (152 रहमत भरी हिकायात)

मुश्किलें उन की हल हुई किस्मतें उन की खुल गई

विर्द जिन्हों ने कर लिया सल्ले अला मुहम्मद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें हज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और इसे हमारे लिये नजात का ज़ामिन बना ।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

परेशानी दूर करने का वज़ीफ़ा

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते

हैं : “जिस ने सुब्हो शाम सात सात मरतबा पढ़ा :

حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

(मुझे **अल्लाह** काफ़ी है उस के इलावा कोई इबादत के लाइक नहीं, मैं उसी पर तवक्कुल करता हूं और वोही अर्शे अज़ीम का रब है ।) **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस की तमाम हक़ीक़ी और ख़याली परेशानियों में किफ़ायत करेगा ।”

(अबु दाउद, ४११/४, حديث: ५०८१)



बयान नम्बर : 58

हुजूर हमारे नाम जानते हैं

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अज़मत निशान है : **إِنَّكُمْ تُعَرَّضُونَ عَلَى بِأَسْمَائِكُمْ وَسِيمَائِكُمْ** : या'नी बेशक तुम्हारे नाम मअ शनाख़्त मुझ पर पेश किये जाते हैं **فَأُخْسِنُوا الصَّلَاةَ عَلَى** लिहाज़ा मुझ पर अहसन (या'नी ख़ूब सूरत) अल्फ़ाज़ में दुरूदे पाक पढ़ो ।

(مصنف عبدالرزاق، باب الصلاة على النبي، ١٢٠/٢، حديث: ٣١١٦)

या शफ़ीअल वरा सलामुन अलैक

या नबिय्यल हुदा सलामुन अलैक

खातमुल अम्बिया सलामुन अलैक

सय्यिदुल अस्फ़िया सलामुन अलैक

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी हुजूर जाने अ़लाम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदे पाक पढ़ने की सआदत नसीब हो तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ता'ज़ीम व तौक्कीर में अच्छे अच्छे अलकाब व अल्फ़ाज़ के साथ झूम झूम कर दुरूदे पाक पढ़ना चाहिये । अब वोह अल्फ़ाज़ चाहे अहादीसे मुबारका में मज़कूर हों या न हों अगर ऐसे अल्फ़ाज़ के साथ दुरूदो सलाम पढ़ने से हुजूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की अज़मत व रिफ़अत में

इज़ाफ़ा होता है तो यह बेहतर और अफ़ज़ल अमल है जैसा कि अल्लामा मुहम्मद महदी फ़ासी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي “मतालिलुल मसरत शर्हे दलाइलुल ख़ैरात” में फ़रमाते हैं : “दुरूद शरीफ़ में लफ़्जे सय्यिदुना मौलाना वग़ैरा अल्फ़ाज़े ता’जीम व तौकीर का लाना जाइज़ और बेहतर है, नमाज़ के अन्दर और बाहर हर जगह इस का इस्ति’माल किया जाए। अलबत्ता कुरआने पाक की आयत या किसी रिवायत में जिस तरह वाक़ेअ है उसी तरह पढ़ा जाए।”

(مطالع المسرات شرح دلائل الخيرات، ص ३३२)

एक वश्वशा और इस का जवाब

इस गुफ़्तगू को सुन कर किसी इस्लामी भाई के ज़ेहन में यह ख़याल आ सकता है कि जो अल्फ़ाज़ अह़ादीसे मुबारका में वारिद हुवे हैं उन्हीं अल्फ़ाज़ से दुरूदे पाक पढ़ना चाहिये कि यह अफ़ज़ल है जब कि ग़ैर मासूर दुरूदे पाक (या’नी दुरूदे पाक के वोह सीगे जो अह़ादीसे करीमा में मज़कूर नहीं हैं उन का) पढ़ना या कुछ अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा करना दुरूस्त नहीं।

हज़रते अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قَدِيسَ سِرُّهُ التُّورَانِ इस का जवाब इरशाद फ़रमाते हैं : “बिला शुबा दुरूदो सलाम के वोह अल्फ़ाज़ जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित हैं वोही दूसरे दुरूदों से अफ़ज़ल हैं, लेकिन वोह दुरूद शरीफ़ जो बा’ज़ सहाबए किराम या बा’द के औलिया, अरिफ़ीन या उ-लमाए अमिलीन رَضَوْنَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ से मन्कूल हैं और इन में कुछ ज़ाइद अल्फ़ाज़ भी हैं, जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से

मन्कूल नहीं। तो इन (सीगों) में ज़ियादा ता'जीम व ता'रीफ़ व तौकीर पाई जाती है और कसीर अवसाफ़े हमीदा पाए जाते हैं जो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से मन्कूल दुरूद में मौजूद नहीं, क्योंकि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने तवाजोअ की बिना पर इन कलिमात में अपने अवसाफ़े जमीला ज़िक्र नहीं फ़रमाए।"

(سعادة الدارين، الباب الثامن في كفايات الصلاة على النبي الخ ص ३२१)

लिहाज़ा हम पर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ता'जीम फ़र्ज है **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** ने अपने बन्दों को हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ता'जीम का हुक्म इरशाद फ़रमाया और आप عَلَيْهِ الصَّلَام का नाम ले कर पुकारने से मन्अ फ़रमाया चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है :

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ

بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ

بَعْضًا (پ १८، النور: २३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है।

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : "मुफ़स्सरीन ने एक मा'ना येह भी बयान फ़रमाए हैं कि रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को निदा करे तो अदब व तकरीम और तौकीर व ता'जीम के साथ आप के मुअज़्ज़म अल्काब से नर्म आवाज़ के साथ मुतवाज़िअाना व मुनकसिराना लहजे में या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह, या हबीबल्लाह कह कर (निदा करे)।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी हुक्मे कुरआनी पर अमल करते हुवे जिस क़दर हो सके ता'जीम व तौकीर वाले अल्फ़ाज़ के साथ अहसन अन्दाज़ में **दुरूदो सलाम** के फूल निछावर करते रहना चाहिये कि इस के बे शुमार फ़वाइद व समरात हैं। चुनान्वे,

सअ़ादतुद्दारेन में है : उ-लमा व औलियाए किराम **رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** से मन्कूल अल्फ़ाज़ से हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ने का एक फ़ाइदा येह भी है कि **दुरूदे पाक** पढ़ने वाले को हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** की ता'रीफ़ व सना से खुशी हासिल होती है, सरकार के अवसाफ़े जलीला का ज़िक्र और नए नए उस्लूब सामने आते रहते हैं जिन से त़बीअत उक्ताती नहीं और येह चीज़ इस (पढ़ने वाले) के लिये हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** पर ज़ियादा **दुरूद शरीफ़** पढ़ने में मददगार साबित होती है, तौसीफ़ व सना ज़ियादा होती है जियादा तकरार की वजह से नए नए मफ़हूम ज़ेहन नशीन होते रहते हैं, जिस से हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महब्बत व शौक में इज़ाफ़ा होता है। बुजुर्गाने दीन फ़रमाते हैं : “(ग़ैर मासूर) अल्फ़ाज़ में से अकसर वोह हैं जो हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने बेदारी की हालत में बताए और बा'ज़ बुजुर्गों ने येह कलिमात नींद के दौरान हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** से रिवायत किये और हक़ बात येह है कि जिस ने आप **عَلَيْهِ السَّلَام** को (ख़्वाब) में देखा गोया उस ने बेदारी में देखा, और बसा अवक़ात बा'ज़

कलिमात के मुतअल्लिक बुजुगाने दीन ने सवाब की जो मिक्दार बयान की है (कि येह दुरूदे पाक पढ़ने से) एक हजार या दस हजार या एक लाख (दुरूदे पाक पढ़ने का सवाब मिलता है) इसे उन्होंने ने हुजूर عَلَيْهِ السَّلَام से बहालते ख़्वाब या बेदारी में भी बयान किया है और बसा अवकात दूसरे ज़राएअ से उन्होंने ने इस की इत्तिलाअ पाई। जैसा कि

दस हजार दुरूदे पाक का सवाब

हज़रते शैख़ सय्यिदी अब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدَسَ سِرُّهُ الْوُورَانِ ने किताब अत्तबकातुल वुस्ता में अपने शैख़ नूरुद्दीन के बारे में लिखा है कि मैं ने उन्हें वफ़ात के साठ दिन बा'द ख़्वाब में देखा, मुझे फ़रमाते हैं कि “मुझे शैख़ सय्यिदी अब्दुल्लाह अब्दूसी का मुरत्तब किया हुआ दुरूद बताओ, क्यूंकि आखिरत में, मैं ने इस का अज़्र दूसरे दस हजार (दुरूदों) के बराबर पाया है और दुन्या में मुझ से येह रह गया है, मैं समझ गया कि शैख़ मुझे वोह दुरूद पढ़ने की ता'लीम दे रहे हैं जो वोह खुद नहीं पढ़ सके। सय्यिदी अब्दुल्लाह अब्दूसी का दुरूद शरीफ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَفْضَلَ صَلَوَاتِكَ اَبَدًا وَاَنْمِیْ بَرَكَاتِكَ سَرْمَدًا

(سعادة الدارين، الباب الثامن في کیفیات الصلاة علی النبی الخ، ص ۳۴۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुरूदो सलाम में ता'जीम वाले कलिमात और बेहतर अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करना चाहियें जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : “إِذَا صَلَّيْتُمْ فَأَحْسِنُوا الصَّلَاةَ عَلَى نَبِيِّكُمْ” या'नी जब तुम दुरूद पढ़ो तो अपने नबी पर अच्छा दुरूद पढ़ो।” अच्छे कलिमात में से एक लफ़्ज़ “सय्यिदुना” भी है। दुरूदे पाक में “सय्यिदुना” का इज़ाफ़ा करने के बारे में बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْمُبِين के अक्वाल मुलाहज़ा फ़रमाएं। चुनान्चे,

इमाम इब्ने हज़र رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ के नज़दीक दुरूद में नबिय्ये करीम रऊफ़ुरहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَام का इस्मे गिरामी जब तशह्हुद में आए या किसी और मौक़अ पर आए तो इस से पहले लफ़्ज़े “सय्यिदुना” ज़ाईद करना मुस्तहब है।

इसी तरह शैख़ अज़ीज़ुद्दीन बिन अब्दुस्सलाम तशह्हुद में इस्मे मुहम्मद से पहले लफ़्ज़े “सय्यिदुना” लाने के बारे में फ़रमाते हैं : “अफ़ज़ल या तो येह बात है कि अम्र की ता'मील की जाए (या'नी जिस तरह तशह्हुद पढ़ने का हुक्म हुवा उसी तरह बिग़ैर सय्यिदुना के पढ़ा जाए) या फिर अदब की राह इख़्तियार कर ली जाए (क्यूंकि सय्यिदुना कहने में ता'जीम का पहलू पाया जाता है), दूसरी सूरत का इख़्तियार करना (अदब की राह इख़्तियार करना) मुस्तहब है।”

शैखुल इयाशी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से दुरूद शरीफ़ में लफ़्जे

सय्यिदुना का इज़ाफ़ा करने के मुतअल्लिक पूछा गया तो आप ने जवाब में फ़रमाया : “येह तो इबादत है, क्यूंकि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले की निय्यत भी तो आप की ता’जीम व तकरीम ही की होती है, जब हकीकत येह है तो लफ़्जे “सय्यिदुना” को तर्क करने का कोई मतलब नहीं क्यूंकि येह तो ऐन ता’जीम है ।

(سعادة الدارين، المسئلة الثانية في زيادة لفظ سيدنا..... الخ، ص ۳۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी हुज़ूर नबिय्ये करीम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की ता’जीम की निय्यत से बेहतरीन अल्फ़ाब व अल्फ़ाज के साथ आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जाते बा बरकात पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ते रहना चाहिये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दुरूदे पाक की आदत बनाने का बेहतरीन ज़रीआ दा’वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्तगी भी है **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** येह सुन्नतों भरी ऐसी तहरीक है जो न सिर्फ़ भर भर कर दुरूदो सलाम के जाम पिलाती है बल्कि इस की बरकत से बे शुमार आशिकाने रसूल दीदारे मुस्तफ़ा से फ़ैजयाब भी होते रहते हैं । चुनान्चे, इस ज़िम्न में एक मदनी बहार सुनिये और खुशी से सर धुनिये ।

किस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी

बांद्रा (बम्बई, हिन्द) के एक इस्लामी भाई ने जो कुछ बताया इस का खुलासा है कि सि. 2000 ई. में अलाके के अन्दर

होने वाले चोक दर्स में एक दिन मुझे शिर्कत की सआदत मिली, दर्स के बा'द मुलाकात करते हुवे एक इस्लामी भाई ने मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ की दा'वत पेश की। मैं इजतिमाअ में हाज़िर हुवा, वहां मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत बयान फ़रमा रहे थे इस का कुछ ऐसा असर हुवा कि **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** रोज़ाना 313 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ने का मा'मूल बना लिया। चन्द ही दिनों बा'द एक रात जब सोया तो सोई हुई किस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, मैं ने ख़्वाब में देखा कि कोई कह रहा है : “फुलां जगह पर सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** तशरीफ़ फ़रमा हैं।” येह सुन कर मैं आलमे दीवानगी में ज़ियारत की निय्यत से दौड़ा तो आगे लोगों का एक हुजूम था, सीधे हाथ की तरफ़ वाकेअ एक घर से नूर निकल रहा था, मैं उस में दाख़िल हो गया वहां देखा कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात, अलिय्युल मुर्तज़ा, शेरे खुदा **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم** तशरीफ़ फ़रमा हैं, मैं ने उन से अर्ज़ की : “सरकारे दो जहां **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم** कहां तशरीफ़ फ़रमा हैं ?” आप **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَरِيْم** ने मुझे अन्दर जाने का इशारा फ़रमाया, मैं मज़ीद अन्दर की तरफ़ गया, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** रसूलों के सरदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** एक बुलन्द जगह जल्वा अफ़रोज़ थे। मैं ने सलाम अर्ज़ किया, जनाबे रिसालत मआब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**

ने जवाब इरशाद फ़रमाया और मुझ से मुसाफ़हा किया, आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का चेहरा मुबारक गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ था और आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के चेहरा अन्वर से जो **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** नूर निकल रहा था वोह पूरे घर को रोशन कर रहा था ।

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त से मैं दा'वते इस्लामी से वाबस्ता हूँ और इस के मदनी माहोल की बरकतें लूट रहा हूँ ।

ऐसी किस्मत खुले, देखने को मिले जल्वाए मुस्तफ़ा, काफ़िले में चलो शौक हज़ का है गर, और आका का दर तुम को है देखना, काफ़िले में चलो सब्ज़ गुम्बद का नूर, देखने का सुरू पाओगे आओना, काफ़िले में चलो
(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें ता किया मे किया मत दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रख और अपने दीने मतीन की इशाअत व तब्लीग़ की खातिर मदनी काफ़िलों में सफ़र **أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तौफीक़ नसीब फ़रमा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा

जो **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** के थोड़े रिज़क़ पर राज़ी होगा

अब्बाह **عَزَّوَجَلَّ** उस के थोड़े अमल पर राज़ी होगा ।

(مشکوٰۃ ۲/ ۲۵۸، حدیث: ۵۲۶۳)

बयान नम्बर : 59

हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام की पसन्दीदा मजलिस

हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन नुहावन्दी ज़ाहिद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “एक शख्स हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से मिला और कहा कि सब से अफ़ज़ल अमल रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इत्तिबाअ और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेजना है।” हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : “अफ़ज़ल तरीन दुरूद वोह होता है जो हदीस के नशर व इमला के वक़्त पढ़ा जाता है क्योंकि उस वक़्त ज़बान से पढ़ा जाता है और किताबों में लिखा जाता है। इस में इन्तिहाई रग़बत होती है और बहुत ज़ियादा खुशी होती है। जब उ-लमाए हदीस जम्अ होते हैं तो मैं भी उन की मजलिस में मौजूद होता हूँ।”

(القول البديع، الباب الخامس في اوقات مخصوصة، ص २५८)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام को अहदीसे मुबारका के दरमियान पढ़ा जाने वाला दुरूदे पाक किस क़दर पसन्द है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام न सिर्फ़ उस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ने को सब से अफ़ज़ल क़रार देते बल्कि मुहद्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام की मजलिस में ब नफ़से नफ़ीस शिर्कत भी फ़रमाते हैं।

मुहद्दिसीने किराम का मा'मूल

رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ मुहद्दिसीने किराम سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ की कितनी प्यारी

आदत थी कि जब भी अहदीसे मुबारका लिखते या लोगों को दर्से हदीस देते और नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इस्मे मुअज्जम आ जाता तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जाते बा बरकत पर दुरूदे पाक के फूल निछावर करते ।

हजरते अल्लामा शैख यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قَدِيسَ سِرُّهُ التُّورَانِ सआदतुद्दारैन में दुरूदे पाक पढ़ने के मुख़्तलिफ़ मक़ामात बयान करते हुवे फ़रमाते हैं कि हदीसे मुबारक पढ़ते वक़्त भी दुरूदो सलाम पढ़ना चाहिये ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللَّهُ السُّبْحَانِ हदीस शरीफ़ पढ़ने के दौरान दुरूदे पाक पढ़ने को अज़ीम सआदत समझे थे । चुनान्चे, इमाम अबू बक्र अहमद बिन अली बिन साबित अल मा'रूफ़ ख़तीबे बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : हम से अबू नुऐम (मुहद्दिसे कबीर) ने फ़रमाया : “(अहदीस बयान करते वक़्त दुरूदे पाक पढ़ना) वोह अज़ीम शरफ़ है जो सिर्फ़ हदीस के रावियों को ही हासिल होता है क्यूंकि हदीस शरीफ़ लिखते और बयान करते वक़्त जितना दुरूदो सलाम इस गुरौह को पढ़ने का मौक़अ मिलता है किसी दूसरे को नहीं मिलता ।”

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفِي फ़रमाते हैं :

“मुहद्दिस को रसूले अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदो सलाम पढ़ने से (बिलफ़र्ज) कोई और फ़ाइदा न भी हो तो येह ही उस के लिये काफ़ी है कि जब तक किताब में हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इस्मे मुबारक बाक़ी रहेगा उस पर (या'नी मुहद्दिस पर) रहमतों का नुज़ूल होता रहेगा ।”

येह भी कहा गया है कि मुहद्दिसीन के लिये अज़ीम बिशारत है (कि येह हज़रात रोज़े क़ियामत हुज़ूर के ज़ियादा करीब होंगे) क्यूंकि येह कौलन व फ़े'लन, रात दिन (अह्दादीसे मुबारका) पढ़ते और लिखते वक़्त नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ पर दुरूदो सलाम भेजते हैं, पस येह हज़रात सब लोगों से बढ़ कर दुरूदो सलाम भेजने वाले हुवे इसी लिये तमाम उ-लमा में से सिर्फ़ इन हज़रात को इस मदह व मन्क़बत का मुस्तिहिक़ ठहराया गया है ।

इसी तरह अबुल यमन बिन असाकिर ने फ़रमाया :

“मुहद्दिसीन كَثَرَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى इस बिशारत पर लाइके तहनिyyत व तबरीक़ हैं, बेशक **अल्लाह** तआला ने इन पर येह अज़ीम एहसान फ़रमा कर अपनी ने'मत तमाम फ़रमा दी कि येही लोग बरोज़े क़ियामत إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ रसूले पाक عَلَيْهِ السَّلَام के करीब तर और सरकार की शफ़ाअत व वसीले के मुस्तिहिक़ होंगे क्यूंकि येही वोह लोग हैं जो हमेशा हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام का ज़िक़्र लिखते हैं और अहम अवक़ात में अपनी मजालिस में हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

का जिक्रे खैर करते रहते हैं और अपनी दसों तदरीस की महफ़िलों में **दुरूदो सलाम** के फूल निछावर करते रहते हैं, पस सरकार की मदहो सना इन लोगों का शिआर व आईन है और आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के बा अज़मत आसारे हसना (या'नी अहादीसे करीमा) को ख़ूब सूरत पैराए में शाएअ करना ही इन का **तुरए इम्तियाज़** है, मज़ीद बरआं अहादीस, नुसूस और आसार जो अक्ल व ख़िर्द की शबे तारीक में सूरज बन कर चमकते हैं, (इन) के हकीकी वाकिफ़े कार भी येही लोग होते हैं और **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** येह लोग फ़िर्कए नाजिय्या (नजात पाने वाले गुरौह) में से होंगे ।”

अबू अरूबा अल हिरानी **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** का मा'मूल था कि आप के सामने जब कोई अहादीस पढ़ता तो आप **दुरूदो सलाम** पढ़े बिगैर न रहते और ख़ूब ज़ाहिर कर के पढ़ते और कहा करते कि हदीस शरीफ़ पढ़ने की एक बरकत येह है कि दुन्या में कसरत से **दुरूदो सलाम** पढ़ने की सआदत मिलती है और आख़िरत में **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** जन्नत की ने'मते मिलेंगी ।

(سعادة الدارين، الباب الخامس فى المواطن التى تشرع فيها الصلاة..... الخ، ص १९)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ

رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام देखा आप ने मुहद्दिसीने किराम **سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ**

को शाहे ख़ैरुल अनाम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** से किस क़दर महब्बत थी कि जब भी आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का इस्मे गिरामी सुनते तो इश्को महब्बत में आप की ज़ाते तय्यिबा पर **दुरूदो सलाम** पढ़ा

करते, ऐसे खुश नसीबों को **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा व खुशनूदी हासिल होने के साथ साथ हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की बारगाह से सलाम भी मौसूल होता है, जैसा कि

सरकार का सलाम

हज़रते सय्यिदुना यहूया किरमानी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “एक दिन हम हज़रते सय्यिदुना अबू अली बिन शाज़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** की खिदमत में हाज़िर थे कि एक नौजवान आया, उस को हम में से कोई नहीं जानता था, उस ने सलाम किया और पूछा : “आप में से अबू अली बिन शाज़ान **(عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)** कौन हैं ?” हम ने आप की तरफ़ इशारा किया, उस नौजवान ने कहा : “ऐ शैख़ **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मैं ख़्वाब में सय्यिदे दो आलम **(رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ)** के दीदार से मुशरफ़ हुवा, हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने मुझे हुक्म फ़रमाया कि अली बिन शाज़ान **(عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)** के मुतअल्लिक़ मा’लूमात हासिल करो और जब तुम्हारी उन से मुलाक़ात हो तो मेरी तरफ़ से उन्हें सलाम कहना ।” यह कह कर वोह नौजवान चला गया ।” हज़रते सय्यिदुना अबू अली शाज़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** आबदीदा हो गए और फ़रमाया : “मुझे तो कोई ऐसा अमल नज़र नहीं आता जिस से मैं इस करम व इनायत का मुस्तहिक् हुवा हूँ, (हां !) शायद यह कि मैं ठहर ठहर कर हदीसे मुस्तफ़ा पढ़ता हूँ और जब भी नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का नामे पाक आता है तो मैं दुरूदे पाक पढ़ता हूँ ।”

(المنتظم فى تاريخ الملوك والامم ٢٥٠/١٥)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किस क़दर खुश किस्मत हैं वोह लोग जो ताजदारें रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **ﷺ** पर **दुरूदे पाक** पढ़ने की आदत बनाते, सरकार **ﷺ** के करमे खास से हिस्सा पाते और दीदारे **मुस्तफ़ा ﷺ** से फ़ैज़याब हो जाते हैं। **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** भी इन आशिक़ाने रसूल की इस महबूबत के सिले में न सिर्फ़ दुन्या में इन के सरों पर **इज़ज़त वक़ार** का ताज रखता है बल्कि आख़िरत में भी इन की लाज रखता है। जैसा कि

सब्ज़ लिबास

हज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “मेरे साथ एक नौजवान इल्मे हदीस सीखा करता था, उस के विसाल के बा’द मैं ने उसे ख़्वाब में देखा कि वोह **सब्ज़ रंग** के लिबास में मल्बूस बड़े मजे से इधर उधर टहल रहा है।” मैं ने उस से माजरा पूछा तो जवाब दिया : “जब मैं अहादीस लिखा करता था तो नबिय्ये करीम **ﷺ** का इस्मे गिरामी “**मुहम्मद**” आता तो मैं उस के नीचे “**ﷺ**” लिख देता था। **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने मुझे इस का येह बदला अता फ़रमाया जिस को आप मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं।”

(الفجر المنير، ص ५९)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुहद्दीसीने किराम

رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام की हिकायात और इन के अक्वाल से येह बात वाजेह हो गई कि अहादीसे मुबारका में या किसी और मकाम पर जब भी हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इस्मे मुबारक लिखा, पढ़ा या सुना जाए तो अपने मक्की मदनी आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर झूम झूम कर दुरूदो सलाम के गजरे निछावर करते रहना चाहिये कि इस से हुजूर जाने आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को खुशी मिलेगी और फिर आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام हम पर कैसे कैसे इन्आमात फ़रमाएंगे इस का हम अन्दाज़ा भी नहीं कर सकते ।

अहादीसे मुबारक की ता'जीम

याद रखिये ! हुजुरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इस्मे मुक्द्दस की ता'जीम के साथ साथ आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के अक्वाल व अफ़ाल (या'नी अहादीसे मुबारका) पढ़ने के भी कुछ आदाब हैं । हमारे अस्लाफ़े किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام जब अहादीसे मुबारका लिखते या लोगों को दर्से हदीस देते तो हदीस शरीफ़ की ता'जीम के पेशे नज़र पहले गुस्ल का एहतिमाम फ़रमाते, खुशबू लगाते फिर लोगों को हदीसे पाक बयान फ़रमाते । चुनान्चे, इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जो अइम्मए हदीस में एक अहम और नुमायां मक़ाम रखते हैं जब आस्माने इल्मे हदीस पर आप का सूरज तुलूअ हुवा तो तमाम मुहद्दीसीन सितारों की तरह आप के आगे

मांद पड़ते गए। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अहदीसे मुबारका का इस क़दर अदब फ़रमाते कि हर हदीस शरीफ़ को लिखने से पहले गुस्ल फ़रमाते और दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाते।

इसी तरह हज़रते सय्यिदुना मुतर्रिफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की हदीसे पाक से महब्वत और ता'जीम का अन्दाज़ बयान करते हैं कि : “हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पास जब लोग कुछ पूछने के लिये आते तो खादिमा आप के दौलत ख़ाने से निकल कर दरयाफ़्त करती कि हदीस पूछने के लिये आए हो या फ़िक़ही मस्अला ? अगर वोह कहते कि फ़िक़ही मस्अला दरयाफ़्त करने के लिये आए हैं तो हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़ौरन बाहर तशरीफ़ ले आते।” और अगर वोह कहते कि हदीस शरीफ़ सुनने के लिये आए हैं, तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ पहले गुस्ल फ़रमा कर उम्दा लिबास ज़ेबेतन फ़रमाते, खुशबू लगाते, इमामा शरीफ़ बांधते फिर अपने सर पर चादर ओढ़ लेते। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के लिये तख़्त बिछाया जाता, जिस पर आप इन्तिहाई इज़ज़ व इन्क़िसारी के साथ बैठ कर हदीस शरीफ़ बयान फ़रमाते और शुरूए मजलिस से आख़िर तक खुशबू लगाई जाती और येह तख़्त सिर्फ़ हदीस शरीफ़ रिवायत करने के लिये मख़्सूस किया गया था, जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से इस की वजह पूछी गई तो आप ने फ़रमाया : “मैं येह बात पसन्द करता हूँ कि हदीसे रसूल की ख़ूब ता'जीम करूं।”

(اشفاء معريف حقوق المصطفى (مترجم) ५२/१)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

बयान फ़रमाते हैं कि : “मैं एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ख़िदमत में हाज़िर था, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हदीसों बयान फ़रमा रहे थे कि इसी असना में एक बिच्छू ने आप को सोलह मरतबा डंग मारा (शिद्दते अलम) से आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के (चेहरे का) रंग (मुतगय्यिर हो कर) ज़र्द पड़ गया मगर आप ने हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हदीस शरीफ़ को बयान करना नहीं छोड़ा, जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ रिवायते हदीस से फ़ारिग़ हो गए और लोग चले गए तो मैं ने अज़्र किया : आज मैं ने आप में एक अजीब बात देखी है। तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : हां ! मैं ने रसूले खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हदीस शरीफ़ की ता’जीम में सब्र किया।”

(الشفاء بغير حقّ للمصطفى (مترجم) ५२/१०)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अब्बाह** हमें हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सच्ची महबबत अता फ़रमा, आप का ज़िक्रे ख़ैर करते हुवे आप की ज़ाते मुक़द्दसा पर कसरत से **दुरूदो सलाम** पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



बयान नम्बर : 60

शहीदों की रफ़ाक़्त

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : **مَنْ صَلَّى عَلَى مَائَةِ كَتَبَ اللَّهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ بَرَاءَةً مِّنَ الْفَقَاقِ وَبَرَاءَةً مِّنَ النَّارِ** जो शख्स मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा **اَللّٰهُ** तअ़ाला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देगा कि येह शख्स **निफ़ाक़** और **जहन्नम** की आग से आज़ाद है **وَأَسْكَنَهُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ الشُّهَدَاءِ** और उसे बरोज़े क़ियामत **शुहदा** के साथ रखेगा ।

(معجم الاوسط، من اسمه محمد، ٢٥٢/٥، حديث: ٤٢٣٥)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّيْ اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा कि दुरूदे पाक पढ़ने वाले को **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** किस क़दर इन्आमो इकराम से नवाज़ता है कि न सिर्फ़ **निफ़ाक़** और **जहन्नम** से आज़ादी का परवाना अता फ़रमा देगा बल्कि कल बरोज़े क़ियामत उसे **शुहदा** के साथ उठाएगा । अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने जिस मक़ाम पर **शहीदे हुक्मी** की ता'दाद नक्ल फ़रमाई उसी जगह बयान कर्दा हदीसे पाक के हवाले से नबिय्ये पाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ने वाले को शहीदे हुक्मी में शुमार किया है ।

(درمختار وردالمختار، کتاب الصلاة، مطلب فی تعداد الشهداء، ١٩٦/٣)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

लिहाजा हमें भी अपने प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफा

ﷺ पर दुखदे पाक की कसरत की आदत बना लेनी चाहिये ताकि हमारा हृश भी अच्छे के साथ हो ।

याद रहे ! यहां शहादत से मुराद हुक्मी शहादत है । शहीदे हुक्मी को शहादत का सवाब तो मिलता है मगर इस पर शहीद के फ़िक़ही अहक़ाम जारी नहीं होते मसलन शहीद को गुस्ल नहीं दिया जाता बल्कि खून समेत ही दफ़न कर दिया जाता है जब कि शहीदे हुक्मी को गुस्ल दिया जाता है ।

इस किस्म के और बहुत से लोग हैं जिन्हें हदीसे पाक में शहीद कहा गया है । चुनान्चे, हज़रते जाबिर बिन अतीक رضي الله تعالى عنه से रिवायत है फ़रमाते हैं कि **अब्बाह** عز وجل के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : “**अब्बाह** की राह में क़त्ल के इलावा सात शहादतें और हैं : (1) जो त़ाऊन में मरे शहीद है, (2) जो डूब कर मरे शहीद है, (3) जो ज़ातुल जम्ब (पस्लियों की एक बीमारी) में मरे शहीद है, (4) जो पेट की बीमारी में मरे शहीद है, (5) जो आग में जल कर मरे शहीद है, (6) जो इमारत के नीचे दब कर मरे शहीद है और (7) जो औरत विलादत में मरे शहीद है ।”

(مشكاة، كتاب الجنائز، باب عيادة المريض، ٢٩٩/١، حديث: ١٥٦١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ए'लाए कलिमतुल हक़ के लिये कुफ़्फ़ार से जिहाद करना और शजरे इस्लाम की आबयारी की खातिर दुश्माने इस्लाम की तरफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़

पर सब करते हुवे **जामे शहादत** नोश करना बड़ी सआदत की बात है मगर किस क़दर बख़्तवर हैं वोह लोग जो न तो मैदाने जंग में हाज़िर हो कर किसी तल्वार के वार से क़त्ल होते हैं और न ही कोई नेज़ा उन की शहादत का सबब बनता है मगर फिर भी वोह शहादत के अज़ीम सवाब को हासिल कर लेते हैं। इस सआदते उज़्मा से बहरा मन्द होने वाले **36** खुश नसीबों का ज़िक्र **सदरुशरीआ**, बदरुत्तरीका मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** ने भी किया है जिन में से बा'ज़ येह हैं :

- (1) जो बुख़ार में मरा। (2) माल या (3) जान या (4) अहल या (5) किसी हक़ के बचाने में क़त्ल किया गया। (6) जिसे किसी दरिन्दे ने फाड़ खाया हो। (7) जो किसी मूजी जानवर के काटने से मरा। (8) जो शख़्स इल्मे दीन की तलब में मरा। (9) ऐसा शख़्स जो बा त़हारत सोया और मर गया। (10) जो सच्चे दिल से येह सुवाल करे कि **अल्लाह** की राह में क़त्ल किया जाऊं। (11) जो नबी **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर सो बार **दुरूद शरीफ़** पढ़े। (बहारे शरीअत , 1/858-860 मुलतक़तन)

शहीदे फ़िक्ही और शहीदे हुक्मी में फ़र्क़

सदरुशरीआ फ़रमाते हैं : “इस्ति़लाहे फ़िक्ह में शहीद उस मुसलमान अक़िल बालिग़ त़ाहिर को कहते हैं जो बतौरै जुल्म किसी आलए ज़ारिहा से क़त्ल किया गया और नफ़से क़त्ल से माल न वाजिब हुवा हो और दुन्या से नफ़अ न उठाया हो। शहीद का हुक्म येह है कि गुस्ल न दिया जाए, वैसे ही खून समेत

दफ़न कर दिया जाए। तो जहाँ येह हुक्म पाया जाएगा फ़ुक़हा उसे शहीद कहेंगे वरना नहीं, मगर शहीदे फ़िक़ही न होने से येह लाज़िम नहीं कि शहीद का सवाब भी न पाए, सिर्फ़ इस का मतलब इतना होगा कि गुस्ल दिया जाए व बस। (बहारे शरीअत, 1860)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हृदीसे मुबारक और सदरुशशीआ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की गुफ़्तगू से हमें येह बात तो मा'लूम हो ही चुकी कि शहीदे हुक्मी को शहीदे फ़िक़ही का सवाब हासिल होगा अब ज़रा हृदीसे पाक की रोशनी में शहीद का सवाब भी समाअत फ़रमा लीजिये। चुनान्वे,

शहीद का सवाब

हज़रते सय्यिदुना मिक्दाम बिन मा'दी करिब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल से रिवायत है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने बा कमाल है : “बेशक **अल्लाह** शहीद को छे इन्आम अता फ़रमाता है : (1) उस के ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही उस की मग़फ़िरत फ़रमा देता है और जन्नत में उसे उस का ठिकाना दिखा देता है (2) उसे अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ फ़रमाता है (3) क़ियामत के दिन उसे बड़ी घबराहट से अम्न अता फ़रमाएगा (4) उस के सर पर वक़ार का ताज रखेगा जिस का याकूत दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर होगा (5) 72 हूरों के साथ उस का निकाह कराएगा और (6) उस के 70 रिश्तेदारों के हक़ में उस की शफ़ाअत क़बूल फ़रमाएगा।”

(ابن ماجه، كتاب الجهاد، باب فضل الشهادة في سبيل الله، 3/310، حديث: 2499)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

याद रहे कि शहीदे हुक्मी को गर्चे शहादत का सवाब मिल जाता है मगर कोई इस्लामी भाई हरगिज़ हरगिज़ येह न समझे कि येह दोनों किस्म के शहीद मर्तबे में भी यक्सां हैं, हक़ तो येह है कि राहे खुदा में अपनी जान कुरबान करने वाले का मर्तबा ही कुछ और है। चुनान्चे,

मरातिब में फ़र्क़ है

हज़रत अलहाज मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي एक हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : “हदीस का हासिल येह है कि इन सातों को शहीदे फ़ी सबीलिल्लाह का सवाब मिलेगा अगर्चे खुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में सर कटा कर शहीद होने वाले और इन लोगों के दरजात व मरातिब में बड़ा फ़र्क़ होगा येह **अल्लाह** तआला का फ़ज़्लो करम है कि इन अमराज़ व अवारिज़ में मरने वालों को भी शहीद का सवाब मिलेगा।”

(बहिश्त की कुंजियां, स. 130)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किस क़दर खुश नसीब है वोह मुसलमान जो इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये राहे खुदा में शहीद होता है और हयाते जावेदानी पा कर जन्नतुल फ़िरदौस की आ'ला ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

हमारी जिन्दगियों में भी वोह मुबारक लम्हात लाए कि हम भी

अपना तन मन धन उस की राह में लुटा दें। येह जिन्दगी उस की दी हुई अमानत है तो खुश किस्मत है वोह जो येह जान उस की राह में कुरबान कर दे।

जान दी, दी हुई उसी की थी

हक़ तो येह है कि हक़ अदा न हुवा

नफ़्स से जिहाद, जिहादे अक्बर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! राहे खुदा में सर कटा देने की बात करना आसान है मगर जब मैदाने अमल सामने आता है तो अच्छे अच्छों के पित्ते पानी हो जाते हैं। ज़रा सोचिये ! आज जो नफ़्स हमें नमाज़े फ़ज़्र के लिये उठने नहीं देता वोह रज़्म गाहे हक़ व बातिल में सर क्या कटाने देगा ? आज जो नफ़्स चन्द लुक़्मे ईसार नहीं करने देता वोह इस जान को हक़ पर निसार करने के लिये कब तय्यार होगा ? चुनान्चे, फ़िल वक़्त ज़रूरत इस अम्र की है कि हम अपने इस नफ़से अम्मारा के खिलाफ़ जिहाद कर के इसे अहक़ामे खुदावन्दी पर अमल करने वाला बना दें कि हदीसे पाक में नफ़्स के खिलाफ़ जिहाद करने को जिहादे अक्बर क़रार दिया गया है, जैसा कि नबिय्ये करीम ﷺ ने एक ग़ज़वे से वापसी पर फ़रमाया : رَجَعْنَا مِنَ الْجِهَادِ الْأَصْغَرِ إِلَى الْجِهَادِ الْأَكْبَرِ : या'नी हम जिहादे असग़र से जिहादे अक्बर की तरफ़ लौट रहे हैं। अर्ज़ की गई : या रसूलल्लाह ﷺ

या'नी इस से बड़ा कौन सा जिहाद है ?

इरशाद फ़रमाया : **جِهَادُ النَّفْسِ وَالشَّيْطَانِ** या'नी नफ़्सो शैतान से जिहाद करना ।”
(कشف الخفاء حرف الرأء المبهلة ، १/ ३८५، حديث: १३१०)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हृदीसे पाक में नफ़्सो शैतान के साथ जिहाद करने को **जिहादे अक्बर** कहा गया है । याद रहे ! नफ़्सो शैतान इन्सान के पोशीदा दुश्मनों में से हैं और जो दुश्मन निगाहों से ओझल होता है वोह नज़र आने वाले दुश्मन से कहीं ज़ियादा मूज़ी व ख़तरनाक होता है । लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपने नफ़्स पर ग़लबा पाने के लिये बुजुर्गाने दीन **رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْمُبِينُ** के वाकिआत का मुतालआ करते हुवे अपने नफ़्स का **मुह़ासबा** भी करते रहें और नफ़्स पर काबू पाने के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या को तर्क करते हुवे इसे सज़ा भी देते रहें जैसा कि हमारे बुजुर्गाने दिन का तरीका रहा है कि वोह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर पूरी तरह काबू रखते और अपने नफ़्स को सज़ा भी देते । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के बारे में आता है कि आप एक बार गर्मी के मौसिम में धूप में बैठे हुवे मशगूले इबादत थे । कि आप की वालिदए मोहतरमा ने फ़रमाया : “बेटा साए में आ जाते तो बेहतर था ।” आप ने जवाब दिया : “अम्मी जान मुझे शर्म आती है कि अपने नफ़्स की **ख़्वाहिश** के लिये कोई इक्दाम करूं ।” एक बार आप का पानी का घड़ा धूप में देख कर किसी ने अर्ज़ की : या सय्यिदी ! इस को छाऊं में रखा

होता तो अच्छा था। फ़रमाया : “जब मैं ने रखा था उस वक़्त यहां छाऊं थी लेकिन अब धूप में से उठाते हुवे नदामत महसूस हो रही है कि मैं सिर्फ़ अपने नफ़्स की राहत की खातिर घड़ा हटाने में वक़्त सर्फ़ करूं और इतनी देर ज़िक्रे इलाही से गाफ़िल हो जाऊं।”

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 1446)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हमारे बुजुर्गाने दीन अपने नफ़्स को किस तरह काबू में रखते और उस की ख़्वाहिशात को किसी खातिर में न लाते मगर तअज्जुब की बात येह है कि अगर हम अपने अहले ख़ाना या किसी मातहत से कोई बद अख़्लाकी या किसी काम में कोताही देखते हैं तो उन से बाज़ पुर्स करते हैं बसा अवकात सज़ा भी देते हैं क्यूंकि हमें इस बात का डर लगा रहता है कि अगर इन के साथ दर गुज़र से काम लिया गया तो येह लोग हाथ से निकल जाएंगे और सरकशी करेंगे लेकिन अफ़सोस ! कि हम ने अपने नफ़्स को गुनाहों के मुआमले में खुली छूट दे रखी है वोह जब चाहता है हम से ब आसानी गुनाह करवा लेता है हालांकि वोह हमारा सब से बड़ा दुश्मन है और उस की सरकशी का नुक़सान हमारे अहलो इयाल की सरकशी के नुक़सान से भी बढ़ कर है। हमारे अहले ख़ाना ज़ियादा से ज़ियादा हमारी ज़िन्दगी में हमें परेशान करेंगे जब कि हमारा नफ़्स हराम व नाजाइज़ ख़्वाहिशात की तकमील के ज़रीए हमारी आख़िरत को तबाहो बरबाद कर देगा।

सरवरे दीं लीजिये अपने नातुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैतां सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे

(हदाइके बख़्शिश, स. 157)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नफ़्स की अक्शाम

याद रखिये ! इन्सान के अन्दर मौजूद नफ़्स की तीन
सिफ़ात होती हैं :

(1) नफ़से मुतमइन्ना : जब नफ़्स **اَعْوَجَلُ** की इताअत
व फ़रमां बरदारी पर काइम हो जाए और नफ़्सानी ख़्वाहिशात
को तर्क करने के सबब इस का इज़तिराब ख़त्म हो जाए तो इसे
नफ़से मुतमइन्ना कहा जाता है ।

(2) नफ़से लव्वामा : नफ़्स अगर्चे **اَعْوَجَلُ** की इताअत
व फ़रमां बरदारी का आदी तो नहीं होता लेकिन ख़्वाहिशात को
रोकता है और अगर कोई बुराई सरज़द हो जाए तो ला'नत
मलामत करता है तो नफ़्स की इस कैफ़ियत को नफ़से लव्वामा
कहा जाता है ।

(3) नफ़से अम्मारा : जब नफ़्स किसी बुराई के सादिर होने पर
मलामत भी न करे और अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करता रहे
तो उसे नफ़से अम्मारा कहते हैं ।

(احياء علوم الدين، كتاب شرح عجائب القلب، بيان معنى النفس والروح الخ، ٥١٣)

नफ़्स की इन तीनों किस्मों में ज़ेरे बहूस नफ़से अम्मारा
है येही अपनी शरारतों में हद दरजा महारत की बिना पर शैतान
से भी बढ़ कर है । इसी ने शैतान का ईमान बरबाद किया और

ता कियामे कियामत कसीर मुसलमानों की तबाही में अहम किरदार भी अदा करेगा इस से किसी भी किस्म की भलाई की उम्मीद रखना फुज़ूल है येह एक बे रहूम दुश्मन है इस की आफ़तों से महफूज़ रहने का वाहिद हल मुकाबले के ज़रीए इसे मग़लूब करना है। नफ़्स को मग़लूब करने से मुराद येह है कि इन्सान जिन जिन ख़्वाहिशात की तक्मील से नफ़्स को रोकना चाहे या जिस इबादत का भी हुक्म दे येह फ़ौरन इताअत करे और किसी किस्म की मुज़ाहमत न करे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नफ़्सो शैतान हर वक़्त इन्सान को बहकाने की कोशिश में लगे हुवे हैं। इन के मक्रो फ़रेब से बचने के लिये ऐसे लोगों की सोहबत बेहद ज़रूरी है जो इन के ख़तरनाक वारों से बचने के तरीके जानते हों और इन के सीने, ख़ौफ़े खुदा व महबूबते मुस्तफ़ा के नूर से मुनव्वर हों, इन के साथ रह कर गुनाहों से बचने, नेकियां करने और सुन्नतों पर अमल पैरा होने का ज़ब्बा मिले। ऐसे पुर फ़ितन दौर में दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल किसी ने'मते उज़मा से कम नहीं, इस से वाबस्ता इस्लामी भाई कल तक गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस मदनी माहोल की बरकत से गुनाहों से ताइब हो कर नेकियों की राह पर गामज़न हो गए। आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक मदनी बहार पेश की जाती है।

बद किरदार की तौबा

मर्कज़ुल औलिया (लाहौर) के अलाके न्यू समनआबाद के चाह जमूं वाला बाज़ार में मुक़ीम इस्लामी भाई के तहरीरी मक्तूब का खुलासा पेशे ख़िदमत है कि मैं परले दरजे का गुनहगार शख्स था वालिदैन् की इज़्ज़त व तकरीम में कोताही करता था। गंदे माहोल, फ़िल्मों व डिरामों की नुहूसत ने मेरा सत्यानास कर दिया था। केबल और इन्टरनेट पर फ़ोहूश मनाज़िर देखना, अम्रदों से दोस्ती करना, इन से ग़ैर अख़्लाकी हरकात का इर्तिकाब करना मेरे शबो रोज़ का मा'मूल था। मैं ने ग़ालिबन रमज़ानुल मुबारक सि. 1426 हि. ब मुताबिक़ अक्टूबर सि. 2005 ई. के आख़िरी अशरे का ए'तिकाफ़ बद मज़हबों की एक मस्जिद में किया। खुदा का करना ऐसा हुवा कि मेरे एक दोस्त ने भी आख़िरी तीन दिन मेरे साथ उसी मस्जिद में ए'तिकाफ़ किया जो कि दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में भी शिर्कत कर चुके थे। हम पर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का करम इस तरह हुवा कि उस मस्जिद की लाइब्रेरी में कुछ रसाइल मिल गए, मेरे उस दोस्त ने बताया कि येह रसाइल दा'वते इस्लामी के बानी, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के तहरीर कर्दा हैं मैं ने नाम की तरफ़ तो कोई खास तवज्जोह न दी मगर **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** **عَزَّوَجَلَّ** वोह रसाइल पढ़ने में कामयाब हो गया। इन को पढ़ने की बरकत से मेरे दिल की दुनिया ही बदल गई। इन रसाइल में से एक रिसाला “**T.V की तबाह कारियां**”

था उसे पढ़ कर मैं ने घर आ कर टी वी देखना छोड़ दिया। मेरे उस दोस्त ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इजतिमाअ** की दा'वत दी जिसे मैं ने फ़ौरन क़बूल कर लिया। मुझे इजतिमाअ में सुकूने क़ल्बी नसीब हुवा। इजतिमाअ में शिर्कत करना मेरा मा'मूल बन गया, मदनी माहोल की बरकत से बद मज़हबों की सोहबत छोड़ कर गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ मिली। बदकारियों से मुंह मोड़ा और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ और सफ़ेद मदनी लिबास ज़ेबे तन कर लिया। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** येह बयान देते वक़्त मैं डिवीज़न मुशावरत का रुक्न होने के साथ साथ हल्का मुशावरत के ख़ादिम (निगरान) की हैसियत से मदनी काम करने की सआदत हासिल कर रहा हूं।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **اَبُوْاَحْمَدُ عَزَّوَجَلَّ** हमें हर आन नफ़्सो शैतान के हर वार को नाकाम बनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हमें अपनी सारी ज़िन्दगी तेरी और तेरे प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की इताअत में बसर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



बयान नम्बर : 61

रब عَزَّوَجَلَّ के दुरूद भेजने से क्या मुराद है

शबे मे'राज जब हुजुरे पाक, साहिबे मे'राज صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सिद्रतुल मुन्तहा के बा'द रफ़रफ़ नामी नूरानी तख़्त पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर मज़ीद मे'राज के सफ़र की तरफ़ बढ़े, चलते चलते बिल आख़िर एक ऐसे मक़ाम पर पहुंचे जहां येह तख़्त भी रह गया और हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तने तन्हा रह गए ।

इमाम शा 'रानी قُدْسُ سِرُّهُ الرَّبَّانِي फ़रमाते हैं : “उस वक़्त हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को वहशत सी महसूस होने लगी, तो आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने एक आवाज़ सुनी जो हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की आवाज़ से मुशाबे थी । वोह आवाज़ येह थी يَا مُحَمَّدُ قِفْ إِنَّ رَبَّكَ يُصَلِّي ऐ मुहम्मद रुक जाइये ! बेशक आप का रब दुरूद भेजता है ।” (اليواقيت والجواهر، ص २५६، مقالات کاظمی، ۱/ ۱۳۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अपने नबी पर दुरूद भेजने से मुराद येह है कि रब तअ़ाला हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की सना व ता'ज़ीम बयान फ़रमाता है जैसा कि अल्लामा इब्ने हज़र अस्क़लानी قُدْسُ سِرُّهُ الرَّبَّانِي के हवाले से बयान करते हैं : **أَنْ مَعْنَى صَلَاةِ اللَّهِ عَلَى نَبِيِّهِ، تَنَاوُهُ عَلَيْهِ وَتَعْظِيمُهُ** : या'नी **अल्लाह** तअ़ाला अपने नबी पर जो दुरूद भेजता है इस

से मुराद येह है कि खुदाए बुजुर्ग व बरतर आप की ता'रीफ़ और अज़मत बयान फ़रमाता है ।”

(فتح الباری، کتاب الدعوات، باب الصلاة على النبی، ۱۳۱/۱۲، تحت الحديث: ۲۳۵۸)

दीदारे इलाही का शौक

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत में **अल्लाह** तबारक व तअ़ला ने मे'राज की रात अपने हबीबे करीम **عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ** पर **दुरूदे पाक** के गजरे निछावर किये और अपने दीदार से भी नवाज़ा । याद रहे ! दीदारे इलाही एक ऐसी ने'मते उज़मा है कि जिस के हुसूल का हमेशा से हर खासो आम ही तमन्नाई रहा है, जिस की त़लब हर दिल की धड़कन बनी रही हत्ता कि येह ही आरजू इल्तिजा बन कर हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** के मुबारक लबों पर भी आ गई, अर्ज़ किया : **رَبِّ ارْنِي** ऐ रब मेरे मुझे अपना दीदार दिखा ! रब **عَزَّوَجَلَّ** ने इरशाद फ़रमाया : **لَنْ تَرَانِي** तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा । मगर जब बात अपने हबीब की आई तो खुद हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** को भेज कर महबूब को बुलवाया और अपने दीदार से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाया ।

जभी तो बुलबुले बागे जिनान, शाइरे खुश बयान इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** बे साख़्ता पुकार उठते हैं :

तबारकल्लाह शान तेरी तुझी को ज़ैबा है बे नियाज़ी
कहीं तो वोह जोशे लनतरानी कहीं तक्राजे विसाल के थे

(हदाइके बख़्शिश, स. 234)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

शाह दुल्हा बना आज की रात है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने कुरआने मजीद फुरकाने हमीद में इस वाकिअए मे'राज को इन अल्फ़ाज में बयान फ़रमाया है :

سُبْحَنَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ
لَيْلًا مِّنَ السُّجْدِ الْحَرَامِ إِلَى
السُّجْدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا
حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ الْإِيتِنَاءِ ۚ إِنَّهُ
هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ①

(प ५, बनी اسرائील : १)

तर्जमए कन्जुल इमान : पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा तक जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम इसे अपनी अज़ीम निशानियां दिखाएं बेशक वोह सुनता देखता है ।

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : “मे'राज शरीफ़ नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का एक जलील मो'जिज़ा और **अब्बाह** तअ़ाला की अज़ीम ने'मत है और इस से हुज़ूर का वोह कमाले कुर्ब ज़ाहिर होता है जो मख़्लूके इलाही में आप के सिवा किसी को मयस्सर नहीं । नबुव्वत के बारहवें साल सय्यिदे अ़ालम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मे'राज से नवाज़े गए, महीने में इख़िलाफ़ है मगर अशहर (या'नी ज़ियादा मशहूर बात) येह है कि सत्ताईसवीं रजब को मे'राज हुई, मक्कए मुकर्रमा से हुज़ूरे पुरनूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

का बैतुल मुक़दस तक शब के छोटे हिस्से में तशरीफ़ ले जाना नस्से कुरआनी से साबित है इस का मुन्किर काफ़िर है और आस्मानों की सैर और मनाज़िले कुर्ब में पहुंचना अहादीसे सहीहा मो'तबदा मशहूरा से साबित है जो हृदे तवातुर के क़रीब पहुंच गई हैं इस का मुन्किर गुमराह, मे'राज शरीफ़ ब हालते बेदारी जिस्म व रूह दोनों के साथ वाक़ेअ़ हुई येही जमहूर अहले इस्लाम का अक़ीदा है और अस्हाबे रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की कसीर जमाअतें और हुज़ूर के अजल्ला अस्हाब इसी के मो'तक़िद (या'नी मानने वाले) हैं। नुसूसे आयात व अहादीस से भी येही मुस्तफ़ाद होता है, तीरए दिमाग़ाने फ़ल्सफ़ा (फ़ल्सफ़ियों के अन्धेरों में भटकते दिमाग़ों) के अवहामे फ़ासिदा महज़ बातिल हैं कुदरते इलाही के मो'तक़िद के सामने वोह तमाम शुब्हात महज़ बे हक़ीक़त हैं।”

लफ़्जे **سُبْحَن** की हिक्मत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** तआला ने इस अज़ीम व जलील वाक़िए के बयान को लफ़्जे **سُبْحَن** से शुरूअ़ फ़रमाया जिस से मुराद **अल्लाह** तआला की तन्ज़ीह (या'नी पाकी) और ज़ाते बारी तआला का हर **ऐब व नक्स** से पाक होना है। इस में येह हिक्मत है कि वाक़िआते मे'राजे जिस्मानी की बिना पर मुन्किरीन की तरफ़ से जिस क़दर ए'तिराज़ात हो सकते थे इन सब का जवाब हो जाए। मसलन हुज़ूर नबिय्ये करीम

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का जिस्मे अक़दस के साथ बैतुल मुक़दस

या आस्मानों पर तशरीफ़ ले जाना और वहां से **ثُمَّ دَنَى فَتَدَلَّى** की मन्ज़िल तक पहुंच कर थोड़ी देर में वापस तशरीफ़ ले आना मुन्किरीन के नज़दीक नामुमकिन और मुहाल था। **अल्लाह** तआला ने लफ़्ज़े **سَبَّحْنِ** फ़रमा कर येह ज़ाहिर फ़रमा दिया कि येह तमाम काम मेरे लिये भी नामुमकिन और मुहाल हों तो येह मेरी अज़िज़ी और कमज़ोरी होगी। और **इज़्ज़ व ज़ो'फ़**, ऐब है और मैं हर ऐब से पाक हूं। इसी हिकमत की बिना पर **अल्लाह** तआला ने **أَسْرَى** फ़रमाया जिस का फ़ाइल **अल्लाह** तआला है हुज़ूर को जाने वाला नहीं फ़रमाया बल्कि अपनी ज़ाते मुक़द्दसा को ले जाने वाला फ़रमाया। जिस से साफ़ ज़ाहिर है कि **अल्लाह** तआला ने लफ़्ज़े **سَبَّحْنِ** और **أَسْرَى** फ़रमा कर मे 'राजे जिस्मानी पर होने वाले हर ए'तिराज़ का जवाब दिया है और अपने महबूब **عَلَيْهِ السَّلَام** की ज़ाते मुक़द्दसा को ए'तिराज़ात से बचाया है।

(مقالات کاظمی، حصہ اول، ص ۱۳۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर फ़ख़्रे मौजूदात सय्यिदे काइनात **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के इस अज़ीमुशान मो'जिज़े पर मो'तरिज़ीन व मुअनिदीन का बेजा ए'तिराज़ात करना कोई नई बात नहीं बल्कि आप **عَلَيْهِ السَّلَام** के दौरे मुबारक में भी बहुत से कोताह अन्देश और हकीकत से नाआश्ना लोग इस अज़ीम मो'जिज़े का इन्कार करते आए हैं, **अल्लाह** तबारक व तआला हमें ऐसों से महफूज़ फ़रमाए और हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के ज़िक्रे ख़ैर और मो'जिज़ाते जलीला का ख़ूब ख़ूब चर्चा करने की तौफीक़ अता फ़रमाए।

याद रहे कि **अल्लाह** तबारक व तआला का अपने महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को मे'राज पर बुलाने और अपने दीदार से मुशरफ़ फ़रमाने का मक्सद हुजूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की दिलजोई और तस्कीने खातिर था क्योंकि आप की तरफ़ से दा'वते तौहीद दिये जाने के बा'द कुफ़ारे जफ़ा कार की तरफ़ से लगातार **जुल्मो सितम** के अम्बार की वजह से आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** निहायत बेकरार थे जिस का वाकिआ कुछ यूँ है :

जिस रोज़ सफ़ा की चोटी पर खड़े हो कर **अल्लाह** तआला के महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने कुरैशे मक्का को दा'वते तौहीद दी थी उसी रोज़ से अदावत व इनाद के शो'ले भड़कने लगे, हर तरफ़ से **मसाइबो आलाम** का सैलाब उमड़ कर आया । रन्जो ग़म का अन्धेरा दिन ब दिन गहरा होता चला गया । लेकिन इस तारीकी में आप के चचा अबू तालिब और उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** का वुजूद हर नाजुक मर्हले पर आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के लिये तस्कीन व तमानीय्यत का सबब बना रहा, बिअसते नबवी के दसवें साल आप के चचा ने वफ़ात पाई, इस सदमे का ज़ख़्म अभी मुन्दमिल भी न होने पाया था कि मूनिस व हमदम रफ़ीक़ हयात हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** भी आप को दागे मुफ़ारक़त दे गई, कुफ़ारे मक्का को अब इन की इन्सानिय्यत सोज़ कारस्तानियों से रोकने वाला और इन की सफ़ाकाना रविश पर मलामत करने वाला भी कोई न रहा जिस के बाइस इन की ईजा रसानियां नाकाबिले बरदाश्त हद तक बढ़ गई ।

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ताइफ़ तशरीफ़ ले गए, शायद वहां के लोग आप की इस दा'वते तौहीद को क़बूल करने के लिये आमादा हो जाएं लेकिन वहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ जो ज़ालिमाना बरताव किया गया, इस ने साबिका ज़ख्मों पर नमक पाशी का काम किया, इन हालात में जब बज़ाहिर हर तरफ़ मायूसी का अन्धेरा फैल चुका था और ज़ाहिरी सहारे भी टूट चुके थे, रहमते इलाही ने अपनी अज़मत व किब्रियाई की वाजेह निशानियों का मुशाहदा कराने के लिये अपने महबूब को अलमे बाला की सियाहत के लिये बुलाया, ताकि हालात की ज़ाहिरी नासाज़गारी आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को मज़ीद रन्जीदा खातिर न कर सके, ग़ौर किया जाए तो सफ़रे मे'राज के लिये इस से मौजूं तरीन और कोई वक़्त नहीं हो सकता था।

सफ़रे मे'राज का आगाज़

इस सफ़रे मुक़द्दस के तमाम अहवाल व वाकिआत अहादीसे मुबारका और कुतुबे सीरत में तफ़्सीलन मज़कूर हैं। आइये नबिय्ये मुक़र्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़िक़्रे ख़ैर करने और आप عَلَيْهِ السَّلَام के बुलन्दो बाला मरातिब जानने के लिये हम भी मुख़्तसरन मे'राज शरीफ़ का ईमान अफ़रोज़ वाकिआ सुनते हैं। चुनान्वे,

मे'राज की रात सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के घर की छत खुली और नागहां हज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام चन्द फ़िरिश्तों के साथ नाज़िल हुवे और आप को हरमे का'बा में ले जा कर आप के सीनए मुबारक को चाक

किया और क़ल्बे अन्वर को निकाल कर आबे ज़मज़म से धोया फिर ईमान व हिक्मत से भरे हुवे एक तश्त को आप के सीने में उंडेल कर शिकम का चाक बराबर कर दिया। फिर आप बुराक़ पर सुवार हो कर बैतुल मुक़दस तशरीफ़ लाए। बुराक़ की तेज़ रफ़्तारी का येह आलम था कि उस का क़दम वहां पड़ता था जहां उस की निगाह की आखिरी हद होती थी। बैतुल मुक़दस पहुंच कर बुराक़ को आप ने उस हलके में बांध दिया जिस में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी अपनी सुवारियों को बांधा करते थे फिर आप ने तमाम अम्बिया और रसूलों عَلَيْهِمُ السَّلَام को जो वहां हाज़िर थे दो रक़अत नमाज़े नफ़ल जमाअत से पढ़ाई।

(روح البیان، پ ۱۵، الاسراء تحت الآية: ۱۰۶/۵، ۱۱۲، ۱، ملقطاً)

नमाज़े अक़सा में था येही सिरि इयां हों मा'निये अव्वल आखिर कि दस्त बस्ता हैं पीछे हाज़िर जो सलत्नत आगे कर गए थे

(हदाइके बख़्शाश, स. 232)

जब यहां से निकले तो हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने शराब और दूध के दो पियाले आप के सामने पेश किये आप ने दूध का पियाला उठा लिया। येह देख कर हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि आप ने फ़ितरत को पसन्द फ़रमाया अगर आप शराब का पियाला उठा लेते तो आप की उम्मत गुमराह हो जाती। फिर हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आप को साथ ले कर आस्मान पर चढ़े। पहले आस्मान में हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से, दूसरे आस्मान में हज़रते यहूया व हज़रते ईसा عَلَيْهِمَا السَّلَام से जो दोनों ख़ालाज़ाद

भाई थे मुलाकातें हुई और कुछ गुप्तगू भी हुई। तीसरे आस्मान में हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام चौथे आस्मान में हज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام और पांचवें आस्मान में हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام और छठे आस्मान में हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मिले और सातवें आस्मान पर पहुंचे तो वहां हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से मुलाकात हुई वोह बैतुल मा 'मूर से पीठ लगाए बैठे थे जिस में रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़िरिशते दाख़िल होते हैं। ब वक्ते मुलाकात हर पैग़म्बर ने “ख़ुश आमदीद ! ऐ पैग़म्बरे सालेह” कह कर आप का इस्तिक्बाल किया। फिर आप को जन्नत की सैर कराई गई। इस के बा'द आप सिद्रतुल मुन्तहा पर पहुंचे। उस दरख़्त पर जब अन्वारे इलाही का परतव पड़ा तो एक दम उस की सूरत बदल गई और उस में रंग बिरंग के अन्वार की ऐसी तजल्ली नज़र आई जिन की कैफ़ियतों को अल्फ़ाज़ अदा नहीं कर सकते। यहां पहुंच कर हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام येह कह कर ठहर गए कि अब इस से आगे मैं नहीं बढ़ सकता। फिर हज़रते हक़ جَلَّ جَلَالُهُ ने आप को अर्श बल्कि अर्श के ऊपर जहां तक उस ने चाहा बुला कर आप को बारयाब फ़रमाया और ख़ल्वत गाहे राज़ में नाज़ो नियाज़ के वोह पैग़ाम अदा हुवे जिन की लताफ़त व नज़ाकत अल्फ़ाज़ के बोझ को बरदाश्त नहीं कर सकती।

(सीरते मुस्तफ़ा, स. 734)

किसे मिले घाट का कनारा किधर से गुज़रा कहाँ उतारा
भरा जो मिस्ले नज़र तरारा वोह अपनी आंखों से खुद छुपे थे

ख़िर्द से कह दो कि सर झुका ले गुमां से गुज़रे गुज़रने वाले
पड़े हैं यां खुद जहत को लाले किसे बताए किधर गए थे

(हदाइके बख़्शिश, स. 235)

फिर आप ﷺ ने अल्लाह तअला का खास कुर्ब हासिल किया इसी मकामे कुर्ब को कुरआने मजीद में इन अल्फाज़ में बयान किया गया है : **ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ** : वहां क्या हुवा, येह भी मेरी और आप की अक़ल की रसाई से बालातर है ।

फिर जब आप ﷺ आलमे मलकूत की अच्छी तरह सैर फ़रमा कर और आयाते इलाहिय्या का मुआयना व मुशाहदा फ़रमा कर आस्मान से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए और बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हुवे और बुराक़ पर सुवार हो कर मक्का मुकर्रमा के लिये रवाना हुवे । रास्ते में आप ने बैतुल मुक़द्दस से मक्का तक की तमाम मन्ज़िलों और कुरैश के काफ़िले को भी देखा । इन तमाम मराहिल के तै होने के बा'द आप ﷺ मस्जिदे ह़राम में पहुंच कर चूँकि अभी रात का काफ़ी हिस्सा बाकी था, सो गए ।

ख़ुदा की कुदरत कि चांद हक़ के, करोड़ों मन्ज़िल में जल्वा कर के अभी न तारों की छाऊं बदली, कि नूर के तड़के आ लिये थे

(ह़दाइके बख़्शिश, स. 237)

और सुबह को बेदार हुवे और जब रात के वाकिआत का आप ने कुरैश के सामने तज़क़िरा फ़रमाया तो रुऊसाए कुरैश को सख़्त तअज्जुब हुवा यहां तक कि बा'जू कोर बातिनों ने आप को

झूटा कहा और बा'ज ने मुख्तलिफ़ सुवालात किये चूँकि अकसर रुऊसाए कुरैश ने बार बार बैतुल मुक़द्दस को देखा था और वोह येह भी जानते थे कि हुजूर ﷺ कभी भी बैतुल मुक़द्दस नहीं गए हैं इस लिये इम्तिहान के तौर पर उन लोगों ने आप से बैतुल मुक़द्दस के दरो दीवार और उस की मेहराबों वगैरा के बारे में सुवालों की बोछाड़ शुरू कर दी। उस वक़्त **अल्लाह** तआला ने फ़ौरन ही आप की निगाहे नबुव्वत के सामने बैतुल मुक़द्दस की पूरी इमारत का नक्शा पेश फ़रमा दिया। चुनान्वे, कुफ़ारे कुरैश आप से सुवाल करते जाते थे और आप इमारत को देख देख कर उन के सुवालों का ठीक ठीक जवाब देते जाते थे। (सیرत مصطفیٰ، ص ८३५، بحوالہ بخاری کتاب الصلوٰۃ، کتاب الانبیاء،)

کتاب التوحید، باب المعراج وغيره مسلم، باب المعراج وشفاء جلد ۱ ص ۱۸۵ و تفسیر روح المعانی، ۱۵/۳ تا ۱۰ وغيره کا خلاصہ)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकिअए मे'राज की तस्दीक में ईमान का इम्तिहान है कि मुख्तसर सी घड़ी में बेदारी के आलम में **जिस्म शरीफ़** के साथ आस्मान व अर्शे आ'ज़म तक बल्कि अर्श से भी ऊपर हृद्दे ला मकान तक तशरीफ़ ले जाना अक्ल से बाला तर है इसी वजह से वोह लोग जिन के दिल नूरे ईमान से ख़ाली थे उन्होंने ने इस अज़ीम वाकिए को न सिर्फ़ झुटलाया बल्कि तरह तरह से इस का मज़ाक़ भी उड़ाया लेकिन जिन के दिलों में यकीने कामिल का चराग़ रोशन था वोह किसी

भी परेशानी और तरद्दुद का शिकार नहीं हुवे और बिगैर किसी दलील के इस मो'जिजे को तस्लीम कर लिया, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के बारे में आता है।

तस्दीक़े में राज करने वाले सहाबी

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है, फ़रमाती हैं : जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा की सैर कराई गई तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दूसरी सुब्ह लोगों के सामने इस मुकम्मल वाक़िअ को बयान फ़रमाया, मुशरिकीन वगैरा दौड़ते हुवे हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास पहुंचे और कहने लगे : هَلْ لَكَ إِلَى صَاحِبِكَ يَزْعُمُ أَسْرَى بِهِ اللَّيْلَةَ إِلَى بَيْتِ الْمَقْدَسِ ؟ या'नी क्या आप इस बात की तस्दीक़ कर सकते हैं जो आप के दोस्त ने कही है कि उन्होंने ने रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा की सैर की ?" आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : "क्या आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वाक़ेई येह बयान फ़रमाया है ?" उन्होंने ने कहा : "जी हां।" आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : या'नी अगर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह इरशाद फ़रमाया है तो यकीनन सच फ़रमाया है। और मैं उन की इस बात की बिला झिजक तस्दीक़ करता हूं।

उन्हों ने कहा : **أَوْ تُصَدِّقُهُ أَنَّهُ ذَهَبَ اللَّيْلَةُ إِلَى بَيْتِ الْمُقَدَّسِ وَ جَاءَ قَبْلَ أَنْ يُصْبِحَ ؟** या'नी क्या आप इस हैरान कुन बात की भी तस्दीक करते हैं कि वोह आज रात बैतुल मुक़द्दस गए, और सुब्ह होने से पहले वापस भी आ गए ?" आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : **جِي هَا ! نَعَمْ ! إِنِّي لِأُصَدِّقُهُ فِيمَا هُوَ أَبْعَدُ مِنْ ذَلِكَ أُصَدِّقُهُ بِخَيْرِ السَّمَاءِ فِي غَدْوَةٍ أَوْ رَوْحَةٍ** तो आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की आस्मानी ख़बरों की भी सुब्हो शाम तस्दीक करता हूं। जो यकीनन इस बात से भी ज़ियादा हैरान कुन और तअज्जुब वाली बात है। पस इस वाक़िए के बा'द आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** "सिद्दीक" मशहूर हो गए ।"

(مشترک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر الاختلاف فی امر خلافتہ..... الخ ، ۲/ ۲۵، حدیث: ۲۵۱۵)

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ किस क़दर कामिल ईमान था सिद्दीक़े अक्बर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का कि जब आप ने येह सुना कि जनाबे सादिक़ो अमीन **عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ** ने ऐसा ऐसा फ़रमाया है तो इस पर आंख बन्द कर के यकीन कर लिया ।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **اَبْلَاهُ عَزَّوَجَلَّ** अपने प्यारे हबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सच्ची महब्बत अता फ़रमा और आप की सुन्नतों पर चलते हुवे अपनी ज़िन्दगी बसर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा । **اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**



बयान नम्बर : 62

रहमतों का खज़ाना

हज़रते सय्यिदुना इमाम सखावी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ** नक्ल फ़रमाते हैं : सरकारे दो आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक भेजा **أَعَزَّوَجَلَّ** उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है, **وَمَنْ صَلَّى عَلَى عَشْرٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ مِائَةً** और जो मुझ पर दस बार दुरूदे पाक भेजे **أَعَزَّوَجَلَّ** उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है, **وَمَنْ صَلَّى عَلَى مِائَةٍ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ بَرَاءَةً مِنَ الْبَغْيِ وَبَرَاءَةً مِنَ النَّارِ** और जो मुझ पर सो बार दुरूदे पाक भेजे **أَعَزَّوَجَلَّ** उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है, **وَأَسْكَنَهُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ الشُّهَدَاءِ** और क़ियामत के दिन उस को शहीदों के साथ रखेगा ।”

(القول البديع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة علی رسول اللہ..... الخ، ص ۲۳۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने दुरूदो सलाम पढ़ने वाले पर खुदाए रहमान **عَزَّوَجَلَّ** की कैसी करम नवाज़ियां हैं कि रोज़े क़ियामत उसे शुहदा के साथ उठाया जाएगा

लिहाज़ा हमें भी चाहिये की नबिय्ये करीम **عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ** पर

कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करें ताकि हमारा पढ़ा हुआ दुरूद हमारी बख़्शिश व मग़फ़िरत का ज़रीआ बन सके। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल हसन बिस्तामी قُدّيس سرّة السّامی फ़रमाते हैं : “मैं ने **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में दुआ की, कि मुझे ख़्वाब में अबू सालेह मुअज़्ज़िन की ज़ियारत हो जाए।” मेरी दुआ मक्बूल हुई, चुनान्चे, एक रात मैं ने उन को ख़्वाब में बड़ी अच्छी हालत में देखा। मैं ने उन से दरयाफ़्त किया : “ऐ अबू सालेह ! अपने यहां की कुछ ख़बर दो।” उन्होंने ने जवाब दिया :

يَا أَبَا حَسَنَ! كُنْتُ مِنَ الْهَالِكِينَ لَوْلَا كَثْرَةُ صَلَاتِي عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 ऐ अबल हसन ! अगर मैं ने सरकारे नामदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुरूदे पाक की कसरत न की होती तो मैं हलाक हो जाता।”

(القول البديع، الباب الثاني في ثواب الصلاة على رسول الله..... الخ، ص ۲۶۰)

मेरे आ'माल का बदला तो जहन्म ही था

मैं तो जाता मुझे सरकार ने जाने न दिया

(सामाने बख़्शिश, स. 61)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ पर दुरूदे पाक पढ़ना बे शुमार रहमतों और बरकतों के हुसूल का ज़रीआ है और **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मज़हबे मुहज़्ज़ब अहले सुन्नत व जमाअत का मा'मूल है कि वोह इन बरकात के हुसूल के लिये अपनी हर नेक महाफ़िल में हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ते हैं। जैसा कि

अलामते अहले सुन्नत

हज़रते सय्यिदुना अली बिन हुसैन बिन अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ

इरशाद फ़रमाते हैं : **عَلَامَةُ أَهْلِ السُّنَّةِ كَثْرَةُ الصَّلَاةِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ** : या'नी रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से दुरूद पढ़ना अहले सुन्नत की अलामत है ।”

(القول البديع، الباب الاول في الامر بالصلاة على رسول الله..... الخ، ص ۱۳۱)

اَللّٰهُ तबारक व तआला के करम से सुन्नी सहीहुल अक्कीदा मुसलमान अज़ान से पहले, अज़ान के बा'द, नमाज़े जुमुआ के बा'द और दीगर कसीर मवाक़ेअ पर दुरूदो सलाम पढ़ते ही रहते हैं और बा'ज़ तो ऐसे भी खुश नसीब होते हैं कि मरने के बा'द भी उन की ज़बानों पर दुरूदो सलाम के नग़मे जारी होते हैं ।

मैं वोह सुन्नी हूँ जमीले क़ादिरी मरने के बा'द

मेरा लाशा भी कहेगा **الصَّلَاةُ وَالسَّلَام**

(क़बालए बख़्शिश, स. 95)

कलामे इलाही में दुश्बो सलाम का हुक्म मुतलक़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैताने मक्कारो अय्यार जहां मुसलमानों को दीगर नेक आ'माल से रोकने की कोशिश करता है वहीं अज़ान से पहले और बा'द दुरूदो सलाम के हवाले से भी तरह़ तरह़ के वस्वसे दिलाता है । कभी कहता है कि येह

बिदअत है तो कभी इस अन्दाज़ से वार करता है कि क्या हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ भी अज़ान से पहले दुरूदो सलाम पढ़ा करते थे ?

याद रहे ! **अल्लाह** तबारक व तअ़ाला ने पारह **22** सूरतुल अहज़ाब की आयत नम्बर **56** में मुतलक़ तौर पर (या'नी कोई कैद लगाए बिगैर) इरशाद फ़रमाया है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ

وَسَلِّبُوا تَسْلِيمًا ⁽⁵¹⁾

(प २२, अहज़ाब: ५१)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो ।

और येह काइदा है कि **الْمُطَّلَقُ يَجْرَى عَلَى إِطْلَاقِهِ** मुतलक़ अपने इतलाक़ पर जारी रहता है । या'नी जो चीज़ शरीअत में बिगैर किसी कैद व शर्त के बयान की गई हो तो उस में अपनी तरफ़ से कोई शर्त या कैद लगाना दुरूस्त नहीं । चूँकि **अल्लाह** तअ़ाला ने मुतलक़न दुरूदो सलाम पढ़ने का हुक्म फ़रमाया है इस लिये चाहे अज़ान से पहले पढ़ा जाए या अज़ान के बा'द या दोनों जगह, इसी हुक्मे कुरआनी पर अमल के जुमरे में आएगा ।

अज़ां क्या जहां देखो ईमान वालो
पसे जिक्रे हक़, जिक़्र है मुस्तफ़ा का

(ज़ौके ना'त, स. 37)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

हज़रते सय्यिदुना उर्वा बिन जुबैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि बनी नज्जार की एक सहाबिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया : “मस्जिदे नबवी शरीफ़ के गिर्द जितने घर थे मेरा घर उन में सब से बुलन्द था। हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़ज्र की अज़ान उसी पर कहते थे। वोह पिछली रात आ कर मकान की छत पर बैठ जाते और फ़ज्र तुलूअ होने का इन्तिज़ार करते रहते। जब उसे देखते तो अंगड़ाई लेते और कहते : **عَزَّوَجَلَّ اَللّٰهُمَّ** ऐ **اَللّٰهُمَّ** اِنِّیْ اَحْمَدُکَ وَاسْتَغِیْنُکَ عَلٰی فُرَیْشٍ اَنْ یُّفِیْمُوْا دِیْنَکَ मैं तेरी हम्दो सना बयान करता हूं और कुरैश के मुक़ाबले में तेरी मदद चाहता हूं कि वोह तेरे दीन को क़ाइम करें। इस के बा'द अज़ान कहते। सहाबिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का बयान है कि खुदा की क़स्म ! मेरे इल्म में ऐसी एक रात भी नहीं जब उन्होंने ने येह अल्फ़ज़ न कहे हों।

(अबु दाउद, کتاب الصلاة, باب الاذان فوق المنارة, ۲/۱۹, حدیث: ۵۱۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हज़रते सय्यिदुना बिलाले हबशी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बिला नागा अज़ान से पहले कुरैश के लिये दुआइय्या कलिमात इरशाद फ़रमाया करते थे। जब अज़ान से पहले कुरैश के लिये दुआइय्या कलिमात कहना सिर्फ़ जाइज़ बल्कि **सुन्नते बिलाली** है तो फिर अज़ान से पहले सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये दुआ करना या'नी **दुरूदो सलाम** पढ़ना भी यकीनन जाइज़ बल्कि कसीर अज़्रो सवाब का बाइस है।

**किस्मत मुझे मिल जाए बिलाले हबशी की
दम इश्के मुहम्मद में निकल जाए तो अच्छ है**

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

बा'दे अज़ान दुरूद का शुबूत

याद रहे अज़ान से पहले दुरूदे पाक पढ़ना अगर्चे अह्लादीस से साबित नहीं लेकिन अज़ान के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ने का हुक्म तो खुद हुज़ूर عليه السلام ने इरशाद फ़रमाया है जैसा कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का फ़रमाने आलीशान है :

إِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ فَقُولُوا مِثْلَ مَا يَقُولُ ثُمَّ صَلُّوا عَلَيْهِ فَإِنَّهُ مَنْ صَلَّى عَلَى صَلَاةٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا
या'नी जब तुम मुअज़्ज़िन को सुनो तो तुम भी उसी तरह कहो जिस तरह वोह कह रहा है फिर मुझ पर दुरूद भेजो क्यूंकि जो मुझे एक दुरूद भेजता है **अल्लाह** तआला उस पर दस रहमतें भेजता है ।

(ترمذی، کتاب المناقب عن رسول الله، باب ملأه في فضل النبي ٣٥٣/٥، حديث: ٣٦٣٤)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عليه رحمه الله القوي इस हदीसे पाक के तहत इरशाद फ़रमाते हैं : “इस से मा'लूम हुवा कि अज़ान के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है बा'ज़ मुअज़्ज़िन अज़ान से पहले ही दुरूद शरीफ़ पढ़ लेते हैं इस में भी हरज नहीं, उन का माख़ज़ येही हदीस है। (हज़रते अल्लामा इब्ने अबिदीन) शामी قدس سره السامي ने फ़रमाया कि इक़ामत के वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है, ख़याल रहे कि अज़ान से पहले या बा'द बुलन्द आवाज़ से दुरूद पढ़ना भी जाइज़ बल्कि सवाब है बिला वजह इसे मन्अ नहीं कह सकते ।”

(मिरआत 1/411)

अज़ान और सलातो सलाम में फ़स्ल कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** फ़रमाते हैं : “अज़ानो इक़ामत से क़ब्ल **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़ कर **दुरूदो सलाम** के येह चार सीगे पढ़ लीजिये ।

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ
وَعَلَى الْكَوَاعِبِ يَا حَبِيبَ اللَّهِ
الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ
وَعَلَى الْكَوَاعِبِ يَا نُورَ اللَّهِ

फिर **दुरूदो सलाम** और अज़ान में फ़स्ल (या'नी वक़फ़ा) करने के लिये येह ए'लान कीजिये, “अज़ान का एह्तिराम करते हुवे गुफ़्तगू और काम काज रोक कर अज़ान का जवाब दीजिये और ढेरों नेकियां कमाइये ।” इस के बा'द अज़ान दीजिये । **दुरूदो सलाम** और इक़ामत के दरमियान येह ए'लान कीजिये “ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लीजिये, मोबाइल फ़ोन हो तो बन्द कर दीजिये ।”

अल्लामा नब्हानी **قُدِّسَ سِرُّهُ الثَّوْرَانِ** अज़ान से पहले **दुरूद शरीफ़** पढ़ने की हिक्मत और इस का ज़माना बयान फ़रमाते हैं कि अज़ान के वक़्त **दुरूदो सलाम** की इब्तिदा किसी नेक हस्ती ने की और क्यूं की और येह कब से तमाम दुन्या के मुसलमानों में राइज चलती आ रही है ? चुनान्वे, फ़रमाते हैं :

“अल कौलुल बदीअ में है कि अज़ान के बा'द मुअज़्ज़िनों ने

रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदो सलाम पढ़ना शुरू किया और मुअज़्ज़िन सुब्ह और जुमुआ की अज़ान से पहले पढ़ते हैं और मगरिब की अज़ान में वक़्त की तंगी की बिना पर आम तौर पर नहीं पढ़ते । और इन की इब्तिदा मुसलमानों के मशहूर और महबूब हुक्मरान, सिपह सालार सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के दौरै हुक्मत में इन के हुक्म पर हुई थी, रही इस से पहले की बात तो वोह येह है कि जब हाकिम बिन अब्दुल अज़ीज़ को क़त्ल किया गया तो उस की बहन ने हुक्म दिया कि इस (हाकिम बिन अब्दुल अज़ीज़) के बेटे ज़ाहिर पर सलाम भेजा जाए तो उस पर इन अल्फ़ाज़ के साथ सलाम कहा जाने लगा السَّلَامُ عَلَى الْإِمَامِ الظَّاهِرِ फिर इस के बा'द आने वाले खुलफ़ा में सलाम की रस्म चल निकली, यहां तक कि सुल्तान सलाहुद्दीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस रस्म को ख़त्म किया और इस की जगह रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदो सलाम का तरीका जारी किया ।”

(سعادة الدارين، الباب الخامس في المواطن التي تشرع فيها الصلاة على النبي، ص ۱۸۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

वस्वसा और इस का जवाब

वस्वसा : “अज़ान से क़ब्ल दुरूदो सलाम पढ़ना चूँकि दौरै रिसालत में मुरव्वज न था इस लिये बिदअत और नाजाइज़ है”

जवाब : इस वस्वसे का जवाब देते हुवे, अमीरे अहले सुन्नत

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं : “अगर येह काइदा तस्लीम कर लिया जाए कि जो काम उस दौर में नहीं होता था वोह अब करना बुरी बिदअत और गुनाह है तो फिर फ़ी ज़माना निज़ाम दरहम बरहम हो जाएगा । बे शुमार मिसालों में से फ़क़त **12** मिसालें पेशे ख़िदमत हैं कि जो काम उस मुबारक दौर में नहीं थे और अब इन को सब ने अपनाया हुवा है ।”

(1) कुरआने पाक पर नुक्ते और ए'राब हज़्जाज बिन यूसुफ़ ने सि. **95** हि. में लगवाए । (2) इसी ने ख़त्मे आयात पर अ़लामात के तौर पर नुक्ते लगवाए (3) कुरआने पाक की छपाई (4) मस्जिद के वस्तु में इमाम के खड़े रहने के लिये ताक़ नुमा मेहराब पहले न थी, वलीद मरवानी के दौर में सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ईजाद की । आज कोई मस्जिद इस से ख़ाली नहीं । (5) छे कलिमे (6) इल्मे सर्फ़ व नह्व (7) इल्मे हदीस और अहदीस की अक्साम (8) दर्से निज़ामी (9) शरीअत व तरीक़त के चार सिलसिले (10) ज़बान से नमाज़ की निय्यत (11) हवाई जहाज़ के ज़रीए सफ़रे हज़ (12) जदीद साइन्सी हथयारों के ज़रीए जिहाद । येह सारे काम उस मुबारक दौर में नहीं थे लेकिन अब इन्हें कोई गुनाह नहीं कहता तो आख़िर अज़ान व इक़ामत से पहले मीठे मीठे आका صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर **दुरूदो सलाम** पढ़ना ही क्यूं बुरी बिदअत और गुनाह हो गया ! याद

रखिये ! किसी मुआमले में अ़दमे जवाज़ की दलील न होना खुद

दलीले जवाज़ है। यकीनन, यकीनन, यकीनन हर वोह नई चीज़ जिस को शरीअत ने मन्अ नहीं किया वोह बिदअते हसना और मुबाह या'नी अच्छी बिदअत और जाइज़ है और येह अम्मे **मुसल्लम** है कि अज़ान से पहले **दुरूद शरीफ़** पढ़ने को किसी भी हदीस में मन्अ नहीं किया गया लिहाज़ा मन्अ न होना खुद ब खुद “इजाज़त” बन गया और अच्छी अच्छी बातें इस्लाम में ईजाद करने की तो खुद मदीने के ताजवर, नबियों के सरवर, हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने तरगीब इरशाद फ़रमाई है। चुनान्चे, सुल्ताने दो जहान **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का येह फ़रमाने इजाज़त निशान मौजूद है।

مَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَعَمِلَ بِهَا بَعْدَهُ كُتِبَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ
مَنْ عَمِلَ بِهَا وَلَا يَنْقُصُ مِنْ أَجُورِهِمْ شَيْءٌ

या'नी जिस शख्स ने मुसलमानों में कोई नेक तरीका जारी किया और इस के बा'द उस तरीके पर अमल किया गया तो उस तरीके पर अमल करने वालों का अज़्र भी उस के (या'नी जारी करने वाले) के नामए आ'माल में लिखा जाएगा और अमल करने वालों के अज़्र में कमी नहीं होगी।”

(مسلم كتاب العلم، باب من سن سنة حسنة أو سيئة..... الخ، ص ٤٣٧، حديث: ٢٦٧٣)

मतलब येह कि जो इस्लाम में अच्छा तरीका जारी करे वोह बड़े सवाब का हक़दार है तो बिला शुबा जिस खुश नसीब ने

अज़ान व इक़ामत से क़ब्ल **दुरूदो सलाम** का रवाज डाला है वोह भी सवाबे जारिय्या का मुस्तहिक़ है, क़ियामत तक जो मुसलमान इस तरीक़े पर अमल करते रहेंगे उन को भी सवाब मिलेगा और जारी करने वाले को भी मिलता रहेगा और दोनों के सवाब में कोई कमी नहीं होगी । (फैज़ाने अज़ान, नमाज़ के अहक़ाम)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें हर वक़्त नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की सुन्नतों पर चलते हुवे अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने की सआदत नसीब फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा

जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की खातिर ज़ीनत तर्क कर दे और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की खातिर तवाज़ोअ़ करे और उस की रिज़ा चाहते हुवे खुरदरा लिबास अपनाए तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के ज़िम्माए करम पर है कि वोह उसे जन्नत के नफ़ीस लिबास से तब्दील फ़रमा दे । (क़ज़्ज़ा अल-अमाल, ५१/३, हिदयत: ५८५)



बयान नम्बर : 63

जुमुआ के दिन दुखुदे पाक की फज़ीलत

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** से रिवायत है कि नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने शफ़ाअत निशान है : “जो शख्स जुमुआ के दिन मुझ पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ेगा तो बरोजे क़ियामत उस की शफ़ाअत मेरे ज़िम्माए करम पर होगी ।”

(کنز العمال، کتاب الانکار، الباب السادس فی الصلاة علیه علی آله ٢٥٥/١، الجزء الاول، حدیث: ٢٢٣٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** तबारक व तआला ख़ालिके काइनात है दुन्या की हर चीज़ उसी की बनाई हुई है अगर हम अपने गिर्दो पेश पर ताइराना निगाह दौड़ाएं तो हमें अन्दाज़ा होगा कि येह जिन्नो इन्सान, मटयाली ज़मीन और नीलगूं आस्मान, लको दक़ सहारा, सर सब्ज मैदान, खुश नुमा बागात, लहलहाते खेत, महकते फूल, अन्वाओ अक्साम के फल, बहती नहरें, उबलते चश्मे, चमकते सितारे, ख़ूब सूरत महताब, रोशन आफ़ताब, ला जवाब मा'दनिय्यात, मुख़्तलिफ़ जमादात और बे शुमार हैवानात **अल्लाह** तआला ही की मख़्लूक हैं जैसा कि पारह 24, सूरतुज्जुमर की आयत नम्बर 62 में फ़रमाने बारी तआला है :

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ

तर्जमए कन्जुल ईमान : **अल्लाह**

हर चीज़ का पैदा करने वाला है ।

अल्लाह तबारक व तअाला ने इन तमाम हसीनो जमील अश्या को पैदा फ़रमा कर पूरी दुन्या को हुस्नो जमाल बख़्शा और पूरी काइनात के हुस्न से बढ़ कर हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَى نَبِيٍّ وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को जमाल बख़्शा । आप के हुस्नो जमाल का येह अलम था कि जब मिस्र की औरतों ने आप को देखा तो आप के हुस्न में ऐसी गुम हुई कि बे खुदी के अलम में अपनी उंगलियां काट डालीं । इस वाकिए को कुरआने पाक ने इन अल्फ़ाज़ के साथ बयान किया है :

فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ

وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ

حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا

إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ①

(प १२, योसुफ़: ३१)

तर्जमए कन्जुल ईमान : जब औरतों ने यूसुफ़ को देखा उस की बड़ाई बोलने लगीं, और अपने हाथ काट लिये, और बोलीं **अल्लाह** को पाकी है येह तो जिन्से बशर से नहीं, येह तो नहीं मगर कोई मुअज़्ज़ज़ फ़िरिश्ता ।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : “क्योंकि उन्होंने ने इस जमाले अलम अफ़रोज़ के साथ नबुव्वत व रिसालत के अन्वार और तवाजोअ व इन्किसार के आसार और शाहाना हैबत व इक्तदार और लज़ाइजे अतइमा और सुवरे जमीला की तरफ़ से बे नियाज़ी की शान देखी, तअज्जुब में आ गई और आप की अज़मत व

हैबत दिलों में भर गई और हुस्नो जमाल ने ऐसा वारिफ़ता किया कि उन औरतों को खुद फ़रामोशी हो गई। और (उन के) दिल हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के साथ ऐसे मशगूल हुवे कि हाथ काटने की तकलीफ़ का अस्लन एहसास न हुवा।”

येह तो हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَى نَبِيٍّ وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के हुस्न का आलम था कि जिन्हें तमाम मख़्लूक से बढ़ कर हुस्नो जमाल अता किया गया। मगर याद रहे कि इस काइनात में एक ऐसी मुबारक हस्ती भी है जो हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से बढ़ कर पैकरे हुस्नो जमाल है। वोह हुस्न के शाहकार हबीबे परवर दगार हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हैं जिन का हुस्न, यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से भी बढ़ कर है। हज़रते यूसुफ़ को हुस्नो जमाल का एक जुज़ अता हुवा और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को हुस्ने कुल अता किया गया जैसा कि

हज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي हाफ़िज़ अबू नुऐम से नक़ल करते हुवे फ़रमाते हैं : “हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को तमाम अम्बिया व मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام बल्कि तमाम मख़्लूक से बढ़ कर हुस्न अता किया गया, मगर हमारे नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को ऐसा हुस्नो जमाल अता किया गया जो किसी को अता नहीं हुवा। यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को हुस्न का एक जुज़ अता किया गया जब कि हमारे नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को हुस्ने कुल अता किया गया।

सब से औला व आ'ला हमारा नबी सब से बाला व वाला हमारा नबी
खल्क से औलिया औलिया से रुसुल और रसूलों से आ'ला हमारा नबी
हुस्न खाता है जिस के नमक की क़सम वोह मलीहे दिल आरा हमारा नबी
(हदाइके बख़्शिश, स. 138)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका
रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं :

فَلَوْ سَمِعُوا فِي مِصْرَ أَوْ صَافَ حَدِّهِ لَمَا بَدَّلُوا فِي سَوْمِ يُوسُفَ مِنْ نَقْدٍ

या'नी अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रुख़्सारे मुबारक
के अवसाफ़ अहले मिस्र सुन पाते तो जनाबे यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की
कीमत लगाने में सीमो ज़र (मालो दौलत) न बहाते ।

لَوْ أَحَى زُيْخَا لَوَرَأَيْنَ جَبِينَهُ لَأَثَرْنَ بِالْقَطْعِ الْقُلُوبِ عَلَى الْأَيْدِي

या'नी अगर जुलैखा को मलामत करने वाली औरतें
आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जबीने अन्वर देख पातीं तो हाथों के
बजाए अपने दिल काटने को तरजीह देतीं ।

(ज़रफ़ानि علی المواهب، عائشه ام المومنین، ३९०/४)

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नां

सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अरब

(हदाइके बख़्शिश, स. 138)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अब्बाह** तआला ने
हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को जिस तरह कमाले सीरत में
तमाम अब्बलीनो आख़िरीन से मुमताज़ और अफ़ज़लो आ'ला
बनाया इसी तरह आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को जमाले सूरत में
भी बे मिस्लो बे मिसाल पैदा फ़रमाया । हम और आप हुज़ूरे

अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शाने बे मिसाल को भला क्या समझ सकते हैं ? हज़रते सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जो दिन रात सफ़र व हज़र में जमाले नबुव्वत की तजल्लियां देखते रहे उन्होंने ने महबूबे खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जमाले बे मिसाल के फज़ल को जिन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया उसे मुलाहज़ा फ़रमाइये । चुनान्ते,

सरकार का हुस्नो जमाल

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आज़िब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : **كَانَ رَسُولُ اللَّهِ أَحْسَنَ النَّاسِ وَجْهًا وَأَحْسَنَهُ خُلُقًا** : या'नी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तमाम लोगों में ख़ूब सूरत तरीन और सब से अच्छे अख़लाक़ के मालिक थे ।”

(بخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبي، ۴/۲، حدیث: ۳۵۲۹)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका

كَانَ رَسُولُ اللَّهِ (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) أَحْسَنَ النَّاسِ وَجْهًا وَأَنُورَهُمْ لُونًا फ़रमाती हैं : **كَانَ رَسُولُ اللَّهِ (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) أَحْسَنَ النَّاسِ وَجْهًا وَأَنُورَهُمْ لُونًا** या'नी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सब से ज़ियादा ख़ूब सूरत और ख़ुश रंग थे” मज़ीद आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : **لَمْ يَصِفْهُ وَاصِفٌ قَطُّ إِلَّا شَبَّهَ وَجْهَهُ بِالْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ** तौसीफ़ बयान की उस ने आप को चौदहवीं के चांद से तशबीह दी, **وَكَانَ عَرْقُهُ فِي وَجْهِهِ مِثْلَ اللُّؤْلُؤِ** या'नी आप के पसीने की बूंद आप के चेहराए अन्वर में यूँ मा'लूम होती जैसे मोती ।”

(الخصائص الكبرى، باب الآية في عرقه الشريف، ۱/۱۱۵)

चेहरए अन्वर की ताबानी

हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :
 يَا'नी जब وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سُرَّ اسْتَبَارَ وَجْهَهُ حَتَّى كَأَنَّهُ قِطْعَةُ قَمَرٍ :
 रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खुश होते तो चेहरए अन्वर खुशी से
 दमक उठता और यूं मा'लूम होता गया चांद का टुकड़ा है ।”

(بخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبي، ۴/۲۸۸، حدیث: ۳۵۵۶)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :
 مَا رَأَيْتُ شَيْئًا أَحْسَنَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ الشَّمْسُ تَجْرِي عَلَى وَجْهِهِ
 या'नी मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से ज़ियादा हसीन
 किसी को नहीं देखा, गोया ऐसा मा'लूम होता कि सूरज आप के
 चेहरे में चल रहा हो ।”

(مشكاة، کتاب الفضائل، باب فضائل سيد المرسلين، ۳/۲۶۲، حدیث: ۵۷۹۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان
 ने अपने अपने अल्फ़ाज़ में हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के हुस्नो जमाल
 को बयान फ़रमाया । किसी ने चांद कहा तो किसी ने सूरज से
 तशबीह दी येह सिर्फ़ समझाने के लिये है वरना हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام
 का हुस्नो जमाल तो बे मिस्लो बे मिसाल है ।

सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन
 समुरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “एक मरतबा मैं ने

रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को चांदनी रात में देखा, मैं कभी चांद की तरफ़ देखता और कभी आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के चेहरए अन्वर को देखता तो मुझे आप का चेहरा चांद से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत नज़र आता था ।”

(الشّمائل المحمدية، باب ما جاء فی خلق رسول الله صلى الله علیه وسلم، ص ۲۴، حدیث: ۹)

नूर की ख़ैरात लेने दौड़ते हैं महरो माह
उठती है किस शान से गिर्दे सुवारी वाह वाह

(हदाइके बख़्शाश, स. 134)

येह जो महरो माह पे है इतलाक़ आता नूर का
भीक तेरे नाम की है इस्तिअ़ारा नूर का

(हदाइके बख़्शाश, स. 248)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायात में और इन के इलावा अकसर रिवायात में सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** ने चेहरए अन्वर को चांद से तशबीह दी हालांकि सूरज की रोशनी चांद से ज़ियादा होती है। इस की हिक्मत येह है कि चांद रूए ज़मीन को अपनी ताबानियों से भर देता है और देखने वालों को उस से उनसिय्यत हासिल होती है और बिगैर किसी तकलीफ़ के उस पर नज़रें जमाना मुमकिन होता है जब कि सूरज में येह सब मुमकिन नहीं क्यूंकि उसे देखने से आंखें चुंधया जाती हैं।

(زرقانی علی المواهب، المقصد الثالث، الفصل الاول فی کمال خلقته وجمال صورته، ۲۵۸/۵)

याद रहे ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

के जिस हुस्नो जमाल को चांद व सूरज से तशबीह दी है येह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कामिल हुस्नो जमाल नहीं था अगर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوَةُ وَالسَّلَام का हुस्ने कामिल लोगों पर ज़ाहिर हो जाता तो आंखें उसे देखने की ताक़त न रखती । जैसा कि

वोह अगार जल्वा करें कौन तमाशाई हो ?

अल्लामा जुरकानी قَدِيسَ سِرَّةُ التَّوَرَانِ इमाम कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से नक़ल फ़रमाते हैं कि : “हुज़रे अक़दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तमाम तर हुस्नो जमाल हम पर ज़ाहिर नहीं हुवा, अगर आप का कामिल हुस्न हम पर ज़ाहिर हो जाता तो हमारी आंखें उस जल्वाए ज़ैबा को देखने की ताब न लातीं ।”

(زرقانی علی المواہب، المقصد الثالث، الفصل الاول فی کمال خلقته وجمال صورته، ۲/۱۵)

हज़रते शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि : “मेरे वालिदे माजिद शाह अब्दुरहीम साहिब ने हुज़रे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा तो अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को देख कर ज़नाने मिस्र (मिस्र की औरतों) ने अपने हाथ काट लिये थे और बा'ज़ लोग उन को देख कर मर भी जाते थे मगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख कर किसी की ऐसी हालत नहीं हुई ।”

तो हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “मेरा जमाल लोगों की आंखों से **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ैरत की वजह से छुपा रखा है और

अगर आश्कार हो जाए तो लोगों का हाल इस से भी ज़ियादा हो
जो यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को देख कर हुवा करता था ।

(ज़िक्रे जमील, स. 78)

एक झलक देखने की ताब नहीं आलम को
वोह अगर जल्वा करें कौन तमाशाई हो

(जौके ना'त, स. 142)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ने अपने हबीबे करीम
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को किस क़दर हुस्नो जमाल और ख़ूबी व
कमाल से नवाज़ा अगर हम अपनी ज़बान से आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام
की ता'रीफ़ो तौसीफ़ बयान करना चाहें या आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
के हुस्नो जमाल को तहरीर में लाना चाहें तो येह सफ़हात कम पड़
जाएंगे, हमारी ज़िन्दगियां ख़त्म हो जाएगी मगर फिर भी हुज़ूर
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के तमाम अवसाफ़ बयान करने का हक़ अदा
न होगा । जैसा कि

बुलबुले बागे जिनां, शाइरे खुश बयां, इमाम अहमद रज़ा
ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने अपने ना'तिया दीवान “हदाइके बख़्शिश”
के एक कलाम में हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अवसाफ़े हमीदा
बयान फ़रमाते हुवे गोया इस बात का इक़रार किया कि आप
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अवसाफ़ आ'दाद व शुमार से मावरा हैं
आप के अवसाफ़ बयान कर के इन्हें कुल अवसाफ़ क़रार देना मेरे

नज़दीक ऐब है क्यूंकि आप की खूबियां तो हतमी तौर पर शुमार ही नहीं की जा सकतीं चुनान्चे, अर्ज़ गुज़ार हैं :

तेरे तो वस्फ़ ऐबे तनाही से हैं बरी
हैरां हूं मेरे शाह मैं क्या क्या कहूं तुझे

कह लेगी सब कुछ उन के सना ख़्वां की ख़ामोशी
चुप हो रहा है कह के मैं क्या क्या कहूं तुझे

(हदाइके बख़्शाश, स. 175)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकेई हम हुज़ूर जाने आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अवसाफ़ व कमाल बयान करने का हरगिज़ हरगिज़ हक़ अदा नहीं कर सकते लेकिन आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्र से बरकत हासिल करने के लिये आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के चन्द आ'ज़ाए शरीफ़ा के तनासुब और हुस्नो जमाल का तज़क़िरा सुन कर अपने लिये रहमतों और बरकतों का सामान इकठ्ठा करते हैं ।

जिस्म मुबारक

हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक्दस का रंग गोरा सपेद (सफ़ेद) था । ऐसा मा'लूम होता था कि गोया आप का मुक़द्दस बदन चांदी से ढाल कर बनाया गया है ।

-(الشّمائل المحمدية، باب مجاء فی خلق رسول الله صلى الله عليه وسلم، ص ۲۵، حدیث: ۱۱)

क़द मुबारक

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ न बहुत ज़ियादा लम्बे थे न पस्ता क़द बल्कि आप दरमियानी क़द वाले थे और आप का मुक़द्दस बदन इन्तिहाई ख़ूब सूरत था जब चलते थे तो कुछ ख़मीदा हो कर (झुक कर) चलते थे ।

(الشّمسائل المصّدية، باب ما جاء في خلق رسول الله صلى الله عليه وسلم، ص ١٦، حديث: ٢)

मुक़द्दस बाल

हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मूए मुबारक न घुंघरदार थे न बिल्कुल सीधे बल्कि इन दोनों कैफ़ियतों के दरमियान थे । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुक़द्दस बाल पहले कानों की लौ तक थे फिर शानों तक ख़ूब सूरत गैसू लटकते रहते थे मगर हज़्जतुल वदाअ के मौक़अ पर आप ने अपने बालों को उतरवा दिया । आ'ला हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने आप के मुक़द्दस बालों की इन तीनों सूरतों को अपने दो शे'रों में बहुत ही नफीस व लतीफ़ अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है कि

गोश तक सुनते थे फ़रयाद अब आए तादोश

कि बनें ख़ाना बदोशों को सहारे गैसू

आख़िरे हज़ ग़मे उम्मत में परेशां हो कर

तीरा बख़्शों की शफ़ाअत को सिधारे गैसू

(हदाइके बख़्शिश, स. 119)

नूरानी आंख

आप ﷺ की चश्माने मुबारक बड़ी बड़ी और कुदरती तौर पर सुरमगीं थीं, पलके घनी और दराज़ थीं। पुतली की सियाही ख़ूब सियाह और आंख की सफ़ेदी ख़ूब सफ़ेद थी जिन में बारीक बारीक सुर्ख़ डोरे थे।

(अश्माल अलमुहम्मिये, باب ماجاء في خلق رسول الله صلى الله عليه وسلم, ص १९, حديث: २०: ملقطاً)

आप ﷺ की मुक़द्दस आंखों का येह ए'जाज़ है कि आप बयक वक़्त आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे, दिन रात, अन्धेरे उजाले, में यक्सां देखा करते थे।

(الخصائص الكبرى, باب المعجزة والخصائص... إلخ, १/१०, والمواهب اللدنية وشرح الزرقاني, الفصل الأول في كمال خلقته... إلخ, २/२२३, २/२६४)

शश जहत सिम्त मक़ाबिल शबो रोज़ एक ही हाल

धूम "वन्नज्म" में है आप की बीनाई की

फ़र्श ता अर्श सब आईनए ज़माइर हाज़िर

बस क़सम खाइये उम्मी तेरी दानाई की

(हदाइके बख़्शाश, स. 154)

दहन शरीफ़

हज़रते हिन्द बिन अबी हाला رضي الله تعالى عنه का बयान है कि आप ﷺ के रुख़सार नर्म व नाज़ुक और हमवार थे और आप ﷺ का मुंह फ़राख़, दांत कुशादा और रोशन थे। जब आप ﷺ गुफ़्तगू फ़रमाते तो आप

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

के दोनों अगले दांतों के दरमियान से एक नूर निकलता था और जब कभी अन्धेरे में आप मुस्कुरा देते तो दन्दाने मुबारक की चमक से रोशनी हो जाती थी ।

(الشمائل المحمدية، باب ماجاء فى خلق رسول الله، ص २८، حديث: १२ ملخصاً)

वोह दहन जिस की हर बात वहिये खुदा

चश्मए इल्मो हिकमत पे लाखों सलाम

(हदाइके बख्शाश, स. 302)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुख्तसर येह कि हुजूर सन्अते खुदावन्दी के आ'ला तरीन नुमूना और जमाल व कमाले इलाही के मजहरे अतम और हुस्नो जमाल में बे मिस्ल व बे मिसाल हैं अव्वलीन व आखिरीन में न कोई ऐसा था न है न होगा । हमें भी चाहिये कि ऐसे मन मोहने सोहने आका के हर वक्त गुन गाते रहें और अपनी ज़िन्दगी को आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की प्यारी प्यारी सुन्नतों के मुताबिक बसर करें । सुन्नतों पर अमल का जज़बा पाने और दुनिया व आखिरत की बेहतरी का ज़ेहन बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से कितने ही बद मजहब तौबा कर के सच्चे अशिके रसूल बन गए । चुनान्चे, इस ज़िम्न में एक मदनी बहार मुलाहज़ा फ़रमाइयें ।

हक़ का मुतलाशी

वज़ीराबाद (ज़िल्ल अ गुजरानवाला, पंजाब, पाकिस्तान)

के एक इस्लामी भाई की तहरीर का खुलासा है : मैं अक़ाइद के मुतअल्लिक़ तरहुद का शिकार था, मज़हबे हक़ की तलाश में भटकता फिर रहा था मगर मुझे कुछ सुझाई न दे रहा था कि कौन सा मज़हब हक़ है ? हत्ता कि मैं ने मसाजिद में नमाज़ पढ़ना ही तर्क कर दिया । अब घर पर ही नमाज़ पढ़ लिया करता । एक अर्से तक येही सिलसिला जारी रहा, फिर महल्ले की मस्जिद के इमाम साहिब के समझाने पर दोबारा मस्जिद में नमाज़ पढ़ने लगा, एक दिन मस्जिद में कुछ इस्लामी भाइयों ने मुझे क़ल्बी सुकून हासिल करने के लिये हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत की तरगीब दिलाई तो मैं ने इजतिमाअ में शिर्कत करना शुरूअ कर दी । इजतिमाआत में होने वाली कुरआने पाक की तिलावत, ना'त, बयानात और आख़िर में होने वाली रिक्क़त अंगेज़ दुआओं ने रफ़्ता रफ़्ता मेरे दिल के जंग को दूर और मेरे सीने को इश्के रसूल से मा'मूर कर दिया । मुझ पर अहले सुन्नत व जमाअत का हक़ होना वाज़ेह हो गया । मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम होने वाले 30 रोज़ा इजतिमाई ए'तिकाफ़ में शिर्कत की सआदत हासिल की तो मुझ पर आप़ताबे नीम रोज़ (दोपहर के सूरज) से बढ़ कर रोशन हो गया कि अहले सुन्नत व जमाअत ही हक़ पर हैं । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** अब मुझे क़ल्बी

सुकून हासिल है। अब तो मैं न सिर्फ मस्जिद में नमाज़ पढ़ता हूँ बल्कि दर्से फैज़ाने सुन्नत की सआदत भी पा रहा हूँ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हमें नबय्ये करीम, रऊफुर्रहीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महबूबत में झूम झूम कर **दुरूदो सलाम** के नज़राने पेश करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, गुनाहों से बचते हुवे नेकियां करने और आप की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अमल करते हुवे तादमे हयात दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा

तुम मुझे छे चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूँ, (1) जब बोलो तो सच बोलो, (2) जब वा'दा करो तो उसे पूरा करो, (3) जब अमानत लो तो उसे अदा करो, (4) अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो, (5) अपनी निगाहें नीची रखा करो और (6) अपने हाथों को रोके रखो। (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ٢٤٥/١٠، حديث: ٢٧١)



तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

उनुवान	सफ़ह	उनुवान	सफ़ह
याद दास्त	1	बयान नम्बर : 3	43
इजमाली फ़ेहरिस्त	5	सारी मख़्लूक की आवाज़ सुनने वाला फ़िरिस्ता	43
किताब पढ़ने की निय्यतें	8	फ़िरिस्ते की कुव्वते समाअत	43
अल मदीनतुल इल्मिय्या	10	आस्मान की मस्जिद का इमाम	45
पहले इसे पढ़ लीजिये	12	फ़िरिस्ते सुब्हो शाम दुरुद भेजते रहेंगे	47
बयान नम्बर : 1	14	दो उंगलियों के सबब मग़फ़िरत हो गई	47
दुरुद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	14	दुरुद शरीफ़ लिखना वाजिब है	49
सरकार पर पढ़ा हुआ दुरुद शरीफ़ काम आ गया	15	س یا صلعم लिखना सख़्त ह़राम है	49
पोशीदा इल्म	18	صلعم के मूजिद का हाथ काटा गया	50
इन्आमात की बरसात	24	صلعم लिखना महरूमों का काम है	52
सआदते उज़मा	27	“وَسَلِّمْ” पर चालीस नेकियां	52
मुस्तफ़ा जाने रहमत का दीदार	28	बयान नम्बर : 4	54
बयान नम्बर : 2	30	जन्नत का अनोखा फ़ल	54
शफ़ाअत वाजिब हो गई	30	वाइज़ पर दुरुदे सलाम के सबब करम बालाए करम	57
क़बूलिय्यते दुआ का परवाना	30	अर्श का साया किस को मिलेगा ?	59
ज़मीनो आस्मान के दरमियान मुअल्लक़ दुआ	32	मोतिया जाता रहा	60
दरबारे नबी में फ़िरिस्तों की हाज़िरी	33	बयान नम्बर : 5	62
क़ब्र से मुश्क की खुशबू !	39	दुरुदे पाक न पढ़ने का वबाल	62
77 साल बा'द भी जिस्म सलामत	39	दुरुदे पाक पढ़ने का शरई हुक्म	63
मार्शल आर्ट का माहिर मुबल्लिग़ कैसे बना ?	41	रहमते इलाही से दूर	64

खौफनाक काला सांप	65	70 मरतबा रहमतों का नुजूल	91
अल्लाह की ला'नत	67	560 क़ब्रों से अज़ाब उठा लिया गया	91
बाइसे हसरत मजलिस	69	मोहताजी दूर करने का नुस्खा	93
जन्नत में दाखिले के बा वुजुद हसरत	69	आदमी का पेट क़ब्र की मिट्टी ही भरेगी	94
बयान नम्बर : 6	72	दो हरीस	96
कुर्बते सरकार के हक़दार	72	दुरुद ख़्वां मखिख़यां	97
वुजुर्गानि दीन का दस्तूर	73	बयान नम्बर : 9	99
हुसूले शफ़ाअत का आसान वज़ीफ़ा	73	एक कीरात अज़्र	99
क़बूलिय्यते दुआ की चाबी	74	हदीसे पाक से हासिल होने वाले सात	
मेरी शफ़ाअत लाज़िम है	75	मदनी फूल	101
एक मस्अला और इस की वज़ाहत	75	अज़ाबे क़ब्र का एक सबब	103
जब कान बजने लगे तो दुरुद पढ़ो	78	ज़बान मुफ़ीद भी है मुज़िर भी	105
कब कब दुरुद शरीफ़ पढ़ना ममनूअ है	80	रोज़ाना सुब्ह आ'ज़ा ज़बान की खुशामद	
बयान नम्बर : 7	82	करते हैं	105
मौत से पहले जन्नत में मक़ाम देखेगा	82	ज़बान की बे एहतियाती की आफ़तें	106
तर्बिय्यते अवलाद के लिये तीन अहम बातें	82	दिल की सख़्ती का अन्जाम	106
दुरुदे पाक का आशिक़	83	बयान नम्बर : 10	109
अहलो इयाल की इस्लाह की जिम्मेदारी	84	सरकार अहले महब्बत का दुरुद खुद सुनते हैं	109
अहलो इयाल को अज़ाब से किस तरह		बा कमाल मदनी मुन्नी	110
बचाया जाए ?	85	सालिहीन का ज़िक्र बाइसे रहमत है	111
इब्तिदाई उम्र में बच्चों की तर्बिय्यत का तरीका	87	दुरुद ख़्वां का बदन मिट्टी नहीं खा सकती	114
बयान नम्बर : 8	91	77 साल बा'द भी जिस्म सलामत था	115

मजारे पुर अन्वार से कस्तूरी की खुशबू	115	बयान नम्बर : 15	163
बैअत की अहमियत	116	दुरुदे पाक की रसाई	163
बयान नम्बर : 11	119	खूब सूरत आंखों वाली हूँ	164
सूजने गुमशुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे	119	रहमते खुदावन्दी का जोश	167
ऐवाने शाम रोशन हो गए	120	बयान नम्बर : 16	172
सरकार की बशरियत का इन्कार करना कैसा ?	121	बद नसीब कौन...?	172
सब से पहली तख्लीक़	122	माहे रमज़ानुल मुबारक में इबादत	173
चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले	123	वालिदैन् की ताबेअदारी और इन की खिदमत	175
ब्रेक डान्सर कैसे सुधरा ?	126	दुरुदो सलाम की कसरत	178
बयान नम्बर : 12	130	दुरुदो सलाम की आदत बनाने का नुस्खा	179
जुमुआ के दिन दुरुदे पाक की कसरत	130	बयान नम्बर : 17	181
अम्बिया अपनी कब्रों में ज़िन्दा हैं	132	दुआओं का मुहाफ़िज़	181
दस्त बोसी का शरफ़	135	हौज़े कौसर की शान	183
जन्नत का परवाना	141	वस्वसा और इस का जवाब	185
बयान नम्बर : 13	143	गुनाहों की आदत छूट गई	189
रिज़्क में कुशादगी का राज़	143	बयान नम्बर : 18	190
चेहरा सफ़ेद और वरम दूर हो गया	144	दस गुना सवाब	190
कुर्बे खास	151	ज़िक्रे रसूल ज़िक्रे खुदा है	192
बयान नम्बर : 14	154	हुज़ूर की ता'ज़ीम बख़्शिश का सबब बन गई	195
100 हाज़तें पूरी होने का वज़ीफ़ा	154	सुन्नते सिद्दीक़े अक्बर رضى الله تعالى عنه	197
दोने हक़ की शर्तें अव्वल	156	बयान नम्बर : 19	199
सफ़ेद परन्दा	157	पुल सिरात पर आसानी	199

पुल सिरात का नूर	200	(3) दुरूदे पाक	231
जन्नत में ठिकाना	204	दुरूदे पाक अपने पढ़ने वाले के लिये	
बयान नम्बर : 20	208	इस्तिगफ़ार करता है	233
सब से अफ़ज़ल दिन	208	बयान नम्बर : 23	235
क़बूलिय्यते दुआ की साअत	209	रिज़ाए इलाही वाला काम	235
जो मांगना है मांगो	211	ग़ज़बे इलाही से अमान	236
रोज़े महशर की प्यास से महफूज़	214	मुख़्तस का अमले क़लील भी काफ़ी है	236
गर्मिये महशर का आलम	215	घड़ी भर का इख़्लास बाइसे नजात	236
बयान नम्बर : 21	217	लम्हा भर में मग़फ़िरत	237
एक अज़ीम नूर	217	रहमते हक़ “बहाना” मी जूयद	238
तीन किस्म के लोगों की दुआ क़बूल नहीं	221	चुगुल ख़ोरी और तोहमत का वबाल	241
क़बूलिय्यते दुआ में ताख़ीर हो तो	222	बयान नम्बर : 24	244
सुवार के पियाले की मानिन्द न बनाओ	224	जुदा होने से पहले पहले बख़्शिश	244
बयान नम्बर : 22	226	जवाबे सलाम का अफ़ज़ल तरीक़ा	245
सदक़े की इस्तिताअत न हो तो !	226	जवाबे सलाम के वक़्त ख़िलाफ़े सुन्नत अल्फ़ज़	246
(1) क़स्बे हलाल	226	घर में दाख़िल होने के आदाब	247
सब से बेहतर और पाकीज़ा खाना	227	सलाम को आम़ करो सलामती पाओगे	248
लुक्मए हुराम का वबाल	228	महब्बत पैदा करने वाला अमल	248
(2) सदक़ा	229	सरकार से मुसाफ़हे का शरफ़	249
सदक़े से अमराज़ दूर करो	231	आग ने कुछ असर न किया	250

आग से धुलने वाला रूमाल	250	अनोखा मिम्बर	278
बयान नम्बर : 25	253	बयान नम्बर : 28	281
घरों को कब्रिस्तान मत बनाओ	253	हज़रते अली की करामत	281
मौत की तलखी से महफूज़	254	शा'बान मेरा महीना है	281
नसीहतों के फूल	255	शा'बान में दुरुदे पाक की कसरत	282
मोत कांटेदार शाख की मानिन्द है	259	शा'बान की आमद पर अस्लाफ़ का मा'मूल	283
तकालीफ़े मौत का एक क़तरा	260	निस्फ़ शा'बान की फ़ज़ीलत	284
सूए खातिमा से अम्न चाहते हो तो !	260	आतश बाज़ी का मूजिद कौन ?	285
बयान नम्बर : 26	262	दस हज़ारी दुरुद शरीफ़	286
खुदा चाहता है रिज़ाए मुहम्मद	262	हर रात साठ हज़ार दुरुदे पाक	287
पांच को पांच से पहले ग़नीमत जानो	265	बयान नम्बर : 29	290
जितना गुड, उतना मीठा	268	रोज़ी में बरकत	290
बयान नम्बर : 27	271	तंगदस्ती से नजात का ज़रीआ	292
गीबत से हिफ़ाज़त का नुस्खा	271	तंगदस्ती के अस्वाब	293
लम्हए फ़िक्रिया	271	नमाज़े चाशत की बरकत	295
गीबत का अन्जाम	272	बयान नम्बर : 30	299
क़ियामत की ज़िल्लत व नुहसत का एक सबब	273	ग़ुलाम आज़ाद करने से अफ़ज़ल अमल	299
लुत्फ़े इलाही का ज़रीआ	276	कसरत से दुरुद पढ़ने की ता'रीफ़	301
ज़िक्र की अफ़ज़ल तरीन क़िस्म	276	इमाम बूसैरी पर सरकार का करम	304
दुरुद कई नेकियों का मजमूआ है	277	वस्वसा और इस का जवाब	305

बयान नम्बर : 31	308	दिलों की त्हाहत	336
भलाई के तलबगार	308	ज़िक्रे सरकार के आदाब	337
जैद बिन हारिसा का इश्के रसूल	309	सरकार ने दस्तगीरी फ़रमाई	339
दम बदम सल्ले अ़ला	312	सब से बड़ा बख़ील शख़्स	342
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ज़रूरी है	314	जनाजे में फ़िरिशतों का नुज़ूल	343
हालते बेदारी में जवाबे सलाम	315	बयान नम्बर : 35	345
बयान नम्बर : 32	317	जन्नत कुशादा हो जाती है	345
मुबारक पर्चा	317	ऊंट की गवाही	346
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिशतों का अमल	318	सूद का ववाल	348
दुरुद भेजने की हिक्मत	319	सूद की ख़राबियां	351
जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा	321	सूद के सत्तर दरवाजे	352
बयान नम्बर : 33	326	बयान नम्बर : 36	355
होंटों पर मुतअय्यन फ़िरिशते	326	तमाम मख़्लूक को किफ़ायत करने वाला नूर	355
हुकूके रमज़ान से मुतअल्लिक नसीहतें	328	क्या खड़े हो कर दुरुदे पाक पढ़ना वाजिब है?	356
दिल पर एक सियाह नुक्ता	330	दुरुद की बरकत से सरकार का दीदार	362
लम्हए फ़िक्रिय्या	331	बयान नम्बर : 37	364
भूके प्यासे रहने की कुछ हाज़त नहीं	332	तीन किस्म के बद बख़्त	364
आग से नज़ात का परवाना	332	निफ़ाक़ व नार से आज़ादी	365
शराबी, मुअज़्ज़िन बन गया	334	बद अक्दीदगी से तौबा	366
बयान नम्बर : 34	336	अच्छी सोहबत से मुतअल्लिक फ़रामीने मुस्तफ़ा	369

बद मजहबों से मैल जोल मन्अ है	371	जहाज डूबने से महफूज रहा	411
बयान नम्बर : 38	373	दुरुदे तुनज्जीना	413
जियारते सरकार का वजीफ़ा	373	बलख़ का सौदागर	414
आ'ला हज़रत का शौके दीदार	376	बयान नम्बर : 43	421
बयान नम्बर : 39	382	गुनाहों की मुआफ़ी का ज़रीआ	421
अहले महबूत का दुरुद मैं खुद सुनता हूँ	382	शफ़ाअत की नवीद	422
रौज़ए अक्दस से जवाबे सलाम	382	ज़रूरिय्याते दीन की ता'रीफ़	426
हाज़िरिये बारगाह के आदाब	385	लम्हए फ़िक्रिय्या	426
सरकार ने हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई	389	बयान नम्बर : 44	431
बयान नम्बर : 40	391	चेहरए अन्वर पर खुशी के आसार	431
इस्तिक़ामत के साथ थोड़ा अमल भी बेहतर है	391	एक रहमत का आलम	432
पीरे कामिल की शराइत	395	ईसाले सवाब की बरकत	433
तौबा का राज़	398	हर नेक अमल का सवाब ईसाल कीजिये	434
बयान नम्बर : 41	401	उम्मे सा'द का कुंवां	436
दुखूले मस्जिद के वक़्त मुझ पर सलाम भेजो	401	फ़िरिश्ते भी ईसाले सवाब करते हैं	437
सरकार मसाजिद में मौजूद होते हैं	402	बयान नम्बर : 45	439
वसीला पेश करना सहाबा का तरीका है	403	बरकत से ख़ाली कलाम	439
सहाबी ने पुकारा "या रसूलल्लाह"	407	खाने में बे बरकती का सबब	439
बयान नम्बर : 42	411	ज़हरे क़ातिल बे असर हो गया	440
मसाइब व आलाम का ख़ातिमा	411	وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ की तफ़्सीर	442

लो वोह आया मेरा हामी	444	सिफ़ते अव्वल की वुजूहात	478
बयान नम्बर : 46	448	सिफ़ते आख़िर की वुजूहात	479
ना मुकम्मल दुरुद	448	वोह जो न थे तो कुछ न था	481
दो बड़ी और अहम चीज़ें	449	सब से औला व आ'ला हमारा नबी	482
तीन बातों की ता'लीम	452	बयान नम्बर : 50	485
सफीनए नूह	453	क़ियामत की वद्दशतों से नजात पाने वाला	485
अहले बैत से महब्वत का मुतालबा	454	क़ब्र जन्नत का बाग़	486
बयान नम्बर : 47	458	जहन्नम का गढ़ा	489
दस दरजात की बुलन्दी	458	इम्तिहान सर पर है	490
दुरुदे पाक न लिखने का वबाल	460	नक्ल करने वाला ही कामयाब	492
गले की तकलीफ़ दूर हो गई	460	बयान नम्बर : 51	494
दुरुदे ताज की बरकात	461	रहमत के सत्तर दरवाज़े	494
सलातो सलाम की आशिका	464	हज़रते ख़िज़्र <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> नबी हैं	495
बयान नम्बर : 48	467	ज़मीन वाले दो नबी	496
एक गुनहगार की बख़्शिश का सबब	467	आस्मान वाले दो नबी	497
अज़ान के वक़्त अंगूठे चूमने का सवाब	469	तीन अहम अ़कीदे	500
सरकार के अस्माए मुबारका	469	क़ियामत की निशानियां	503
नामे मुहम्मद की बरकत	472	बयान नम्बर : 52	508
मुहम्मद नाम रखो तो इस की ता'ज़ीम भी करो	473	सत्तर हज़ार फ़िरिशतों का नुज़ूल	508
बे वुजू नामे मुहम्मद न लेने वाले बुजुर्ग	474	तीन अहम निकात	509
बयान नम्बर : 49	476	पेशानिये आदम में नूरे मुहम्मद	510
वोही अव्वल वोही आख़िर	476	जाने आलम की दुन्या में जल्वा गरी	511

मादरी ज़बान की हिफ़ज़त का अनोखा अन्दाज़	513	आप भी मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये	541
मो'जिज़ते नवबी	514	वक्ते आखिर अवराद की तक़रार	542
नूर का खिलौना	517	अच्छी सोहबत अपना लीजिये	544
जामेए मो'जिज़ात सरकार की ज़ात	518	सुन्नत पर अमल का सिला	544
बयान नम्बर : 53	520	ड्राईवर की पुर अस्सर मौत	548
सह़ाबा पर ता'न, हुज़ूर को ना पसन्द है	520	बयान नम्बर : 56	549
राहे हिदायत के दरख़शन्दा सितारे	521	भूली हुई चीज़ याद आ जाएगी	549
ला'नते खुदावन्दी का मुस्तह़िक	522	हाफ़िज़ा मज़बूत करने वाला दुरूद	549
सरकार का कुर्ब पाने वाला खुश नसीब	523	कुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ाने के पांच मदनी फूल	550
अल्लाह ﷻ के दोस्त	524	इल्म को महफूज़ रखने का तरीक़ा	554
गुस्ताख़े सह़ाबा का इब्रतनाक अन्जाम	525	कमज़ोरिये हाफ़िज़े का सबब	555
बयान नम्बर : 54	529	हैरत अंगेज़ कुव्वते हाफ़िज़ा	556
तीन बातों की वसियत	529	सिर्फ़ एक माह में हिफ़्ज़े कुरआन	557
नमाज़े चाशत की फ़ज़ीलत व अहम्मियत	530	बयान नम्बर : 57	559
नमाज़े फ़ज़्र के बा'द ज़िक्क़ुल्लाह की फ़ज़ीलत	531	अल्लाह ﷻ की नज़रे रहमत	559
तंगदस्ती दूर करने का नुस्खा	534	ग़ैरे नबी पर दुरूद भेजने से मुतअल्लिक़ फ़तवा	561
रात को सोते वक्ते के अवराद	535	रब ﷻ का सलाम	565
शफ़ाअत का मुज़दा मिल गया	536	कसरते दुरूद ने हलाक़त से बचा लिया	567
बयान नम्बर : 55	539	बयान नम्बर : 58	569
सायए अर्श पाने वाले तीन खुश नसीब	539	हुज़ूर हमारे नाम जानते हैं	569
दिन रात के गुनाहों की मुआफ़ी	540	एक वस्वसा और इस का जवाब	570
ग़मों ने तुम को जो घेरा है तो दुरूद पढ़ो	541	दस हज़ार दुरूदे पाक का सवाब	573

किस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी	575	बयान नम्बर : 62	612
बयान नम्बर : 59	578	रहमतों का खज़ाना	612
हज़रते ख़िज़्र <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की पसन्दीदा मजलिस	578	अलामते अहले सुन्नत	614
मुहद्दिसीने किराम का मा'मूल	579	कलामे इलाही में दुरूदो सलाम का हुक्म	
सरकार का सलाम	582	मुतलक है	614
सब्ज़ लिबास	583	बा'दे अज़ान दुरूद का सुबूत	617
अहादीसे मुबारका की ता'जीम	584	अज़ान और सलातो सलाम में फ़स्ल कीजिये	618
बयान नम्बर : 60	587	वस्वसा और इस का जवाब	619
शहीदों की रफ़ाक़त	587	बयान नम्बर : 63	623
शहीदे फ़िक्ही और शहीदे हुक्मी में फ़र्क़	589	जुमुआ के दिन दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	623
शहीद का सवाब	590	सरकार का हुस्नो जमाल	627
मरातिब में फ़र्क़ है	591	चेहरए अन्वर की ताबानी	628
नफ़्स से जिहाद, जिहादे अक्बर है	592	वोह अगर जल्वा करें कौन तमाशाई हो?	630
नफ़्स की अक्साम	595	जिस्म मुबारक	632
बद किरदार की तौबा	597	क़द मुबारक	633
बयान नम्बर : 61	599	मुक़द्स बाल	633
रब के दुरूद भेजने से क्या मुराद है	599	नूरानी आंख	634
दीदारे इलाही का शौक़	600	दहन शरीफ़	634
शाह दुल्हा बना आज की रात है	601	हक़ का मुतलाशी	636
लफ़्ज़े <small>سُبْحَن</small> की हिकमत	602	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	638
सफ़रे मे'राज का आगाज़	605	माख़ज़ो मराजेअ	648
तस्दीके मे'राज करने वाले सहाबी	610	इल्मिय्या कुतुब	652

ماخذ مراجع

کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
قرآن پاک	کلام الہی	مکتبۃ المدینہ، کراچی
کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۳۰ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی
الدرا المنثور	امام جمال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
تفسیر طبری	امام ابو جعفر محمد بن جریر طبری، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
التفسیر الکبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
روح البیان	مولیٰ الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت
الباب فی علوم الکتاب	ابو حفص عمر بن علی ابن عادل حنبلی، متوفی ۸۸۰ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
نزهة العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی
کوثر الخیرات	حضرت علامہ مولانا محمد اشرف سیالوی، متوفی ۱۴۳۴ھ	نضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور
صحیح بخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابوالحسن مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابو نعیم محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابن ماجہ	ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۴۳ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
سنن أبی داود	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث جہتانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
کنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
الجامع الصغیر	امام جمال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
مشکاة المصابیح	علامہ ولی الدین تمیزی، متوفی ۷۳۲ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ریتی، متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ

دارالفکر، بیروت ۱۴۱۲ھ	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	المسند
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بن یحییٰ، متوفی ۳۵۸ھ	شعب الایمان
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	جمع الجوامع
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلخان فارسی، متوفی ۷۳۹ھ	الإحسان بترتیب صحیح ابن حبان
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ	ابوبکر عبدالرزاق بن ہمام صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	مصنف عبد الرزاق
دارالکتب العلمیہ، بیروت	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	المعجم الواسط
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ	ابویعلیٰ احمد بن علی بن یحییٰ موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	مسند أبی یعلیٰ
دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ	ابوعبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	المستدرک
دارالفکر، بیروت	الامام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری، متوفی ۶۵۶ھ	الترغیب والترہیب
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ	امام ابو محمد الحسین بن مسعود البغوی، متوفی ۵۱۶ھ	شرح السنة
مکتبۃ العصریہ، بیروت ۱۴۲۶ھ	امام ابوبکر عبد اللہ بن محمد قرظی، متوفی ۲۸۱ھ	الموسوعة لابن ابی الدنيا
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی، متوفی ۱۱۶۲ھ	كشف الخفاء
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	فتح الباری
دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	عمدة القاری
دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	مرقاۃ المفاتیح
ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مرآۃ المناجیح
فرید بک اسٹال، لاہور	مفتی محمد شریف الحق امجدی رحمۃ اللہ علیہ، متوفی ۱۴۲۰ھ	نزہۃ القاری
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ	علامہ محمد عبدالرؤف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	فیض القادیر

المواہب اللدنیہ	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
الخصائص الکبریٰ	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
حلیۃ الأولیاء	حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی، متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ	الامام شیخ ابو جعفر احمد الشہیر الطبری، متوفی ۶۹۴ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
مدارج النبوة	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا ہند
نسیم الریاض	شہاب الدین احمد بن محمد بن عمر خفاجی، متوفی ۱۰۶۹ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
الشفاء بتعریف حقوق المصطفیٰ	القاضی ابوالفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
سیرت مصطفیٰ	مولانا عبدالمصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی
الدر المختار	محمد بن علی المعروف بعلاء الدین ہسکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
الحاوی للفتاویٰ	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
نور الایضاح مع مراقی الفلاح	حسن بن عمار بن علی المصری الشرنبلالی، متوفی ۱۰۶۹ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی
فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۳۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور
فتاویٰ حامدہ	مولانا حامد رضا خان، متوفی ۱۳۶۲ھ	زادیہ پبلشرز، لاہور
ملفوظات	مولانا محمد مصطفیٰ رضا خان قادری، متوفی محرم الحرام ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی
المصواعق المحرقة	حافظ احمد بن حجر کلینی، متوفی ۹۷۴ھ	ملتان، پاکستان

دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ	عبدالوہاب بن احمد شعرائی، متوفی ۹۷۳ھ	الطبقات الکبری
دارالکتب العلمیہ، بیروت	سید محمد بن محمد حسینی زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	اتحاف السادة المتقین
دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۱۹ھ	علامہ ابوالعباس احمد بن محمد بن حجر یطی، متوفی ۹۷۴ھ	الزواجر عن افتراء الکبائر
دارصادر، بیروت ۲۰۰۰ء	حجت الاسلام ابو حامد امام محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	احیاء علوم الدین
مکتبہ نوریہ رضویہ، سکھر، پاکستان	میر عبدالواحد بلگرامی، متوفی ۱۰۱۷ھ	سبع سنابل
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ	شیخ عبدالقادر بن ابوصالح البیلائی، متوفی ۵۶۱ھ	غنیۃ الطالبین
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ	عبدالرحمن بن عبدالسلام الصفوری الشافعی، متوفی ۸۹۴ھ	نزهۃ المجالس
دارالفکر بیروت	عثمان بن حسن بن احمد الشاکر الخوی، متوفی ۱۲۴۱ھ	درة الناصحین
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ	علامہ یوسف بن اسماعیل النہبانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	سعادة الدارين
مؤسسۃ الریان بیروت ۱۴۲۲ھ	امام محمد بن عبدالرحمن السخاوی، متوفی ۹۰۲ھ	القول البديع
دارالشمس	علامہ یوسف بن اسماعیل النہبانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	افضل الصلوات
نعمی کتب خانہ، گجرات	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	شان حبیب الرحمن
نعمی کتب خانہ، گجرات	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۳۹۱ھ	رسائل نعیمیہ
شعیر برادر، لاہور	ربیع المکملین مولانا تقی علی خان بن علی رضا، متوفی ۱۲۹۷ھ	انوار جمال مصطفیٰ
قادری پبلشرز، لاہور	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	جاء الحق
مکتبۃ المدینہ، کراچی	مولانا عبدالصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	عجائب القرآن



“मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया” की तरफ से पेशकर्दा कबिले मुतालआ कुतुब ﴿شَوْ بَدُو كُتُبُهُ آءَا لَا هَجَرَتْ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ﴾

- (1) कस्सी नोट के शर्इ अहकामात :
(अल किफ़लुल फ़कीहिल फ़हिम फ़ी क़िरतासिदराहिम) (कुल सफ़हात : 199)
- (2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)
(अल याकूतितुल वासितह) (कुल सफ़हात : 60)
- (3) ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़हात : 74)
- (4) मआशी तरक्की का राज़
(हाशिया व तशरीह तदर्बीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह) (कुल सफ़हात : 41)
- (5) शरीअत व तरीक़त
(मकालुल उ-रफ़ाअ बि इ'जाज़ि शर-इ व उ-लमाअ) (कुल सफ़हात : 57)
- (6) सुंभते हिलाल के तरीके (तुरुक्कि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़हात : 63)
- (7) आ'ला हज़रत से सुवाल जवाब
(इज़हारिल हक्किल जली) (कुल सफ़हात : 100)
- (8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?
(विशाहुल जीद फ़ी तहलीलि मुअनि-कतिल ईद) (कुल सफ़हात : 55)
- (9) राहे खुदा में खर्च करने के फ़ज़ाइल
(रहिल कहूति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ुकराअ) (कुल सफ़हात : 40)
- (10) वालिदैन्, जौजैन् और असातिज़ा के हुकूक
(अल हुकूक लि तर्हिल उकूक) (कुल सफ़हात : 125)
- (11) फ़ज़ाइले दुआ (अहूसनुल विआअ लि आदाबिहुआअ मअ शर्ह जैलुल मुद्आ लि अहूसनिल विआअ) (कुल सफ़हात : 326)

शाउअ होने वाली अरबी कुतुब

अज : इमामे अहले सुन्नत मुजहिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ

- (12) किफ़लुल फ़कीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़हात : 74)
- (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़हात : 77)
- (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62)
- (15) इका-मतुल क़ियामह (कुल सफ़हात : 60)
- (16) अल फ़ज़लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46)
- (17) अज़ल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70)
- (18) अज़मज़मतुल क़मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93)
- (19,20,21) जदिल मुम्तार अला रदिल मुह्तार
(अल मुजल्लद अल अव्वल वर्षसनी)(कुल सफ़हात : 713, 677, 570)

शो'बउ इस्लाही कुतुब

- (22) खौफ़े खुदा غَزْوَجَل (कुल सफ़हात : 160)
- (23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
- (24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
- (25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
- (26) इमतिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
- (27) नमाज़ में लुक्मा के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
- (28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
- (29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
- (30) निसाबे मदनी काफ़िला (कुल सफ़हात : 196)
- (31) काम्याब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक्रीबन 63)

- (32) फैज़ाने एह्याउल इलूम (कुल सफ़हात : 325)
- (33) मुफ़्तये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
- (34) हक़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
- (35) तहक़ीकात (कुल सफ़हात : 142)
- (36) अर-बईने ह-नफ़िय्यह (कुल सफ़हात : 112)
- (37) अत्तारी जिन्न का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
- (38) तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
- (39) तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 132)
- (40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
- (41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
- (42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
- (43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
- (50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)
- (51) ग़ौसे पाक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के हालात (कुल सफ़हात : 106)
- (52) तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
- (53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)
- (54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
- (55) मदनी कामों की तक्सीम (कुल सफ़हात : 68)
- (56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
- (57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़हात : 187)
- (58) आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
- (59) अहादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
- (60) फैज़ाने चहल अहादीस (कुल सफ़हात : 120)
- (61) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)

«शो'बए तराजिमे कुतुब»

- (62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल
(अल मुत्जरुराबिह फी सवाबिल अ-मलिस्सालेह) (कुल सफ़हात : 743)
(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आरिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)
(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल सफ़हात : 74)
(65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअल्लिम तरीकुतअल्लुम) (कुल सफ़हात : 102)
(66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद) (कुल सफ़हात : 64)
(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्क (कुल सफ़हात : 148)
(68) आंसूओं का दरिया (बह्रुदुमूअ) (कुल सफ़हात : 300)
(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुरतुल उयून) (कुल सफ़हात : 136)
(70) उयूनुल हिकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़हात : 412)

«शो'बए दर्शी कुतुब»

- (71) ता'रीफ़ाते नहूविय्यह (कुल सफ़हात : 45)
(72) किताबुल अक़ाइद (कुल सफ़हात : 64)
(73) नुज़हतुनज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्क (कुल सफ़हात : 175)
(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़हात : 121)
(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़हात : 79)
(76) गुलदस्तए अक़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180)
(77) वक्क़-यतिन्नह्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह्व
(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ हाशिया सर्फ़ बनाई

«शो'बए तरख़रीज»

- (79) अज़ाइबुल कुरआन मअ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़हात : 422)
(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
(81) बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 से 6)
(82) बहारे शरीअत, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)
(83) बहारे शरीअत, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 से 20)
(84) इस्लामी जिन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)
(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)
(87) सहाबए किराम का इश्फ़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)

«शो'बउ अमीरे अहले सुन्नत»

- (88) सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैगाम अतार के नाम (कुल सफ़हात : 49)
- (89) मुकद्दस तहरीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)
- (90) इस्लाह का राज (मदनी चैनल की बहारें हिस्सए दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)
- (91) 25 क्रिस्चैन कैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)
- (92) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
- (93) वुजू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)
- (94) तजक़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त सिवुम (सुन्नते निक्क़ह) (कुल सफ़हात : 86)
- (95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
- (96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़हात : 48)
- (97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
- (98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)
- (99) गूंगा मुबल्लिग (कुल सफ़हात : 55)
- (100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
- (101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)
- (102) मैं ने मदनी बुर्क़अ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)
- (103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)
- (104) तजक़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त दुवुम (कुल सफ़हात : 48)
- (105) गाफ़िल दर्जी (कुल सफ़हात : 36)
- (106) मुखालिफ़त महब्वत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)
- (107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)
- (108) तजक़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त अब्वल (कुल सफ़हात : 49)
- (109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)
- (110) तजक़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त चहारूम (कुल सफ़हात : 49)
- (111) चल मदीना की सआदत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)
- (112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)
- (113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिगा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)
- (114) बे कुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)
- (115) अतारी जिन का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)

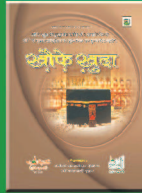
- (116) नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
- (117) आंखो का तारा (कुल सफ़हात : 32)
- (118) वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़हात : 32)
- (119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
- (120) इग़्वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
- (121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (122) शराबी, मुअज्जिन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (124) खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
- (125) नाकाम आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (126) नादान आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (127) हैरोइन्वी की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
- (129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)
- (130) खौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
- (131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (132) सास बहू में सुल्ह का राज (कुल सफ़हात : 32)
- (133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)
- (134) फैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
- (135) हैरत अंगेज़ हादिसा (कुल सफ़हात : 32)
- (136) मोडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
- (138) सलातो सलाम की आशिका (कुल सफ़हात : 33)
- (139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
- (140) चमकती आंखों वाले बुर्जुग (कुल सफ़हात : 32)
- (141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)
- (142) फ़िरऔन का ख़्वाब (कुल सफ़हात : 40)
- (143) मेथी के मदनी फूल (कुल सफ़हात : 12)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اِنَّا بَعَثْنَا مَعَهُ رَافِعًا يَدَايِهِنَّ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سुन्नत की बहारें

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى النَّبِيِّ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तबलीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक 'दा'वते इस्लामी के महके महके **मदनी माहौल** में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं। हर जुमा 'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले 'दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निच्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इलतिजा है। आशिक़ाने रसूल के **मदनी काफ़िलों** में ब निच्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ** इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ** अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **मदनी इन्आमात** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **मदनी काफ़िलों** में सफ़र करना है। **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ**



-: मक्तबतुल मदीना की शाखें :-

- ✿... अहमदाबाद :- फैज़ने मदीना, तीकोनी बागीचे के सामने, मिरजापूर, अहमदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200
- ✿... मुम्बई :- 19 - 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429
- ✿... नागपुर :- सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपुर, फ़ोन : 9326310099
- ✿... अजमेर :- 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, फ़ोन : (0145) 2629385
- ✿... हुबली :- A.J मुधल कोम्प्लेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860
- ✿... हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
- ✿... बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकया, मदनपुरा, बनारस, फ़ोन : 09369023101

MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

email : maktabadelhi@gmail.com

web : www.dawateislami.net

ISBN 978-969-631-301-4



0101825

